Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ारिका

अक्तूबर १९७५

ानिया और वेस्ट इंडीज की
ानियों का विशिष्ट खंड

ा बलदेव वैद के
ास्य उपन्यास
ई लादवा' का एक अंश

शपाल की विशिष्ट
ानी!
भी स्थायी
तंभ

16/10/75
पुस्तकालय ... कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्लैंकेट
शाल
ब्लेज़र
मफ़्लर

SIMPLEX WOOLLEN MILLS
swm
BOMBAY

सिम्प्लेक्स
वूलन मिल्स, बम्बई-४०० ०६८

IMPRESSIONS 641

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

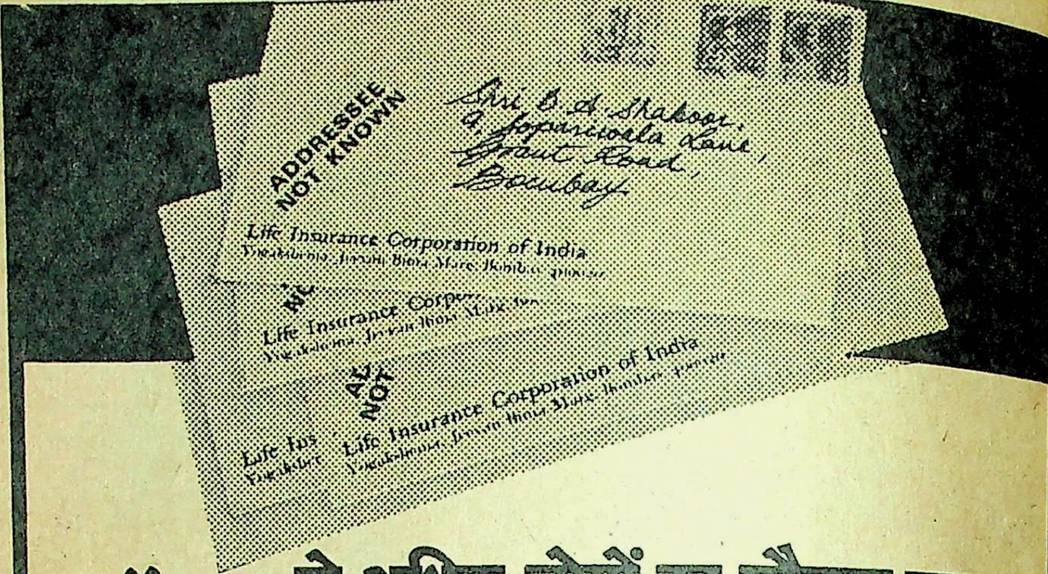

४००० से अधिक लोगों का मौजूदा पता न जानने के कारण हम परिपक्वता-दावों का भुगतान न कर सके

आप उन्हीं लोगों में से एक तो नहीं हैं ?

यह बात भले ही अविश्वसनीय लग जाए लेकिन वह सच है। सैकड़ो लोग इस नन्हीं सी बात को भूल गये हैं। उन्हें यह भी पता नहीं है कि निगम से उन्हें पैसे मिलने वाले हैं। आप पूछेंगे कि ऐसा क्यों हुआ ? तो सुनिए :

पालिसी लेने के बाद वे नई जगह पर रहने के लिये चले गये और उसकी सूचना उन्होंने निगम को नहीं दी। नतीजा यह हुआ कि उन्हें न कोई फार्म मिले और न ही डिस्चार्ज वाउचर।

क्या आपके पास कोई ऐसी पालिसी तो नहीं है ? यदि हो तो जाच कर लीजिये और देखिये–

● उस पालिसी की अवधि कब पूरी होती है ? ● यदि उसकी अवधि पूरी हो चुकी हो तो आप अपनी पालिसी का पूरा विवरण देकर उस कार्यालय को लिखिये जहाँ से आपको सेवा मिलती थी। एक बात और आप उसमें अपना नया पता देना न भूलें। ● चालू पालिसी उसे कहते हैं जिसके अबतक के सारे प्रीमियम अदा किये गये हों ● और चुकता बीमा पालिसी वह है जिसके आपने कम-से-कम दो या तीन साल के प्रीमियम अदा किये हों।

चुकता बीमा पालिसी के आपको कितने पैसे मिलेंगे ?

उसपर अनुपातिक राशि दी जाती है। जैसे-१०,००० रुपये की २० वर्ष की पालिसी के ५ वर्ष के प्रीमियम दिये जाने पर आपको २,५०० रुपये मिलेंगे। (१९५६ के पहले की बीमा कम्पनियों द्वारा जारी की गई पालिसियों के लिये ये दरें अलग-अलग हैं) ४४ लाख रुपयों का भुगतान कराना अब बाकी है। उनमें से २,६४८ चुकता बीमा पालिसियों पर...१८.५० लाख रु. देने हैं और १,३८६ चालू पालिसियों पर...२५.१२ लाख रु. यदि आपके मन में कोई संदेह पैदा हो जाए तो आप तुरन्त जीवन बीमा एजेंट से मिलिये या अधिक जानकारी के लिये निकटतम कार्यालय से सम्पर्क प्रस्थापित कीजिए।

कर सकेंगे सेवा बेहतर आपकी सहायता के बल पर!

लाइफ इन्श्योरेन्स कारपोरेशन आफ इण्डिया

RADEUS/LIC/AS-14

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस में दुर्गंध जुदाई कराये...

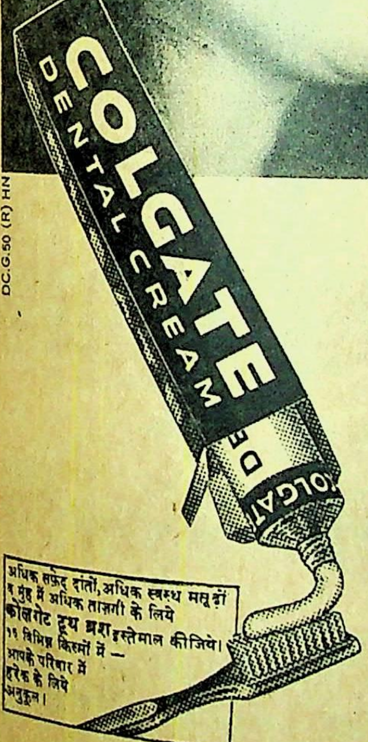

DC.G.50 (R) HN

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की दुर्गंध रोकिये... दंतक्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये!

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है और खाना खाने के तुरंत बाद कोलगेट विधि से दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का—अधिक दंतक्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह एक बेमिसाल घटना है। क्योंकि एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंतक्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक कीटाणुओं को दूर कर देता है। इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है—इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए...
दुनिया में अधिक लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही खरीदते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानीकार

विशिष्ट कहानियों
की मासिकी

इस अङ्क में
पढ़ें—
विनायक
राजाराम सिंह
दीप्ति खण्डेलवाल
अजित पुष्कल
चन्द्रकान्त बक्षी
की
सशक्त
कहानियाँ
तथा
अन्य रचनाएं

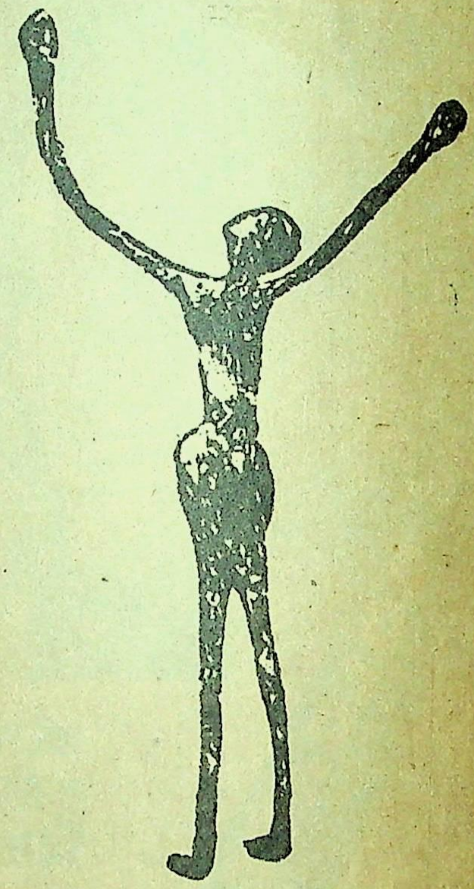

कहानीकार प्रकाशन १ रुपया

(अ०-सि० '७५ संयुक्तांक)
वर्ष : ९ • पूर्णांक : ५०

उर्दू का बहुचर्चित एवं उर्दू अकादमी द्वारा पुरस्कृत उपन्यास—

बहुत देर कर दी

ले. अलीम मसरूर

कहानीकार प्रकाशन द्वारा हिन्दी में सजिल्द आकर्षक डिमाई में शीघ्र प्रकाश्य
मूल्य २० रुपये • पृष्ठ ३०० • मात्र १६/– तत्काल भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें
कार्यालय • के. ३०/३७ अरविन्द कुटीर (निकट भैरवनाथ) वाराणसी-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानियों और कथा-जगत की संपूर्ण पत्रिका

सारिका

अक्तूबर, १९७५
वर्ष : १५; पूर्णांक : १७४

रोमानिया और वेस्टइंडीज की कहानियों का विशिष्ट खंड

कहानियां

फानूस निआगू (रोमानिया) : अपने-अपने साथी : १२
मेरिन प्रेदा (रोमानिया) : प्यार की जीत : १६
सिनजिआना पॉप (रोमानिया) : एक चित्र : २३
कामिल बासियू (रोमानिया) नारंगी सूर्य : २४
जार्जी सुशियू (रोमानिया) : करिनेलिया : २७
माइकेल अंतोनी (वेस्टइंडीज) : रात के अंधेरे में : २८
बार्नावास रेमन फोर्चून (वेस्टइंडीज) : फिसलन : ३०
जेन विलियम्स (वेस्टइंडीज) : लहरें तुम्हें पुकारें : ३२
जेन केरयू (वेस्टइंडीज) : इंद्रधनुष का पुत्र : ३६

अन्य कहानियां

यशपाल : कौन जाने ? : ४४
प्रेम सिंह नेगी : कथा की कथा : ४८
कुलदीप कुमार : ट्रांसफर : ५८
ज्योतिष जानी : आइस्क्रीम का एक कोन : ६०
रवींद्रनाथ ठाकुर : पुष्प का मूल्य : ६३
रणजीत कुमार साहा : अंधेरे की उम्र : ६४
नारायण 'भारती' : राजा का मूल्य : ७०
कृष्ण बलदेव वैद : इंतहा : ७२
कृष्ण प्रसाद मिश्र : यशोदा का शोक : ८४

लघुकथाएं

महल, खाक : १५, एक खिड़की की खातिर: २१, खलीफा की तनुख्वाह : ३९, सात हजार छह सौ अस्सी खून : ४७, हैरानी : ५९, गुरुकुल: ६२, सर्वोत्तमजल,पूंछ : ६९ ईसा का चित्र : ७७
बिना जाति का आदमी : ४७

गर्दिश के दिन

राबिन शॉ पुष्प : ५२

विशिष्ट लेख

रोमानिया और वेस्टइंडीज का कथा-साहित्य: १०

गोष्ठी रिपोर्ट

चौथा समांतर लेखक सम्मेलन : ८९

स्थायी स्तंभ

पाठकीय : ८, गुस्ताखियां : ४०, विविधा : ७८, लघुकथाएं : ८० कृतियां : राम अरोड़ा, रामदरश मिश्र : ८२, फिल्में : ९१

आमुख सूर्यकांत एम. दुधेड़िया

●

संपादक : कमलेश्वर

- मुख्य उप-संपादक : आनंद प्रकाश सिंह
- उप-संपादक : अवधनारायण मुद्गल, सुदीप
- कार्यालय सहयोगी : श्रीनाथ पांडेय, देवचंद्र झा, भिकाजी शिर्के

बाढ़ और अकाल सहायता कोष : पाठकों से अपील

बिहार के पटना क्षेत्र में अभूतपूर्व बाढ़ से व्यापक क्षति और लोगों की मृत्यु हुई है. संपत्ति भी बिल्कुल बर्बाद हो गयी है, जिससे लाखों व्यक्ति अवर्णनीय कष्ट में फंस गये हैं. ऐसे पीड़ित लाखों व्यक्तियों की राहत के लिए एक धर्मादा ट्रस्ट स्थापित किया गया है, जिसका नाम है—बाढ़ और अकाल सहायता समिति.

बेनेट कोलमैन एंड कंपनी लिमिटेड (टाइम्स आफ इंडिया प्रकाशन समूह) ने बाढ़ और अकाल सहायता कोष में २५ हजार रुपये का दान देकर समिति की ओर से धन-संग्रह अभियान आरंभ किया है. कृपया 'फ्लड एंड फेमीन रिलीफ कमिटी, बंबई' के नाम जारी किया हुआ अपना चेक और नकद निम्नलिखित पते पर अथवा कंपनी के दिल्ली, अहमदाबाद, कलकत्ता और मद्रास-स्थित कार्यालय में से किसी भी कार्यालय को भेजिए

सेक्रेटरी, बेनेट कोलमैन एंड कंपनी लिमिटेड, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, डा. दादाभाई नौरोजी रोड, बंबई-१

ऐसे दान की रकम पर आयकर की छूट के लिए प्रमाणपत्र और रकम-प्राप्ति की रसीद बाढ़ और अकाल सहायता समिति, बंबई, देगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकीय

● **श्री गणेशराव, जी. सी. एफ. स्टेट, जबलपुर (म. प्र.) से लिखते हैं :**

. . .पाठकीय स्तंभ के अंतर्गत दलित-साहित्य के संदर्भ में छपी प्रतिकूल प्रतिक्रियाओं पर प्रतिक्रिया व्यक्त करना वस्तुस्थिति सामने रखने की दृष्टि से मुझे अनिवार्य लगा. . .श्री प्रमोदकुमार ने हरिजनों के अत्याचार और सवर्णों की बेचारगी का उल्लेख किया है. काश, उन्होंने एकाध उदाहरण भी दिया होता! ऐसी बात अवश्य देखने-सुनने में आयी कि हरिजनों द्वारा सवर्ण पीटे गये हैं. लेकिन कब? क्या किसी सवर्ण के मंदिर में प्रवेश करने पर, या नलों अथवा कुओं पर पानी भरते समय, या किसी सवर्ण लड़की को हरिजनों द्वारा अस्मत लूटने पर? क्या ठीक इसके विपरीत सवर्णों द्वारा ऐसे अमानवीय, पाशविक, क्रूर व्यवहार पर ये स्थितियां निर्मित नहीं हुई हैं? नौकरी में हरिजनों के लिए केवल पंद्रह प्रतिशत रिजर्वेशन होता है, किंतु उसमें भी अयोग्यता का बहाना बना कर सवर्ण ठूंस लिये जाते हैं. . .आचार्य प्रतापादित्य सदियों से कैदनुमा जिंदगी जीने वालों को और कितना संयमित बनाना चाहते हैं?. . .श्री रविरंजन प्रसाद बतायें कि गर्त से निकल कर दुर्जेय, उत्तुंग शिखरों को पराजित करना क्या बगैर संघर्ष के संभव है? क्या आज ऐसे धर्म की आवश्यकता नहीं है जिसमें सहानुभूति, समता और स्वातंत्र्य अनिवार्य तत्त्व हों? क्या इन तत्वों के बगैर मानव-कल्याण संभव है?. . .श्री हरनाम सिंह सही कहते हैं कि बौद्ध बन जाने से इस समस्या से छुटकारा नहीं मिल सकता. . .गांधीजी ने हमें हरिजन नाम दिया, यानी ईश्वर के जन, हरि के जन, परंतु इन हरि के जनों के प्रति सवर्णों का क्या दृष्टिकोण है, यह आप किसी सवर्ण हरिभक्त को हरिजन कह कर देख लीजिए. . .श्रीमती पोद्दार से मैं कहना चाहता हूं कि संस्कारहीनता का कारण अशिक्षा और अशिक्षा का कारण गरीबी है. यह गरीबी इतनी भयानक है कि अवर्ण गरीब उससे जूझ-जूझ कर उम्र खतम कर लेता है. जहां कहीं भी उसे इस संघर्ष से फुरसत मिली है, उसने संस्कृत और शिक्षित होने का प्रयास किया है. समस्त सुविधाएं बंद करने से वह फिर पेट की समस्या में उलझ जायेगा. सुविधाएं बंद करने की बजाय सुविधाओं का रूप बदलना आवश्यक है. उन्हें पैसे देने की बजाय जरूरी चीजें देनी चाहिए. □

● **(डा. राम जिलोहा, १२० डॉक्टर्स हॉस्टल, मेडिकल कॉलेज रोहतक, हरियाणा ने भी अपनी प्रतिक्रिया में ऐसे ही विचार व्यक्त किये हैं).**

'सारिका' जीवन की आवश्यकता!

● **सुश्री अर्चना भारत, राजेंद्रनगर, बिलासपुर (म. प्र.) से लिखती हैं:**

पिछले कई वर्षों से हवा, पानी और मकान के साथ-साथ **'सारिका'** भी जीवन की मूलभूत आवश्यकता के समान हो गयी है. इसकी आम आदमी के बीच की कहानियां दिल में कहीं गहरे तक समा जाती हैं और लगता है कि कहानियों में अपने ही चारों ओर का वातावरण मुखर हो उठा हो. समांतर कहानी विशेषांक प्रशंसनीय है. नवलेखन अंक–२ की लघुकथाएं अपनी संक्षिप्तता के बावजूद जीवन की शाश्वत गहराइयों के निकट हैं. □

एक अपील

भारत के युयुत्सावादी लेखकों की ओर से अन्याय भाषाओं और शिविरों के लेखकों से निवेदन करना चाहूंगा कि आज इतिहास ने हमें जिस मोड़ पर अवस्थित कर दिया है, वहां नयी संभावनाओं के क्षितिज का एक ऐसा छोर मिलता है, जिससे जुड़ी हुई उपलब्धियां आने वाली पीढ़ी के प्रकाशमय भविष्य के निर्माण में नींव के पत्थर का कार्य करेंगी. लेकिन उसके लिए आवश्यक है कि देश का बौद्धिक वर्ग, विशेष रूप से परिवर्तनकामी युवा बौद्धिक वर्ग, इसमें सक्रिय रूप से सहयोग दे, अर्थात् सकारात्मक वैचारिक दृष्टिकोण अपना कर वह अपने आसपास के लोगों को यह बताये कि अपेक्षित उपलब्धियों तक पहुंचने के लिए वे जन सामान्य को आत्मोत्थान की दिशा में प्रेरित करें. और यह तभी संभव है, जब प्रत्येक व्यक्ति अनुशासन और परिश्रम के साथ ही साथ अपने दायित्व को समझते हुए परस्पर सहयोग की भावना से कार्य करे अर्थात् अपने आपको और अपने देश को ठीक ढंग से प्यार कर सकने की मानसिकता से जुड़े. तभी वह भारत के नये आर्थिक और सांस्कृतिक स्वरूप को दुनिया के सामने रख पायेगा. इसके लिए किसी जादू की छड़ी की प्रतीक्षा किये बगैर हमें अपने सीमित साधनों के सही उपयोग की बात सोचनी चाहिए. आशा है हमारे लेखक बंधु इस मुद्दे पर सोचेंगे और हमें अपने विचारों से अवगत कराते हुए एक ऐसे ठोस कार्यक्रम की रूपरेखा भी देंगे जो आज की परिस्थितियों में हमारी भूमिका के निर्धारण में निर्विवाद रूप से सहायक हो सकेगी. तथास्तु!

● **शलभ श्रीरामसिंह, अशोक मेटल इंडस्ट्रीज लि., १५७ नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता –७००००१.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● **श्री नरेंद्रप्रसाद, गुलाबबाग, बेतिया (बिहार) से लिखते हैं:**

'सारिका' के जुलाई अंक के पाठकीय में श्री मदनराव भोमली द्वारा बौद्धिक स्तर पर उठाये गये प्रश्न से कि दलित किसे कहते हैं, लगता है कि वह इस पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं कि 'न्याय के दौरान किसी के साथ अन्याय नहीं हो जाये.' उन्हें इस बात की चिंता है कि यह अंक उन सवर्णों को निस्संदेह दुख पहुंचायेगा, जो हरिजनों को समाज में एकाकार करने के भगीरथ प्रयत्न में लगे हैं. □

● **श्री श्रीकांत 'अमलतास', लल्लूपोखर, मुंगेर से लिखते हैं:**

जुलाई की **'सारिका'** अति विलंब से मिली, लेकिन विलंब की सारी शिकायतें पढ़ने के बाद दूर हो गयीं. साहित्यिकी का परिसंवाद प्रस्तुत करने के लिए धन्यवाद. से. रा. यात्री के सुलझे हुए तर्क उन सारे आलोचकों (और लेखकों) की नजर खोल देंगे जो समांतर कहानियों को सिर्फ स्टंट और लेखक के प्रकाशित होने की टेकनीक समझते हैं. सच यह है कि साहित्यकार अपने को परिवेश से अलग रख ही नहीं सकता और साहित्य की विधा तब तक पूर्ण नहीं है जब तक वह मामूली आदमी की मामूली इच्छाओं के लिए नहीं बनती. इस संदर्भ में यात्री जी ने प्रतिबद्धता और संबद्धता का डिस्टिंक्शन स्पष्टतः कर दिया है. अब शायद समांतर को आंदोलन कह कर लोग कहानी को भटकाने की कोशिश नहीं करेंगे. □

● **श्री सुनील पाठक, ऑफिसर्स मेस, एयरफोर्स अकेडमी, हैदराबाद (आं. प्र.) से लिखते हैं:**

'सारिका' के जुलाई-अंक में उपलब्ध समांतर साहित्य की सामग्री ने ढूंढ़ने-खोजने और उतार-चढ़ाव का पर्याप्त दायरा प्रदान किया है. **परिसंवाद** कि समांतर क्या महज एक आंदोलन है, विचारोत्तेजक होने के साथ-साथ इस बात की भी मांग करता है कि आप से. रा. यात्री के साथ हैं अथवा गोविंद मिश्र के... □

समांतर कथा-साहित्य पर एक बहस ● विभुकुमार

अगस्त की तीन तारीख, युवा कथाकार अशोक मिश्र का घर और दोपहर का समय.

छत्तीसगढ़ अंचल के जाने-माने कवि-कथाकार इस अभिनव व विचारोत्तेजक बहस के लिए भिलाई में उपस्थित थे. इसी भिलाई में है 'इस्पात हिंदी साहित्य संसद' जिसने समांतर कथा-गोष्ठी का आयोजन किया आगुंतकों में थे सर्वश्री दानेश्वर शर्मा, केशव पांडे, गंगाप्रसाद सिंह, क्षत्री, तथा **'सारिका'** के कुछ पाठक.

गोष्ठी के प्रारंभ में श्री गंगाप्रसाद सिंह ने अपने आलेख में **'सारिका'** के सभी दस समांतर विशेषांकों के उन अंशों को उद्धरण के तौर पर लिया, जिन्हें श्री कमलेश्वर ने अपने संपादकीय में बतौर प्रश्नों के उठाया है. श्री सिंह ने अपने तई बात बहुत कम कही और अपने वक्तव्य को श्री कमलेश्वर के संपादकीय तक अधिक सीमित रखा.

अपने आलेख में उन्होंने अंत में अपनी एक जिज्ञासा व्यक्त कि कि कमलेश्वर जी के समांतर कहानियों के संदर्भ में दिये गये वक्तव्यों में और नयी कहानियों के समय में दिये गये वक्तव्यों में कोई विशेष अंतर नहीं है, इसलिए उन्हें 'समांतर' शब्द का औचित्य समझ में नहीं आया. उन्होंने यह अवश्य कहा कि बावजूद इसके **'सारिका'** के इधर के अंकों की कहानियों का स्वर निश्चित रूप से अलहदा है और ज्यादा प्रामाणिक भी.

श्री छत्री ने **'विदा-अलविदा', 'तीसरी सांस', 'एक बिछा हुआ आदमी', 'एम.एल. ए. साहब'** तथा अन्य कहानियों के उदाहरणों से यह सिद्ध किया कि ये सभी कहानियां समय-सापेक्ष कहानियां हैं. उन्होंने समांतर कहानियों की सबसे प्रमुख विशेषता ही यह मानी कि ये कहानियां समय-सापेक्ष कहानियां है. अन्य कथाकारों में सुदीप, इब्राहीम शरीफ और प्रभु जोशी की कहानियों की उन्होंने विशेष प्रशंसा की.

श्री दानेश्वर शर्मा ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि समांतर कथा विशेषांकों के माध्यम से कई सशक्त नये कथाकार सामने आ रहे हैं, जो अपने आसपास के परिवेश के प्रति पूरी ईमानदार दृष्टि रखते हैं.

श्री केशव पांडे ने चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहा कि यह शुभ लक्षण है कि समांतर कथा साहित्य ने अपने को आम आदमी के साथ जोड़ा है.

अंत में विभुकुमार ने कहा कि निस्संदेह समांतर साहित्य समय-सापेक्ष है और समांतर कथाकार लफ्फाजी में विश्वास नहीं करता. समांतर कहानियां आम आदमी की, आम आदमी के लिए, आम आदमी (कथाकार) के द्वारा लिखी कहानियां हैं. समांतर कहानियां कहानियां न हो कर जीती जागती हकीकतें हैं, इसीलिए इन कहानियों में आम आदमी अपने आपको देखता है, फिर चाहे वह भिलाई कारखाने का मजदूर या क्लर्क हो, या खेतों का मजदूर. विभुकुमार ने कहा कि समांतर कहानी की जीवंतता का सबसे बड़ा कारण उसका अंतहीन दायरा है, तभी उसमें दलित साहित्य भी समाहित होता है. समांतर कहानी ने पहली बार सवर्ण मुद्रा हटा कर दलित साहित्य से अपने को जोड़ा है. इसीलिए निश्चित ही कथा के अन्य हलकों में समांतर कहानी बौखलाहट का बायस बनेगी—बनी है. समांतर कहानी की यही मुद्रा उसे 'आंदोलन' जैसे संकीर्ण और सीमित दायरे से अलग करती है.

अंत में इस्पात हिंदी साहित्य संसद के अध्यक्ष ने गोष्ठी की अप्रत्याशित सफलता के लिए साहित्यकारों को बधाई दी. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रोमानिया और वेस्ट इंडीज़ का कथा-साहित्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोमानिया यूरोप के उन देशों में से है, जिनकी भाषा और साहित्य पर विदेशी भाषाओं और साहित्य का प्रभाव बहुत गहरा रहा है. यह सही है कि रोमानिया के पास अपने लोक और मौखिक साहित्य का बहुत बड़ा भंडार मौजूद है; फिर भी उसकी भौगोलिक स्थिति ने वहां के साहित्य पर रूसी, पोलिश, हंगेरियाई, तुर्की और यूनानी प्रभावों को स्वीकार करते रहने पर मजबूर किया है.

रोमानिया में छापेखाने का आगमन सन् १६०१ में हुआ. अन्य यूरोपीय देशों की तरह रोमानिया में भी छापेखाने का इस्तेमाल ईसाई धर्मग्रंथों के प्रकाशन के लिए सबसे पहले किया गया. बाद में काव्य-साहित्य का क्रम आया. करीब सौ-सवा सौ साल तक विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित धार्मिक साहित्य का अनुवाद ही रोमानियाई भाषा में प्रकाशित होता रहा. अपने साहित्य को प्रकाश में लाने की दिशा में कोई कार्य हुआ भी तो वह रोमानियाई इतिहास को ले कर ही था.

रचनात्मक साहित्य के स्तर पर सबसे पहले ऐतिहासिक कथाओं की रचना हुई. इस दिशा में ज्यॉर्ज असाची (१७८८-१८६९) का नाम सबसे पहले आता है. रूसी, फ्रांसीसी और इतालवी रूमानी प्रभाव के तहत रोमानिया में काव्यकथाओं की रचना हुई. इस काल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लेखक ग्रिगोर अलेग्जांद्रेस्क्यू है, जिसने बॉयल्यू, लामार्तीन ला फोंतेन, वॉल्तेयर और बायरन की रूमानी रचनाओं से प्रभावित हो कर उच्चकोटि की कथाएं और व्यंग्य-रचनाएं लिखीं.

१९वीं सदी के उत्तरार्ध में वेसाइल अलेक्जांद्री (१८२१-९०) तथा मिहाइल एमीनेस्क्यू (१८५०-८९) रोमानियाई साहित्य पर छाये रहे. इन लेखकों ने कविताएं तो लिखी हीं, साथ ही कहानियां भी लिखीं और लोक-साहित्य का संकलन भी किया. (एमीनेस्क्यू भारतीय हिंदू दर्शन से प्रभावित था और उसने रोमानियाई कविता को चिंतन के धरातल पर श्रेष्ठता की कोटि में पहुंचा दिया.)

इसी काल में इयोन क्रीएंग्या (१८३७-८९) ने, विदेशी प्रभावों से पूरी तरह मुक्त रह कर, लोक-कथाओं को साहित्यिक रूप प्रदान किया और **'बचपन की यादें'** नामक पुस्तक लिखी. निर्दोष ग्रामीण जीवन की कलात्मक झलक इस लेखक की रचनाओं में स्पष्ट परिलक्षित होती है.

उसी काल में ऐतिहासिक उपन्यास के लेखन की शुरुआत भी हुई. नेग्रुत्सी (१८०८-६९), ओदोबोस्क्यू (१८३४-९५), गीका (१८१६-९७), इयोन स्लावीची (१८४८-१९१५) आदि इस युग के कर्णधार थे. स्लावीची ने ग्राम्य-जीवन के नैतिक द्वंद्वों को अपनी कहानियों का मुख्य विषय बनाया.

इस युग का सर्वश्रेष्ठ लेखक है आई. एल. कारागियेल (१८५२-१९१२) जिसने नाटक लिखे और उच्च कोटि के रेखा-चित्रों के साथ कलात्मक कहानियां भी लिखीं. अपने श्रेष्ठ हास्य तथा तेजधार व्यंग्य के बल पर उसने अपने समकालीन परिवेश का जीवंत चित्रण किया.

* *

बीसवीं सदी के प्रारंभ तक रोमानियाई कथा-साहित्य का मुख्य आधार ग्राम्य-जीवन ही था. फिर पहले और दूसरे महायुद्ध के बीच के वर्षों में उपन्यास-लेखन की जबरदस्त लहर आयी. इस काल में अनेक महागाथाएं रची गयीं; लिवियू रेबरेन्यू ने अपने उपन्यास **'इयोन'** (१९२०) में किसान वर्ग की धरती की प्यास और स्वतंत्रता की आकांक्षा का चित्रण किया; वैयक्तिक यातना और स्वातंत्र्य-संघर्ष का वृहद् चित्रण **'रासकोआला'** (१९३२) में हुआ; सीजर पेत्रेस्क्यू, मिनीलेस्क्यू, इयोनेल थियोदोरेन्यू आदि अन्य उपन्यासकारों ने स्थायी महत्व की औपन्यासिक कृतियों की रचना भी इसी काल में की. लेकिन कहानी-लेखन इस काल में एक बार फिर पृष्ठभूमि में चला गया.

दूसरे महायुद्ध के बाद कहानी एक बार फिर उभर कर सामने आ गयी. अन्य यूरोपीय कथाकारों की तरह रोमानियाई कथाकारों को भी यह लगा कि युद्ध की विभीषिका से त्रस्त लोगों के जीवन को यदि कोई विधा प्रतिबिंबित कर सकती है तो वह कहानी ही हो सकती है. धीरे-धीरे कहानी साहित्य की केंद्रीय विधा के रूप में स्थापित होने लगी. अलेक्सांद्रू साहिया, वेसाइल बारन तथा सिनजियाना पॉप आदि जैसे कहानीकारों ने जन-जीवन को उसके यथार्थ के साथ चित्रित करना शुरू किया और अनेक अविस्मरणीय और चुभती हुई कथा-रचनाएं लिखीं.

पिछले एक दशक में रोमानियाई कथाकार मानव की वैज्ञानिक प्रगति को ले कर बहुत जागरूक हुए हैं. उन्होंने स्पष्ट देखा है कि इस प्रगति ने जहां मनुष्य को अपरिमित सुविधाएं दी हैं, वहीं असीमित शक्ति भी दी है. . . . मगर यह भय भी उनके मन में पनप रहा है कि कहीं यह शक्ति किसी और महायुद्ध का कारण न बन जाये. अगर यह युद्ध हुआ तो इसका असर सिर्फ इस धरती पर ही पड़ेगा, याकि एक बार पूरी सृष्टि उसकी चपेट में आ जायेगी? इस प्रश्न को ले कर और इस प्रश्न की भयावहता से त्रस्त हो कर रोमांस की दुनिया में पलायन कर जाने की मानसिकता से वे बार-बार कहानियां लिखते हैं, जिनमें से कुछ कहानियां इस अंक में संकलित हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेस्ट इंडीज का कथा-साहित्य

● गोपालचंद्र जोशी

वेस्ट इंडियन कहानी आज यूरोप और अमरीका के साहित्यिक क्षितिजों पर छायी हुई है. समालोचक एंड्रू साल्की का खयाल है कि सन् १९५० में एडगर मिटलहोल्जर के द्वितीय उपन्यास **'ए मार्निंग एट आफिस'** का प्रकाशन वेस्ट इंडियन कथा-साहित्य के नये दिशामान का प्रतीक है. और उसके साथ ही नयी पीढ़ी के नये कथाकार अपने-अपने खास माहौल के साथ वेस्ट इंडियन रंगमंच पर तेजी से उतरने लगे, जिनमें राइड, सेम्युअल सेल्वन, जार्ज लेमींग, जोन हर्न, नॉयपॉल, जेन केरयू और एडा क्वेयल जैसी प्रतिभाओं ने अपने बेहतरीन उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से अपनी खास जगह बना ली. मिटलहोल्जर का पहला उपन्यास **'कोरेंटाइन थंडर'** जो १९४१ में प्रकाशित हुआ, अलबत्ता उसको पुरानी पीढ़ी की जमात से जोड़ता है, जिसमें वेबर, डिलीसर, वाल्ड्रन, ओगील्वी और मेके जैसे कलम के कारीगर शरीक थे. इसलिए यह कहना संगत मालूम होता है कि जहां से मिटलहोल्जर ने पूर्ववर्ती कथाकारों से रिश्ता तोड़ा, वहीं से वेस्ट इंडीज की नयी कहानी की शुरुआत हुई.

एक दिलचस्प बात यह है कि नयी और पुरानी दोनों पीढ़ियों के कथाकार पहले अपने को उपन्यासकार ही मान कर चले, लेकिन असल में उन्हें पहचाना गया उनकी कहानियों के जरिये से.

अतः वेस्ट इंडियन कहानी नवागत है, लेकिन उसका ढांचा कसा हुआ, विधा का निर्वाह परिपक्व, सामग्री आंचलिक तथा दृष्टि पैनी और तटस्थ है. निस्संदेह सांस्कृतिक संधियों पर खड़े किसी भी देश के कहानी-साहित्य के लिए यह एक उपलब्धि है. वेस्ट इंडीज के छोटे-छोटे टापू, जो भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक सीमाओं में बंधे हुए हैं, बड़ी बारीकी और लगन से अलग से अपनी-अपनी कहानी कहते हैं क्योंकि उनके परिप्रेक्ष्य भिन्न हैं और उनकी महत्वाकांक्षाओं के स्तर भी भिन्न हैं : त्रीनिदाद की कहानियां अवज्ञाभरी वाग्विदग्धता, कटु हास्य और बेधक संवेदनशीलता का नक्शा खींचने में बेजोड़ हैं; ब्रिटिश गायना के कथाकार का झुकाव दंतकथा, रहस्य और जनश्रुतियों की ओर ज्यादा है; उधर बार्बेडॉस के लेखन की अलंकारिकता, वाक्पटुता और असह्य गंभीरता बार्बेडॉस द्वीप की विशिष्ट परंपरा का हवाला देती है. अगर डोमीनीकन कहानीकार अंधविश्वास और किंवदंती की परतों को कुरेदता दिखता है, तो सेंत् लूसियन की कहानियों में गीतात्मक औदात्य और विषण्ण भावधारा का वातावरण निर्मित हुआ है. कहानीकारों ने अपने परिवेश को इतनी ईमानदारी से पेश किया है कि हर द्वीप की आंचलिकता और स्थानीय रंग को उजागर करने में विधा सफल हुई है.

यह नहीं कि इन कहानियों में विरोधाभास न आया हो, लेकिन उसकी संभावनाएं धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक कहानियों में ज्यादा मिलती हैं; कम-से-कम शुद्ध साहित्यिक कहानियों पर यह आरोप नहीं लगाया जा सकता. यहां तक कि सेंत् लूसियन की कहानियों में आयी हीनभावना और जेमेकन कहानियों में वर्ग-चेतना, असह्य दंभ और अधीरता को ट्रेजिक या कॉमिक परिवेश में उतारा गया है. अगर गहराई से देखा जाये तो अलग-अलग टेंपरामेंट वाले कहानीकारों में समानताएं अधिक और भेद कम दिखेंगे, क्योंकि वेस्ट इंडीज के विभिन्न द्वीपों से टकराने वाली अश्रांत लहरें एक ही समुद्र की हैं.

और इन सब के बीच एक चीज बेशक हमें आकर्षित करती है और वह है भावनात्मक असमानताओं और वैचारिक अभिरुचियों के रेतीले तटों को स्नात करती हुई अबाध और अविराम लहरें— लहरें जिनका उत्स वह जीवन है, जिसमें ज्वार भी है और भाटा भी, जिसमें खारापन भी है और गहराई भी, जिसमें औदात्य भी है और उछाह भी. और वह जीवन सहज है, न उसमें कुछ थोपा गया है, न उसमें से कुछ निकाला गया है.

वेस्ट इंडियन कथाकारों की नयी पीढ़ी न केवल संघर्षरत है, बल्कि मूल्यों की खोज के प्रति भी वह सचेष्ट है. वेस्ट इंडीज के टापुओं की कहानियों में टूटने और बिखरने की पीड़ा हो सकती है, लेकिन उनमें विघटन का स्वर तो कम-से-कम नहीं है; क्योंकि मूल्यों के लिए वहां का कहानीकार मुखौटे लगा कर स्वांग रचने की कोशिश नहीं करता. वहां सिद्धांतों का गतिरोध या अस्तित्ववादी ठंडे आक्रोश की नकल भी नहीं है. नयी पीढ़ी के अन्य कथाकार जैसे ग्रे, बारनेस, फोर्ड, गिटंस, मेकफरलेन, स्कोबी, सिमंड्स, विटर और वूलफोर्ड की साफ-सुथरी, सुलझी हुई कहानियां इस बात का सबूत हैं.

वेस्ट इंडीज की कहानी का एक दूसरा पहलू भी है : अभाव और निर्धनता को यथावत स्वीकार करते हुए वे लोग, जिनकी रोजमर्रा जिंदगी समुद्र से सतत और कड़ा संघर्ष है. यहां दुखांत की परछाइयां सूरज की चमकीली धूप को कभी-कभी ढंक देती हैं, लेकिन वे सिर्फ परछाइयां हैं— कहीं घटाटोप नहीं. माइकेल एंथोनी ब्रेथवेट और जेन विलियम्स की कहानियां हम मिसाल के तौर पर ले सकते हैं. वेस्ट इंडियन द्वीपों का समूह मानो परस्पर गुंथी हुई कहानियों की शृंखला है—उनके कथानकों और उद्देश्यों के अंतराल को जीवन का वही सहज प्रवाह जोड़ता है. यह एक विस्मय की बात है कि अपनी खुद की साहित्यिक परंपरा और प्रकाशन के समुचित साधनों के अभाव में भी वेस्ट इंडियन कहानीकार अच्छी कहानियां लिखने में सफल हुए हैं. □□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-अपने साथी

• फानूस निआग़

मैं पिछले छह दिनों से इस दलदली इलाके में मऊद के साथ हूं. उसका नाम सचमुच बड़ा अजीब है—मऊद. और उसके इन नाम का उसकी उस मुसकराहट से कोई वास्ता नहीं है, जो उस वक्त उसके चेहरे पर नमूदार होती है, जब वह पहाड़ी के नीचे तलहटी में उगे गेहूं के खेत में रेंगते किसी सांप को पकड़ कर अपने तेज चाकू से चीर डालती है. उसकी वह मंद मुसकान उसके सारे चेहरे पर होती है. फिर भी उसके दांत और होठों के कोने इसमें शामिल होने से महरूम रह जाते हैं.

उस रात चांद पूरे शबाब पर था, लेकिन मऊद बोरियत महसूस कर रही थी. हम उस वक्त मीटिओरॉलॉजिकल स्टेशन के बिल्कुल नजदीक थे, जहां हमारे सोने के लिए इंतजाम था. यह कतई गैर-आबाद या यूं कहें कि उजाड़ जगह है. इस स्टेशन के इंचार्ज युवा वैज्ञानिक ज्यूको थे, जिनका सिर और चेहरा-मोहरा किसी घोड़े से मिलता-जुलता था.

—अब सिर्फ दो दिन के बाद इस दलदली इलाके में फसल कटनी शुरू हो जायेगी. करीब एक सौ युवक-युवतियां फसल काटने यहां आ जायेंगे और फिर एक रात मूसलाधार बारिश होगी. जून में मूसलाधार बारिश होती है. है न, ज्यूको? मऊद बोली.

ज्यूको एक झाड़ू को ठीक-ठाक करके बांध रहा था. उसके सामने एक टेबल थी, जिस पर कुछ कार्ड पड़े थे.

—हां, मऊद. ज्यूको ने छोटा-सा जवाब दिया और वह मऊद की जांघों तक खुली टांगों की तरफ देखने लगा, जो चांदनी में हलकी पीली नजर आ रही थीं.

अपनी बात को पूरी करते हुए वह आगे बोला—लेकिन हफ्ते में सिर्फ दो बार. वह भी देन्यूब के किनारे तक. उसके आगे बारिश का एक भी कतरा नहीं गिरता और साल बीत जाता है.

—बारिश तो होती ही है, मऊद कहने लगी और पहले छूटी बात का जोड़ मिलाने लगी. फसल काटने वालियों में से मैं भी एक हूं, यह मुझे भूलना नहीं चाहिए.

—यह क्या कह रही हो, मऊद? तुम फसल काटने वाली टोली में से हो, ऐसा लगता नहीं! तुम उन युवतियों से कहीं ज्यादा सुंदर हो.

—शट अप! वह बोली. मैं उन्हीं में से एक हूं और यहां पनाह लेने आयी हूं.

—पनाह लेने? किसके पास? मेरे पास?

—नहीं, मीहे के पास! मऊद ने मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा. मीहे. . . डाक्टर मीहे, उसने यह कहते हुए अपना सिर झुका लिया.

—लेकिन तुमने तो कहा था, यह कोई इंजीनियर है! ज्यूको मेरी तरफ देखते हुए बोला. आज यह डॉक्टर कैसे हो गये?

—हां, यह इंजीनियर हैं, मऊद बोली. लेकिन तुम इतना भी नहीं समझते कि हमारे यहां की किसान लड़की अच्छी पोशाक पहने अनजान व्यक्ति को डॉक्टर कह कर ही संबोधित करती है.

ज्यूको हंसा. —मैं ऐसा नहीं सोचता था, मऊद, कि जो लड़की पिछले तीन सालों से यहां आ रही है, वह अपनी बोलचाल में अभी तक गंवार होगी.

—तुम्हें बोलने की तमीज है? मऊद ने नाराज होते हुए कहा.

—मैं पिछले तीन सालों से तुम्हारा यह जुमला सुन रहा हूं! ज्यूको ने लापरवाही से कहा. लेकिन फिर भी इसके लिए मैं तुमसे माफी मांगता हूं.

—इसे छोड़ो भी! मैंने कहा. तुम यह क्या किस्सा ले बैठे!

—तुम एक खूबसूरत फव्वारे की तरह हसीन हो, मऊद! ज्यूको बोला. संगमरमर में तराशे हुए किसी दिलकश ख्वाब की ताबीर!

मऊद वहां से उठ कर खिड़की की जाली के पास कुरसी पर जा कर बैठ गयी. चांदनी खिड़की की जाली से छन कर उसके चेहरे पर बेतरतीब बिखर रही थी. मच्छरों की भिनभिनाहट इस शांत माहौल में साफ सुनाई दे रही थी. मऊद खामोश बैठी थी. उसके दोनों हाथ उसके घुटनों पर थे. उसके छोटे बाल किसी लड़के के बालों की तरह संवारे हुए थे. उसके उदास चेहरे पर कु

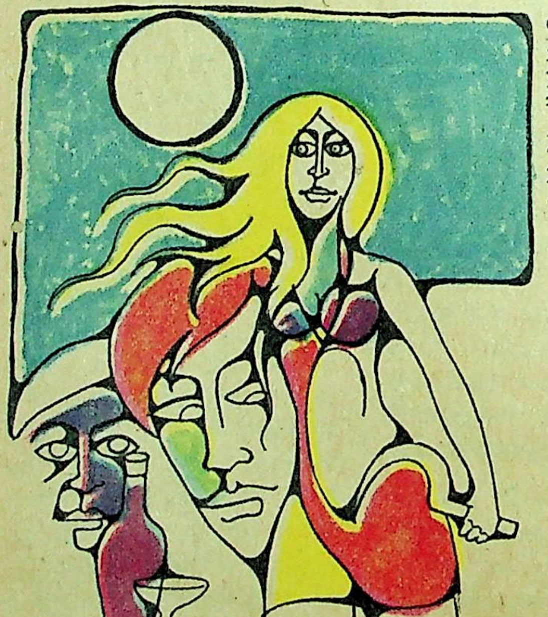

• प्रकाश नबरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचने जैसे आसार थे. मुमकिन है कि वह कुछ सोच नहीं रही हो और सिर्फ मच्छरों की भिनभिनाहट या दूर दलदल में चीख रहे भेड़ियों की आवाज सुन रही हो. वह बहुत सुंदर लग रही थी और उसकी इस सुंदरता को वातावरण ने और भी बढ़ा दिया था. रात का समय. पूरा चांद. शुरू गर्मियों की रात. अकेली युवती. दो युवक. एक कमरा. आधी बची शराब की बोतल. मऊद की जांघों तक खुली टांगें. कंधों तक नंगे हाथ. शरीर के दो गोल दायरे. यह दृश्य किसी भी चित्रकार को उसे कैनवस पर उतारने के लिए मजबूर करने को काफी था.

ज्यूको ने झाड़ू बांध कर दरवाजे की तरफ जोर से फेंक दिया और उस रात पहली बार मऊद के चेहरे में सीधे झांक कर देखा.

—मऊद, तुम संगमरमर में तराशा हुआ एक हसीन ख्वाब हो! किसी कुशल चित्रकार की तूलिका से बनी तसवीर!

—कविता बनी नहीं! मऊद जम्हाई लेते हुए बोली. अब मैं सोऊंगी. मुझे नींद आ रही है. सुबह जल्दी उठ कर कहीं से एक दरांती लानी है.

मऊद चली गयी. गलियारे से उसके कदमों के पड़ने की आवाज आने लगी. और फिर शांति.

★ ★

ज्यूको अपनी जगह से उठा. वह चल कर खिड़की के पास वहीं खड़ा हो गया, जहां अभी कुछ ही देर पहले मऊद बैठी थी.

दूर समुद्र में एक जहाज जा रहा था. उसकी नीली, पीली, लाल रोशनियां दूर से दिखाई दे रही थीं.

—शायद यह जहाज विएना से आया है. . . ज्यूको बोला.

मैं उठ कर खिड़की के नजदीक उसके पास जाने लगा.

—यहां मत आओ. उसने मुझे वहां आने से रोकते हुए कहा. तुम इस जहाज को मत देखो.

कुछ क्षणों के बाद वह फिर बोला —— आओ, हम इस बोतल को खत्म कर लें.

मैंने बोतल की तरफ देखा.——मैं ब्रांडी पसंद करता हूं. आप ही इसे खत्म कर दें.

वह खिड़की से हट कर मेरे सामने मेज पर आ कर बैठ गया. उसने बोतल की शराब को गिलास में डाला और दो बार में पी गया.

—यह तुम्हें कहां से पकड़ लायी? . . . मेरा मतलब है, मऊद. . अगर नहीं बताना चाहते हो, तो कोई जरूरत नहीं. . वह पूछने लगा.

मऊद साथ के कमरे में थी. वह कुछ गुनगुना रही थी. शायद कपड़े बदल रही थी.

—कल रात मुझे ठीक से नींद नहीं आयी. सुबह उठा, तो सारे शरीर में चिपचिपाहट-सी लगी. ऐसे वक्त में बियर हो, तो नींद का लुत्फ आ जाता है. मैं यहां कभी बियर लाया ही नहीं.

वह बोले जा रहा था. और वह शायद अब तक यह भी भूल गया था कि उसने मुझसे कोई सवाल भी किया था, इसलिए मैंने भी जवाब देना मुनासिब नहीं समझा. सिर्फ

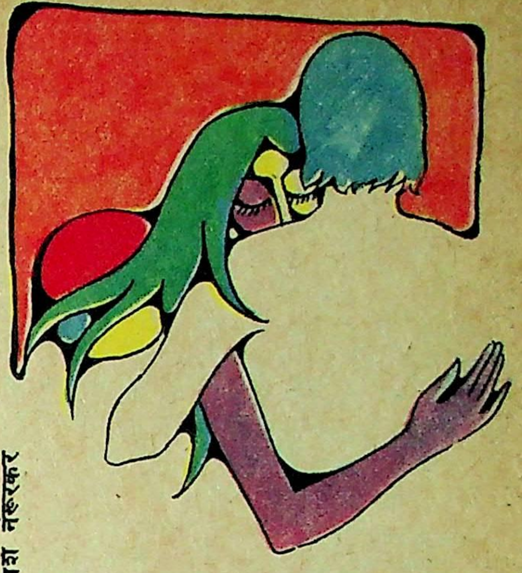

● प्रकाश नेकरकर

बोलते हुए उसे देखता रहा.

—मुझे मौसम-संबंधी पूर्व-सूचना देने के लिए एक फर्लांग दूर खुले में रखी प्रूफ स्टिक्स देखने जाना था. मैंने घोड़े पर जीन कसी और चल दिया. लौटा, तो घोड़ा मऊद के कमरे की खिड़की के पास से गुजरा. मैंने घोड़ा रोक लिया. मऊद पीठ के बल सो रही थी. उसके शरीर पर एक भी कपड़ा नहीं था और उसके पीछे का हिस्सा दिखाई नहीं दे रहा था.

——उस वक्त तुम्हारे शरीर में सरसराहट होने लगी होगी! मैंने उसकी बातों में पहली बार दिलचस्पी लेते हुए कहा.

—नहीं, बेवकूफ! उसने मुझे डांटा. मैं वैसा आदमी नहीं हूं. तुम मऊद से पूछना. वह पिछले तीन साल से मुझे जानती है. पिछली गर्मियों का ही तो जिक्र है कि मैंने. . .

अभी उसने इतना ही कहा था कि किसी के आने की खड़खड़ाहट हुई.

—एक मिनट! वह बोला.

—कोई बात नहीं, मैंने कहा.

उसने आने वाले को पहचानते हुए आवाज दी— इंको इजारो?

दूसरे ही क्षण पचास-पचपन साल का एक व्यक्ति कमरे के अंदर आ खड़ा हुआ.

—तुमने कैसे जाना कि मैं आ गया हूं? आगंतुक झेंपता-सा बोला.

—वायदा किया था. हमें-तुम्हें एक-दूसरे के बगैर चैन कहां! अभी तो मैं कुछ पढ़ना चाहता हूं. मेरे लिए कुछ पढ़ने को लाओ! ज्यूको बोला.

—प्रेम-संबंधी?

—नहीं, यह जरूरी नहीं. कुछ भी ले आओ.

—मैं साथ में. कुछ खाने के लिए भी लाऊंगा. आज शाम गांव से कुछ चीजें खरीद कर लाया हूं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—अच्छा हुआ, इजारो तुम आ गये. अब रात अच्छी कटेगी.

इजारो वापस चला गया.

—हां, तो मैं एक घटना सुना रहा था. ज्यूको मेरी तरफ देख कर बोला. पिछले जून की ही बात है. फसल काटने वाले आ गये थे और यहां से थोड़ी दूर लगाये गये खेमों में रात को सो रहे थे. मैं और मऊद सामने बरामदे में बैठे थे. बत्ती बंद थी. हम दोनों खामोश थे. उन दिनों मेरे विभाग का एक अफसर मुआयने के लिए यहां आया हुआ था. वह अंदर कमरे में सो रहा था. वह कहीं जाग न जाये, इसलिए हम बहुत आहिस्ता बातें कर रहे थे. मेरी और मऊद की आंखें सामने गेहूं के खेतों की तरफ थीं. पके हुए गेहूं की बालियों और चांद की किरणों ने मिल कर सब तरफ हलका पीला रंग बिखेर दिया था. एकाएक मुझे एक मच्छर ने पांव में काटा और मैं पांव सहलाने लगा. तभी मऊद ने मेरा हाथ जोर से झिंझोड़ा और सामने खलिहान की तरफ इशारा किया. मैंने गिनती बोलनी शुरू की, तो मऊद ने अपना हाथ मेरे मुंह पर रख कर मुझे ऐसा करने से रोक दिया. लेकिन मैं मन-ही-मन गिनता रहा— तीन, चार, पांच, और फिर तीन और कुल मिला कर आठ लड़कियां. सब-की-सब निर्वस्त्र, एकदम नंगी, जैसे मऊद कल रात को थी. वे खेमों से निकल कर आयी थीं और एक-दूसरे का पीछा कर रही थीं. मऊद और मैं चुपचाप बैठे उन्हें देखते रहे. वे सब हवा में अपने हाथ हिला रही थीं, मानो चांदनी में नहा रही हों. उनका यह नृत्य थोड़ी देर तक चलता रहा. उसके बाद वे नदी की तरफ चली गयीं.

—'आओ, हम भी देन्यूब की तरफ चलें.' मऊद हाथ पकड़ कर मुझे उठाती हुई बोली.

—हम दोनों देन्यूब के किनारे आ गये. चांद ऐसे ही चमक रहा था, जैसे आज वहां हमने देखा, कि खेमों से निकल कर कुछ युवक आये और उनमें से एक-एक को अपने साथ खेतों में ले गये.

इतना कह कर वह चुप हो गया. मैं उसे गौर से देखने लगा. उसकी पहली बातचीत को सुन कर उससे कोई सवाल करने की हिम्मत मुझमें नहीं थी.

वह फिर कहने लगा— अगले दिन इस घटना को ले कर मैं मऊद से बातचीत करना चाहता था, लेकिन उसने सिर्फ चंद जुमले कह कर आगे बात करने से इनकार कर दिया.

—क्या कहा था मऊद ने? मैंने पूछा.

—वह कहने लगी, तुम मर्दजात इस बात को क्या जानो! जब कोई स्त्री मर्द की जरूरत महसूस करती है, तो उसका सारा शरीर एक खास उन्माद से भर उठता है. तब उसे अपने समर्पण का जरा भी भय नहीं होता, बल्कि अपने को समर्पित करके खुशी होती है. . .मुझे अच्छी तरह याद है, उस दिन सवेरे मैं खेतों की तरफ गया था. मैंने देखा कि आठ-दस जगह डेढ़-दो गज भूमि में उगी खड़ी गेहूं की बालें जमीन पर आ रही हैं.

—क्या मैं अंदर आ जाऊं?

इजारो की आवाज सुनाई दी. मैंने कोई जवाब नहीं दिया. ज्यूको ही बोला—आ क्यों नहीं जाते? दरवाजा तो नहीं था. फिर इजाजत की क्या जरूरत थी! मैं किसीकी बुराई नहीं कर रहा हूं.

इजारो अंदर आ गया. वह मुसकरा रहा था. कद का मोटा शरीर, खाकी ड्रिल की पैंट, जिसमें बहुत लापरवाही से डाली हुई. हाथ में कोई सस्ते का उपन्यास और एक टोकरी, जिसमें कुछ फल खाने की दूसरी चीजें, एक बोतल या शायद एक और

हम सबकी नजरें दरवाजे की तरफ थीं, जहां मऊद आ खड़ी हुई थी. मऊद को वहां आया देख कर इजारो बोला— तुम्हें नींद नहीं आती है? खैर, बड़ी मेहरबानी की, जो यहां आयीं.

मऊद ने पायजामा पहन रखा था. उसके हाथ जैकेट की जेबों में थे. बिना लिपस्टिक के होठ और रातें बालों से वह अपनी असली उम्र से कम उम्र नजर आ रही थी.

—आओ मऊद, ज्यूको बोला. सामने चारपाई बैठ जाओ. और फिर मुझसे कहने लगा—अभी थोड़ी पहले यह लड़की यहां बैठी ऊंघ रही थी. और अब देखो

मैं हंसने लगा, तो वह आगे बोला— थकान करने के लिए इसे आधा घंटे का वक्त काफी है.

इजारो खुशामदी लहजे में बोला— मऊद सुंदर लड़की चिराग ले कर ढूंढने पर भी नहीं मिलेगी.

—शट अप! मऊद महीन आवाज में बो वैसे मेरे सामने मेरी तारीफ करते नहीं थकते और मुझे आये आज छह रोज हो गये, किसी दिन आ कर पूछा कि कैसी हो, मऊद?

—मैं तो बुखारेस्ट गया हुआ था. उसके बाद एक दोस्त से मिलने पास के गांव चला गया. अगर होता, तो तुम्हें पूछने न आता? इजारो ने सफाई

—अच्छा भई, बोतल निकालो! ज्यूको बात का सा बोला.

इजारो ने टोकरी से बोतल निकाली और मऊद तरफ देखा, जो अब रूठी हुई-सी चारपाई पर जा बैठ गयी थी.

—मैं अब पीना चाहता हूं. कुछ सुनना नहीं चाह ज्यूको ने मऊद और इजारो से न बोलने का आग्रह क हुए इजारो से पूछा—एक ही बोतल ले कर चले हो

—नहीं तो! अभी एक और है.

—तो उसे भी बाहर निकालो. मैं अब पीना गाना चाहता हूं. तुम्हारे साथ रात बहुत अच्छी बीते

* *

ज्यूको और इजारो पीने लगे. मऊद और मैं खामो बैठे थे. ज्यूको ने मऊद से कहा— मऊद, जाओ, सो जा

—और यह क्या करेंगे? ज्यूको ने मेरी तरफ इशा किया. मऊद, इन्हें तुम अपने साथ ले जाओ. मैं जा हूं, तुम्हें इनकी जरूरत है. ठीक उसी पिछले जून की रा की तरह, जब लड़कियां खेतों में नंगी. . . चांदनी रात ओह . . . बस, जाओ. चली जाओ. . . जाओ!

ज्यूको बहकने लगा था.

मऊद मेरे पास आ खड़ी हुई. मैंने उसका हाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया.—मऊद, क्या तुम सचमुच चाहती हो कि मैं तुम्हारे साथ. . .?

मऊद मुझे अपने साथ दूसरे कमरे में ले गयी.

खेतों में सरकंडे हिल रहे थे. कमरे की खिड़की में चांद उतर आया था. ज्यूको और इजारो अपने कमरे में नाच-गा रहे थे.

—वे यहां नहीं जायेंगे. मऊद ने मेरे एकदम करीब आ कर आहिस्ता से अपने नथुनों की गर्म सांस छोड़ी. दूसरे ही क्षण वह मेरे सीने में समा गयी. मैंने उसे चूम लिया. उसके भीगे चेहरे को चांद ने चांदनी के मुलम्मे से और ज्यादा चमकदार बना दिया था.

—मीहे, तुम नहीं जानते, मैं भी ज्यूको की तरह तनहाई का शिकार हूं.

—तनहाई?

—हां, मीहे. उसे औरत नहीं चाहिए. उसे तो आदमी. . .

मैं मऊद को अपने शरीर में महसूस कर रहा था. वह लावे की तरह जल रही थी.

—आज की रात चांद बहुत सुंदर है. ये खेत जो मुझे रात को काटने को दौड़ते हैं, आज बेहद अच्छे लग रहे हैं. और ज्यूको का यह गीत जिसके बोल साफ सुनाई नहीं दे रहे हैं, जिसे वह रोज ही रात को गाता है, मुझे पसंद नहीं था, आज अच्छा लग रहा है. ज्यूको, गाते रहो, सारी रात. अपने-अपने साथी. मीहे, तुम्हारा शरीर कितना गर्म है? तप रहा है. मैं बेहद खुश हूं. . . बेहद.

दूर सरकंडों के पीछे कोई लोमड़ी चिल्ला रही थी. लावा पिघल गया था. रात धीरे-धीरे सरक रही थी. मऊद मेरी बांहों में गहरी नींद सो गयी थी. मैंने धीरे से उसपर चादर डाल दी और सो गया.

* *

सवेरे ज्यूको के चिल्लाने की आवाज सुन कर मेरी आंखें खुल गयीं. मऊद कमरे में नहीं थी.

—क्या किस्सा है? तुम इस तरह रो क्यों रहे हो? मैंने ज्यूको को फूट-फूट कर रोते हुए देख कर पूछा और घबरा कर बिस्तर से उठ बैठा. तभी कहीं से मऊद कमरे में आ गयी. उसके हाथ में एक दरांती थी. ज्यूको के मुंह से अब भी ब्रांडी की बू आ रही थी.

मऊद को वहां आया देख ज्यूको रोते हुए चिल्लाया —तुम्हें हमेशा कुछ-न-कुछ काटने के लिए चाहिए. यह तीसरा आदमी है, जिसे तुम यहां लायी हो. कुछ मालूम भी है, कल रात इजारो मर गया. . . !

—इजारो मर गया!

—हां, आधी रात के बाद वह एक बोतल और लेने बस्ती में गया था. नशे में रास्ता भूल कर दलदल में चला गया. इजारो डूब गया. इजारो. . .

ज्यूको रो रहा था. मऊद आश्चर्य से उसे देख रही थी, मानो उसे विश्वास न हुआ हो. मैं एक गुनहगार की तरह उन दोनों के बीच में खड़ा था. खामोश. ज्यूको बाहर चला गया. मैं और मऊद कमरे के कैनवस पर चित्रलिखित-से खड़े रह गये. □□□

(अनुवाद : हमीदुल्ला खां)

दो लघुकथाएं

महल

हजरत हातिम एक बार मदीना शरीफ में पधारे. वहां देखा कि कुछ लोगों ने बड़े-बड़े आलीशान मकान, बल्कि महल, बनवा रखे हैं. आपने लोगों से पूछा—यह शहर किसका है?

उन्होंने कहा—यह अल्लाह के रसूल का शहर है.

हजरत हातिम ने कहा—मैं उस महल में नमाज पढ़ना चाहता हूं, जिसमें अल्लाह के रसूल रहते थे.

लोगों ने कहा—उनका महल कहां था! हुजूर तो एक कच्चे मकान में रहते थे, जिसकी दीवारें खजूर की शाखों पर मिट्टी थोप कर बनायी गयी थीं.

हातिम ने पूछा—तो फिर पैगंबर के खलीफाओं के महल कहां हैं?

जवाब मिला—उनमें से किसी ने महल नहीं बनाया.

इस पर हातिम ने बिगड़ कर फरमाया—तो फिर तुमने अल्लाह के रसूल के शहर में नमरूद व फिरऔन की तरह ये आलीशान महल क्यों खड़े कर रखे हैं?

लोग शर्मिंदा हो गये और उनसे कोई जवाब न बन पड़ा. □

खाक

हजरत दाऊद ताई के पास एक नौकरानी थी, जो आपकी सेवा करती थी. एक दिन उसने हजरत से अर्ज की—अगर आप इजाजत दें तो आज थोड़ा-सा गोश्त पका लूं!

आपने फरमाया—हां पका लो. मेरा भी जी चाहता है.

उसने खूब अच्छी तरह गोश्त पकाया और आपके सामने ला कर रख दिया तो आपने पूछा—फलां यतीमों का क्या हाल है?

लौंडी ने कहा—बेचारे पहले की तरह खस्ता-हाल हैं.

आपने फरमाया—यह गोश्त ले जाओ और उन्हें खिलाओ.

लौंडी ने अर्ज किया—इतना अरसा हो गया, आपने गोश्त नहीं खाया. आप खा लें.

हजरत दाऊद ताई ने फरमाया—यतीमों का खाया हुआ आसमान पर पहुंचेगा और मेरा खाया हुआ खाक में मिल जायेगा. □

(प्रस्तुतीकरण : हसन जमाल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

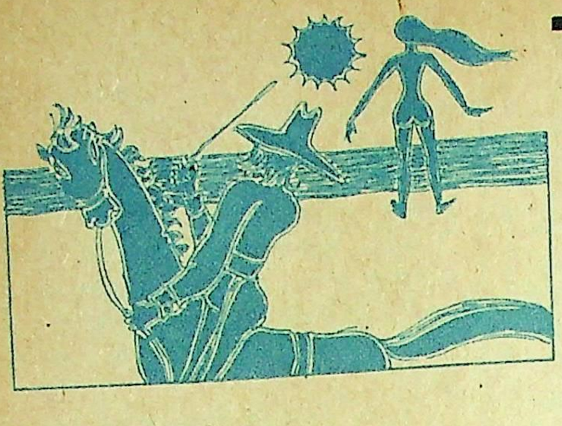

प्यार की जीत

• मेरिन प्रेहा

गर्मियां आधी बीत चुकी थीं. अचानक दो घुड़सवार मक्की के ऊंचे-लंबे खेत से बाहर निकल कर मैदान में आये दोनों एक-एक अन्य घोड़े को पीछे बांधे आ रहे थे. एक-दूसरे के पास आ गये, तो उन्होंने लगामें ढीली छोड़ दीं. ये दो जवान लड़के थे, जो घोड़ों को चराने के बाद उन्हें वापस ला रहे थे.

—टीकन, क्या तुम आशिम को जानते हो?

—हां, जानता हूं. . .वह बड़े डील-डौल वाला पुरुष, जो मिल घाटी के निकट रहता है. लेकिन तुम यह क्यों पूछ रहे हो?

—सुनो, टीकन, जो बात मैं तुम्हें बताने जा रहा हूं उसे और किसीसे मत कहना, यदि तुमने किसीको बताया तो मैं तुम्हें मार गिराऊंगा! दुगू ने कहा.

—सुनो, यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है, तो फिर मुझे कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं.

—अच्छा, तो सुनो. एक दिन मैं घोड़ों को चराने के लिए जंगल में गया. मैं घास पर लेटा-लेटा सो गया. जब मैं जागा तो घोड़े जा चुके थे. मैं जरा भी चिंतित नहीं हुआ, क्योंकि मुझे मालूम था कि घोड़े घर चले गये हैं. पहले भी वे ऐसा ही करते रहे हैं. मैं उठा और उनकी टापों के निशान का पीछा करता चल दिया. मैं गांव के बाहर से होता हुआ मिल घाटी में पहुंच गया.यह पिछले सप्ताह मध्यान्ह के बाद की बात है. गर्मी बहुत थी. मेरी इच्छा हुई कि मैं मिल नदी में बड़ के वृक्ष के पास स्नान कर अपने शरीर को शीतल करूं. जब मैं वृक्षों के निकट पहुंचा, तो मुझे पद-चापों की ध्वनि सुनाई दी. मैं यह देखने के लिए, कौन है, रुक गया. जब मैंने एक स्कर्ट की झलक देखी, तो एक झाड़ी के पीछे छिप गया. वह एक लड़की थी. पालीसी की पुत्री ड्रीना. वह बाग के पिछवाड़े की ओर से आयी थी और तट पर खड़ी सूर्य की ओर ताकती रही. तुम उससे परिचित हो न?

—हां, मैं उसे जानता हूं. वह युवती है. . .अठारह वर्ष की. वह इस बार के सामाजिक नृत्य में प्रथम बार सम्मिलित हुई थी.

—हां, हां, वही. मैंने सोचा, वह शायद स्नान करना चाहती है. मैं झाड़ी के पीछे ही छिपा रहा. और जानते हो, मैंने क्या देखा? उसने अपने बाल खोल दिये और फिर उनको अपने सिर के ऊपर बांध दिया. कितनी सुंदर जुल्फें थीं वे! मैंने उस जैसी रेशमी जुल्फें और किसीकी नहीं देखीं. मेरा हृदय जोर-जोर से धड़कने लगा. मैंने वहां से भाग जाने की सोची. मुझे कुछ डर-सा लगा. . . मैंने किसी भी लड़की को पहले इतने निकट से कभी नहीं देखा था. उसने अपने कपड़े उतारने शुरू किये. उसने अपना ब्लाउज और स्कर्ट उतार दिये. न मालूम लड़कियां एक के नीचे एक इतने सारे वस्त्र कैसे पहन लेती हैं. मेरा दिल इतने जोर से धड़का, लगता था इसकी गति रुक जायेगी. सूर्य के प्रकाश में उसका शरीर चमक रहा था. वह सुंदर थी. फिर वह पानी में उतर गयी. फिर वह खिल-खिला कर हंसी और अपने शरीर पर पानी के छींटे मारती रही. परंतु वह कुछ सहमी-सहमी-सी लग रही थी. जब उसने पुनः कपड़े पहन लिये, मैं वहां ठगा-सा खड़ा रहा. फिर मैं अपने घर की ओर चल दिया. मैं नहीं जानता, मुझे क्या हो गया था. सारी रात मैं नदी तट पर खड़ी निर्वस्त्र ड्रीना के स्वप्न देखता रहा. कई बार मेरी नींद खुली, तो देखा, मैं पसीने में नहाया हुआ हूं. . .

टीकन ने हंसते हुए कहा—अच्छा, आगे क्या हुआ?

कई दिनों तक मैं उद्विग्न-सा रहा. बार-बार वह जलपरी के रूप में मेरे स्वप्नों में आती रही. तुम तो जानते ही हो कि इसके पहले मैंने किसी लड़की को नहीं चाहा. परंतु उससे मैं प्रेम करने लगा हूं. मैं सोचता रहा कि किसी संध्या को उसके घर जाऊं, मैं कल रात उसके यहां गया था. उसके घर के गेट के पास जा कर मैंने अपनी उंगली मुंह में दबा कर सीटी बजायी. घर के अंदर से कोई ध्वनि सुनाई न दी. मैंने फिर सीटी बजायी, परंतु कुछ भी नहीं हुआ. घर के अंदर अंधकार था. मैंने कुछ क्षण प्रतीक्षा करके फिर सीटी बजायी. वह धीरे-धीरे गेट के निकट आयी और उसने उसे खोल दिया. जब उसने मुझे देखा, तो डर कर पीछे हट गयी.

—आशिम, क्या तुम हो? उसने डरे-डरे स्वर में पूछा, फिर शीघ्रता से गेट बंद किया, और दौड़ कर बाग में चली गयी.

—तुम फाटक क्यों बंद कर रही हो? मैंने आहिस्ता से पूछा.

—कौन हो तुम? उसने फिर पूछा.

—मैं दुगू हूं. . .मैरियुता का पुत्र. पहाड़ी के उस पार से आया हूं.

उसी समय एक लंबा-चौड़ा साया मेरे निकट सरक आया.

—कौन हो तुम? उस साये ने पूछा. क्या करने आये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो यहां ? फिर वह लड़की से बोला—तुम यहां फाटक पर क्या कर रही हो? मैंने तो सीटी नहीं बजायी.

—टीकन, जब मैंने उस पुरुष को मुझसे यूं प्रश्न करते सुना, तो लगा कि कोई घर का सदस्य होगा और मुझे शर्म महसूस हुई. मैं शुभ-रात्रि कह कर जाने वाला था, परंतु जब मैंने उसे लड़की से वैसी बातें करते सुना, तो मेरे शरीर में कंपकंपी पैदा हो गयी. यह भय नहीं था, क्योंकि मैं किसीसे नहीं डरता. दिल किया कि उछल कर उसकी गरदन पकड़ लूं. मैंने कहा—मैं मैं हूं. परंतु तुम कौन हो?

—बको मत! भाग जाओ यहां से! उसने कहा. कहीं तुम्हारी खाल तो नहीं खुजा रही?

—आशिम, इसे जाने दो! लड़की ने कहा.

जब मैंने यह सुना, तो मेरा क्रोध कुछ ठंडा हो गया. मैंने उस आदमी की ओर देखा और कहा—तो तुम लड़ना चाहते हो?

—मूर्ख लड़की, तुम अंदर जाओ! उसने लड़की से कहा. परंतु वह वहां से नहीं हिली. आशिम मेरी ओर मुड़ा और मेरी बाज़ू पकड़ते हुए उसने मुझे धक्का दिया. परंतु मैंने अपनी बांह छुड़ा ली और पूरी शक्ति से उस पर प्रहार किया.

—आशिम? लड़की बाड़ के पीछे से फुसफुसायी, मैं पिता को बुला लूंगी!

—मैं लड़ना पसंद नहीं करता. मैंने कहा. मैं ड्रीना से अवश्य मिलूंगा. यदि तुम्हें यह पसंद नहीं, तो तुम मुझे बता दो कि तुम्हें कहां मिलूं?

टीकन, मुझे लगा कि वह लड़की मुझे चाहती है. आशिम ने मुझसे रविवार को प्रातः बड़ के वृक्ष के निकट खेत में मिलने को कहा. उसने मुझे धमकी दी कि उसने यदि फिर मुझे वहां देखा, तो मेरी हड्डी-पसली एक कर देगा.

—ड्रीना, तुम अंदर जाओ, मैंने लड़की से कहा. हम रविवार को लिसांड वाईशू के विवाह के अवसर पर मिलेंगे. जरूर आना.

फिर मैं और आशिम वहां से चल दिये. वह बुदबदाता रहा—मैं तुम्हारे शरीर की एक-एक हड्डी तोड़ दूंगा.

मैंने कहा—देखेंगे, कौन किसकी हड्डी तोड़ता है. तो कल हमारा द्वंद्व है. मेरा विश्वास है कि वह अपनी सहायता के लिए किसीको साथ अवश्य लायेगा.

—दुगू, हम दोनों इकट्ठे जायेंगे. देखेंगे, वह सहायता के लिए किसे साथ लाता है. हां, एक बात बताओ, क्या तुम लड़की को सचमुच चाहते हो?

—हां, मैं उसे चाहता हूं. कल रात जो कुछ उसने कहा, मुझे अच्छा लगा.

हम कल घोड़ों पर वहां जायेंगे. मैं तुम्हें कल सबेरे लेने आऊंगा.

★ ★

दुगू भी घर की ओर चल दिया. वह समझ नहीं पा रहा था कि जब से उसने उस लड़की को नहाते देखा था, उसे क्या होता जा रहा था. घर के निकट पहुंचने पर उसे अपने पिता का कर्कश स्वर सुनाई दिया—अरे देखना, गिर न पड़ना कहीं! लगता है, तुम घोड़े पर सो रहे हो!

—कहां गये थे? पिता ने पूछा.

—रावेस्का टीकन मेरे साथ था.

—अच्छा जाओ, भोजन कर लो. तुमने सबेरे से कुछ नहीं खाया. उसके पिता बोले.

लड़का पहले पोर्च की सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर बैठ गया, फिर एकाएक उठ खड़ा हुआ और घर के अंदर चला गया. वह बिस्तर पर लेट गया और अपनी बांहें अपने सिर के नीचे रख एकटक छत की ओर ताकता रहा.

—खाना नहीं खाओगे क्या, दुगू? मां ने रसोई में से आवाज दी.

—नहीं मां, मुझे आज भूख नहीं है.

उसकी दृष्टि छत पर से खिड़की की ओर मुड़ गयी. सूर्य अस्त हो गया था और बाग में लगे सेव के वृक्ष का साया कमरे के अंदर तक फैल गया था. बाद में जब काफी अंधकार हो गया, तो दुगू ने अपने मित्र को फाटक पर सीटी बजाते सुना. फिर उसका स्वर सुनाई पड़ा—दुगू! ओ दुगू!

दुगू उठा, उसने दरवाजे के पीछे से अपनी छड़ी हाथ में ली और अंधेरे बाग की ओर चल दिया.

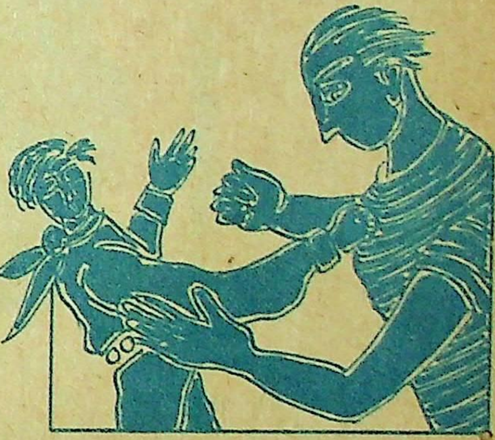

● प्रकाश नैलकर

—मैंने आशिम को ड्रीना के घर की ओर जाते देखा था. टीकन ने बताया. तुमने उसे आशिम से बात करने को मना किया था या नहीं? स्त्रियों का कोई विश्वास नहीं. वे बाहर आ कर उसी पुरुष से बात करेंगी, जो सबसे पहले उन्हें वहां खड़ा मिलेगा.

—नहीं, वह ऐसा नहीं करेगी. दुगू बोला.

—सुनो, जो मैं कह रहा हूं वह ठीक है. पर क्या तुमने उसे कहा था कि तुम आज रात आओगे?

—नहीं. मैं चाहता हूं कि देखूं, वह क्या करती है. चलो, पता लगायें आशिम को वह कब से जानती है.

—आशिम हाल में ही सेना से वापस आया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना भविष्य सुनिश्चित करायें

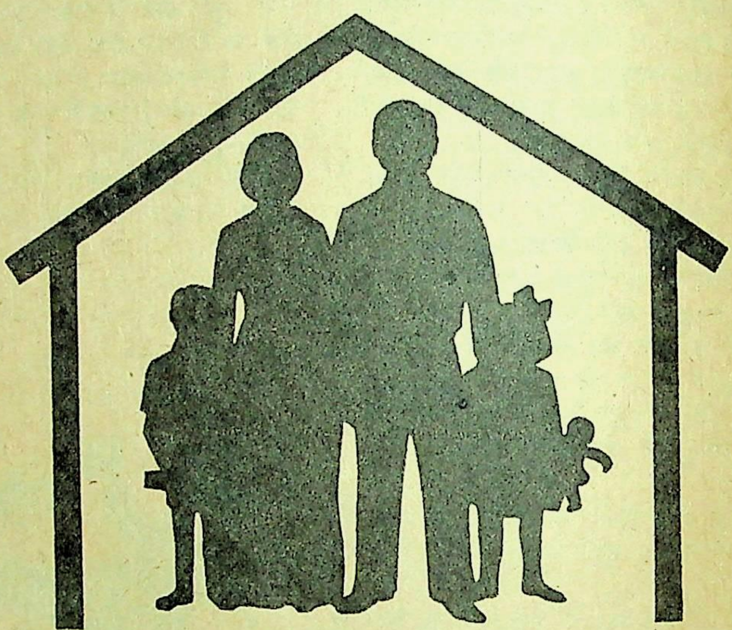

सुरक्षित, सहायक, मित्र-बैंक में बचत की आदत डालें।

आज जो सपना है, कल साकार हो सकता है।

हमारी काउन्टर पर उपलब्ध पुस्तिकाओं से एक अच्छी आदत अपनावें।

दि चार्टर्ड बैंक

अमृतसर, बम्बई, कलकत्ता, कालीकट, कोचीन, दिल्ली, कानपुर, मद्रास, नई दिल्ली, वास्को-डा-गामा

स्टैण्डर्ड एण्ड चार्टर्ड
बैंकिंग ग्रुप का एक सदस्य

sekai/cb/282

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और, तुम जाओ और देखो कि क्या वह अब भी उससे बातें कर रही है?

—वह ऐसा नहीं कर सकती. यदि तुम चाहो तो इस बात पर शर्त बद सकते हो.

—मैं शर्त नहीं बदा करता. तुम कब से उसे जानते हो?

—मेरा खयाल है, मैंने एक बार उसके साथ नृत्य किया था.

—मैं उस तरफ से गुजरूंगा. . .मेरी प्रेयसी बहुत दूर रहती है. . .जंगल के निकट. . .मैं देखता जाऊंगा. और कोई विशेष घटना घटी, तो तुम्हें कल प्रातः बता दूंगा. अच्छा, मैं चलता हूं. मैं घोड़ों के साथ कल सबेरे तुम्हें लेने आऊंगा.

दुगू आहिस्ता-आहिस्ता घर की ओर चल दिया. घर आ कर कुछ देर बाद दुगू बिस्तर में लेट गया. उसे नींद आ गयी.

* *

अगले प्रातः जब दुगू जागा, तो उसने पंखों की फड़फड़ाहट सुनी और फिर एक मुर्गे की लंबी कुकड़ूं-कूं. नये दिन का हर्ष मन में लिये वह उठ खड़ा हुआ. उसे याद आया आज रविवार है और उसे आज अपनी प्रेयसी से विवाह के अवसर पर मिलना है. उसने अपनी सफेद पतलून पहनी और नंगे पांव बाग में चला गया.

—अभी तो बहुत जल्दी है, टीकन! उसने अपने मित्र को घोड़े पर आते देख कर कहा.

—तो क्या हुआ! वह तुम्हारी प्रतीक्षा थोड़े ही करेगा! आओ, चलें. टीकन ने कहा.

—ऐ लड़को, कौन प्रतीक्षा कर रहा है तुम्हारी? दुगू के पिता बोले.

—कुछ नहीं चाचा. . .हम खरगोशों का शिकार करने जा रहे हैं. .टीकन ने झूठ बोला.

—गरमी में खरगोशों का शिकार? . . .

—खैर, जहां भी जाओ, होशियार रहना, वरना टीकन, मैं तुम्हारी खबर लूंगा!

टीकन हंस पड़ा. दुगू ने जल्दी से जूते पहने और अस्तबल से दोनों घोड़ों को बाहर लाया. उनमें से एक पर सवार हुआ और दूसरे को पीछे से पकड़ कर वह भाग पड़ा.

—हां, टीकन, क्या देखा कल रात तुमने?

—सुनो, आशिम ने कुछ देर बेकार सीटी बजायी. फिर वह कुछ दूर चला गया. वापस लौट कर उसने पुनः सीटी बजायी. लड़की बाहर आयी, परंतु उसने फाटक नहीं खोला. वह बाड़ के साथ खड़ी रही.

—बाहर आओ, मुझे तुमसे बातें करनी हैं. आशिम ने उससे कहा.

—नहीं, मैं नहीं आती. मुझे डर लगता है. तुम मुझे पीटोगे. उसने उत्तर दिया.

परंतु उस बदमाश आशिम ने बड़ी मीठी आवाज में कहा—क्यों, मैं क्यों ऐसा करूंगा. मूर्खता मत करो. तुम सोचती हो कि मैं उस मैरियुत्ता के पुत्र के कारण तुमसे नाराज हो गया हूं. . . तुम्हारा कब से परिचय है उससे?

लड़की ने उत्तर दिया—अंकल आशिम, मां मुझे रात को इतनी देर बाहर नहीं ठहरने देती, इसलिए मैं अंदर जा रही हूं.

जब आशिम ने उसे 'अंकल' कहते हुए सुना, तो उसके तन-बदन में आग लग गयी. वह गाली देते हुए फाटक की ओर लपका और चिल्लाया—कुतिया, तू मुझे अंकल आशिम कहती है. . !

दुगू ने अपने घोड़े को एड़ लगाते हुए कहा—बस . . .बस, मैं उस साले का सिर खोल दूंगा!

—संभलना, कहीं वह पहले तुम्हारा सिर न फोड़ दे! घोड़ों की टापों की ध्वनि के दरम्यान टीकन चिल्लाया—मैं तुम दोनों को लड़ने दूंगा.

—तुम चाहो तो वापस जा सकते हो! दुगू गुर्राया.

घोड़े बहुत तेज दौड़ने लगे. पीछे धूल के बादल उड़ाते हुए कुछ देर बाद वे पथ को छोड़ खेतों में घुस आये. दोनों घुड़सवार ऊंचे बड़ के वृक्ष के निकट आ गये. दुगू चिल्लाया—देखो, वह अकेला नहीं है!

—तो क्या फर्क पड़ता है! औरों को मैं संभाल लूंगा! तुम तैयार हो जाओ.

तेजी से पास आ कर वे वृक्ष के चक्कर काटने लगे. लगा, दोनों बावले हो गये हैं. अपनी लाठियों का सहारा लिये आशिम तथा अन्य दो व्यक्ति वृक्ष के निकट खड़े थे. वे बड़े सहज भाव से दोनों घुड़सवारों के करतब देखते रहे. एकाएक दोनों ने लगामें खींचीं और अपने घोड़ों पर से नीचे कूद पड़े. दुगू ने अपनी लाठी फेंक दी और तेजी से आशिम की ओर बढ़ा. जब उसने दुगू को अपनी ओर आते देखा, तो वह तनिक हिला और उसने अपनी लाठी और कस कर पकड़ ली. जब दुगू कुछ कदम दूर रह गया, तो आशिम पीछे हट गया और दोनों उंगलियों के बीच लाठी को घुमाने लगा.

—पीछे हट जाओ, वरना तुम्हें खत्म कर दूंगा! आशिम ने गंभीर स्वर में आगे बढ़ते हुए दुगू को चेतावनी दी.

दुगू हिला-डुला नहीं. उसने अपना हैट उतार लिया और मुसकराते हुए कहा—मार कर तो देखो! और उसने अपना सिर आगे कर दिया. आशिम जड़वत खड़ा था—मारते क्यों नहीं, आशिम?

—मारो साले को! आशिम का एक साथी चिल्लाया. दुगू उसकी ओर बढ़ गया—अच्छा, तुम मार कर देखो!

आशिम ने अपनी लाठी फेंक दी और उसे एक गाली दी. —तो तुम डर गये हो! उसने ऊंचे स्वर में कहा. अपनी सहायता के लिए टीकन को साथ लाये हो!

दुगू ने मुख पर मुसकान लाते हुए पूछा—तुमने मुझे मारा क्यों नहीं? डर गये?

आशिम ने महसूस किया कि दुगू उसकी खिल्ली उड़ा रहा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

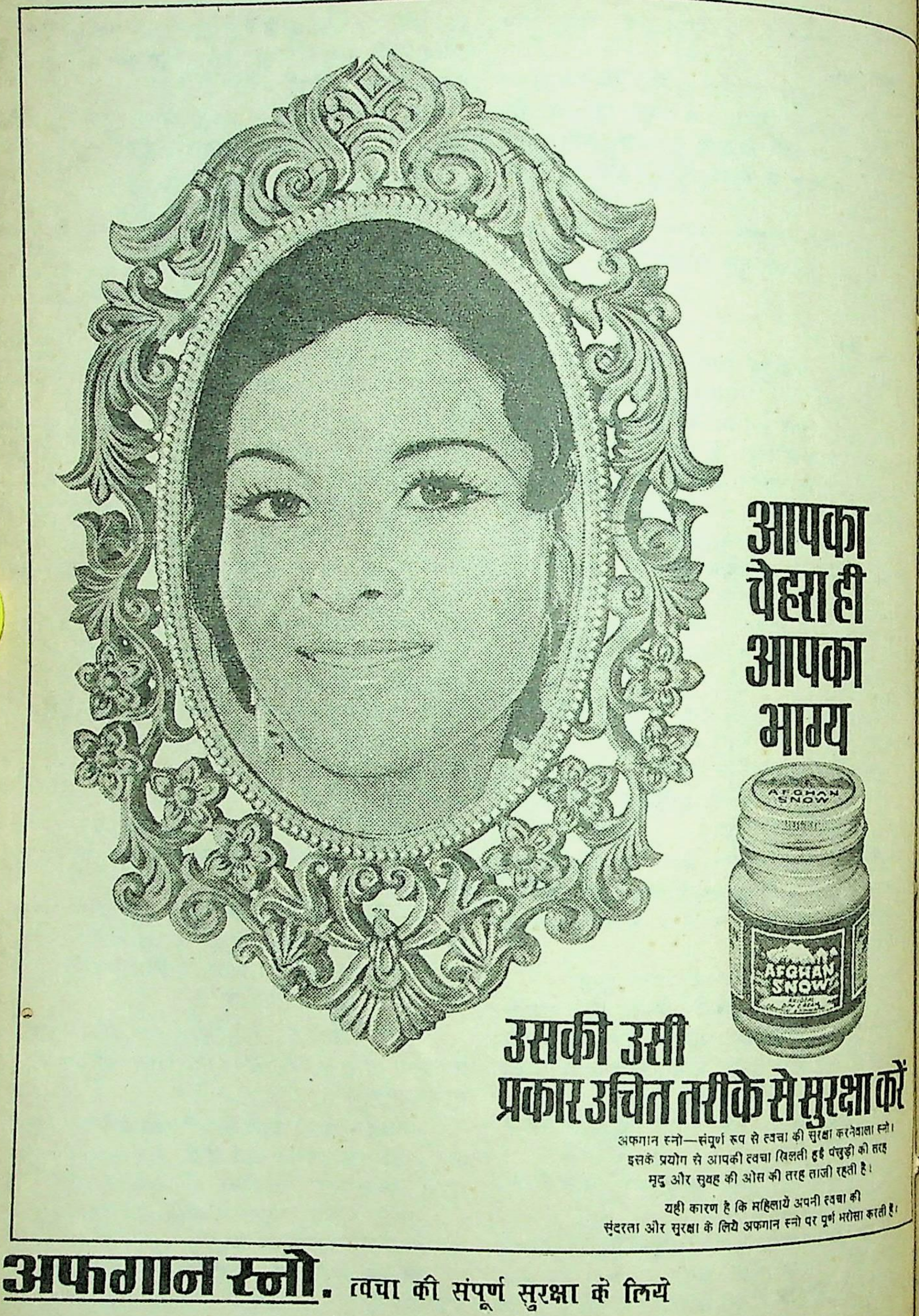

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—अच्छा तो लो! वह चिल्लाया और जोर से उसने दुगू के जबड़े पर एक वार किया. लगा, दुगू इस वार के लिए तैयार था. वह बच गया और उछल कर आशिम की पीठ पर चढ़ गया. उसने अपनी कुहनी से आशिम की गरदन पर वार किया. आशिम लड़खड़ाया. इसके पहले कि वह दूसरा वार करे, दुगू ने आशिम की टांग पकड़ कर खींची और उसे धराशायी कर दिया. दुगू आशिम के ऊपर गिर गया. इसी बीच आशिम के एक साथी ने दुगू की गरदन पर कई मुक्के जमा दिये.

—टीकन. . .! दुगू चिल्लाया. वह कुछ कहने को था कि रुक गया, क्योंकि उसने आशिम के एक साथी को धरती पर गिरे गाली देते सुना जब कि दूसरा घोड़ों की ओर भाग रहा था. दुगू एकदम उठ खड़ा हुआ, पीछे हटा और उसने अपनी लाठी उठा ली. आशिम ने भी अपनी लाठी पकड़ ली. आशिम ने क्रोध में भर कर अपनी लाठी से दुगू के सिर को निशाना बनाया. दुगू ने बचने का प्रयत्न किया. लाठी उसके सिर की बजाय कंधे पर पड़ी.

—और मारो, आशिम, और जोर से मारो! वह पीछे हटा और उसने निश्चय कर लिया कि अब वह आशिम को प्रहार नहीं करने देगा. आशिम की लाठी अधिक भारी थी और वह था भी अधिक बलशाली. वह लपका और आशिम के सिर पर मुक्कों की झड़ी लगा दी. परंतु इसका आशिम पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा. अब दुगू ने अपनी लाठी से उसके सिर पर वार करने की बजाय आशिम की लाठी पर वार किया. जिससे लाठी उसके हाथों से गिर पड़ी. आशिम स्तब्ध-सा रह गया. दुगू ने पूरे जोर से उसकी नाक पर मुक्का जमाया और आशिम की लाठी उठा कर वृक्ष के ऊपर फेंक दी. आशिम चकरा गया और कराहते हुए उसने अपनी नाक पकड़ ली.

—मैंने ठीक कर दिया है साले को, टीकन! दुगू बोला, मेरी कुहनी पर भी घाव आया है. क्योंकि मैंने उसे पहले वार करने दिया.

वे उचक कर अपने घोड़ों पर बैठ गये. चलते समय दुगू आशिम से बोला— तुम बेशक बलशाली हो, परंतु यदि आइंदा कभी मैंने तुम्हें उसके घर के निकट देखा, तो मैं तुम्हारा सिर फोड़ दूंगा. . . समझे!

दुगू जब घर पहुंचा, तो घोड़े से उतर कर वहीं घोड़ों के निकट ठगा-सा खड़ा रहा. उसने सूर्य की गरमी महसूस की, ऊंचे बबूल के वृक्ष, घर, पृथ्वी, समीप ही बातें करते लोग, अपना कुत्ता, पक्षी उससे ऊपर नीले ऊंचे तथा शांत आकाश का गुंबद, सब कुछ ऐसा लगा, मानों इन सबको इस रूप में उसने पहली बार देखा हो और एक अनजानी-सी सिहरन उसके शरीर में दौड़ गयी. उसे यूं लगा, मानो कोई चीज, जो अभी तक उसकी आंखों से ओझल थी, खुल कर उसके सम्मुख आ गयी है और अब प्रत्येक वस्तु में उसका प्रतिबिंब झलकता दिखाई दे रहा था—ज़ीना! वह फुसफुसाया और उसका मुख सहस्रों सूर्यों के प्रकाश से देदीप्यमान हो उठा. □□□

(रूपांतर: सुरेंद्रनाथ वर्मा)

अंगरेजी कहानी

एक खिड़की की खातिर

● एलन सनेगर

तीन महीने से वह कमरे के दूसरी तरफ एक पलंग पर पड़ा है. विक्टर, जो उस कमरे का दूसरा रोगी है, अपने पलंग पर लेटा-लेटा बाहर का पूरा निरीक्षण कर सकता है. वह बाहर का हाल बयान करता रहता है. आज भी वह कभी पेड़ों के बारे में, कभी फूलों के बारे में, और सामने राह चलते लोगों के बारे में, विशेष रूप में एक लेडी–टाइपिस्ट के बारे में बोलता रहा है.

उसका जी चाहता—काश! उसकी चारपाई खिड़की के पास होती, जिससे वह बाहर देख सकता. . .उसे लगता कि विक्टर को इस बात का गर्व है कि उसकी चारपाई खिड़की के पास है. जैसे एक वह ही खिड़की का अधिकारी हो, जो बाहर की सभी चीजें देख सकता है. इस खयाल ने उसके दिल में विक्टर के बारे में घृणा भर दी.

जैसे जैसे समय बीतता गया, विक्टर के लिए उसकी घृणा बढ़ती गयी. दूसरी ओर विक्टर की दशा बहुत शोचनीय हो गयी थी. सोते में विक्टर को प्रायः सांस लेने में कष्ट होता और वह हांफता हुआ उठ कर बैठ जाता. वह विक्टर को इस परेशानी में देखता, कर्त्तव्य की पूर्ति के लिए पास लगी घंटी का बटन दबा देता. ऊंघती हुई नर्सें आतीं. विक्टर की दशा देख कर डाक्टर को बुलातीं जो एक सुई लगा जाता और विक्टर पुनः आराम की नींद सो जाता. और अचानक उसे खयाल आया, अगर वह रात में बटन न दबाए तो?

रात में जब उसकी आंख खुली तो उसने देखा—विक्टर बैठा हुआ हांफ रहा है और उसे सांस की तीव्र तकलीफ है. उसने आंखें बंद कर लीं और नींद का बहाना कर लिया. सुबह उसने देखा, सामने वाला पलंग खाली है और बिस्तर बदला हुआ है. डाक्टर के राउंड पर आते ही उसने पूछा—क्या मुझे वह चारपाई मिल सकेगी?

—हां. . . अवश्य. . और कुछ रुक कर डाक्टर बोला—रात में विक्टर का तुम्हे पता नहीं लगा था. बहुत ही बुरा हुआ. शायद बेचारा बच जाता. नर्स को उसका बिस्तर खिड़की के पास वाले पलंग पर बदलने का हुक्म दे कर डाक्टर चला गया.

उसने बड़ी निश्चितता के साथ दो तकिये एक दूसरे पर रखे और खिड़की पर झुक गया. पर बाहर न कोई पेड़ था, न कोई घर, न खंभा, न लेटरबक्स, न बगीचा, और न ही कोई चौराहा था. खिड़की के बाहर अस्पताल के पिछवाड़े की ऊबड़-खाबड़ जमीन थी जहां से नालियों का गंदा पानी बह रहा था. □□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुर मिलन का सुन्दर साधन

सरसिल्क। ऐसे भड़कते, फड़कते रंग कि मन मचल उठे। ऐसे मनमोहक, हलके रंग कि मन खिल उठे। सादा, चारखाना और धारीदार कपड़े।
सरसिल्क सूटिंग और शर्टिंग में आपको वे सभी खूबियाँ मिलती हैं जो आप एक बढ़िया कपड़े में चाहते हैं। चलने में टिकाऊ। अच्छी पसन्द के अनुकूल। देख-भाल में आसान। और बिलकुल ठीक कीमत।

विक्रेता एजेंट : बम्बई : तुलसीदास कनोरिया एण्ड कम्पनी, पहली मंजिल, आम्बुलवाडी (पूर्व), कालबादेवी रोड, बम्बई। **गुजरात और गोवा :** डागा ब्रदर्स, १५१, मणि महल, कालबादेवी रोड, बम्बई। **मध्य प्रदेश, विदर्भ और मराठवाडा** राठी एण्ड कम्पनी, १७, पाल्पुलर होलसेल क्लाथमार्केट, गांधी बाग, नागपुर। **दिल्ली और हरियाणा :** बाम्बे ट्रेडिंग कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, कटरा अशरफी, चाँदनी चौक, दिल्ली। **राजस्थान :** हरीश एण्ड कम्पनी, मेहता मार्केट, जोधपुर। **पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर :** ओमेगा इंडस्टियल कारपोरेशन, कटरा आहलुवालिया, अमृतसर। **उत्तर प्रदेश :** केजरीवाल ट्रेडिंग कारपोरेशन, विश्भर हाउस, २५/२६ प, कराची खाना, कानपुर। **पश्चिम बगाल :** अश्विनी कुमार एण्ड कम्पनी, ४, इंडियन ऐक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता। **बिहार :** ओरिएण्टल ऐन्टरप्राइजिज एण्ड एजन्सीज, इंडिया मशीनरी बिल्डिंग (दूसरी मंजिल), ऐग्जीबिशन रोड, पटना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक चित्र ● सिनजियाना पॉप

● प्र. मैंदरकर

हम दोनों लाल-बालों वाली लड़कियां एक दूसरे का हाथ पकड़े आंगन में खड़ी थीं. चारों ओर पत्थर की दीवारें थीं. मुंडेरों के ऊपर से दूर आकाश छोटा-सा लगता था. आकाश, जिसे हम छूना चाहते थे.

—तुम कसम खाती हो? मैंने पूछा.

—मैं कसम खाती हूं.

—कि तुम किसीको भी नहीं बताओगी और यह रहस्य केवल अपने तक ही रखोगी.

—मैं कसम खाती हूं.

—आंखें बंद करो.

मुझे एक जादू का सूत्र याद हो आया और हम उड़ने लगीं. हमने एक दीवार से दूसरी दीवार की ओर चक्कर काटते हुए पत्थर की गुफा से उठना शुरू किया—हम दो लाल बादवानों वाले समुद्री जहाज! हम चिमनियों के बीच एक मकान की छत पर उतरे.

—वह देखो, मैंने कहा.

हम नगर के ऊपर थे. पर्वतों के उस पार सूर्य उदय हो चुका था. उसके प्रकाश में टाईलों वाली छतें चमकने लगीं और हम ऊपर तैर रही थीं. कभी-कभी हवा का हलका झोंका आता और चिमनियों पर लगे ऋतु-पक्षी की दुम हिल उठती.

दूसरे बच्चे भी पड़ोस की छतों पर दिखाई देने लगे. चारों ओर सुंदर लड़कियां और लड़के पतलून तथा धारीदार कमीजें पहने थे. वे बिल्लियों की तरह चिमनियों के मुंह में से निकल रहे थे. पतझर की उस प्रातः को हम बच्चों का एक समूह छतों पर विद्यमान था. लड़के पर्वतों की ओर तीर छोड़ रहे थे. लड़कियां—प्रेती और मार्था और एलिस खुशी से पागल थीं. और हवा में धीमी-धीमी किलकारियों की गूंज थीं.

—हम सबसे पहले आये थ, रैडटफ्ट चिल्लायी. हम यहां उड़ कर आये. तब वह कुछ सहमी-सहमी-सी मेरी ओर मुड़ी और अपना हाथ अपने मुंह पर रखा—क्या मैं मर जाऊंगी?

इसी बीच घरों की खिड़कियां खुल गयी थीं. उनके चौखटों में मोटी स्त्रियां बालों में कर्लर लगाये मोटे गद्दों और छोटे पर्दों के बीच बैठी दिखाई देती थीं. सेलू-लाईड की गुड़ियों जैसी बिल्लियां तथा पिल्ले उन्हें घेरे हुए थे.

नगर के मध्य में फूल बाजार था.

छतों पर से हम धूप-छातों के रंगीन टोप और उनके गिर्द रौनक देख सकते थे.

और फिर अकस्मात वहां सन्नाटा छा गया. प्रत्येक गति रुक गयी. संसार जड़वत-सा हो गया.

—क्या मैं मर जाऊंगी? उसने मुझसे एक बार फिर पूछा.

—तुम मूर्ख हो, रैडटफ्ट. क्या बक रही हो?

—क्या मरना बहुत कष्टदायक होता है?

—नहीं.

—परंतु मैं मरूं क्यों? मैं नहीं मरूंगी. डैडी, मम्मी और तुम . . .मैं नहीं मरूंगी.

—वह देखो, मैं चिल्लायी.

पर्वतों के पीछे से सूर्य ने आकाश में ऊपर उठना शुरू कर दिया था. सफेद, थका मांदा सूर्य-किनारों से टूटा हुआ वह धीरे-धीरे लुढ़क रहा था. फिर वह रुक गया. यह दोपहर थी. दुकानों तथा घरों की खिड़कियों से रंगों की एक बाढ़ फूट पड़ी. बाजारों में यातायात रुक गया. नगर के बड़े घंटाघर की घड़ी बज उठी. सब्ज बादशाह का दरबार बाहर निकल आया. बारह सुंदरियां रंगबिरंगे वस्त्र पहने नृत्य कर रहीं थीं. नीले तबलची विधिवत तबला-वादन कर रहे थे. एक जोकर कलाबाजियां लगा रहा था.

नगर में यातायात पुनः आरंभ हो गया था. कोचवानों ने चाबुक मारे. तांगे चल रहे थे. बच्चों ने अपने साईकिल स्कूटर संभाल लिये.

मकानों की खिड़कियां बंद हो गयीं. छतों पर लड़के-लड़कियां अदृश्य हो चुके थे. लगता था, किसीने आकाश में विद्युत प्रकाश अचानक बुझा दिया था.

—क्या मैं मर जाऊंगी? उसने पुनः पूछा.

—हां, तुम मर जाओगी, रेडटफ्ट—मैं जादू की विधि भूल गयी हूं.

—कौन-सी जादू की विधि?

—वह, जो कि तुम नहीं जानती.

—फिर हम क्या करेंगे?

—हमें संसार से विदा लेनी होगी.

रात्रि का काला आंचल फैल रहा था. हमारे ऊपर आकाश में तारे निकल आये थे. और हम दो लाल बालों वाली लड़कियां छत पर पैर फलाये खड़ी थीं. □

(रूपांतर: सुरेंद्रनाथ वर्मा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारंगी सूर्य

• कामिल बासियू

वहां प्रत्येक वस्तु सफेद आवरण ओढ़े हुए थी. सभी वस्तुएं जल रही थीं. उसकी अभिलाषा थी, उस सफेद पहाड़ी पर चढ़ने की, जिसकी तलहटी में वे एक धमाके के साथ आ गिरे थे. वह केवल यही देखना चाहता था कि जलती सफेद धुंध के उस पार क्या है. परंतु उसकी टांगें जवाब दे चुकी थीं. वह अपने सीने, अपने कंधों अथवा अपने हाथों को भी महसूस नहीं कर पा रहा था. उसने कई बार नरम और फेनिल धूल पर से, जहां कि उनका अंतरिक्ष-यान गिरा था, उठने का प्रयत्न किया, परंतु एक भयावह स्वप्न की भांति वह निश्चल पड़ा रहा—तटस्थ तथा अपने आपसे दूर. वह अपने शरीर को सुनता रहा, जैसे कोई कुएं में गिरे पत्थर की गूंज को सुनता है. और गहराइयों में से उसे अपने हृदय की धड़कन सुनाई पड़ रही थी. परंतु लगता था, जैसे वह उसका अपना हृदय नहीं है—शायद वह हृदय था ही नहीं. लगा, जैसे वह रॉकेट के मलबे के नीचे दबी बड़ी घड़ियों में से एक था.

वहां मौत की-सी चुप्पी थी—चारों ओर और उसके नीचे. लोग खामोश थे. घड़ियां रुक गयी थीं. और इस विचार से कि वे सब नष्ट हो चुके हैं और एक विशाल धातु-समाधि रूपी अंतरिक्ष-यान में ठंडे और निश्चल पड़े हुए हैं, वह अत्यधिक भयभीत हो उठा—अपनी आने वाली मौत से भी अधिक. इसी कारण वह उनको पुकारता रहा—अपने ओठ गर्म माइक्रोफोन पर दबाये. उत्तर की प्रतीक्षा के क्षणों से ऊब कर उसने अनवरत बोलना शुरू कर दिया—वे बहत्तर हैं. . .मैं अपनी टांगों तथा अपनी भुजाओं को महसूस नहीं कर सकता. . .वे बहत्तर हैं. . .मैं बाहर अकेला हूं. . .प्रतीक्षा में. . .दिन चढ़ा है. . .वे बहत्तर हैं. . .मैं हिल-डुल नहीं सकता. . .

उसकी आंखों के आगे विस्मृति का कुहासा छा जाता. वह सो जाता और जाग कर फिर बोलना शुरू कर देता. और जब काफी लंबे समय के बाद उसने उत्तर में एक स्वर सुना, उसने सोचा, वह बहक गया है और वह चिल्लाया—मुझे नहीं चाहिए. . .! अभी नहीं! तब वह हंस पड़ा—यह पीड़ा नहीं थी—और वह बिलख उठा, जैसा कि बचपन में रुग्णावस्था में वह बिलखता था—नहीं, नहीं, मैं नहीं मरूंगा! मैं नहीं चाहता, मैं नहीं चाहता. . .यहां बेहद सफेदी है. दिल ऊब उठा है. सब अजनबी. . .मुझे तनिक उठाओ. . .पहाड़ी के शिखर से आकाश दिखाई देता है. . .वे बहत्तर हैं. और उसे पुनः वह स्वर सुनाई पड़ा. वह कोई अन्य स्वर था—उसके अपने स्वर से भिन्न.

—कहां हो तुम? उसने पूछा.

और स्वर ने उत्तर दिया—वे चार हैं. चारों जीवित हैं.

—चार? वे कुल बहत्तर हैं.

—बहत्तर? भौतिक विज्ञानवेत्ता, मैं तुम्हें जाने... हूं. तुम्हें ज्यादा चोट तो नहीं आयी?

—मैं तनिक घायल हुआ हूं. बस थोड़ा-सा. ... दूसरे जीवित हैं?

—मुझे नहीं मालूम! स्वर ने हलके से कहा... मैं देख नहीं सकती. मैं हिल नहीं सकती.

—मैं भी हिल-डुल नहीं सकता. परंतु मुझे कुछ भी नहीं चुभता. मैं ठीक हूं. तुम कौन हो?

—मैं जीवविज्ञानशास्त्री हूं. . .ड्यूटी पर.

—लंबा-सा, दाढ़ीवाला?

—नहीं, मेरे दाढ़ी नहीं है. मैं गौरवर्ण हूं और मैं बालों का जूड़ा बनाती हूं.

* *

श्रांति से चूर हो कर वह मुसकराया. वह य... भूल गया था कि अंतरिक्ष-यान में कुछ महिलाएं सवार थीं. उसका दिल किया कि उस महिला को प्रोत्साहित करने के लिए कुछ कहे, परंतु अकस्मात उसे बहुत ठंड लगी. अपने शरीर का वह अंग, जिसे वह अब तक महसूस कर पा रहा था, बिल्कुल ठंडा हो चुका था—उसके सीने में बर्फ के टुकड़े की भांति.

—मैं तनिक धूप-जली हूं! स्वर ने कहा, ब... थोड़ी-सी. मेरी आंखें भूरी हैं—मेरा मुंह कुछ बड़ा है.

—मैं तुम्हें प्यार करता हूं, वह फुसफुसाया. ... यह भूल गया हूं कि तुम कैसी हो, परंतु भूरी आंखों वाली स्त्रियों को मैं बहुत चाहता हूं.

बाहर अंधकार बढ़ रहा था. एक काला पाउडर वर्षा की तरह नीचे गिरता दिखाई पड़ रहा था.

—क्या तुम भयभीत हो? स्वर ने पूछा. ... डर लग रहा है.

—डर! मुझे डर काहे का? उसने पुनः अपने हाथ को उठाना चाहा, परंतु उसका हाथ अब उसका ह... नहीं था.—तुम्हें डरने की आवश्यकता नहीं. क्या तु... कभी लंबी यात्रा पर उड़ी हो?

—कभी नहीं.

—गिरने के आघात से हमेशा ऐसा ही होता ... लोगों को सदा ऐसी अनुभूति होती है, जैसे उनको चेतना शून्य कर दिया गया हो. वे बड़बड़ाते हैं. तब उन्हें नींद आ जाती है. और जब वे जगाते हैं, उन्हें ऐसा महसूस होता है, जैसे वे अभी स्नान करके उठे हों.

—मैं तुम्हारे पास आना चाहती हूं! स्वर ने कहा. तुम्हारे समीप मुझे अच्छा लगेगा. मुझे यह अजनबी वातावरण अखर रहा है. . .

—खामोश रहो! वह बोला. प्रयत्न मत करो. मैं ... अपने यंत्र-पुरुष को सिगनल देने भेजा है. वे तु... यहां आ पहुंचेंगे और हमें ढूंढ़ निकालेंगे.

वह जानता था, उनको कभी कोई ढूंढ़ नहीं सके... या हो सकता है, किसी दिन, कई शताब्दियों पश्चात उनके ममी वहां उस सफेद मिट्टी में सुरक्षित मिलें.

—कब तक आयेंगे वे? स्वर ने पूछा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

... हर या फिर मार हाल पर. मुझे यह भी पता नहीं कि इस अभिशप्त ग्रह पर रात कितनी लंबी होती है.

—रात कितनी भी लंबी हो, स्वर ने उत्तर दिया, सूर्य अवश्य निकलेगा. मैंने सुना है, इस मार्ग पर सभी ग्रहों के सूर्य रंगीन होते हैं. मुझे नारंगी सूर्य बहुत अच्छा लगता है.

—नारंगी सूर्य! वह बड़बड़ाया. नारंगी सूर्य! उसे भी ऐसा सूर्य पसंद था. लगा, उसके मुंह में खट्टा सूर्य भर गया है.—एक बार एक संतरा था. वह काना-फूसी के अंदाज में बोला. एक मीठा नारंगी संतरा. कुछ खट्टा भी था, एक सब्ज पेड़ पर अकेला.

—आगे क्या हुआ? स्वर धीमे से बोला.

—तुम्हें डरने की जरूरत नहीं. कल हम नारंगी सूर्य को देखेंगे और संतरों के एक पेड़ के नीचे आराम करेंगे. रंगीन सूर्यों वाले सभी ग्रह उद्यानों से ढके हैं. हमें कल तक प्रतीक्षा करनी है, यद्यपि आज मैं एक केले के लिए या फिर एक ठंडे लाल गूदे वाले तरबूज के लिए सब कुछ देने को तैयार हूं!

तीव्र पीड़ा की एक लहर आग की तरह उसकी रीढ़ की हड्डी में उठी...

—प्रिय! स्वर ने धीमे से कहा, मैं यहां हूं—तुम्हारे निकट. चिंता मत करो!

—ओह! अपने अंदर प्रचंड आग की तरह झुलसाने वाले लोहे को तोड़ने के प्रयत्न में वह पुनः दहाड़ा —मुझे नहीं चाहिए! अभी नहीं!

—नहीं, मैं यहां हूं...यहां तुम्हारे पास. स्वर सरसराया. ठंड उसके सीने और उसके कंधों को जकड़ रही थी.

—बहुत ठंड है! वह बुदबुदाया. मेरे ऊपर कुछ डाल दो. अपना हाथ लाओ, प्रिय...!!

एक नरम हाथ ने उसके हाथ को थाम लिया. वह उसे पहचान सकता था. वह एक चिर-परिचित हाथ था—एक हलका, नरम और गरम हाथ...

—मुझे नींद आ रही है...वह बड़बड़ाया, मुझे चूम लो. मुझे चुंबन दो, प्रिय! और उसने अपने धातु-टोप के माइक्रोफोन के साथ अपने ओठ सटा दिये.

दो भारी-भरकम यंत्र-पुरुष सफेद धूल में से उठे और उसके निकट आ गये.

—यह मेरा मालिक है. पहला यंत्र-पुरुष बोला. वह उस निश्चल व्यक्ति पर झुका. उसने उसके धातु टोप के पेंच खोले, सुना. मेरा मालिक मर चुका है. वह कहता रहा, मेरे विचार में अंतरिक्ष यान में एक भी व्यक्ति जीवित नहीं बचा!

—सिगनल देने की बजाय तुम एक स्त्री के स्वर में क्यों बोलते रहे? दूसरे यंत्र-पुरुष ने पूछा.

—कहीं उसे मरना बहुत कठिन न लगे. उसी ने मुझे यह सिखाया था. लोग एकाकी मरना पसंद नहीं करते. मरते समय यदि वे अकेले हों, तो मौत अधिक विकराल और भयानक बन जाती है. वह सदैव मुझसे कहा करता था, मैं एक नारंगी सूर्य वाला संसार चाहता हूं. मुझे भूरे नयनों वाली स्त्रियों से प्यार है.

दूसरा यंत्र-पुरुष बोला—मानव भी बड़ी विचित्र वस्तु है! अब वह हिलता-डुलता क्यों नहीं?

—वह मर चुका है! पहले यंत्र-पुरुष ने उत्तर दिया. तुम नहीं जानते, मौत क्या होती है. मैं दस वर्ष से उसके साथ हूं. तुम्हारा निर्माण तो उसने अभी थोड़े समय पहले ही किया था.

—वह कब तक मरा रहेगा?

—चिरकाल तक! पहले यंत्र-पुरुष ने कहा.

—मैंने एक सुंदर महिला की तरह बातें की हैं, दूसरा यंत्र-पुरुष बोला, एक सुनहरे बालों, भूरे नयनों वाली स्त्री की तरह और उसने तुम्हें 'प्रिय' कह कर पुकारा था. और उसने एक संतरे, एक केले, एक तरबूज की इच्छा प्रकट की थी. मुझे भी एक नारंगी सूर्य और लाल गूदे वाला तरबूज दिखाओ. दिखाओगे न?...

□□□

(रूपांतर : सुरेंद्रनाथ वर्मा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

OBM-5255 HIN

जब रवि के
चोट लग जाती है

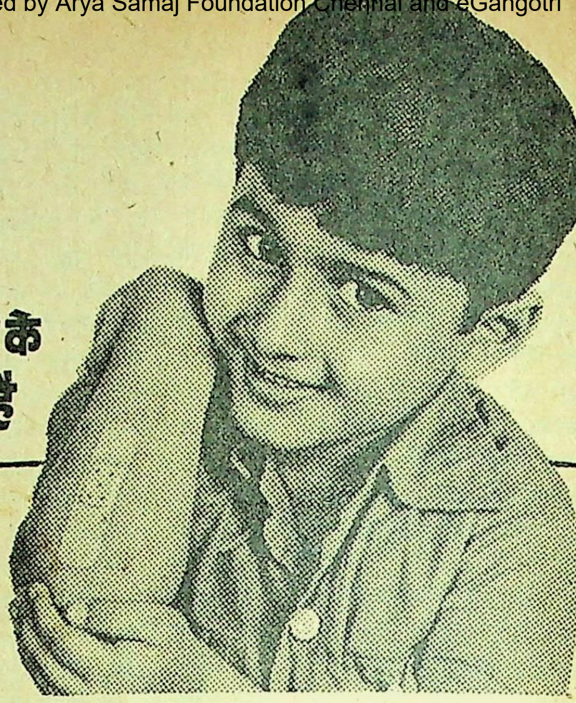

रवि की माताजी छूत से बचाव के लिए
हमेशा BAND-AID BRAND पट्टियाँ
पर ही भरोसा करती हैं

खुले घाव को हमेशा छूत लगने का डर रहता है। इसीलिए समझदार माएँ सुरक्षा और आराम के लिए केवल बैन्ड-एड ब्रान्ड पट्टियों पर ही भरोसा करती हैं। बैन्ड-एड ब्रान्ड पट्टियाँ कीटाणुओं से घावों की रक्षा करती हैं और कार्यसिद्ध ऐन्टीसेप्टिक मर्क्युरोक्रोम घाव को आराम पहुँचाती है और अच्छा करती है।
सावधानी बरतिए—बैन्ड-एड ब्रान्ड पट्टियाँ लगाइये।
हमेशा कुछ पट्टियाँ अपने पास रखिए।

बैन्ड-एड ब्रान्ड पट्टियाँ केवल जॉन्सन एण्ड जॉन्सन ही बनाते हैं।
Johnson & Johnson

मर्क्युरोक्रोम से औषधियुक्त

* Trademark © J&J 75

व्यापारिक पूछताछ के लिए वितरकों को लिखिए:

हसमुख एजेन्सी	हसमुखलाल एण्ड कम्पनी	ठक्कर परषोत्तम हीरजी एण्ड कम्पनी	जवाहर मेडिकल एण्ड जनरल स्टोर्स
गोखले रोड (दक्षिण)	गोखले रोड (दक्षिण)	जॉली सेंटर बेसमेंट, सांताक्रूज़	९९-१०१ के. एन. रोड
बम्बई ४०० ०२५	बम्बई ४०० ०२५	बम्बई ४०० ०५४	बम्बई ४०० ००९.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेलिया

● जार्जी सुशियू

● प्र. नेडरकर

करनेलिया सचमुच रूपवती थी. उसका रंग गोरा था तथा आंखें नीली थीं. उसके बाल मक्की के भुट्टे के बालों की तरह भूरे थे. और वह उनकी दो चोटियां बनाया करती थी. जब वह अपनी जुल्फों को खोल देती तो वह एक परी मालूम होती थी.

मुझे याद है, एक दिन करनेलिया और मैं खेतों में घूमने निकल गये. घास पीली पड़ चुकी थी तथा पत्ते सूख गये थे. कदम-कदम पर धरती चरमरा उठती थी. दूर धीमा प्रकाश उठ रहा था तथा कहीं-कहीं धुंध के टुकड़े तैर रहे थे. उस दिन हम संसार से दूर जा रहे थे. कौन जाने हम कहां पहुंच जायें. वास्तव में करनेलिया ने एक बार पूछ ही लिया—कहां जा रहे हैं हम?

—बस यूं ही चलते चले जायेंगे.

—मेरे तो पांव दर्द करने लगे हैं.

हम सूर्य को ताकने के लिए रुक गये. शरद ऋतु में सूर्य आंखों के लिए कष्टदायक नहीं होता. वह एक वृद्ध व्यक्ति की भांति क्षीण हो जाता है. मैंने उसकी ओर देखा और कहा— शरद ऋतु की धूप तो चांदनी-सी प्रतीत होती है!

—परंतु यह है तो धूप ही. उसने उत्तर दिया. तुम संसार को वैसा क्यों नहीं देखते जैसा कि वास्तव में यह है?

—ऐ परी करनेलिया, तुम मुझे मेरी अपनी इच्छानुसार इस संसार का नामकरण करने दो. बेहतर होगा यदि तुम अपने गेसू खोल दो और मुझे इनकी भूलभुलैयों में खो जाने दो.

करनेलिया वास्तव में बड़ी हमदर्द थी. उसने अपने गेसू खोल दिये.

हम साथ-साथ चल रहे थे. वह अपने गेसू खोले तनिक आगे चल रही थी.

—वह देखो! दूर घाटी में एक वृद्ध स्त्री है. लोग उसे संत फ्राईडे के नाम से पुकारते हैं. सभी उसका साथ छोड़ गये हैं और अब वह बेचारी बेसहारा है. मैं उसे तभी से जानता हूं जब वह एक नवयुवती थी. कितनी परिश्रमी तथा सुंदर थी वह! कई नवयुवक उस पर मरते थे. और वह इस असमंजस में रही कि किसको चुने, किससे प्यार कर. इसीलिए वह क्वांरी रह गयी. उसका यही एक पाप था कि उसके चाहने वाले बहुत थे.

—नहीं, वह तो बेद का एक खोखला वृक्ष है. यह तुम्हारी कोरी कल्पना है.

—वह सचमुच संत ही है. देखती नहीं वह पीछे की ओर झुक रही है! वह देखो, हमें अपने ठंडे तथा कांपते हाथ से इशारा कर रही है.

—वह तो हवा से एक सूखी डाली हिल रही है.

—मेरी परी, तुम्हें तो किसी पर आस्था ही नहीं. यदि अजगर तुम्हें बलपूर्वक उठा ले गया तो मैं तुम्हें कभी भी ढूंढता हुआ तुम्हारे पीछे नहीं आऊंगा.

—तुम मुझे अवश्य तलाश करोगे. मैं जानती हूं, तुम मेरे बिना नहीं रह सकते. तुम्हारा जन्म चीजों की खोज के लिए हुआ है. तुम सबसे पहले वहां दूर घाटी में जाओगे—संत फ्राईडे के पास. वह तुम्हें अजगर के घर का पता बतायेगी. तब तुम दो ऊंचे पर्वतों को फलांग कर जीवनदायक अमृत की खोज में आओगे. उसी अमृत को मैं तुम्हारे ऊपर छिड़क कर तुम्हें अजगर की जादुई नींद से जगाऊंगी.

—तुम बड़ी चालाक दुष्टा हो, मेरी परी! मैंने उससे कहा.

—तुम मुझे चालाक दुष्टा क्यों कहते हो? उसने बुरा मनाते हुए पूछा.

सूर्य धीरे-धीरे पश्चिम की ओर अग्रसर हो रहा था. क्या ही अच्छा होता यदि वह दिन कभी भी खत्म न होता. परंतु सूर्य बूढ़ा था. अतः रात में आराम करने हेतु वह चला गया.

उस रात को अजगर निकोलाई आया और परी करनेलिया का अपहरण करके ले गया. हमारे देश में परियां जब सोलह वर्ष की होती हैं तो अगवा कर ली जाती हैं. मैंने कभी भी उसका चुंबन नहीं लिया था और जब चोर उसे चुरा कर ले गया तो वह पवित्र थी. मैं घाटी में संत फ्राईडे के पास गया. उससे अजगर के महल का रास्ता पूछा तथा यह भी पूछा कि मैं वहां कैसे पहुंच सकता हूं. परंतु बेद चुप रहा. उसकी डालियों पर तुषार था. □

(रूपांतर : सुरेंद्रनाथ वर्मा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात के अंधेरे में

• माइकेल अंतोनी

—कहां है तेरा बाप?

लड़के ने उत्तर नहीं दिया. सावधानी से उसने छिछले पानी में डांडे चलाये, नाव को किनारे से लगाया और उसे रोकने के लिए डांडा आगे टिका दिया. उसने लंगर डाला और किनारे पर उतर आया. सामने ही दरवाजे पर उसकी अम्मा घूरती हुई खड़ी थी—कहां है तेरा बाप?

लड़के ने आक्रोश दबा कर शांति से अम्मा की ओर देखा और कहा—तुम्हें तो मालूम है कि पा कहां है!

—क्या मैंने नहीं कहा था कि पा को साथ लिये बिना न आना?

लड़के ने कड़वाहट के साथ कहा—पा को साथ लाना क्या मेरे बूते की बात है जब कि वह पीने पर उतारू हो!

हर शनिवार की रात मानो गांव चला जाता और पी कर नशे में इतना धुत हो जाता कि असहाय हो कर दुकान की फर्श पर तब तक पड़ा रहता जब तक कि दुकान बंद करने का समय न हो जाता. दुकान के लोग तब उसे मयखाने के बाहर धकेल देते.

लड़के की अम्मा नदी की ओर आंखें गड़ाये थी. उसका चेहरा क्रोध और हताशा से सिकुड़ गया था.

—तुझे पिता को लेने जाना है, समझा?

—नहीं जाऊंगा मैं.

—क्या कहा? किससे कह रहा है? क्या तेरी शामत आयी है? वह जोरों से चिल्लायी —खबरदार! जा कर अपने पिता को ले आ!

सोना अनिच्छा से उठा और उसने एकबारगी अपनी अम्मा की ओर देखा. वह समझ नहीं सका कि उसकी अम्मा इतनी नाराज क्यों थी. उसे कोई वजह न दीख रही थी कि क्यों अम्मा उसके पिता के लिए इतनी चिंतित है, जबकि उसने उन्हें दयनीय बना दिया था. अपने बाप के विषय में इतना भर सोचने से उसे उबकाई आने लगी थी.

लेकिन सोना की अम्मा की बात दूसरी थी. जिस व्यक्ति से उसने विवाह किया था और जो इतना बुरा निकल गया था, वह अब भी उसके जीवन का स्तंभ था. यह सही था कि मानो के कारण उस पर गम के पहाड़ टूट रहे थे और उसकी आंखों के आंसू सूखते न थे, लेकिन उसकी अनुपस्थिति में वह अपना जीवन सूना, नीरस और व्यर्थ अनुभव करती थी. उसके लिए वह उतना ही शक्तिशाली था, जितनी बाहर बहती हुई औरटायर नदी. उसे याद था कि अपने यौवनकाल में उसकी कितनी सामर्थ्य थी और उसने वह सब कुछ उसके लिए किया था जो एक नौजवान कर सकता है. उसकी आंखों में वह अब भी जवान था, वह वृद्ध नहीं हुआ था. सोना की अम्मा को पति से यदि नफरत थी तो इसी बात से कि वह बहुत रम पी लेता था और कड़ी मेहनत की मजदूरी पानी की तरह बहा देता था. लेकिन पैसों का भी उसे उतना अफसोस न था जितना उसके बेहद पी लेने उसे खटकता था. वह लड़खड़ाता हुआ वापस घर आता, तो वह क्रोध में भर कर उसे झिझोड़ती और खूब कोसती, किंतु भीतर उसका हृदय इस हर्ष से आंदोलित हो उठता कि वह सकुशल घर पर उसके पास पहुंच गया है.

और पियक्कड़ के लड़के सोना को यह बात सबसे अधिक चुभती थी. वह अपनी अम्मा को गम की घड़ियां गुजारते देखता था. उसका जीवन नरक बन गया था. अकसर वह भूखी पड़ी रहती. दिन-पर-दिन वह कमजोर होती जा रही थी और छत्तीसवें साल में उस पर छप्पनवें साल का ढलाव झलकने लगा था. उसके केश श्वेत हो रहे थे. कभी-कभी वह अपने पिता के विषय में सोच कर, दांत किटकिटा कर कहता—जानवर!

—अगर वह मेरे साथ आने से इनकार कर देगा, तो मैं उसे वहीं छोड़ आऊंगा! उसने क्रोध में कहा.

—किसी की सहायता ले लेना. लेकिन उसे ले आना.

—मेरी सहायता कोई नहीं करेगा, अम्मा, कोई भी नहीं! पा हर किसी को गाली बकता है. पिछले हफ्ते बोलाई ने उसको लात मार दी थी.

—बोलाई ने उसको लात मार दी और तू खड़ा देखता रहा! क्रोध और सदमे की कचोट से उसकी अम्मा तिलमिला गयी.

—मैं क्या करूं? लड़के ने नाव का लंगर खोला. बोला, यह बोलाई और पा के बीच की बात है, वे निबटा करें!

उसकी अम्मा फफक-फफक कर रो पड़ी.

—मैं क्या करूं, अम्मा? लड़के ने कहा,—मैं हमेशा पा से कहता हूं कि घर चलो, पर तुम्हें मालूम है, वह मुझसे कहता है—ए पिल्ले, जहन्नुम में जा!

उसकी अम्मा के कपोलों पर आंसुओं की बूंदें लुढक रही थीं. किंतु वह बोली—सोना, अपने पिता को घर ले आ! अभी जा! तू उस दिन खड़ा देखता रहा और बोलाई ने तेरे पिता को लात मार दी! अरे कृतघ्न, तू समझता क्यों नहीं कि वह तेरा बाप है!

जब उसने अपना सिर ऊपर उठाया, तो देखा सामने नदी में सोना नाव को छिछले पानी से बचा कर लिये जा रहा था.

ए-सींग की दुकान में कोहराम मचा हुआ था. माना लार टपकाते हुए बार के इर्द-गिर्द लड़खड़ा रहा था. दुकान का मालिक उसके व्यवहार से इतना परेशान न था जितना उसकी भद्दी बकवास से. ग्राहक नफरत से भर गये थे. हर शनिवार की रात मानो की पियक्कड़ी से यहां गड़बड़ी हो जाती थी. एक बार मानो के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां आ जाने के बाद कोई चैन की सांस न ले [illegible] सकता था.

सोना के आ जाने के सबको राहत मिली. जब सोना होटल के अंदर गया, तो किसी ने माना की तरफ इशारा किया. वह शक्कर की बोरियों के बीच पड़ा था.

—पा, सोना ने नशे में मदहोश अपने पिता को पुकारा.

मानो ने आंखें ऊपर घुमायी—तू क्यों आया? किसने भेजा तुझे?

—अम्मा ने तुम्हें घर बुलाया है, सोना ने कहा.

—अम्मा ने भेजा है? तू मेरा मालिक है क्या? एं..एं? वह लड़खड़ाता हुआ लड़के की ओर बढ़ा. सोना पीछे नहीं हटा. बूढ़े ने सोना की बायीं कनपटी पर तमाचा जड़ दिया—तो, तू मेरा मालिक बन कर आया है. क्यों? और फिर उसने लड़के को कस कर लात मार दी.

दो-तीन आदमियों ने मिल कर मानो को संभाला और बहार लाये. सोना ने अपना हाथ पसली पर रख लिया, जहां अभी उसके पिता ने लात मारी थी. उसकी आंखों में आंसू आ गये. मानो का नशा गहरा होता जा रहा था. अब उसके लिए अपने पैरों पर खड़ा रह सकना मुश्किल हो रहा था. वह अपने आपको गिरफ्त से छुड़ाने के लिए संघर्ष कर रहा था. आदमी उसे पकड़े आगे बढ़ रहे थे. सोना उनके मार्ग से अलग हट गया.

—कितनी शर्म की बात है! किसी ने कहा.

—शर्म? मानो भुनभुनाया, और यह छोकरा मेरा मालिक है अब? उसकी अम्मा ने उसको यहां [illegible] मेरे लिए? मुझे छोड़ दो! मैं उसे मार डालूंगा!

मानो अब इस स्थिति में पहुंच चुका था कि उसे नियंत्रित करने में विशेष कठिनाई नहीं हुई. उसकी शक्ति क्षीण हो चुकी थी. वह आदमी जो चिल्लाया था कितनी शर्म की बात है, दोबारा बोला—लड़के, इसे घर क्यों नहीं ले जाता?

—नाव तक ले चलने में मेरी मदद करो! सोना ने आदमियों से कहा. अब वह उत्तेजित नहीं था. वह मात्र एक ही बात सोच रहा था कि किसी भी तरह पिता को मयखाने के हंगामे से बाहर निकाल लाये. कोई नहीं कह सकता था कि उसके चेहरे की शांति के पीछे क्या उबल रहा है. कोई नहीं जानता था कि उसके मस्तिष्क में घृणा की कैसी लपटें उठ रही हैं. सोना और चार आदमियों ने मिलकर मानो को उठाया और नाव में डाला. बूढ़ा मानो गहरे नशे की हालत में खर्राटे भर रहा था. वह खुमारी की उस अवस्था में था जब सब कुछ खामोश हो जाता है. किनारे से चारों व्यक्तियों ने नाव को आगे धक्का दिया.

—पा! लड़के ने कहा. उसका पिता गुर्राया.

—पा, हम घर जा रहे हैं.

नदी, नदी के आगे फैला बरगदों का बीहड़ और रात. पानी की सतह के नीचे घड़ियालों और मगरमच्छों के झुंड. लड़के ने दोबारा मानो की ओर देखा—तो पा, तुमने उस वक्त मुझे लात मारी!

* *

दूर रात के साये में सोना की अम्मा इंतजार कर रही थी. बहुत देर तक वह बेचैनी से करवटें बदलती रही, फिर उसकी आंखें नींद के बोझ से बंद हो गयीं. कमरे के फर्श की चरमराहट से उसकी नींद टूटी.

—कौन है, मानो?

—मैं हूं, अम्मा...! सोना बोला.

उसकी हड्डियां जैसे गली जा रही थीं. नशे से नहीं, भय के आतंक से. उसके अंदर का शेर अब गीदड़ हो गया था. बोलते हुए उसकी आवाज कांपने लगी.

उसकी अम्मा ने बड़ी अधीरता से पूछा —तू वैसे ही चला आया? मानो कहां है? लड़के ने जवाब नहीं दिया. अंधेरे में वह अपने नाखून कुरेद रहा था. अम्मा ने फिर बेचैनी से पूछा—कहां है मानो?

—पा बाहर सोया है. . .नशे में . . .!

—अरे नादान! उसकी अम्मा ने कहा और वह माचिस खोजने लगी.

सोना तेजी से बाहर खिसक गया. भय से उसका खून जम रहा था और अब सिर भी चकराने लगा. उसने नदी के ओर दृष्टि डाली और फिर अपने घर की ओर देखा. सिर्फ एक शब्द उसके मस्तिष्क पर बार-बार हथौड़े की चोट कर रहा था—पुलिस!

—मानो. . .! मानो. . .!

सोना ने सुना. उसकी अम्मा घर की नीरवता को आवाज दे रही थी—मानो. . .! मानो. . . !

भय से त्रस्त वह रात के अंधेरे में डूबे बियाबान की ओर भाग गया. □□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिसलन

• बार्नबास रैमन फोर्चून

प्रतियोगिता का दिन था वह और हर चीज तैयार थी. चिकने खंभे के सिरे पर रस्सी के फंदे में एक व्हिस्की और एक रम की बोतल झूल रही थीं और उनके ऊपर कार्डबोर्ड का बक्सा था, जिसमें सौ डालर का नोट था.

मैं भीड़ में खड़ा खंभे को ताक रहा था, जो आसमान में जहाज के मस्तूल की तरह पच्चीस फीट सीधा चला गया था. खंभा सिरे से पेंदे तक चर्बी में सना था. इसके पहले खंभे की सतह को कांच की तरह चिकना बना दिया गया था. खंभे पर चिपकी चर्बी अब धूप में पिघल रही थी. मानो किसी प्रागैतिहासिक जानवर का पसीना हो.

खंभे के निकट ही मेयर खड़ा अपनी घड़ी देख रहा था. गरमी ऐसी हो रही थी, मानो जमीन की अंतड़ियों में से आग की हिलोरें उठ रही हों और लगता था, जैसे सूरज अपनी धुरी छोड़ कर जमीन की सतह के बिल्कुल करीब आ कर तप रहा हो. लेकिन आंखों पर हाथ रख कर ऊपर देखने से मालूम होता था कि सूरज अपनी जगह पर ही था और अपने चमकते दांतों से निष्ठुर उपहास कर रहा था.

ठीक बारह बजे प्रतियोगिता शुरू हो जायेगी. मैंने घड़ी में देखा, बारह में दो मिनट की देरी थी. मेयर ने घड़ी देखी और जोर से कहा——शुरू!

पहला प्रतियोगी खंभे पर लपका, लेकिन तुरंत ही वह नीचे खिसक पड़ा. उसकी पीठ जोरों से जमीन से टकरायी. उसने मेरीनो और खाकी जांघिया पहन रखा था. उसकी कांख, ठोढ़ी और चेहरा चर्बी से लथपथ हो गये थे. मेयर ने फिर अपनी घड़ी देखी और जोर से कहा——शुरू!

चार-पांच सौ आदमियों के झुंड में कहकहे गूंज रहे थे. दूसरा प्रतियोगी खंभे के पास आया, लोगों की ओर मुड़ कर उसने सिर झुकाया और खंभे की ओर बढ़ा. उसके अवयव पतले, लंबे और हलके थे, जैसे कोई पेड़ बहुत जल्दी बहुत ऊंचा हो गया हो. उसकी तरकीब ऐसी लग रही थी, जैसे वह पहले प्रतियोगी की तरह आक्रमण न करते हुए खंभे को प्रेमी की तरह फुसलाना चाहता है. उसने चुस्त छलांग लगायी और खंभे को बांहों में कस लिया. एक क्षण वह ऐसे चिपका रहा, मानो कोई मक्खी पानी पर छटपटा रही हो. अपने हाथों और पैरों को वह आवेश से पटक रहा था. लेकिन कोई प्रगति न हो रही थी. तब वह शनैः शनैः पेंदी की ओर खिसकने लगा और उसके घुटने व पंजे जमीन पर आ लगे. अब खंभे के नीचे के दस फीट साफ थे और भूरी लकड़ी चमक रही थी. मैंने देखा. अब प्रतियोगी आसानी से नीचे नहीं खिसक रहे थे. वही-के-वही आदमी बदन पर लगी चर्बी को टाट के टुकड़ों से पोंछ कर बार-बार अपना हुनर आजमाने आते थे. कभी-कभार कोई प्रतियोगी मुश्किल से छह इंच ऊपर चढ़ता और चर्बी से लथपथ हो जमीन पर आ लगता था. बहुत-से प्रतियोगी अपने साथ रेत और थैले भी लाये थे. खंभे से कुछ दूर रेत के ढेर लगे थे, और शक्कर व चावल की बोरियां यहां-वहां उस मानवीय अखाड़े में बिखरी पड़ी थीं और उन सबके बीच वह खंभा था, जो माउंट एवरेस्ट की भांति चुनौती दे रहा था. तब धीमे-धीमे एक तेज होती हुई हलचल लोगों के समूह में फैल गयी. आवाजें बढ़ने लगीं. एक ओर से दूसरी ओर प्रतिध्वनि गूंजने लगी.

——ग्रीजी पोल ! ग्रीजी पोल !

मैंने उसके बारे में सुना था. हर किसीने उसके बारे में सुना था. लेकिन उस महान ग्रीजी पोल को देखने का अवसर अब तक न आया था. लोग उस महान व्यक्ति के लिए जगह बनाते हुए पीछे हटने लगे. ग्रीजी पोल पिछले पांच सालों से इस प्रतियोगिता का विजेता रहा था. और अब ग्रीजी पोल अखाड़े में आ खड़ा हुआ.

★ ★

वह ठिगना और काला था—एक नीग्रो से भी ज्यादा काला--चमकता हुआ और असली काला. उसकी वसायुक्त गिलटियां उसकी चमड़ी को एक खास चमक दे रही थीं. उसके घुंघराले बाल उसके गोल सिर पर बहुत छोटे लग रहे थे और धूलसने होने से सिर्फ अलग दिखते थे. उसके बायें कंधे पर बोरियों का ढेर था. कंधे उसके चौड़े थे. लेकिन मेरी नजर उसके पैर और पंजों पर टिक गयी. उसका कद देखते हुए उसके पैर बहुत लंबे थे, असामान्य रूप से लंबे. उसके बीच के जोड़ भी लंबे थे, जिनमें पकड़ की बेजोड़ क्षमता नजर आती थी. जैसे ही वह चलता, उसके पंजे जमीन में धंस कर उसको पकड़ लेते थे और पीछे बहुत गहरे निशान छोड़ देते थे.

वह खंभे के सामने खड़ा हो कर उसे देखने लगा, मानो दुश्मन की ताकत नाप रहा हो. उसके चेहरे पर कोई मुसकान नहीं थी. उसकी आंखें तनी हुई थीं और वहां जमा भीड़ के प्रति वह उपेक्षापूर्ण था, जैसे वह अकेला ही वहां हो. दूसरे ही क्षण उसके चौड़े चेहरे पर उत्तेजना फैल गयी, मानो हवा ने पानी को छेड़ दिया हो. वह मुसकराया. उसने अपने दुश्मन की कमजोरी खोज ली थी. पहली बार वह लोगों की ओर मुड़ा और उसने सिर झुकाया.

——ग्रीजी पोल! ग्रीजी पोल! लोग खुशी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

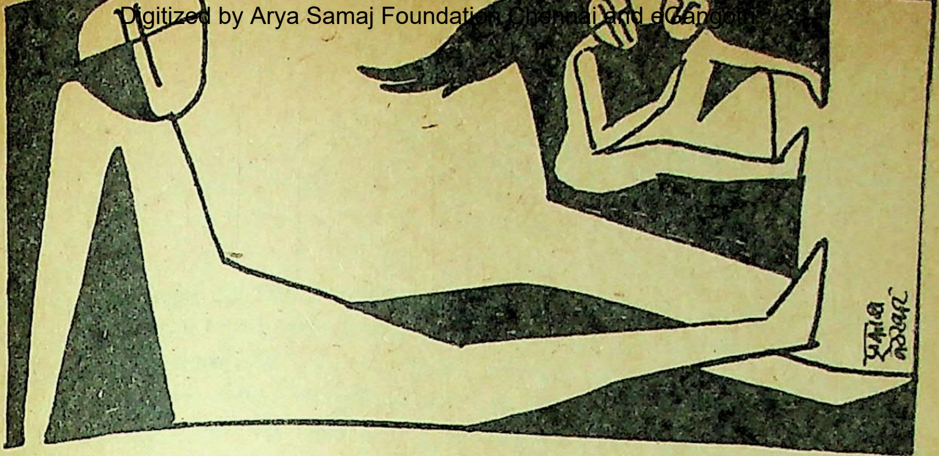
● प्रकाश नेरुरकर

चिल्लाने लगे. वह एकदम तन कर खड़ा हो गया, लेकिन तुरंत झुका और कुछ चर्बी जमीन से बटोर कर उसने शरीर के अगले हिस्से पर और पैरों पर पतली तह में मल ली. फिर वह रेत के ढेर की ओर बढ़ा और मुट्ठियां भर-भर कर उदारता से उसने अपने शरीर पर रेत छिटकी. उसके बदन का अगला हिस्सा रेजमाल के लंबे टुकड़े-सा नजर आ रहा था. अब वह फिर से खंभे की ओर गया और कूद कर उस पर उछला. वह नीचे नहीं फिसला. उसके भारी जबड़ों जैसे पंजे खंभे की चिकनी गोल सतह पर फैल कर उसमें धंस गये.

जन-समुदाय में से चीखें निकलने लगीं और लोग बहकने लगे. पीछे से किसीने मेरी पीठ पर ठपकारा.

ग्रीजी पोल कुछ क्षणों के लिए खंभे को ऐसे जकड़े रहा, जैसे कोई कुश्तीबाज अपने प्रतिद्वंद्वी को गिरफ्त में ले लेता है. तब उसके शरीर ने गोता खाया और वह कई इंच ऊपर उठ गया. जल्दी ही उसके हाथ उस निशान पर जा पहुंचे. जहां अब तक सबसे ऊंचा चढ़ने वाला प्रतियोगी पहुंचा था. उसके पैरों का तनाव मुझे साफ दिख रहा था. उसके पंजे टखनों जैसे थे. उसके शरीर ने फिर गोता खाया और उसके हाथ चर्बी में ऊपर की ओर खिसकने लगे.

एकाएक वह नीचे की ओर फिसलने लगा, बहुत धीमे-से लेकिन बेफ़िक्री से. तब वह रुका और उसने खंभे को अपनी जांघों से दबोच लिया. वह एक भोंडी और भद्दी तितली-सा दिख रहा था. वह वहां हांफता हुआ ठहरा रहा. उसने एक के बाद दूसरा हाथ खंभे से हटाया और चर्बी को पोंछ कर नीचे फेंक दिया.

उसके शरीर में फिर हरकत हुई. उसके बड़े-बड़े पंजे पूरी तरह अलग-अलग फैल गये और तुरंत वह अपनी जगह जा पहुंचा.

अब वह बहुत तेजी से चढ़ रहा था. उसके हाथ चर्बी को तेजी से बुहार रहे थे. वह चर्बी को नीचे जमीन पर फेंकता हुआ चढ़ता जा रहा था. जैसे ही वह खंभे के शिखर के करीब पहुंचने लगा, लोगों के झुंड में से चीखें उठने लगीं. अब उसके रुकने का कोई आसार न दिखता था. उसके ठहरने और सांस लेने का अब कोई सवाल न था. उसे शिखर पर पहुंचना था, या हार मान लेनी थी. वह पुट्ठा पार कर गया. अब वह सौ डालर के बक्से की तरफ बढ़ रहा था.

उमस और उत्तेजना ने हम सबको जड़वत कर दिया. भीड़ में एक गहरा सन्नाटा फैला था. अचानक समूची भीड़ का ध्यान दूसरी ओर खिंच गया, मानो किसीने हवा में गोली दाग दी हो. ग्रीजी पोल भी अपनी जगह पर ठिठक गया. कोई औरत जार्ज बार्कर का नाम ले कर पुकार रही थी.

—जार्ज बार्कर! जार्ज बार्कर!

वह भीड़ के पीछे से चिल्ला रही थी. लेकिन उसकी आवाज लोगों के माथों के ऊपर हंसिये-सी काट रही थी.

ग्रीजी पोल ने नीचे उस ओर ताका, जहां से आवाज आ रही थी.

—जार्ज बार्कर, यह मत भूलना कि तुमने गयी रात यह पैसा मुझे देने का वादा किया था. खंभे के सिरे पर रखा इनाम मेरा है. जार्ज बार्कर, इसे याद रखना!

ग्रीजी पोल का शरीर एकदम ढीला पड़ गया. उसकी मांसपेशियां उसके जिस्म की मुलायम सतह में धंस गयीं. चार सौ लोगों के गले में गहरी सांसें अटकने लगीं, जब ग्रीजी पोल धीरे-धीरे खिसकता हुआ जमीन पर आ लगा. उसने हम सबको उदासी और हताशा से देखा, मानो उसने हमारे साथ विश्वासघात किया हो.

मैंने अपने अंतरमन में लंबी काली आंखों वाले साल भर से कम के उस शिशु को देखा, जिसकी पैतृकता के बारे में ग्रीजी पोल शायद झिझक रहा था. वह लड़का था या लड़की, मैं कभी न जान सकूंगा. उससे क्या होना था?

ग्रीजी पोल ने शर्म और पराजय में अपना सिर झुका लिया और भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ गया. बाद में उसी शाम को मैं ग्रीजी पोल से एक फुटपाथ पर टकरा गया. वह नशे में धुत पड़ा था. □□□

(अनुवाद : गोपालचंद्र जोशी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लहरें तुम्हें पुकारें

• जेन विलियम्स

जब से याददाश्त साथ देती थी, फ्रेंक टापू पर ही रहता आया था. उत्तर में सेंट विसेंट का नीला धब्बा खुले आकाश के दिन साफ दिखायी पड़ता था और सिर दूसरी तरफ घुमाने पर आरे के दांतों-सी नुकीली यूनियन द्वीप की वे पहाड़ियां दिखतीं, जिनकी पृष्ठभूमि में केरीकू का नीला धब्बा नजर आता. वह सब द्वीपों के नाम जानता था—वे सारे चट्टानी, सूखे द्वीप, जिनमें छोटे से बारिश के मौसम में ब-मुश्किल कपास, मकई व मटर की दयनीय फसलें हो जाती थीं.

—बस, और कभी कुछ न होना है—फ्रेंक यह तब से कहा करता था, जब से वह बच्चा था. हालांकि उस समय वह इतना सयाना था कि नाव को हाथ दे सके और दादीम्मा के साथ डांड चला सके. जब वे जलशिलाओं में मछलियां बटोरने और केंकड़ों और कछुओं के लिए गोता लगाते.

दादीम्मा कहा करती—जन्मना, मरना और उनके बीच जिंदगी की चंद घड़ियां, इसके सिवाय कहीं कुछ न होना है. . और यह कहते हुए वह ओठ भींच लेती व डांड का तनिक सहारा ले कर पसीना पोंछ लेती. और तब वह फुर्ती से हथेली के हलके झटके दे कर नाव खेती रहती और अक्सर रुक कर हदी गहराईयों में झांकती या किसी चट्टान की दरार की ओर गोता खाने खिसक जाती जहां उसकी पैनी नजर से कोई दुबका हुआ केंकड़ा या चट्टानों के जोड़ों में चिपके घोंघा के जत्थे छिपे न रहते.

कभी-कभी भाटा आने के वक्त वे जल-चट्टानों के अंदर नाव खेते हुए शेल टापू की ओर बढ़ जाते जो एक बालुई सीपियों से भरी पट्टी थी, जहां पुराने दिनों में कभी नारियल के कुछ पेड़ खड़े थे, जिन्हें समुद्री लहरों ने अब लील लिया था. और सिवाय कुछ ठूंठों के अब उनका कुछ शेष न था. सीपियों से ढंका और दलदला शेल टापू—सफेद सीपियों और मूंगों के रेगिस्तान में कभी-कभी पीले समुद्री झाग से चमकीला हो उठता था. और जब कभी ज्वार की लहरों के साथ कोई गुलाबी घोंघा या लंबी चितकबरी कौड़ी तट पर आ गिरते तो बेरहम धूप में तपते-तपते वे भी पुरानी हड्डियों की तरह सफेद पड़ जाते.

फ्रेंक को शेल टापू से प्रेम था. उसकी चचेरी बहिन फीबी को भी उस टापू से लगाव था. फीबी की मां ने, जो रिश्ते में फ्रेंक की मौसी होती थी, उसको जन्म दे कर आखिरी सांस ले ली थी. कुछ लोग कहा करते थे कि सेंट विसेंट से युवा बाजान ने जब अपने जहाज में उस टापू पर आना बंद कर दिया, तो मेली को जिंदगी से जूझने के लिए अकेला छोड़ दिया गया. जैसा अकसर आदमी किया करते हैं. और इससे मेली का दिल टूट गया. फ्रेंक को याद था उसकी मौत कब हुई थी. जब सकरी पहाड़ी के रास्ते से हो कर उसकी लाश कब्रगाह दफनाने ले जायी जा रही थी, तब दादीम्मा किस कदर दबी चीखें मार रही थी. उसको यह भी याद था कि किस तरह इस समझ का सदमा उसके दिल में बैठ गया था कि मेली की आवाज हमेशा के लिए खामोश हो गयी थी और बदले में थी फीबी की वे कमजोर आवाजें जिन्हें मीठे पानी में भीगे कपड़े या हलके झूलों से आसानी से चुप किया जाता था.

जब वह बच्ची थी तो फ्रेंक उसको अपनी बाहों में ले कर घंटों अपनी फूस की झोंपड़ी की देहरी पर बैठा रहता. और उसकी पीली-सुनहरी चमड़ी, बेहद मुलायम केश व भूरी पुतलियों वाली उसकी नीली आंखों को निहारा करता. जब वह उसे यों उठा रखता तो उसके खुद के छोटे काले हाथ तुलना में इतने मटियाले और बेमेल लगते कि अपने दिमाग में उसने फीबी को एक अलग ही जगह दे दी थी.

जब वह दादीम्मा के साथ नाव में जाने लायक हो गयी तो उसके बाल व चेहरा धूप से बचाने के लिए फ्रेंक ने उसके लिए जंगली बेंत की टोप गूंथ दी थी. लेकिन समय के तकाजे ने धूप के लिए रास्ता बना दिया था. और पंद्रह वर्ष की उम्र में ही वह भूरे-सुनहरी रंग में तप गयी थी. और उसके बाल खारे पानी और धूप में पीले पड़ गये थे.

जब फ्रेंक उसके इकहरे शरीर को समुद्री दागों से भरी टूक-टूक पोशाक में देखता तो उसका हृदय भीतर-ही-भीतर कचोटने लगता. ले दे कर उसके पास यही एकमात्र पोशाक थी. और उसके सुनहरी रंग के पैरों पर सूखी धूल जम जाती या उसके पैर उस समय अधिक स्वर्णाभ दिखते, जब वह केंकड़ा या घोंघा ले कर नाव में लौटती.

फ्रेंक ने अपने आपसे कहा—फीबी का इस तरह कपड़े पहने रहना ठीक नहीं दिखता और वह अपने दिमाग में फीबी की वह तसवीर खींचने लगा, जो मैगजीन के चित्रों की लड़कियों की तरह थी. कभी-कभी पादरी उसको मैगजीन देखने दे देता था. वह देखने लगा फीबी स्वच्छ श्वेत वस्त्र पहने थी, और उसके केश संवारे हुए थे. जिनमें शायद रिबन लगा था न कि उसके उलझे हुए बाल हवा में बिखर रहे थे या दादीम्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा किसी रविवार को गुंथे हुए बालों के मुलायम गुच्छे सरक आये थे. और [illegible] हो गये थे. वह अपने आपसे कह रहा था, फीबी कितनी अच्छी लगे अगर उसके ओठों पर लिपस्टिक हो, उसकी सीधी नाक पर पाउडर का फोहा और आसपास किनारों पर सुनहरी लाली छिड़की हो!

किसी दिन मैं इस टापू से जरूर निकल सकूंगा. —अरुबा या ट्रीनीदाद जाऊंगा——या कहीं और. फीबी के लिए ढेर-सा रुपया कमा कर लाऊंगा .—फ्रैंक खुद से बातें कर रहा था. लेकिन वह जानता था कि जब तक दादीम्मा जीवित थी वह उस टाप के बाहर पैर नहीं रख सकता था, क्योंकि उनके छोटे-से खेत में काम करने वाला या मछलियां पकड़ कर सूखे मटर और मकई की फसल को सहारा देने वाला और कोई न था. उसकी काली आंखें अतीत के विचारों में खो जातीं जब वह याद करता कि दादीम्मा के साथ नाव में घूमना किसी जमाने में सिर्फ उसके लिए सैर थी.

लेकिन बीतते हुए वर्षों के साथ, जैसे ही वह और फीबी होशियार होने आये, बचपन की बेफिक्री एकदम काफूर हो गयी थी और अब उसकी जगह ले ली थी रोज की रोटी के लिए कड़ी और निर्मम तलाश नें, जो दादीम्मा और टापू के दूसरे निवासियों की नियति थी. लेकिन पैसा कमाने का सपना अभी टूटा नहीं था, यद्यपि हताशा उसे घेरे थी, जब वह फीबी के बारे में सोचता और यह सोचता कि उसके लिए उसने क्या-क्या मंसूबे बांध रखे थे. उधर फीबी हर परिस्थिति को यथावत आकस्मिक रूप से स्वीकार कर लेती थी और यह चीज कभी-कभी फ्रैंक को गहरी निराशा में धकेल देती थी. फ्रैंक का स्नेह भी वह स्वीकार करती थी, हालांकि उसे यह पता नहीं था कि किसी दिन उसकी

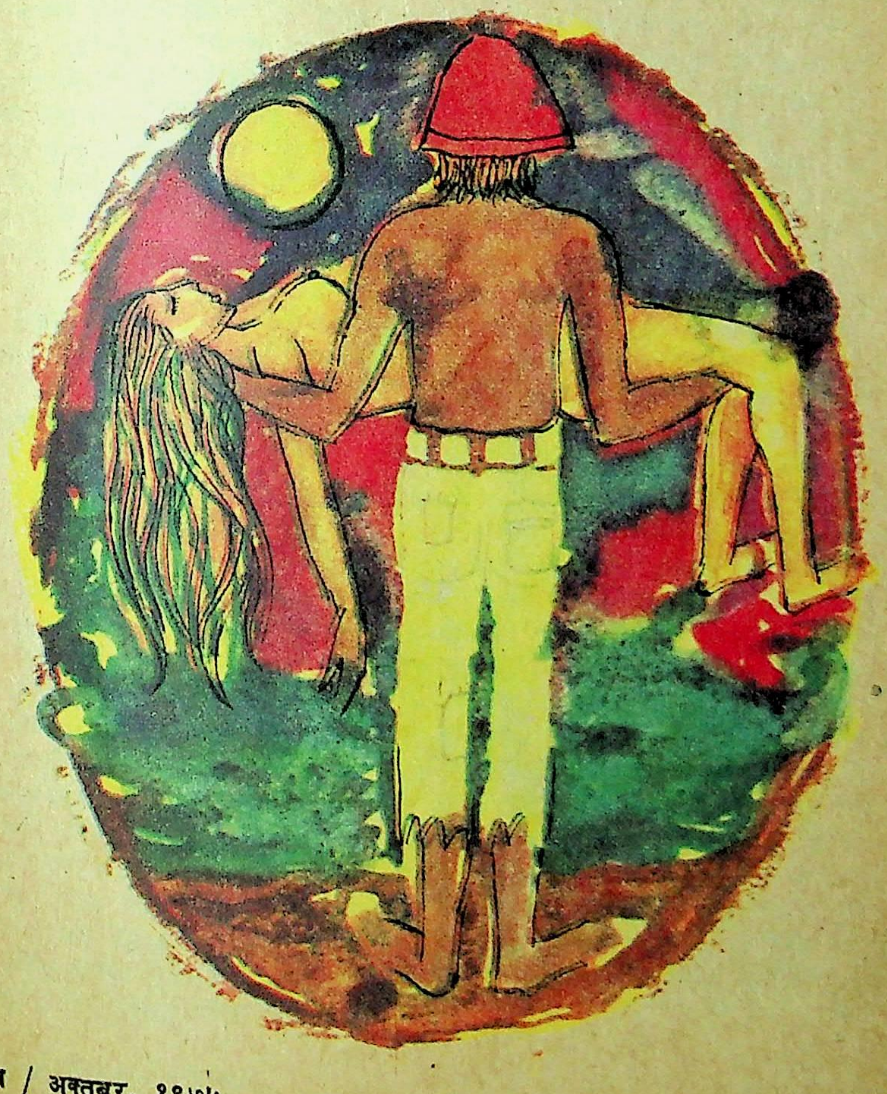

● प्रकाश नेरुरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तरुणाई का रुका हुआ पानी बांध तोड़ देगा. और उसको तूफानी लहरों के [illegible] देगा, जिसके लिए कि उसके सौंदर्य ने उसको गढ़ा था. फ्रैंक के लिए फीबी जिंदगी की एक खूबसूरत चीज थी, जिसमें भविष्य की कोई आशा न झलकती थी. लेकिन उस खूबसूरती के पीछे भय लरक रहा था.

* *

और एक रात वह बात पूरे आवेग के साथ उसके सामने आयी, मानो दोनों आंखों के बीच किसीने करारी चोट दी हो—फीबी के प्रति अपना प्रेम साबित करने के लिए उसको कुछ कर दिखाना होगा. चट्टानों पर घंटे बिता कर वह बस्ती की ओर वापस लौट रहा था; भोजन के लिए उसने मशाल से केंकड़े पकड़े थे. अगले दिन चट्टानों से मछलियां पकड़ने का उसका इरादा था, क्योंकि उनको अब ज्यादा म्यूले और चब मछलियों की जरूरत थी ताकि दोनों जून की रोटी मिल सके, क्योंकि अनाज सब खत्म हो गया था और किसी दूकान से खरीदने को कौड़ी भी पास नहीं थी. उसने सोचा था, वह दो-एक लाल केंकड़े या बड़ी मछलियां पकड़ेगा. उनमें से एक दो वह कृषि-अधिकारी को बेंच देगा, जो अभी-अभी सरकारी रेस्टहाउस में आया हुआ था. उस टापू पर इतने कम यात्री आते थे कि उस अवसर को वह चूकना नहीं चाहता था. वह पथरीली पगडंडी से सावधानी से आ रहा था तब उसे कुछ आवाजें सुनायी पड़ीं—आदमी के गले की गहरी घरघराहट और एक लड़की की तीखी खिलखिलाहट. वह फीबी ही थी. उस छोटे से टापू पर, जहां हरएक हर किसीको जानता था, फ्रैंक को यह समझते देर न लगी कि वह आदमी कोई अजनबी था. वह चुपचाप खड़ा हो गया और कनसूए लेने लगा. उसको अब बालुई तट के किनारों की समुद्री अंगूरों की झाड़ियों में धीमी सरसराहट के अलावा और कुछ सुनाई न पड़ा.

अपने कमरे के कोने में पड़ा वह दर्द से घुट रहा था. दादीम्मा खर्राटे भर रही थी. एक मुर्गे ने बांग दी और दूसरे ने उसका जवाब दिया. कहीं किसी कुत्ते के भौंकने की आवाज आयी. ये आवाजें रात में दर्द-भरी और रहस्यमय लगी थीं. अब तक उसने फीबी को बच्चा ही समझा था—एक खुशमिजाज और कभी शिकायत न करने वाला साथी, जिसने डोंगी पर उसके साथ दिन गुजारे थे या तेज धूप में कुदाली चलायी थी: वह उसके लिए एक सुनहरी आत्मा थी, जिसे वह, खुद काला और मैला होते हुए भी, उस कष्टमय जिंदगी की राह से उबारेगा जहां भाग्य ने उसको ला पटका था. उसका मस्तिष्क इस बात पर आ कर लड़खड़ा कर जड़ीभूत होने लगता कि अपने सुनहरी जिस्म और नीली आंखों के बावजूद फीबी उतनी ही घटिया थी, जितना उसके वातावरण ने उसको ढाला था. वह टापू पर रहने वाली दूसरी लड़कियों से भिन्न न थी. चाहे वह द्वीप की दूसरी काली लड़कियों से अलग दिखती हो लेकिन असलियत में उसमें और उनमें कोई फर्क न था.

यह बात उसके दिल में वैसे ही लगी जैसे किसी नुकीले पत्थर से कोई ठोकर खा जाय! उसे चोट पहुंची. उस चोट को वह हफ्तों तक सहलाता रहा. हमेशा यह कोशिश करते हुए कि वह फीबी को कुछ कहने का अधिकार पाये और उसको समझाये, लेकिन वह जान गया था कि उसे कोई अधिकार न था. उसने अपने आप से पूछा—वह फीबी से यह कहने वाला कौन होता है कि वह उससे प्रेम करता है!

कुछ दिन बाद अजनबी चला गया और फीबी का रात को गायब हो जाना भी बंद हो गया, लेकिन फ्रैंक अब ध्यान से उसमें बारीक परिवर्तन देखने लगा. जैसे-जैसे हफ्ते महीनों में सरकने लगे. हमेशा तन्वंगी और छरहरी वह अब ज्यादा सलोनी मालूम पड़ने लगी और उसके चेहरे की आभा में ऐसा निखार आ गया, जिससे उसकी छवि पारदर्शी हो गयी थी. और इस कारण उसके गंडस्थल की नीली शिराएं लज्जत दे रही थीं.

अब नाव खेते हुए वह गाती नहीं थी. और रात में एक या दो बार उसने फीबी को कराहते हुए भी सुना. वह उसको उसी तरह अपनी बांहों में लेने की इच्छा करता जैसे कि वह बचपन में लिया करता. लेकिन वह जानता था कि उसके छरहरे शरीर को अपने करीब लाने की उसकी ईहा अब जितना उसके सुख के लिए थी उतनी ही फीबी के लिए थी. लेकिन जब कभी वह उसके बिखरे हुए बालों को छूने की कोशिश करता, वह सिर्फ इतना ही कहती, जैसा कि वह अभी कुछ दिनों से कहने की अभ्यस्त हो गयी थीं, हाथ अलग ले लो. और उसकी आवाज तीखी और कड़वी होती, जो असल में उसकी न जान पड़ती थी. अपने दर्द को मसोसकर उसी तरह पीछे हट जाता जैसे फीबी अपनी पीड़ा से पीछे हट जाती.

एक दिन सुबह दादीम्मा उठी नहीं. वह किरमिच की जर्जर खाट पर अपनी झोंपड़ी की दीवार के सामने पड़ी थी. उसके पैर दुबले पेट की तरफ मुड़े थे और बदन कांप रहा था. और वह कुछ बुदबुदा रही थी. अपने सिर पर बंधे सफेद कपड़े के बिना, जो वह हमेशा लपेटे रहती, आज वह बहुत ही वृद्ध दिखायी दे रही थी—फ्रैंक मन में सोचते हुए जाल के सिरों पर तार बांध रहा था और फीबी दरवाजे के पास अंगीठी पर झुकी थी. फीबी को गरम पानी की भगौनी में शकर चलाते और उसको टिन के तीन गिलासों में उंडेलते देख कर उसके पेट में तूफान मचल रहा था.

—आज के लिए न रोटी है, न आटा—फीबी ने उसको मीठे पानी का गिलास थमाते हुए कहा.

—हां, बात ठीक है फीबी! लेकिन मुझे आज कोई खास भूख नहीं है. उसने जवाब दिया.

फ्रैंक खाड़ी पर आज जल्दी रवाना होना चाहता था क्योंकि कृषिअधिकारी ने उसको कहा था कि वह दोपहर में नांव में सेंट विसेंट जायेगा तो अपने साथ कुछ केंकड़े और म्यूले मछली का एक बड़ा टुकड़ा ले जाना पसंद करेगा. भाग्य से उसको कुछ बेच कर वे कुछ मकई और आटा खरीद सकेंगे. फीबी दूकान पर चली जायेगी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह दूकानदार फ़ाबा से सौदा करना पसंद करता था. कभी-कभी फीबी उससे पावरोटी का टुकड़ा या बिस्किट का चूरा हथिया लाती थी.

खामोशी में नाव खेते हुए फ्रेंक की आंखें गिरजा घर और फूस की गड्डमड्ड झोंपड़ियों की ओर टिकी थीं, जो कभी दादीम्मा के जवानी के दिनों में एक संपन्न कस्बा रहा था. जबकि अधिकतर टापू एक जागीर के अंतर्गत थे. फ्रेंक फीबी के बालों के सुनहरी गुच्छों को देखना चाहता था, और उसकी मैली-कुचैली पोशाक में—जिसमें पीछे की बाजू थिगलियां लगी थीं और जहां जल्दी ही दूसरी थिगली की जरूरत पड़ने वाली थी—उसके शरीर के अवयवों की स्थिति का अंदाज लगाना चाहता था. उसने चाहा कि वह उसकी बाहों को पकड़ कर झकझोर दे और उससे कहे——सुनो फीबी! ध्यान से सुन लो, तुमको दूसरी लड़कियों की तरह नहीं बरतना चाहिए.

तब ज्योंही वे खाड़ी छोड़ कर जल-शिलाओं के भीतर छिछले हरे पानी की तरफ मुड़ आये थे, फ्रेंक अपने दिन के काम पर मेहनत के साथ जुट गया, वर्षों की आदत, वर्षों का समुद्र से संघर्ष——उसका जीवन! और मानो किसी खामोश सहमति से वे दोनों और धीमे डांडें चलाने लगे और उनकी आंखें समुद्र की हरी गहराइयों में वह खोजने लगीं, जिसे वे ढूंढ रहे थे.

दो बार उसने अपने डांडे को रोपा, बाजू में उतरा और गोता लगाया, हवा के लिए उपर आया, फिर गोता खाया; और फिर वह नाव में उचक आया और फीबी की ओर मुसकराते हुए उसने दुम पकड़ कर केंकड़ों को नाव में डाल दिया. जब-तब वह और फीबी स्वच्छ नीले पानी में डोंगी में से गोता लगा जाते और इस तरह वे शेल टापू से आ लगे : क्योंकि उस चट्टान की कगार पर जो कि गहरे पानी में मस्तूल की तरह जलाशिला की तरफ झुक आयी थी, फ्रेंक अपना जाल-फैला कर खड़ा रहेगा और फीबी किनारे-किनारे छिछले पानी में खेती हुई घोंघे और केंकड़ों की टोह में रहेगी.

वे कगार की तरफ पहुंच ही रहे थे कि फीबी ने अचानक अपना डांडा टिका दिया, वह परेज पर झुक गयी और बुरी तरह से उबकाई करने लगी. फ्रेंक स्तंभित रह गया. जिस बात का उसे डर था वह अब सचाई बन कर सामने थी; और एक अंधे क्रोध ने उसे बावला बना दिया.

नष्ट करने की वृत्ति ने और सब कुछ को ढंक दिया. अब फीबी का बचाव किसी भी सूरत में सहसा संभव न था, लेकिन उसकी स्वयं की शर्म और आक्रोश को मिटाने के लिए फीबी को नष्ट किया ही जाना था. मुश्किल से जानते हुए कि वह क्या कर रहा है, उसने नाव के बाजू में दर्द से झुकी फीबी के सुनहरी माथे पर अपनी पूरी ताकत से घूंसा कस दिया.

और उसके सिकुड़े हुए शरीर और नाव के पेंदे में लटके हुए सिर को देख कर जहां कि वह गिर पड़ी थी, फ्रेंक के अंतस में भय और करुणा उमड़ पड़े, जिन्हें सहन करना उसकी बर्दाश्त के बाहर हो गया; और इसलिए तट की चमकती हुई सफेद रेत और समुद्र के परे की गुस्ताख नीलाई की ओर एक उन्मत्त खोजती हुई नजर डाल कर उसने फीबी की देह को उठाया और नाव के बाजू पानी में डाल दिया. वह झुका और उसने उसे देखा——जैसा कि पहले उसने कई मर्तबा देखा था.—लहरों में झलमलाता फीबी का सिकुड़ा हुआ शरीर.

वह स्वयं समझ पाये इसके पहले ही वह गोता लगा कर उसके करीब पहुंच गया और अब वह किसी रूप में भी कल्पना की बिगड़ी हुई तसवीर न थी बल्कि उसके सामीप्य और साहचर्य में थी. फ्रेंक ने उसको पकड़ना चाहा लेकिन हर बार वह उसे छल जाती, और वह बहाव के दबाव के साथ कभी उधर तो कभी इधर बह आता. बार बार हांफते हुए वह सतह पर उठता, गहरी सांसें भरता और फिर गोता लगाता. आखिरकार उसने फीबी को अपने कब्जे में ले लिया और उसके शरीर को अपनी बांहों में निष्प्राण अनुभव किया. जैसे ही वह उसको संभाल कर सतह पर ला रहा था तो अकस्मात अपने किये का खयाल कर वह आतंक से भर उठा. उस विचार और उसके भय से उसका खून जमने लगा.

एक गहरी सांस ले कर उसने फिर गोता लगाया उन्हीं चिर-परिचित गहराईयों में जिन्हें वे अतीत में इतनी अंतरंगता से जानते थे. उसने पानी के दबाव से जी-तोड़ संघर्ष किया यहां तक कि बहाव के थपेड़ों से उसका सिर चक्कर खाने लगा, और अपनी समूची बची हुई ताकत बटोर कर उसने फीबी के शरीर को चट्टानों की एक दरार की ओर खींचा, हवा में सांस लेने वह ऊपर उठा और गोता लगाया कि मूंगे की चट्टान के एक बड़े खंड को पकड़ सके ताकि फीबी के शरीर को वह अधिक सुरक्षित ढंग से पत्थरों की दरार में फंसा दे.

थकान से चूर वह निढ़ाल हो कर द्वीप की गरम सफेद बालू व मूंगों पर लेट गया और स्तब्ध आंखों से आसमान को और उसमें उड़ते हुए बादलों की दौड़ देखने लगा. और उसे समझ में न आया कि उसने अभी जो गर्जन सुनी थी वह उसके दिमाग में उबलते हुए खून की थी या जलशिलाओं से टकराती समुद्री तरंगों की. फीबी के प्रति उसका प्यार एक विशाल सफेद प्रकाश के रूप में उसके अंदर फूट पड़ा.——समयहीन श्वेत प्रकाश की लहर के बाद लहर कि आखिर में उस प्रकाश में अंधा हो कर उसकी चौंधियाने वाली चमक से बचने के लिए वह पानी में फिसल गया. वह उससे एक बार फिर मिलेगा. अब वह वापस नहीं जा सकता. दादीम्मा और जिंदगी के साथ में, जैसे कि फीबी नहीं जा सकती थी. एक नरकुल-सी सुनहरी बांह को उसने पानी के अंदर हिलते देखा और उसे छुआ और उस चट्टान को सरका दिया जिसके वजन से फीबी की देह दरार में टिकी हुई थी. अपना मुंह खोल कर उसने बोलने की कोशिश की और आखिरीबार फीबी के नाजुक स्वर्णिम शरीर को पानी की सतह पर सलोनेपन से उठते देखा.

(अनुवाद : गोपालचंद्र जोशी) □ □ □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंद्रधनुष का पुत्र

• जेन केरयू

अतीत में बहुत-बहुत पहले पवन एक एकाकी व्यक्ति था. काफी समय तक वह उस अकेलेपन को अपने पेट से बांधे रहा, यहां तक कि एक दिन वह आया जब उसके लिए अधिक सहना कठिन हो गया. वह फूट निकला और बेचारे पवन को उसने बौरा दिया. अब उसने घाटियों में हुंकारना और घास के मैदानों में गरजना शुरू कर दिया. वह उस बेबून-मादा की तरह बिलाप किया करता, जिसने अपना एकमात्र शिशु खो दिया हो. और अपने उन्माद में पवन अपना खुद का चेहरा देखना सहन न कर सकता था. इसलिए हर वक्त जब वह शांत सोये हुए जल को देखता, उसे छेड़ कर क्षुब्ध व चंचल बना देता.

एक दिन पवन ने केटक के बड़े प्रपात के पड़ोस के एक्सेबायो कस्बे में ढोल बजने और लोगों के गाने की आवाजें सुनी और छाया का बहाना बना कर रेंगते हुए वह खुफियागीरी करने वहां पहुंचा कि असल में क्या राज था?

उस रात दर्रे से उठती हुई संगीत– ध्वनियां, जो नदी के बेताल कर रहे थे, ऐसी लग रही थीं मानो लाखों मर्मर-पक्षियों के पंखों की फरफराहट हो. और एक मोटी तोंदवाला ढोलकिया, जो छाया बने पवन के करीब ही मोरा वृक्ष के नीचे बैठा था, ढोलक की बकरे की खाल को ऐसे सहलाने लगा जैसे वह किसी औरत का जिस्म हो.

नदी के बेताल मर्मर-पक्षियों के गुंजन-सा संगीत कर रहे थे, गाज पक्षी का गायन गूंज रहा था और तोंदू ढोलकिया भी ताल ठोक रहा था, और पवन अब नाच नहीं सकता था, वही पवन, जिसके पैर इतने हलके थे मानो सेमल के फूल. लेकिन लोग मौज में नाच-गा रहे थे, 'कशेरी' पी रहे थे, और एक पियक्कड़ ने कशेरी से भरा तुम्बा पवन के मुंह में उंडेल दिया जो वृक्ष के नीचे लुका-छिपा खेल रहा था. जैसे ही पवन ने उसे पिया उसका खून गर्माने लगा और उसका पेट फूलने लगा. नशे ने उसको बेहद बौरा दिया और वह गरज उठा— अरे! संगीत मत रुकने दो! ढोलकियां बजाये जाओ.

—हां, मालिक! पवन! एक ढोलकिये ने जवाब दिया, और उसने मदहोशी में आ कर ताल ठोक दिये और उसके सीधे हाथ को यह पता नहीं था कि उसका बायां हाथ क्या कर रहा है, और अचानक पवन ने नाचना शुरू कर दिया. पहले ही चक्रवात में उसने मोरा के वृक्ष को जड़ से उखाड़ फेंका, जिससे उत्सव में शरीक आधे लोगों की जान चली गयी. गाज पक्षी अपनी गुफा से बाहर निकल आया और उसने पवन को कठलता जंजीर से जकड़ने की कोशिश की ताकि उसका जोश कम पड़ जाये, लेकिन पवन पैंतरेबाजी कर चंपत हो जाता और अपने को टुकड़ों में बिखेर लेता और फिर से टुकड़ों को जोड़ लेता, और सारे वक्त वह लाल बेबून बंदरों से भरे वन की तरह गरजता-तरजता रहा.

पवन तब तक कलोल करता रहा, जब तक उसको नींद ने न धर दबाया और तब वह सिकुड़ कर, रोरैमा, उस लाल पहाड़ की चौरस चोटी पर लेट गया, और यही वह जगह थी जहां गाज पक्षी ने सवेरे उसको देखा. क्योंकि पवन अभी चुपचाप पड़ा था, इसलिये गाज पक्षी को उसे पकड़ने में कोई दिक्कत न हुई और वह उसको बांध कर केटक के पीछे अपनी गुफा में ले आया. इधर प्रमुख देवता चर्चा कर रहे थे कि पवन को किस प्रकार दंडित किया जाये, और उधर गुफा के द्वार से, पवन ने करवट से मुड़ कर बाहर झांका. ओस गिरने के पहले सूरज की किरनें कुहासे पर चमक रही थीं और पहली बार पवन ने देखा इंद्रधनु अपने केशों को संवार रही थी. कोहरे में इंद्रधनु की झलक ने पवन के कंठ में राग भर दिया और वह ऐसा गीत गा उठा, जो मुरलिका के स्वरों से भी मधुर था. और जब पवन ने गाना शुरू किया तो बड़े देवताओं ने गुर्राना और कोसना बंद कर दिया और वे गायन को ध्यान से सुनने लगे. एक देवता कह उठा— मैंने इतना सुरीला राग पहले कभी नहीं सुना.

दूसरा देवता भुनभुना कर बोला— बस, शैतान ही ऐसा राग अलाप सकता है!

दूसरे देवताओं ने, जो इर्द-गिर्द खड़े थे, उनको चुप कराने की कोशिश की; और उस संगीत की गूंज बारी के अंदर और बाहर, चारों ओर लहराने लगी और जब सूरज ने उसे सुना तो वह झूम कर नाचने लगा और इंद्रधनु के केश नीचे बिखर आये. बात यह थी कि प्राचीन समय में देवताओं ने झरने की ऊपर से गिरती जलधारा से इंद्रधनु के केश गूंथे थे और उस खड़ी चट्टान के सामने चारों ओर उन्होंने आर्किड रोप दिये थे जिससे इंद्रधनु फूलों को चुन कर अपने केशों में लगा सके. वन में बसने वाले पुराने लोगों का कहना है कि इंद्रधनु ने नदी के बेतालों पर जादू-टोना कर उन्हें मोहित कर लिया था ताकि वे दिन-रात बांसुरी बजाते रहें और जब सूरज, चांद या तारे संगीत सुनने निकल आयें तो वह उनकी रोशनी चुरा कर अपने बाल संवार सके. इसीलिए तो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने लोग कहते हैं, इंद्रधनु के केश इतने चमकीले होते हैं. पवन अपना गायन इंद्रधनु को तब तक सुनाता रहा जब तक वह अपने केश संवारती रही और अपने चुने हुए आर्किड के फूलों को उसने गिर जाने दिया कि वे नीचे दर्रे में उनींदी चट्टानों से टकरा कर नष्ट हो गये.

शक्तिवान देवताओं ने पवन से वचन लिया कि वह चाहे जो करे या कभी भी कितना ही तूफानी क्यों न हो जाये, वह जब-तब गाता रहेगा. पवन ने गाते रहने का इस शर्त पर वचन दिया कि देवता लोग जंगल के पेड़ों पर बीन के तार रच देंगे और वे घास के मैदानों के कुछ तिनके खोखले रख देंगे जिससे कि जब वह लेटा रहे तो घास की बंसी बजा सके. देवताओं ने कहा वे पवन की इच्छानुसार कर देंगे और उन्होंने पवन को बंधन से मुक्त कर दिया; और वह गुफा से बाहर दौड़ पड़ा और उसने इंद्रधनु को नख से शिख तक आलिंगन में भर लिया. वह तब तक इंद्रधनु के शरीर से सटा रहा जब तक सूरज को ईर्ष्या न हो आयी, वह बादल की ओट में छिप गया. पवन ने इंद्रधनु के शरीर का इतने आवेग से घर्षण किया कि आकाश में चारों ओर उसकी अलकावलि बिखर गयी. उसके अलक कहीं चट्टानो में उलझ गये, कहीं पास के पेड़ों पर गुंथ गये, और नदी का पहरेदार काई, जो इंद्रधनु की रखवाली किया करता है, अबाबीलों के झुंडों के साथ ऊपर उड़ा और उसने इंद्रधनु पर साये का लबादा डाल दिया. कुछ क्षणों तक पवन अपनी प्रेयसी इंद्रधनु को अपने भुजपाश में जकड़े रहा और तब वह अचानक अदृश्य हो गयी. तब से जब कभी कोहरा होता है, पवन पीछा करता हुआ इंद्रधनु की तलाश करता है. बर्फीले पहाड़ों पर, नदियों के ऊपर, वृक्षावलियों पर, और भोर में, घास के मैदानों पर—— सब कहीं—— जब वर्षा होती है और धरती से भाप के बादल उठते हैं—— लेकिन पवन को इंद्रधनु कहीं न मिली क्योंकि नदी के लोगों ने उसको क्षितिज के एक गहरे कुंए में बंद कर दिया जहां घास के मैदान लुप्त हो जाते हैं.

एक दिन आग के पंखों वाले कठफोड़वे ने पवन को खबर दी कि इंद्रधनु के गर्भ से उसको एक शिशु-बालक हुआ है और इंद्रधनु ने संदेसा दिया है कि अगर वह बच्चे को देखना चाहे तो रात के आकाश में फिर से वक्री चंद्रमा के निकलने के पूर्व लाल पहाड़ की चोटी पर एक झूला डाल दे. दूसरे दिन पवन ने झूला डाल दिया और उसको इमली की पत्तियों से भर दिया और वह बैठ कर वक्री चंद्रमा के उदय की बाट जोहने लगा. प्रतीक्षा करते हुए उसने कसावा वृक्ष की टहनियों का पत्ता तक न हिलाया, न घास के तिनकों को अपनी उंगली के पोरों से छुआ ही. और पवन के संगीत के बिना जंगल के लोगों ने आपस में झगड़ना शुरू कर दिया, लेकिन उन्हें मदद करने पवन टस से मस न हुआ. आखिरकार वह समय आया जब आकाश में वक्री चांद उदित हुआ. इंद्रधनु अपने शिशु को बांहो में थामे पहाड़ के उपर कोहरे की चादर से प्रकट हुई और उसने शिशु को पवन के बनाये झूले में रख दिया और जब पवन ने इंद्रधनु के पास पहुंचना चाहा तो कोहरा बिखर गया और उसके साथ ही इंद्रधनु भी अदृश्य हो गयी.

पवन ने शिशु का नाम अमालीवाका रखा, अमालीवाका याने तलाशी का बालक! अमालीवाका की आंखें चमकीली थीं और उसका स्वर गीतमय था क्योंकि उसकी नसों में पिता पवन का संगीत दौड़ रहा था. उसकी क्रीड़ा-स्थली लाल पहाड़ की चौरस चोटी दोरेमा थी और उसके सखा मेक्यूशी चींटियां और एक जी नामक वृद्ध गिद्ध पक्षी थे. पुराने लोग कहते हैं, जी वह पक्षी था जबकि कुरूपता का बंटवारा हो रहा था तो उसने अपने हिस्से में सब ले ली थी. उसके पंख भूरे मटमैले थे और आंखें शोकभरी और धुंधली, गर्दन झुर्रियों से भरी नंगी थी और उसकी आवाज इतनी कर्कश थी कि सुनने वाले के कान पक जाते थे, आपके कानों पर उसका हर शब्द ऐसा पड़ता जैसे किसीने झाड़ का खुरदुरा तना रगड़ दिया हो. लेकिन जी बुद्धिमान था, उसका हृदय बड़ा दयालु था और पिता पवन ने अपने एकमात्र शिशु अमालीवाका को जी के सुपुर्द कर दिया.

अमालीवाला सारे दिन चट्टान पर बैठा रहता और वृद्ध गिद्ध पक्षी जी की आवाज सुनता व मेक्यूशी चिटियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एयर-इंडिया प्रस्तुत करती है सप्ताह में पैंसठ उड़ानें—५ महाद्वीपों के लिए.

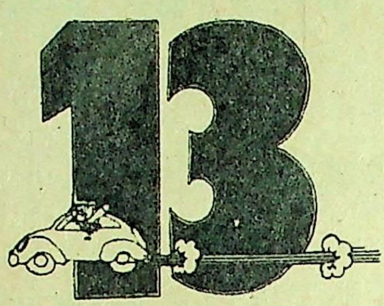

यूरोप

यूरोप के लिए सप्ताह में १३ उड़ानें

लंदन ? नौ ७४७ विमानों को आपका इंतजार है. इनमें से तीन, शुक्रवार, शनिवार और मंगलवार को, तेज गतिवाले हैं. अन्य छह में आपको रोम, पेरिस या फ्रैंकफर्ट हो कर जाने की सुविधा मिलती है. इसके अलावा दो ७०७ विमान जिनेवा हो कर. मॉस्को ? दो ७०७ विमान.

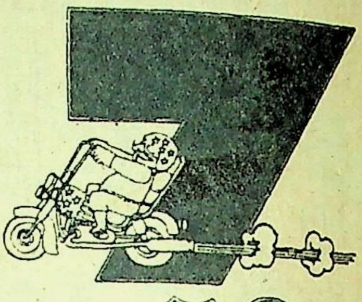

न्यू यॉर्क

न्यू यॉर्क के लिए सप्ताह में ७ उड़ानें

हर दिन ७४७ विमान की एक उड़ान. मध्य पूर्व और यूरोप होते हुए. हमारे विशेष एक्सकर्शन फ़ेयर के अन्तर्गत न्यू यॉर्क जा कर वापस लौटने का किराया आम तौर पर लगनेवाले एकतरफ़ा किराये से भी कम पड़ता है.

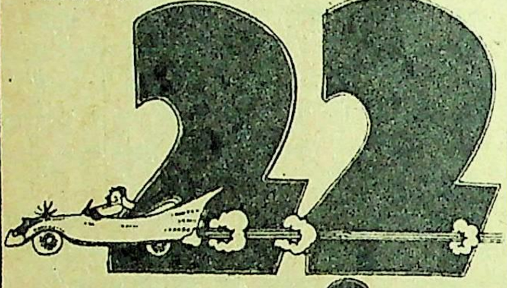

मध्य पूर्व

मध्य पूर्व के लिए सप्ताह में २२ उड़ानें

बेरूत ? पाँच ७४७ विमान उड़ान भरने को तैयार. कुवैत ? चार ७४७ तथा दो ७०७ विमानों में से आप मनपसंद चुनाव कर सकते हैं. दुबई के लिए चार ७०७ विमानों में से कोईसा भी चुनिए. बहरैन तथा मस्कत के लिए तीन उड़ानें तथा आबू धाबी, कैरो और तेहरान में से प्रत्येक के लिए दो उड़ानें. इसके अलावा अदन, दौहा या दहरान में से प्रत्येक के लिए एक ७०७ विमान.

साथ ही हर सप्ताह :
६ उड़ानें
जापान के लिए हाँग काँग हो कर—
४ टोकियो के लिए
२ ओसाका के लिए. १० उड़ानें
दक्षिण पूर्व एशिया के लिए—
६ बैंकॉक के लिए और
४ सिंगापुर के लिए.
२ उड़ानें
ऑस्ट्रेलिया के लिए
३ उड़ानें
पूर्व अफ्रीका के लिए
२ उड़ानें
मॉरिशस के लिए.

एयर-इंडिया
आपकी मनपसंद एयरलाईन

AI. 9084

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बुर्ज बना कर अन्न-संग्रह करते देखा करता. जब लाल पहाड़ की चोटी पर वर्षा होती तो फेनिल निर्झर नीचे घाटी में गिरने लगते और पानी की दौड़ती हुई जुबानें अपने साथ नीचे घाटी में यह खबर लेती गयीं कि लाल पहाड़ की चोटी पर सपने में डूबा चमकीली आंखों वाला एक लड़का बैठा है और वह पवन का बेटा है.

एक दिन बड़े भोर में बड़े मालिक, अकाराई ने, एक तूर्य-वादक पक्षी को रवाना किया कि वह अमालीवाका को लाल पहाड़ से नीचे ले आये. तूर्यवादक पक्षी ने आकर उस चट्टान पर दस्तक दी जो गिद्ध के घोंसले की रक्षा-दीवार थी.

—कौन है? गिद्ध ने पूछा.

—मैं हूं, तूर्यवादक; बड़े मालिक, अकाराई ने मुझे खोजी पवन के बेटे के लिए संदेश लेकर भेजा है.

—तब मैं उस लड़के को लिये आता हूं, तूर्यवादक, और तुम्हीं उससे बात कर लेना. अ-म-ऽ-ली-वा-का! अमालीवाका, तुम्हारे जाने का वक्त आ गया है, बड़े मालिक, अकाराई ने, तूर्यवादक को तुम्हें बुलाने भेजा है.

और वह लड़का जिसकी आंखों में मोतियों की चमक थी, आया और तूर्यवादक का संदेश सुनने लगा.

—अकाराई ने कहा है, तुम्हें अब घाटियों के निवासियों के बीच पहुंच जाना चाहिये—नीचे यूटीशी के दर्रे में जहां एक्सेवायो लोग बसते हैं. उसने कहा है तुम्हारे पिता ने उन लोगों का नुकसान किया था और तुमको वह क्षति-पूर्ति करना है.

और अमालीवाका ने वृद्ध गिद्ध पक्षी की झुर्रियोंभरी गर्दन का आलिंगन किया और उसकी आंखों से निकाला जल उसके मटमैले पंखों पर गिर पड़ा और दो चमकीले मोती वहां छूट गये.

—बच्चे अब तुम जाने की तैयारी करो, जाने की तैयारी करो, वृद्ध गिद्ध पक्षी ये शब्द दुहराता रहा और उसकी धुंधली आंखों में उदासी छा गयी. और जब पिता पवन ने सुना कि उसके लाड़ले बेटे को नीचे दर्रे के लोगों के बीच जाना है तो उसने अपनी मुट्ठी जोरों से खड़ी चट्टान पर पटक दी और उसके साथ ही वह चीख उठा —अकाराई, मेरे लड़के को लाल पहाड़ की गोद में उन्मुक्त खेलने दो, इस लड़के में इंद्रधनु की चमक है और उसका हृदय पक्षी के फरफराते पर की तरह कोमल है, वह नहीं जानता कि नफरत किसे कहते हैं!

और जब अकाराई ने पवन को चिल्लाते सुना तो वह रोते हुए वन के पास के पहाड़ी शिखर से गरजकर कहने लगा—सिर्फ अमालीवाका, जिसमें इंद्रधनु की चमक है, घाटी के लोगों के जीवन की रक्षा कर सकता है. पिता पवन तुम उसे जाने दो व अपनी संगीत की देन उसे दे दो. उस संगीत के जादू से वह वृक्षों पर बीन बजायेगा और बड़े मैदानों में घास से बंसी की तान छेड़ेगा.

और पिता पवन ने वैसा ही किया जैसा अकाराई का अनुरोध था, और उसने लड़के को वृद्ध गिद्ध की पीठ पर उड़ा कर रोते हुए वृक्षों के कुंज में छोड़ दिया. अमालीवाका पेड़ की बेजान पत्ती पर बैठ गया और पिता पवन की दी हुई चांदी-सी बंसी बजाने लगा. पार्श्व की संकरी खाड़ी में वंशी की तान गूंजने लगी और वह संगीत सारे जंगल में व्याप्त हो गया और लोभी टूकन पक्षी आम का पेड़ छोड़ कर रोते हुए वृक्षों के कुंज में चला आया, और मरुदी, माम, गुंजारते पक्षी, गायक उलूक, और रात की तरह अंधा चमगादड़ सब चारों ओर आ इकट्ठे हुए; और सारे के सारे जंगली हिंस्र जानवर, सर्प, घड़ियाल, भेड़िया, मछली, अरापेमा व हसर, सभी उस संगीत के चुंबक से खींचे चले आये. उस विजन जंगल में, तब से जब से कि काले सांप ने धरती को समंदर में से खींचकर बाहर निकाला था, पहली बार इंद्रधनु के पुत्र ने जीवन की चमक पैदा कर दी थी. और यह खबर आग की तरह फैल गयी कि घास के मैदानों में पिता पवन किसी का पीछा कर रहा था और सारी दुनिया के संघर्ष का— अंत करने के लिए एक नबी आ गया था.

अमालीवाका ने आ कर एक्सेबायो औरतों की कोख को उर्वर किया और वह अपने साथ मेक्यूशी चींटियां लाया जो गांव के लोगों को काम करने का सबक सिखा सकें. और वह गांव रौनक से भर उठा.

और पागल पिता पवन अपने बेटे की रखवाली करता और यदि अमालीवाका वर्षा को बुलाता तो पवन तुरंत ही मेघ-पक्षी को उसकी गुफा से पुकारता जो झील का पानी अपनी पीठ पर लाकर उलीच देता, और अगर खोजी पवन का लड़का सूखे मौसम की तमन्ना करता तो पवन बादलों को झुंडों में इकट्ठा कर उनको क्षितिज के किनारों पर उड़ा ले जाता.

अमालीवाका प्रकाश का पहला अग्रदूत था. वह खोजी पवन का शिशु था, और इंद्रधनु का पुत्र था, और उसने घाटी के लोगों के आपसी संघर्ष का अंत कर दिया— रोते हुए जंगल की नदी से लेकर चांद-साये वाले पहाड़ तक. □□□

(अनुवाद : गोपालचंद्र जोशी)

एक लोककथा

खलीफा की तनख्वाह

हजरत अबूबकर सद्दीक जब खलीफा बने, तो सवाल पैदा हुआ कि खलीफा का वजीफा क्या मुकर्रर किया जाये. बहुत सोच-विचार के बाद फैसला हुआ कि इस मामले को खलीफा की मर्जी पर छोड़ दिया जाये. अतः हजरत अबूबकर सद्दीक ने पूछा—मदीना में एक मजदूर की रोजाना आमदनी क्या है, बस उतनी ही मजदूरी लूंगा.

लोगों ने कहा—हुजूर, इतनी कम आय में आप कैसे गुजारा करेंगे?

खलीफा ने फरमाया—जिस तरह मजदूर गुजारा करेगा, मैं करूंगा. . . इसका एक फायदा यह होगा कि मैं कोशिश करता रहूंगा कि मजदूर की आमदनी बढ़ती रहे और इस तरह मेरे वजीफे में भी वृद्धि होती रहे. □□□

(प्रस्तुतकर्ता : हसन जमाल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुस्ताख़ियां

• प्रकाश पंडित

औकात की बात

उर्दू दैनिक **'मिलाप'** में **'प्याज के छिलके'** ऐसा लोकप्रिय व्यंग्य कालम लिखने वाले फिक्र तौंसवी साहब कालम लिखते समय जिस दरियादिली का प्रमाण देते हैं, अपने व्यक्तिगत जीवन में पोखर या तालाब दिली तक का नहीं देते. सिगरेट आप बेतहाशा पीते ह लेकिन दूसरों के. अपना सिगरेट पीने की जब कभी नौबत आती है, तो आप जेब में पड़ी हुई सिगरेट की डिबिया को जेब में पड़े-पड़े ही खोल कर उसमें से एक अदद सिगरेट निकालते हैं और बड़ी दिलेरी बल्कि दीदा दलेरी से उस व्यक्ति के नथनों में धुआं छोड़ने लगते हैं जिसकी सिगरेटों की डिबिया आपने अभी-अभी खाली की होती है. कॉफी हाउस में भी आप ठंडे पानी के गिलास का आर्डर देना ही पर्याप्त समझते हैं और अगर कोई चाय या कॉफी पिलाने वाला धर्मयोद्धा न मिले तो पानी का गिलास भी वापस कर देते हैं कि बिल और बैरे को टिप देने की नौबत न आये. और बस में तो आप उस समय तक सवार नहीं होते जब तक आपके क्षेत्र का एक-एक व्यक्ति बस पर सवार हो कर विगत नहीं हो जाता.

यह तो खैर आजकल की बात है जब आपको खासा वेतन मिलता है और लेखन आदि से भी खासी आय हो जाती है लेकिन होनहार बिरवान के चिकने-चिकने पात. बात आज से चौथाई सदी पहले की अर्थात भारत विभाजन के तुरंत बाद की है, जब आप शरणार्थी बन कर और भारत सरकार की जोर से प्रबंधित बस में बैठ कर सीमा पार करने की बजाय इसलिए ठेले पर सवार हो कर सीमा पार करके जालंधर पहुंचे थे कि बस में कहीं कोई परिचित न मिल जाये और यह न कह गुजरे कि हम तो सब कुछ लुटा-पुटा के तीन कपड़ों में आ रहे हैं और आप उदवायन समेत चारपाइयां, खाली कनस्तर और खूंटियां तक लिये जा रहे हैं.

जालंधर में एक ही ऐसा परिचित व्यक्ति था जो आप ही की तरह बतहाशा सिगरेट पीता था और संयोग से अपनी पीता था—'मखमूर' जालंधरी. प्रत्यक्ष है कि इश्क, मुश्क और सिगरेट का धुंआं छिपाये नहीं छिपता. फिर साहब सिगरेट का धुआं सूंघते-सूंघते मखमूर साहब के यहां पहुंचे और नस पहुंच गये. सिगरेट, खाना-पीना, सोना-जागना ओर खांसना-छींकना वहीं होने लगा और शाम को खुली सड़कों पर सैर भी होने लगी.

एक दिन एक खुली सड़क पर सैर करते-करते फिक्र साहब की नजर सड़क के किनारे पड़ी एक ऐसी कार पर जा पड़ी जिसके न टायर थे, न इंजन , न स्टीयरिंग व्हील, न मडगार्ड, यहां तक की डिक्की का ढकना तक गायब था. फिक्र साहब ने खड़े हो कर बड़ी हसरत से उस खटारे की ओर देखा और एक ठंडी आह खींच कर, जिसमें मखमूर साहब के पैकेट के अंतिम सिगरेट का धुआं भी शामिल था, बोले—अगर कहीं यह गाड़ी मुझे मिल जाये तो मैं इसे ठीक करा कर अपने इस्तेमाल में ले आऊं.

—हत तेरे की, मखमूर जालंधरी ठिठक कर बोले, किसी गाड़ी के लिए अगर तुम्हें 'अगर' ही कहना है तो सड़क है तो सड़क पर जा रही शेवरलेटों और फोर्डों के लिए क्यों नहीं कहते कि अगर इनमें से कोई गाड़ीं मिल जाये तो. . .

—मैं अपनी औकात पहचानता हूं. फिक्र तौंसवी ने बड़े इत्मीनान से उत्तर दिया और जेब में पड़ी हुई सिगरेट की डिबिया में से जेब के भीतर-ही-भीतर सिगरेट निकालने में व्यस्त हो गये.

आटे की बोरियां

चर्चा गाड़ी की चली है तो चर्चा एक और गाड़ी की भी सुनिए. यह गाड़ी उर्दू के प्रसिद्ध लेखक और फिल्मनिर्माता राजेंद्रसिंह बेदी की गाड़ी थी — बहुत लंबी-चौड़ी, जो उन्होंने अपनी एक फिल्म की असफलता के बाद कर्ज के बोझ

फिक्र तौंसवी

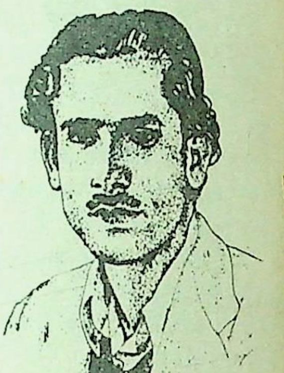

से उभरने या बच कर निकल भागने के लिए नयी-नयी खरीदी थी.

उन्हीं दिनों पंजाबी के प्रसिद्ध लेखक संतसिंह सेखो बंबई आये. पंजाबी साहित्य केंद्र की ओर से उन्हें एक पार्टी दी गयी जिसमें राजेंद्रसिंह बेदी भी शामिल हुए. पार्टी के बाद संतसिंह सेखो के अलावा पंजाबी के कुछ और लिखारी भी बेदी साहब की कार में बैठ गये और बेदी साहब ने उन्हें विभिन्न नाकों पर पहुंचाने की जिम्मेदारी ले ली.

रास्ते में अपनी छिदरी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए पंजाबी लिखारी सुखबीर ने कहा—बेदी साहब, यह गाड़ी आपके प्रोड्यूसर होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सही निशानी है.

—क्यों नहीं, पंजाबी के एक और लिखारी बोले, गाड़ी क्या है, पूरा छकड़ा है.

—और इसमें, सेखों साहब ने मुसकरा कर कहा, आटे की बोरियां भी लादी जा सकती हैं.

—वही तो लादे लिये जा रहा हूं. . . बेदी साहब भी मुसकरा कर बोले.

जी हां, बारह बजते हैं

बेदी साहब बड़े ही मनोरंजक स्वभाव के सिख हैं. उन्हीं का सुनाया हुआ एक लतीफा या घटना है कि—बेदी साहब के एक मुसलमान दोस्त ने एक दिन उनका

मखमूर जालंधरी

मजाक उड़ाने के लिए बड़े भोलेपन से उनसे पूछा—बेदी साहब! आप सिखों के यह जो बारह बजते हैं, इसमें कहां तक सच्चाई है?

—काफी सच्चाई है. बेदी साहब ने उत्तर दिया.

—फिर तो आपके भी बारह बजते होंगे.

—जरूर बजते हैं.

—उस समय क्या होता है?

—यही कि कोई गलत हरकत करने को जी चाहता है.

—अच्छा. मुसलमान दोस्त मुसकराया, अब यह बताइए कि यह बारह किस वक्त बजते हैं, दोपहर को या रात को?

—दोपहर को, बेदी साहब ने गंभीरतापूर्वक उत्तर दिया, क्योंकि उस समय गर्मी बहुत होती है और गर्मी में सिर के लंबे-लंबे बालों के कारण हर सिख बौखला जाता है.

—लेकिन बेदी साहब, मुसलमान मित्र ने ऊपरी आश्चर्य से कहा, हमारे मोहल्ले में एक ऐसा सिख रहता है जो रात के बारह बजे बौखलाता है.

—वह असली सिख नहीं होगा. बेदी साहब ने उसी गंभीरता से कहा, मुसलमान से सिख बना होगा.

जिगर की खराबी

बात गाड़ियों की चली थी इसलिए एक और गाड़ी—चलती

राजेंद्र सिंह बेदी

नहीं, खड़ी गाड़ी और उसमें बैठे थे कुंवर महेंद्र सिंह बेदी, अली जवाद जैदी, साहिर लुधियानवी और प्रकाश पंडित. यह गाड़ी प्यारेलाल भवन, दिल्ली के अहाते में खड़ी थी और भवन के भीतर स्टार पॉकेट बुक्स का दस साला जशन मनाया जा रहा था, जिसमें स्वर्गीय रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपने जीवन का अंतिम भाषण करते हुए दस साला जशन मनाने वालों के लत्ते लिये थे कि ये लोग दस साल बाद दो-चार अच्छी किताबें छाप कर (उन दिनों जशन मनाने वालों ने दिनकरजी की 'उर्वशी' के कुछ अंश भी छापे थे) अपने सिर पर कलंगी लगाना चाहते हैं कि हम साहित्य की सेवा कर रहे हैं. लेकिन वास्तव में यह फर्जी लेखकों के नामों से घटिया किताबें छाप कर अपनी तिजोरियां भर रहे हैं. और बाहर गाड़ी में बैठे हुए और डिकी के पेग की प्रतीक्षा करते हुए, जिसे साहिर साहब का ड्राइवर असलम तैयार कर रहा था, साहिर साहब कह रहे थे कि अमरनाथजी (स्टार पाकेट बुक्स वाले) सुबह कह रहे थे कि रुपया हमने बहुत कमा लिया है. बंगले बनवा लिये हैं. कारें खरीद ली हैं. दरीबा कलां से निकल कर दरिया गंज, फिर आसफ अली रोड और अब कनॉट प्लेस में दफ्तर बना लिये हैं लेकिन हमारी प्रेस्टीज नहीं बनी. इस जशन और बेतहाशा पब्लिसिटी से अब हम अपनी प्रे-

साहिर लुधियानवी

स्टीज बना रहे हैं. . . उन्होंने अभी इतना ही कहा था कि असलम मियां ने पेग बना कर चंडाल चौकड़ी को थमा दिये.

—अरे. . . रे. . . नहीं, नहीं अली जवाद जैदी ने अपना पेग लेने बल्कि छूने से इनकार करते हुए बड़ी नम्रता से कहा, आजकल मेरा जिगर खराब है.

—आपका जिगर तो आजकल खराब है, साहिर लुधियानवी ने जबरदस्ती उन्हें पेग थमाते हुए कहा, मेरा और प्रकाश पंडित का पिछले बीस बरस से खराब है.

कर्तव्यनिष्ठ थानेदार

और इसी गाड़ी का—जिसमें उपर्युक्त चंडाल चौकड़ी बैठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

femina –२४ अक्टूबर १९७५ विशेषांक–

भारतीय मिठाइयां– दीवाली के लिए तैयार हो रही हैं!

इस बार आप मिठाइयां न खरीदें उन्हें घर पर ही बनायें।
जीहां, फेमिना के इस अंक की मदद से, आप भारत के हर राज्य को स्वादिष्ट मिठाइयां आसान तरीकों से और कम-खर्च में बनायें।
इनमें से कुछ व्यंजन तो ऐसे हैं जिनमें मंहगे पदार्थ डालने की आवश्यकता नहीं। सामग्री भी ऐसी लगती है जो कम-खर्चीली है और आसानी से मिल भी जाती है।

तो, अपने परिवार के साथ इन मिठाइयों का मजा लेने के लिए तैयार हो जाइये।

ये रहीं महाराष्ट्र से: करंजी, चिरोटी, अनारसे, गोकुल पीठ
गुजरात से: मगजना लड्डू, कोपरा पाक, काजूनी बर्फी
पंजाब और उत्तर प्रदेश से: गुलाब जामुन, मोहनथाल, खाजा, लवोंग लथिका, कलाकंद, दाल बर्फी, केसरी पेड़ा, गाजर बर्फी, मानक बर्फी
दक्षिण भारत से: अदिरसम, बादाम हलवा, स्वीट मुरुक्कू उपकारइ
बंगाल से: पंतुआ, रसगुल्ला, चमचम, राजभोग, पतिशप्ता
गोआ से: बिबिक, बाथ, बोलमास
और पारसी मिठाइयां भी: लगन नु कस्टर, फलूदा, ईंडा नो हलवो
साथ ही—पारंपरिक मिठाइयां बनाने में लगनेवाले समय की अपेक्षा शीघ्र मिठाइयां तैयार करने की विधियां
इसके अलवा दूध, गेहूँ के आटे, चने के आटे, तथा सब्जियों से बनायी जानेवाली मिठाइयां

हमारे अन्य आकर्षण: बीती जा रही जिन्दगी के सच्चे अनुभव
एक विधवा को उत्तराधिकार प्रमाणपत्र लेने के लिए क्या क्या करना पड़ता है–एक पति-पत्नी को इस तरह की परेशानी दूर करने के लिए क्या क्या करना चाहिए
दीवाली रोशनी का पर्व है—इसी रोशनी की बात अन्य धर्मों में भी आती है

हमारे अन्य स्तंभों में—
साहसी युवतियां गुंडों के लिए प्रसिद्ध फरीदाबाद में साहसी –एक युवा अध्यापिका की कोशीश– गुंडों को शहर से मार भगाने की
क्या परिवार से अलग होने का मतलब अपनी जिम्मेदारियों से अलग होना है? युवा बुजुर्गों के अपने अपने विचार

femina टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन
हर दो हफ्तों में नयी उम्मीदें, नई उमंग

ATMS-BC/F49-713-HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी और जिसे साहिर लुधियानवी रेलवे हड़ताल के कारण बंबई से लाये थे और जिसमें असलम ड्राइवर के अलावा साहिर साहब की अम्मी और बहन भी आयी थीं—किस्सा सुनाते हुए साहिर साहब ने बताया कि किस तरह रास्ते का नक्शा देखते हुए वे रात के लगभग दस बजे यू. पी. के एक शहर या कस्बे —मोगल या मोगली या मोगला पहुंचे. नक्शे में दर्ज था कि वहां सरकारी रेस्ट हाऊस है. दर्जनों लोगों से पूछा लेकिन रेस्ट हाऊस का पता नहीं चला. इस पर स्थानीय पुलिस स्टेशन का पता पूछ कर पुलिस स्टेशन पहुंचे और थानेदार से रेस्ट हाऊस का पता पूछा.

—यहां तो कोई रेस्ट हाऊस नहीं है, जनाब! थानेदार ने निहायत शाइस्तगी से जवाब दिया.

—लेकिन सफरी नक्शे में तो दर्ज है कि यहां सरकारी रेस्ट हाऊस है.

—मैं पिछले बारह बरस से इस थाने में तैनात हूं जनाब, थानेदार साहब ने यह जानने के बाद कि साहिर लुधियानवी पद्मश्री भी हैं और भी शाइस्तगी से जवाब दिया, मैंने आज तक यहां रेस्ट हाऊस नाम की कोई चीज नहीं देखी.

—तो फिर इस वक्त हम कहां जायें? साहिर लुधियानवी ने परेशान होकर कहा, न यहां रेस्ट हाऊस है, न कोई होटल और मेरे साथ औरतें भी हैं.

—कोई मुजायका नहीं. कर्तव्यनिष्ठ थानेदार ने कहा, थाना हाजिर है.

—थाना? साहिर लुधियानवी ने चकरा कर कहा.

—जी हां. इस थाने में मुजरिमों के लिए दो कोठरियां हैं. सरेदस्त दोनों अल्लाकी मुजरिमों से भरी हुई हैं लेकिन आप फिक्र न करें. मैं एक कोठरी के मुजरिम दूसरी में मुंतकिल करवा देता हूं. आप लोग खुशी से दूसरी कोठरी में तशरीफ लाइए. मैं सब इंतिजाम कर दूंगा. □□□

सारिका

वार्षिक ग्राहकों के लिए विशेष छूट

'सारिका' के प्रत्येक अंक का मूल्य एक रुपया है, किंतु वर्ष भर के लिए वार्षिक शुल्क मात्र दस रुपये है, यानी साल भर में २ अंक मुफ्त! यदि आप दो साल के लिए ग्राहक बनते हैं, तो शुल्क केवल उन्नीस रुपये है यानी दो वर्षों में ५ अंक मुफ्त हां, तीन वर्ष के लिए शुल्क केवल सत्ताईस रुपये है और इस तरह आप तीन वर्षों का शुल्क एक साथ भर कर ९ अंक मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं.

आपके लिए सारिका की विशेष दरें इस प्रकार हैं:

एक वर्ष — १० रुपये
दो वर्ष — १९ रुपये
तीन वर्ष — २७ रुपये
विदेश में समुद्री डाक से एक वर्ष — २२ रुपये

कृपया यह कूपन ज़रूरी राशि के चेक / ड्राफ्ट / मनीआर्डर के साथ आज ही भेज दें —

सर्कुलेशन मैनेजर,
सारिका, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग,
बम्बई – ४०० ००१

कृपया मुझे / हमें निम्न पते पर एक वर्ष / दो वर्षों / तीन वर्षों के लिए 'सारिका' भेजने की व्यवस्था करें. १० रुपये / १९ रुपये / २७ रुपये चेक / ड्राफ्ट / मनीआर्डर द्वारा भेजे जा रहे हैं.

नाम ....
पता ....
....
हस्ताक्षर ....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन जाने?

• यशपाल

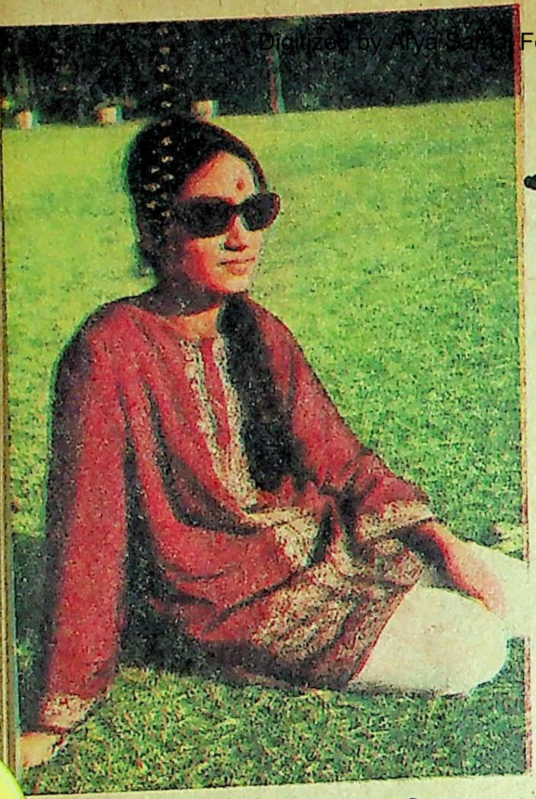

• आर. पी. भटनागर

शुरू से बताऊं—

रिटायर होने के पहले नानाजी को बंगला बैंक से मिला था. उसके साथ फर्नीचर पंखे, लैंप, जैसी चीजें और दो अर्दली. बंगले के चारों ओर एकड़ भर जगह में बाग-बगीचा. बगीचे के रख-रखाव और माली का खर्च भी बैंक से. नानाजी को फुलवाड़ी-बगीचे का शौक शुरू से व्यसन जैसा रहा. स्वयं बताते हैं, बगीचे पर बैंक से निश्चित से अधिक खर्च हो जाता, तो अपनी जेब से दे देते. तरह-तरह के गुलाब, डालिया, ग्लेडियोली, कार्नेशन, क्रोटन और दूसरे सजावटी पौधे बंगलोर, पूना, सिक्किम, शिमला, पूसा और मेरठ की नर्सरियों से मंगवाते रहते. एक बार ग्लेडियोली और लाला (ट्युलिप) की गांठें हालैंड से मंगवायीं. पौधों पर कलम या कल्ले बांधते और खादों के प्रयोग करते रहते.

नानाजी ने रिटायर होने से दो बरस पहले ही इस कालोनी में यह मकान बनवा लिया था. मकानियत से तिगुनी जगह फुलवाड़ी-बगीचे के लिए रखी. मकान की छतें और फर्श बन रहे थे और लकड़ी का काम जारी था, तभी माली लगा लिया था. गोरखपुर से आ कर लान और क्यारियों की दागबेल स्वयं डलवायी. तीसरे-चौथे सप्ताह आ कर निरीक्षण कर जाते. सब काम मनमाफिक और स्तरीय हो, इस निगरानी के लिए सेक्रेटेरियेट से रिटायर हमारे फूफाजी को एक नौकर दे कर यहां टिका दिया था. फूफाजी ने अपनी समझ से सामने के लान के अंत में तीन पेड़ दसहरी आम के, दो अमरूद के और पिछवाड़े दो कटहल के लगवा दिये थे. नानाजी ने देखा, तो पेड़ तुरंत निकलवा दिये. फूफाजी से बोले, इतने पेड़ों से घर की साल भर की जरूरत पूरी हो न जायेगी. बाजार से खरीदना पड़ेगा ही. फल तरकारी बाजार में मिलते हैं. यह कुछ जगह मनभावन फूल-पौधों के लिए ही रहे.

यों तो पास-पड़ोस के लोग और आने-जाने वाले अब भी हमारे लान और बगीचे को सराहते नहीं अघाते, परंतु कुछ बरस पहले और ही बात थी. नौ बरस पूर्व जब मैं सेंट मेरी में पढ़ने के लिए आयी, तब भी नानाजी फरवरी-मार्च में महीना भर नये गुलाब बांधने में लगे रहते. ग्लेडियाली, डालिया और नरगिस की गांठें सिक्किम और रानीखेत से मंगवाते. मकान के चारों ओर कितने गुलाब थे और कैसे-कैसे लोग उनके रंगीन फोटो ले जाते. मुझे भी गुलाब की कितनी ही किस्मों, क्रिमजनग्लोरी, कानफीडेंस, मिरांडी, विरागो, मांटेज्यूमा, क्राइसलर, रूजवेल्ट, नेहरू आदि चालीस-पैंतालिस गुलाबों की परख-पहचान हो गयी थी. बगीचे में इतने फूल होने पर भी कमरों में सजावट के लिए या मित्रों के यहां भेजने के लिए फुल नानाजी कैंची ले कर स्वयं काटते, या माली से अपने सामने कटवाते, इस ढंग से कि क्यारियों की रोनक फीकी न पड़े, कभी लीला दीदी और मैं कोई खास फूल सिर में लगाने के लिए चुपके-से काट लेतीं, तो नानाजी की नजर से बच न पातीं. कद्रदानों को फूल भेंट कर बहुत संतोष पाते. हम लोग अपनी टीचर्स के जन्मदिनों पर या चर्च में सर्विस के समय ऐसे और इतने फूल ले जातीं कि हमारी धाक बंधी थी. लेकिन आवारा लड़के लुक-छिप कर फूल तोड़ ले जायें, या चारदीवारी के तारों पर छायी बोगनवेलिया, अलमंडा, टिकोमा, नित्यमलिका के फूल नोंच लें, तो नानाजी धमकाते—फिर ऐसा किया, तो तुम पर कुत्ता छोड़ देंगे!

★ ★

नानाजी पेंशन, टैक्स कटने के बाद, आठ सौ ही पाते थे. बड़ा सहारा था, सोच-विचार कर व्यवसाय में लगायी बचत पूंजी पर लाभांश अधिकतम लाभ और विश्वस्त व्यवसाय के विचार से नानाजी ने अपनी बचत रकम का तीन चौथाई अपने सहपाठी घनिष्ठ मित्र, खानदानी व्यवसायी रईस की पुश्तैनी चोब कंपनी में लगा दिया था. ग्यारह बरस तक वह धंधा संतोष का और उत्साहवर्धक रहा. सन् ७२ तक नानाजी का ढंग अफसरी के समय के स्तर से नीचे न आया था.

१९७० में नानाजी के मित्र की अकस्मात अकाल मृत्यु के बाद ७१-७२ में चोब कंपनी पर जाने कौन मुसीबतें, भाइयों-भागीदारों में झगडे, उसके साथ प्राकृतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और राजनीतिक कार[illegible] कंपनी ने दिन में दिया जला दिया. कंपनी के दिवाले के दिये की लौ में नानाजी का मुख्य सहारा भी फुक गया.

सब जानते हैं, कई बरसों से रुपया लगातार मिट्टी होता आ रहा है. पहले एक रुपये में बहुत कुछ मिलता था, अब दस-बारह में भी उतना नहीं. तिस पर नानाजी के सहारे के मुख्य स्तंभ गिर जाने का धक्का. लीला बहन का ब्याह ७२ जनवरी में हुआ. निर्मल मामाजी बंबई में 'पद्मराज ग्रिमर्सन' में इंजीनियर हैं. वहां फ्लैट का किराया ही छह सौ मासिक. छोटे बेटा-बेटी महंगे स्कूलों में, ब्याह-दहेज सब नानाजी को निबाहना पड़ा. नानाजी ने अपनी जानी-मानी हैसियत के अनुकूल निबाहा भी. उसके महीना बाद मोटर बनारस, हमारे यहां भिजवा दी और ड्राइवर को छुट्टी कर दी. सभी नानाजी के सहसा ढल जाने की बातें कहने लगे.

नानाजी हर बरसात में पुराने पड़ गये गुलाब निकलवा कर नये लगवाते रहते थे. उस साल नये गुलाब न आये. तरकारियों के दाम पहले से ढाई-तीन गुना हो गये थे. पिछवाड़े की क्यारियों से गुलाब निकलवा कर वहां सब्जियां बो दी गयीं. क्यारियों की गोटों पर सस्ते किस्म के सदाबहार वबना, पिटूनिया, डियान्थस बने रहे. पिछवाड़े उत्तर की चारदीवारी के साथ ऊंचे-ऊंचे हौलीहाक की जगह मक्का के भुट्टे सुनहली रेशम कातने लगे, या बरसाती ऊंची भिंडियों के फूल टहकने लगे. अगल-बगल, पूर्व-पश्चिम भी जेकोमेंशिया, विनिस्टा, स्टेला की जगह लौकी, तुरई, सेम, लोभिया लग गये.

चेहरे पर झुर्रियों को रोक सकना तो नानाजी के बस का न था, परंतु बात-चीत में चिंता-अवसाद प्रकट न होने देते. लौकी, कुम्हड़े, तुरई और सेम की बेलों और मटर की क्यारियों की ओर संकेत कर कहते—वाह! ये क्या अलमंडा, टिकोमा, विनिस्टा और थनबर्जिया से कम हैं. ये फूल केवल दो दिन का दिखावा नहीं, जीवन-पोषक सार्थक फल बन जाते हैं.

इस साल अप्रैल में ईस्टर से पहले बृहस्पतिवार सिस्टर जोरीना ने स्वयं आ कर नानाजी से अनुरोध किया— आप सदा अवसर पर सहायता देते हैं. ईस्टर सर्विसिज (पूजाओं) के लिए हमें अधिक फूलों की जरूरत होती है. खासतौर पर सफेद और गुलाबी ईस्टर लिली आपके यहां ही हैं. . .

नानाजी ने माली को पुकार कर स्वयं फूल कटवाये. जब तक सिस्टर ने स्वयं गद्गद् कंठ से "पर्याप्त! पर्याप्त! धन्यवाद!" न कह दिया, फूल कटवाते गये. बांह भर गुलाबी और सफेद लिली के हाथ-हाथ भर के डंठल. गुलाब अप्रैल में उतने अच्छे रह नहीं जाते, फिर भी काफी दिये. आसमानी रंग की डेजी की फूल लदी छड़ियां लाल, पीले और केसरी रंग के रूकमंजन के भारी-भारी गुच्छों की टहनियां. नित्यमल्लिका की लतरों से फूलों के बड़े-बड़े गुच्छे सिस्टर कानवेंट का माली साथ लायी थीं, परंतु इतने फूल ले जाने के लिए रिक्शा जरूरी हो गया.

मैं सिस्टर को रिक्शा पर बैठा कर सड़क से लौटी, तो नानाजी लॉन में ही थे. चारों ओर नजर डालने पर मेरे मुख से निकल गया—हाय, कितने फूल एक साथ कट गये! सूना-सूना लगने लगा!

—कोई बात नहीं, बेटा! नानाजी सांत्वना के लिए बोले—तुम्हारी सिस्टर्स को और ईस्टर पूजा के लिए गिरजा जाने वाले बयस्कों को धूम-धाम से पूजा का संतोष होगा. फूल देव-पूजा में लग कर सार्थक हो गये.

★ ★

अगली सुबह कॉलेज न जाना था. अभ्यास से नींद सूर्योदय से काफी पहले खुल गयी. बाहर आयी, तो नानाजी लान में कुर्सी पर बैठे ताजा अखबार देख रहे थे. बरामदे के आगे बोगनवेलिया के वितान और चारदीवारी की कांटेदार तारों पर फैली थीमा, केलीकैंपबेल, नित्यमल्लिका और बेगनोनिया की बेलों में बुलबुलें चहचहा रही थीं. मैं चप्पल एक ओर छोड़, ओस भीगी घास के शीतल स्पर्श के लिए लॉन में टहलने लगी. गेट पर ताला न था. फाटक उढ़के हुए थे. बेलन भी न लगी थी. अनुमान हो गया, महरी आयी होगी और माली दूध के लिए गया होगा.

मैं लॉन के पूर्वी अंत तक जा कर लौट रही थी. संदेह हुआ, कोई मकान के पिछवाड़े से पश्चिम ओर दुबके पांव गेट की ओर जा रही है. मेरे घूम जाने से बरामदे के खंबे की आड़ में ठिठक गयी है. इस कालोनी में ऐसी छुट-पुट चोरियां अकसर होती रहती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुकार लिया--कौन है? [illegible] उसे दुबकने की क्या जरूरत? जरूर कुछ उड़ा ले जा रही होगी. पर कद छोटा, लड़की-सा लगा.

--कौन है? नानाजी की उपस्थिति के साहस से एक बार और जोर से पुकार कर उस ओर बढ़ गयी. खंबे की आड़ में दुबकी हुई थी मेहरी की बारह बरस की लड़की गुनिया. छोटी चीकट-चीथड़ा धोती कमर पर गांठ से बांधे थी, धोती के आंचल में कुछ दबोचे हुए. नजर पड़ने पर उसका छोटा कद दुबकी बिल्ली की तरह और सिकुड़ गया. हम मेहरी और उसकी बेटियों की चोरी की आदत से परेशान हैं. परंतु मेहरी चौका-बासन अच्छा करती है. सांझ का चौका रात दस तक निबटा देती है. उस वक्त न आ सके, तो सुबह पौ फटते आ जाती है. दूसरी मेहरी मिलना भी मुहाल. इससे पहले जितनी आयीं, एक-से-एक बढ़ कर चोट्टी.

गुनिया को डांटा--सुबह-सुबह क्या करने आयी थी? झोले में क्या है? गुनिया का सांवला चेहरा फक्. आतंक से आखों में छिली लीची की तरह सजल सफेद कोये और फैल गये. चीकट झोली को पेट पर दबा लिया. मुंह से बोल न फूट सका.

--बोलती क्यों नहीं? दिखा, झोली में क्या है? गुनिया को धमकाया.

--आज पकड़ी गयी चोट्टी! फाटक की ओर से माली का स्वर. दूध की बंद बाल्टी एक ओर रख कर माली ने गुनिया की मिची मुट्ठी से उसकी झोली छुड़ा ली. झोली में तीन-चार मुट्ठी फूल थे. बिना डंठल फूल, उंगलियों से मरोड़ कर या टहनियों को सूत कर तोड़ने से कुछ मसले-कुचले-से डियान्थस, मिटूनियां, डेजी के मिले-जुले फूल. बीच में पिछवाड़े शेष रह गये पेड़ों से डंठल मरोड़ कर तोड़े हुए बेरौनक तीन-चार गुलाब और नित्य-मल्लिका के गुच्छों से नोचे हुए फूल.

माली ने अवधी के नागरी उच्चारण में कहा--हम जानत रहे, हम दूध लेने जात हैं, तभी ई और ई का बहिनी फूल तोड़ ले जात हैं. इनकी मां और दोनों बहिनी ऐसे ही कोठी-कोठी फूल चुरात हैं. इनका बाप सालां रिक्शा चलात रहा. ट्रक से अक्सीडेंट में गोड़ तुड़ा बैठा मां-बेटी चोरी से फूल बटोरती हैं. मेहरा साला चोरी के फूल अलीगंज के बड़े मंदिर के सामने बेचता है. भगवान की पूजा के लिए चोरी के फूल! माली ने क्रोध में फूल गुनिया की झोली से गिरा दिये.

सुन कर अच्छा नहीं लगा. कहा--माली दादा, ऐसे तोड़े-मसले हुए फूल हमारे किस काम के! ले जाने दो! गुनिया को डांटा--आज माफ किया. फिर ऐसे चोरी करेगी, तो पीट-पीट कर पीठ सुजा देंगे!

--नहीं बिटियाजी! माली बोला--ई का अस न जाय देव. हम ई का थाने पहुंचाब. एक लोग फूल भगवान की पूजा में चढ़ावत हैं, ई ससुर चोरी का फूल पूजा के लिए बेचत हैं!

--क्या है? नानाजी अखबार हाथ में लिये बढ़ आये थे.

एक लघुकथा

सात हजार छह सौ अस्सी खून

● ललित मोहन थ्यानी

आफिस से लौट कर छत की मुंडेर पर चाय का प्याला हाथ में लिये हुए मैं हर रोज खड़ा हो जाता हूं, तथा इंतजार करता हूं एक खून का. मैंने अपनी २१ साल की जिंदगी में करीबन ७६८० खून देखे हैं. और न जाने अभी कितने देखने बाकी हैं. खासकर जाड़े के दिनों में तो करीबन ६ बजे यानि गर्मियों से पूरे आधे एक-घंटे पहले सूरज को पहाड़ियों के पीछे हलाल होते देखता हूं. और महसूस करता हूं कि सूरज के खून की लाली अभी गहरायेगी.

मुंडेर से चाय का प्याला समाप्त कर कमरे में कदम रखता हूं तो अनायास ही उंगलियां गिनने पर मजबूर हो जाता हूं. आज अभी २० तारीख है. २१--२२. . .३१ पूरे इस महीने के ग्यारह दिन अभी बाकी हैं और मेरे राशन के थैले तथा डिब्बे सभी भारहीन हो गये हैं. स्थिति को देखते हुए इस आशा से कि १०-११ दिन बाद तो तनख्वाह मिल ही जायेगी, उधार लेने के लिए कमर कस लेता हूं. लेकिन स्मृति के दंश फिर एक-एक कर उभरने लगते हैं. किसके पास जाऊंगा? करीब सभी से तो १०-१० रु. पहले ही ले चुका हूं. बनिए के पास जाते हुए भी शर्म महसूस करता हूं. अभी पिछले ही सौ रुपये देने हैं. एक बार फिर स्थिति को नकारते हुए छानबीन शुरू करता हूं. और शायद भाग्य ने साथ दे दिया, एक कागज की पुड़िया पर कुछ कच्चे चने बचे हैं. अब तो आलीशान डिनर की तैयारियां शुरू करता हूं. चने उबाल कर फ्राई कर लूंगा. और बिना चीनी की चाय ऊपर से गटक कर आज की रात शायद कट जाये. □□□

मामला नानाजीने सुन लिया था, परंतु माली ने गुनिया की चोरी बखान कर कहा--ई का फूल न ले जाय देव. हम ई चोट्टी का जरूर पुलिस में देव. हजूर चौकी में फून कर दें.

--जाने दो, चौधरी! नानाजी बोले--बेचारी मुसीबत में है. किसी तरह पेट पालती है. समझ लें ये फूल सार्थक हो गये!

माली नानाजी का कुछ मुंह लगा है. फिर बोला--हुजूर, चोरी-चमारी के ऐसे करम करिहैं, तो भगवान इनका मुसीबत करेगा ही!

नानाजी ने मुंह फेर कर निःश्वास लिया--कौन जाने कैसे करमों से मुसीबत आती है, या आफत-मुसीबत सब करम करा देती है! □□□

३३५ बी, महानगर, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लघुकथा

बिना जाति का आदमी

● ब्रह्मदत्त

--तुम्हारा नाम?

--अशोक!

--पूरा नाम बोलो, कुर्सी पर की दो मुर्दा आंखें तन गयीं.

--पूरा नाम भी यही है---अशोक.

--वाल!. . . .टेल मी युअर सरनेम? मुर्दे ने अपना एक हाथ टेबल के नीचे कर कुछ किया.

--सरनेम? सरनेम का क्या करियेगा, सर? सरनेम बोलते ही मेरे और आपके बीच एक जाति खड़ी हो जायेगी, एक पूरी जाति से निबटना पड़ेगा. मैंने मुर्दा-आंखों की ओर देखते हुए कहा.

—रियली यू इंटरेस्ट मी! मुर्दे का टेबल के नीचे वाला हाथ जोर से हिला. क्या कर रहा है कमबख्त? मैंने सोचा.

--मगर तुम्हें मालूम है न कि नौकरी चाहिये तो पूरा नाम बताना पड़ेगा. आखिर सरनेम से तुम्हें नाराजगी क्या है?

--सरनेम से जाति का बोध होता है. कोई मुझे सरनेम से पुकारता है तो लगता है कि मैं आदमी नहीं, एक जात हूं. और जात भी भला कोई चीज है? नानसेंसिकल! निरर्थक!

--गुड! गुड!. . .वेरी फिलोसोफिकल, मुर्दे ने उबासी लेकर कहा, बट यू नो? यह शेयर बाजार है. यहां फिलोसोफी नहीं, आंकड़े चलते हैं. और आंकड़े सोचते नहीं, बोलते हैं. चढ़ते, उतरते, मरते और मारते हैं. दिस इज ए रियल हार्ड लाइफ, चंदा-मामा की दुनिया नहीं.

—यू आर राइट सर! आंकड़ों की दुनिया भी उतनी ही झूठ है, जितनी चंदा-मामा की. चंदा-मामा तो फिर भी बड़ा प्यारा, बड़ा सुहावना है, आंकड़े तो सड़े मुर्दों की तरह बास मारते हैं.

—और सर, दलाली का धंधा भी कोई धंधा है? मैंने अचानक प्रश्न कर दिया. मुर्दा सकपका उठा. उसने तेजी से अपना टेबल के नीचे वाला हाथ ऊपर निकाला.

--क्या बकता है?

क्या कर रहा था नीचे? मैं फिर उस हाथ के बारे में सोचने लगा.

—आई थिंक यू बेटर गेट आऊट, मुर्दा चीखा, सालों को काम-धंधा करना नहीं है, टाइम बरबाद करने चले आते हैं, वह दलालों की भाषा में बड़बड़ाया. दलाली भी कोई धंधा है? मैंने फिर सोचा. माल किसी का, दाम किसी का और दलाली इस मुर्दे की. टेबल के नीचे हाथ डालकर हाथ हिलाने वाले मुर्दे की. . . ☐☐☐

जल्द आराम पाने के लिए तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन लीजिए

तेज़ असर–एनासिन में वह दर्द-निवारक दवा ज़्यादा है, जिस की दुनिया-भर के डॉक्टर सिफ़ारिश करते हैं। इसी लिए एनासिन दर्द से जल्द आराम दिलाती है।

विश्वसनीय–एनासिन आपके डॉक्टर की दवाई की तरह दवाओं का नपा-तुला सम्मिश्रण है। इसी लिए एनासिन पर लाखों लोगों को पूरा भरोसा है।

एनासिन बदन के दर्द, दाँत के दर्द, सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू की पीड़ा से भी जल्द आराम दिलाती है।

तेज़ असर और विश्वसनीय

एनासिन

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा

A/2/8-74 Regd. User of TM: Geoffrey Manners & Co. Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा की कथा

• प्रेमसिंह नेगी

परसों रात भर बर्फ गिरी थी. कल भी कभी वर्षा कभी तेज हवा के मारे मौसम बहुत खराब रहा. आज सुबह से ही मौसम साफ हो गया था. प्यारी-प्यारी धूप निकल आयी थी. सूर्य की किरणों के प्रभाव से अछूती जगहों—नालों, गड्ढों व टीलों के पश्चिमी ढालों को छोड़ आसपास की बर्फ बड़ी तेजी से गल रही थी. ब्लॉक क्वार्टरों की टीन की छतों से बर्फ की सिल्लियां रह-रह कर घच्च-घच्च गिर पड़ती थीं. मैंने खिड़की से हट कर सिरहाने रखी घड़ी उठा कर देखी. आश्वस्त-सा हो गया. नौ बजने में कुछ मिनट बाकी थे. खिचड़ी उबालने व दफ्तर की तैयारी के लिए एक घंटे का समय काफी था. दफ्तर बगल में ही था. तकरीबन पच्चीस गज के फासले पर. स्टोव पर खिचड़ी चढ़ा कर धूप का आनंद लेने म बाहर आंगन में खड़ा हो गया.

ऊपर के क्वार्टरों के सामने के दरवाजे बंद थे. सुबह की धूप जाड़ों में पीछे ही रहती है, इसलिए वे लोग इस मौसम में आगे बहुत कम दिखायी देते हैं. मैं उधर से नजरें हटा कर बर्फ से ढकी पहाड़ियों को देखने लगा था.

—ओ नीचे खड़े हैं दिनेश जी, उनसे पूछ लेना. मिसेज सक्सेना की आवाज थी. मैं अपना नाम सुन कर फिर सक्सेना के क्वार्टर की ओर मुड़ गया. दस-ग्यारह साल की एक लड़की उधर से आ रही थी. मिसेज सक्सेना फिर भीतर चली गयीं. वह लड़की ढलवें रास्ते पर नीची नजर किये चली आ रही थी. बीच-बीच में दृष्टि उठा कर मेरी ओर भी देख लेती थी. कौन है यह? गांव की है? किस काम से आ रही है इत्ते जाड़े में! मैं सोच रहा था और वह सामने आ गयी—गोरे-चिट्टे रंग, लंबे मुख और तीखे नाक-नक्श के बावजूद उसके चेहरे पर कैशोर्य-सुलभ लावण्य नहीं था. चेहरे की नन्हीं हड्डियों पर पतली खाल का आवरण चिपटा हुआ था. बिजली के खंभों पर 'खतरा है' वाले पोस्टर की तरह, करीब-करीब. उसके पतले होठ भी सुबह की बर्फीली हवा के कारण बैंगनी हो आये थे.

—क्या है बिटिया, किसको ढूंढ़ रही हो? मैंने उससे पूछा. वह अपने नंगे-बदसूरत पंजों से जमीन के कंकड़ों को छेड़ने लगी, और फिर जैसे कुछ सोच कर बोली—चश्मे वाले सैबज्यू तुम ही हो?

सुन कर मुझे हंसी आ गयी. मैं चश्मा पहनता हूं. इस समय भी पहने था. अब मेरी समझ में आया कि वह सक्सेना के घर से क्यों आ रही थी. इस कॉलोनी में सक्सेना व मेरे अलावा चश्मे वाला कोई भी नहीं है. किसी ने उसको सक्सेना के पास भेजा होगा, वहां से वह मेरे पास आ गयी थी. मैंने हंसते-हंसते उससे कहा—हां, यहां

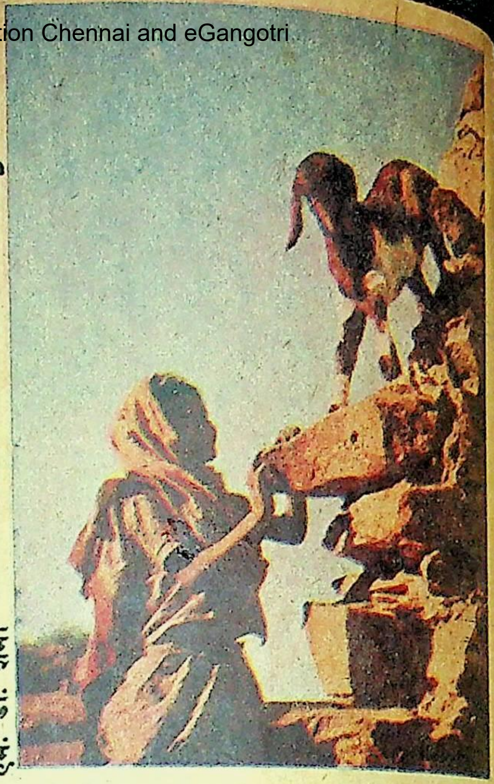

• एस. डी. शर्मा

तो चश्मे वाला एक मैं हूं और एक वो हैं जिनके यहां तू हो आयी है. चश्मे वालों से तेरा क्या काम है, बिटिया?

—आज हमारे घर में कथा है. मां ने न्योता कहा है. तीसरे पहर आ जाना. जरूर आना, कहा है.

मैं और भी चक्कर में पड़ गया. जान न पहचान, कैसा न्योता है यह?—तेरा घर कहां है री?

—चुनकोट.

—चुनकोट! चुनकोट यहां से ज्यादा दूर तो नहीं, दो-ढाई मील ही होगा. पर, मैं आज तक न तो कभी वहां गया और न वहां के किसी व्यक्ति से मेरी जान-पहचान ही है.—तुम्हारे पिता का क्या नाम है?

—पिता नहीं हैं.

—मर गये?

—हां.

मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था. तरह-तरह की अटकलें लगायीं, किंतु जान-पहचान का कोई सूत्र पकड़ में आया नहीं.—तेरी मां मुझको कैसे जानती है बिटिया?

लड़की कुछ देर चुप रही, फिर बोली—मां कहती है कि एक-दो साल पहले तुमने हमारी मदद की थी. हम लोग भूखे थे और तुमने मां को. . .

—अरे हां याद आया. च् च् च् बेचारी! मेरे मुंह से अनायास ही निकल गया.—मौका मिला तो जरूर आऊंगा, कह देना अपनी मां से.

—जरूर आना, कहा है मां ने. यह कह कर वह जाने लगी तो मैंने उससे कहा—अभी से क्यों जा रही है तू? खाना पक रहा है, खा कर चली जाना. उसने फिर बायें पंजे से जमीन खुरचते हुए कहा—आज हमारा सब का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रत है. वह फिर जाने लगी तो मुझसे रहा न गया.—बिटिया, तूने अपना नाम तो बताया नहीं?

—राधा! उसने झेंपते हुए बताया.

एक हलके मारकीन जैसे कपड़े की झगुली कंधों से टखनों तक उसकी लकड़ी-सी काया पर झूल रही थी. पुरानी साड़ी का एक टुकड़ा, जिसका एक छोर कमर पर कस कर बंधा था और दूसरा पीठ पर से हो कर उसने सर पर डाल रखा था. पुरानी ऊन के तागों के गठजोड़ से बिनी हुई बिना बांह की बनियान. बस, इतना ही था उसके तन पर इस काट खाने वाली सर्दी में. मैं उसको दूर तक जाते हुए देखता रहा.

★ ★

स्टोव की आवाज ने मेरा ध्यान भंग किया. तेल खत्म होने की सूचना में वह दो-तीन बार भर्र-भर्र की आवाज करके बुझ गया था. मैं जल्दी से भीतर गया, लेकिन खिचड़ी पक चुकी थी. वह छोरी भी खा लेती दो कौर. . .ब्रत रखा है! क्या जरूरत थी बित्ते भर की बच्ची से ब्रत करवाने की! एक जून अन्न की बचत या लोक-परलोक की आस्था? या फिर मजबूरी! मेरे आगे दो वर्ष पूर्व की वह घटना मूर्त हो उठी——

जाड़ों के ही दिन थे, जब राधा की मां से मेरी भेंट हुई थी. शाम के चार बजे का समय रहा होगा. मैं ऑफिस के बाहर मेज लगा कर काम कर रहा था. वह मेरे सामने खड़ी हो गयी थी. अट्ठाईस-तीस से अधिक की नहीं. मुरझाये, सूखे चेहरे के बावजूद उसे सुंदरी कहा जा सकता था. रोनी-सी सूरत बनाये, घबराई-घबराई-सी. उसने कहा था——सैंबज्यू. . .बस इतना ही कह पायी थी वह.

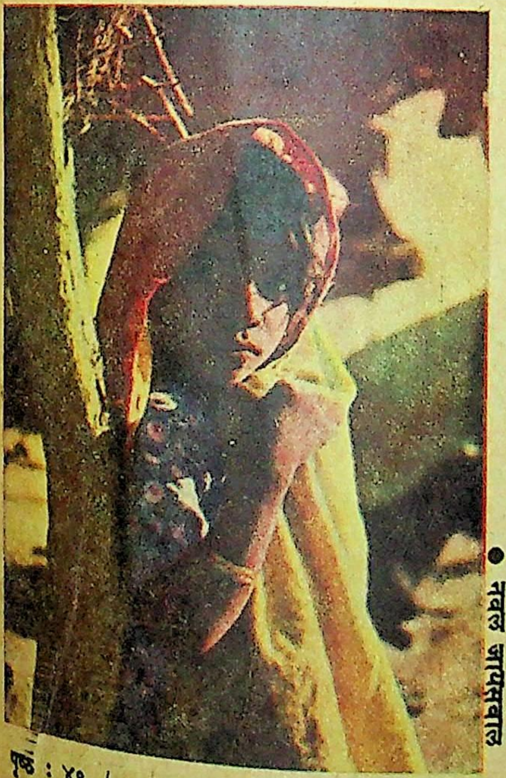

● नवल जायसवाल

——हां-हां, कहो, क्या बात है? घबराने की कोई बात नहीं. मैंने स्थानीय बोली में ही उससे कहा, यह समझते हुए कि वह मुझे शायद कोई बड़ा आदमी समझ कर घबरा रही हो.

—सैंबज्यू, घर में बीमार बच्चे को छोड़ कर अकाल सड़क में दिन भर मिट्टी ढोती रही. डेढ़ रुपल्ली के खातिर वह भी नहीं मिला; कहते हैं रुपिया बांटने वाला आज कहीं चला गया. कल मिलेगा. बीमार बच्चे के अलावा तीन और हैं घर पर, तीन दिन से भूखे. कसम है जो इतवार से अन्न का दाना भी चक्खा हो. कल तक तो वे तीनों भी मर जायेंगे.

—तो इस बाबत मुझसे क्या करने को कहती हो? तुम्हारी मजूरी के मामले में मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा. मैंने उसे समझाया.

——हां सैंबज्यू, मजूरी नहीं दिला सकते हो तो गरीबों के लिए जो एक-एक किलू मोफत का बाजरा मिल रहा है, उसे ही दिला दो. म उस दूकानदार के पास गयी भी थी, उसने मुझसे नाहीं कर दी है, फूटा भाग जो साथ ठैरा! पधानज्यू ने कहा कि सैंबज्यू के पास जाओ, वो दिला देंग. कहीं से कुछ दिला दो सैंबज्यू, बच्चों की जिंदगी रह जायेगी तो. . .वह सिर पर रखे धोती के चिथड़े को आगे खिसका कर आंखें पोंछने लगी थी.

मुझे उस गरीब पर दया आयी. जेब से दो रुपये निकाल कर उसे देना भी चाहा. फिर खयाल आया, लाला से कह कर देख लूं. अगर मेरी बात मान गया तो इस बेचारी का आज का काम तो चल ही जायेगा. फिर सोचा यहां तो अधिकांश की हालत इस अकाल में ऐसी ही हो गयी है. किस-किस की सिफारिश करूंगा? और रुपये देने की बात पर भी यहीं पर अटक गया. अत: मैंने उसे टाल देना ही उचित समझा.——खैराती अनाज के बंटवारे पर हमारा कोई अधिकार नहीं है. दूकानदार ने मना कर दिया है तो अब वह मेरे कहने से भी नहीं देगा. कोई और बंदोबस्त कर लो.

मेरी बात से वह बहुत निराश हो गयी थी. मैंने देखा कि उसका चेहरा एकाएक स्याह हो आया था और वह भयभीत निगाहों से कभी मेरी ओर और कभी आसपास की चोटियों को देखने लगी थी. उसकी घबराहट मैं समझ रहा था. खाली हाथ वह कैसे जाये और उधर दिन ढलने लगा था. धूप चोटियों से भी विदा होने को थी.

——समय बहुत कम रह गया है, तुम्हें घर जाने को देर भी हो रही होगी! मैंने उससे कहा और मेज से कागज-पत्र समेट कर उठाने लगा था.

——खाली हाथ कैसे जाऊं सैंबज्यू, छोरी-छोरों ने चिड़िया के बच्चों की तरह मुंह खोल रखा होगा——कब मां लायेगी, कब खायेंगे! सुबह कहके आयी थी, शाम को लाऊंगी. खाली हाथ जाने पर तो वैसे ही प्राण छोड़ देंगे छोरी-छोरे! वह ढाड़ें मार कर रोने लगी थी.

ऐसी स्थिति में उसकी उपेक्षा कर वहां से उठ कर चले जाना मुझसे न हो सका और अंततः मुझे दूकान तक जाना ही पड़ा. मैंने दो रुपये का बाजरा खरीद कर उसे दे दिया था. ये दो रुपये भी उसने पिछले वर्ष किसी आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...मार्फत मुझे वापस मि...

दफ्तर में काम करते हुए मुझे आज दिन भर राधा की मां का ध्यान रह-रह कर आता रहा और मैं जाऊं-न जाऊं की दुविधा में फंसा रहा. बेचारी ने कितने स्नेह-प्रेम से ठिठुरती सर्दी में लड़की को भेज कर बुलाया है. यह सोच कर मैं दो बजे दफ्तर छोड़ कर सीधे चुनकोट चला आया. वहां पहुंच कर गांव वालों ने मुझे राधा की मां का घर बता दिया था. वह घर के बाहर ही खड़ी मिल गयी. उसने मुझे पहचान लिया और खुश हो कर बोली—अभी तक दिल में धुकधुकोट हो रहा था, बड़े आदमी हैं, गरीब के न्यौते पर आवें, न आवें. अब शांति हो गयी. फिर आंगन में खेलते बच्चे से उसने कहा—रमुआ, भीतर दरी बिछा दे सैंबज्यू के लिए.

★ ★

पिछली शताब्दी के ढांचे का पत्थरों से चिना गया मकान. खिड़की विहीन, गोबर की पुताई, दीवालों से पत्थर नीचे कूद पड़ने को तैयार. दरवाजे के भीतर झांका तो धुएं के मारे कुहरा-सा छाया हुआ था. मैं दरवाजे पर ठिठक गया. राधा की मां ने शायद मेरी दुविधा को समझते हुए फिर कहा—रमुआ, दरी बाहर ले आ रे! अंदर सैंबज्यू को धुआं लगेगा. मैं दरवाजे से लौट आया और राधा की मां उस कुहरे को भेदती हुई अंदर चली गयी.

लड़का दरी ले आया और मैंने उसके हाथ से ले कर खुद ही बिछा ली. थोड़ी देर बाद राधा मेरे पांव छूने आयी और देखा-देखी रमुआ भी हाथ जोड़ कर नमस्कार कह गया.

दो अर्धनग्न-से बच्चे दाड़िम के पेड़ के नीचे पत्थर के टुकड़ों से खेल रहे थे. राधा की मां, उसके बच्चों के अलावा मुझे वहां अन्य कोई भी दिखायी नहीं दिया. 'विशेष अवसर' वाली कोई चहल-पहल नहीं थी. मैं मन-ही-मन सोचने लगा था कि कहीं मुझे वापस लौटने में देर न हो जाये. यों मैं अपने साथ टार्च ले आया था, इसलिए विशेष चिंता भी नहीं थी.

राधा की मां गिलास में चाय ले कर आ गयी.

—कथा की चहल-पहल नहीं दिख रही? गिलास पकड़ते हुए मैंने कहा.

राधा की मां सामने बैठ गयी.

—चहल-पहल क्या होगी, सैंबज्यू! किसीको बुलाया नहीं. मैके में एक छोटा भाई है बस, वह भी पल्टन में चला गया है. उसी के दम पर सतनरैण स्वामी का नाम लेने वाली ठहरी हूं. पच्चीस रुपये भेजे थे उसने, इसी कातिक में.

—कथा कब शुरू होगी? मैंने चाय का घूंट लेते हुए पूछा.

—के बताऊं सैंबज्यू, किसी को बाजार भेजा था सौदा लाने. उसी की बाट देख रही हूं. कल व परसों मौसम ने बाहर निकलने ही नहीं दिया. कथा बांचने वाले पंडित जो इसी गांव के हैं. तेल-बत्ती, धूप-धाप सब ठीक कर गये हैं. बाजार के सौदे की ही देर है. . .चा में मीठा कम तो नहीं, सैंबज्यू?

—नहीं, नहीं, ठीक है. चाय अच्छी है. पके हुए कद्दू के रस जैसे स्वाद के बावजूद मैंने कहा.

—सैंबज्यू, वह फिर कहने लगी, कथा कराने की अपनी औकात ही क्या है! बस, पंडितज्यू से भगवान के नाम पर 'ओम किरतम्' कहवा रही हूं.

वह कुछ क्षणों के लिए मौन हो गयी. फिर जैसे कुछ याद करती हुई-सी बोली—उस दिन जब आपके पास गयी तो तभी से मैंने मनौती की थी कि भगवान मेरा संकट काट देता मैं सतनरैण स्वामी की कथा कराऊंगी और परमात्मा ने मेरी पुकार सुन ली. भगवान के रूप में आपने बच्चों को भूखों मरने से बचा लिया. नहीं तो किसको आस थी इन बच्चों की जिंदगी की! तीन दिन हो गये थे भूख से बिलबिलाते हुए. घर पहुंची तो पोटली पर सबके सब झपट पड़े थे. सैंबज्यू—उसने हाथ ऊपर उठाते हुए सौगंध ली—सुबह से अन्न मुख नहीं किया है, झूठ नहीं बोलूंगी, मैंने उस बखत बीमार बच्चे को भी नहीं देखा. सोचा, जो बीमार है, वह तो अपनी मौत मरेगा, पर बाकी भी बिहोश हो कर बेमौत मर जायेंगे. झटपट चूल्हे में आग जलायी. तौवे में बाजरे के दाने भून कर दो-दो मुट्ठी इनको बांटी. तब फिर चक्की पीसने बैठी. जब इन्हें खिलाया-पिलाया, तभी बीमार बच्चे को देखने को मन हुआ. सैंबज्यू, आपसे क्या कहूं, छोरे-छोरियों ने तौवे में रोटियां पड़ने ही नहीं दीं. कच्ची-पक्की येऽऽ. . . मोटी-मोटी रोटियां केले-से निगल गये बिना साग-नमक के ही. वह संकट का बखत था, टल गया, आपकी किरपा से.

—सब भगवान की कृपा है.

—मेरे लिए तो आप ही भगवान हो, आप ही सतनरैण स्वामी हो. आपने मेरी घर-कुड़ी पवित्तर कर दी. . . राधा की मां भाव-विह्वल हो कर कह रही थी.

मैंने बात का रुख बदलते हुए पूछा—अब तो ठीक ठाक ही चल रहा होगा?

—सैंबज्यू, दिन में एक टैम भी पेट में कुछ पड़ जाये तो गरीब का बड़भाग. आपकी किरपा से बखत कट ही रहा है. राधा पधानज्यू के गै-बाछों को चुगा लाती है, तो दस रुपिया महीना आ जाता है. ऊपर से बासी-कूसी, फटा-पुराना मिल ही जाता है. मजूरी-सजूरी मैं करती ही हूं. खपते-खपते सिर के बाल व पैरों की खाल भी साबुत नहीं है. नहीं तो सैंबज्यू, अभी तीस भी पूरे नहीं हुए हैं. कच्ची उमर में ही इन चारों को छोड़ गये वे, मेरे जी के जंजाल! नहीं तो इकली पराणी का क्या! मौज-बहार से रहती. . .सो भगवान की किरपा से आधा-साधा करके चल ही रहा है. इधर, मन में एक ही साध थी—किसी तरह भगवान सतनरैण स्वामी का नाम ले कर सैंबज्यू के हाथ धुलवा सकूं तो चाहे फिर भगवान उठा ले, तो कोई दुख नहीं. आज भगवान ने वह दिन दिखाया है कि मेरी साध पूरी. . .

★ ★

—के हो, सामान कहां है, खाली हाथ कैसे आ रहे हो? राधा की मां एकाएक सामने आ रहे व्यक्ति से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछने लगी.

—जो-जो तुमने मंगाया था, कुछ भी नहीं मिला. सारा बाजार छान मारा. न सूजी, न डालडा. चीनी बिलेक में मिल रही थी एक जगह. पांच रुपिया किलू. सोचा, भगवान की परसादी के लिए तो सूजी और घी ही खास चीज ठैरी. वही नहीं तो खाली चीनी-चीनी से क्या बनेगा? इसलिए कुछ भी नहीं लाया. गरीबन के पैसे बिमतलब क्यों फूंकता! उस व्यक्ति ने कहा.

एकाएक दाड़िम के पेड़ की छाया जैसे उसके चेहरे पर ल॰॰ आयी.

अब क्या होगा. . .परसादी कैसे चढ़ेगी. . .? कहने की-सी मुद्रा में वह खामोश हो गयी कुछ क्षण. लेकिन तत्काल ही उसने 'बज्जर (वज्र) पड़े बखत के सर!' कहते हुए दुविधा को जैसे परे धकेल दिया. बोली—तुम्हारा क्या कसूर देवर, जब चीज ही अपैद है तो. . .हां हो सैबज्यू, हमने तो फरज निभाई कर दी दिन का हरज करके. भगवान सतनरैणज्यू खुद ही देखेंगे. तेल में मक्की का आटा भून कर मेरा काम तो चल ही जायेगा, पर बात बखत की है. . .कैसा बखत आया, न कभी ऐसा सुना, न देखा. परे फूंको, जो हुआ सो हुआ.

मैंने समर्थन में सिर हिलाया. वह पूर्ववत उत्साहित दिखने लगी.

राधा की मां उठ कर भीतर चली गयी. कुछ देर बाद वह आगंतुक भी मुझसे इधर-उधर की बात करके चला गया. दाड़िम के पेड़ के नीचे बच्चे खेलते-खेलते झगड़ने लगे, तो राधा उन्हें डपट कर अंदर बुला ले गयी.

अकेलेपन का एहसास होते ही मैंने आसपास की टोह ली. सूरज अपने पीले दुबले हाथों को समेट कर पहाड़ की चोटी के पीछे लुढ़कने को था. आसपास की पहाड़ी ढलानों पर छायाएं घिर आयी थीं. बर्फीली सर्द हवा के झोंके भीतर तक कंपकंपा देने को तुले हुए थे. गरदन पर लिपटे मफलर से मैंने कस कर कान ढांप लिये.

—सैबज्यू, राधा की मां ने देहरी पर आ कर पुकारा, भीतर आ जाओ, सिगडी जला दी है. मैं भीतर चला गया. धुआं कुछ कम हो गया था. राधा की मां बाहर से दरी उठा ले आयी थी. बिछाते हुए बोली—अब के बरफ क्या पड़ी कि कोठा-कंपा दिया है इसने. बस, जान आग पर ही टिकी है. चिथड़े-गुदड़ों का ओढ़ना-बिछौना. इतना धुआं न करें तो सैबज्यू, हाड़ अकड़ कर टेढ़ा जायें गरीब-दूबरों के इस सीसीकार जाड़े में. कुठड़िया जब तक खूब धुंवायी नहीं, नींद नहीं आती.

—पंडित जी आ गये! राधा ने बाहर से आ कर खबर दी.

—ठीक है. चलो सैबज्यू! उसने मेरी ओर मुखातिब हो कर कहा. —गोठ (निचली मंजिल) में कर रखा है कथा का इंतजाम.

★ ★

मैं राधा की मां के पीछे हो लिया. पंडितजी आसन ग्रहण कर चुके थे. सामने पड़े दो पीढ़ों की ओर इशारा करते हुए बोले—राधा की मां, तुम बायीं ओर वाले पीढ़े में बैठ जाओ, दायें वाले में लो इस नारियल को रख दो, अपने स्वर्गीय पति के बदले. राधा की मा के माथे पर तिरछी रेखाएं खिंच आयीं. उसने नारियल पीढ़े में रखने की बजाय गोद में रख लिया.—आप बैठ जाओ सैबज्यू पीढ़े पर. कहते हुए मेरा हाथ खींच कर मुझे उस पीढ़े पर बैठने को मजबूर कर दिया. जो रहा ही नहीं, उसकी जगह कैसी! वह धीरे से बुदबुदायी. पंडितजी ने एक बार उसे, फिर मेरी ओर देखा. मैंने अचकचाते हुए नजरें झुका लीं. अपना चेहरा, मुझे लगा कि जैसे कोई मसल गया हो अभी-अभी. पंडितजी ने कथा-वाचन शुरू कर दिया. मेरा मन संपूर्ण वाचन के दौरान राधा की मां के कथ्य-कृत्य में उलझता रहा. हां, बीच-बीच में मैं उसकी ओर देख लेता था. पूर्ण तृप्ति का-सा भाव छाया रहा उसके मुख, पर आद्योपांत.

★ ★

कथा पूरी होने के बाद खाना खाने बैठा तो वही संतोष और परितृप्ति थी उसके चेहरे पर.

—सैबज्यू. . . मैं खाना खा कर वापस लौटने की तैयारी में था तो उसने फिर कहा. आपको तभी से बराबर याद करती रही. . .कभी आपको भी खयाल आया इस गरीब का?

क्या कहता? मैं तो भूल ही गया था उसे. झूठ बोलना पड़ा— हां-हां, क्यों नहीं, बहुत!

उसकी आंखें अतिरिक्त उत्साह से चमक उठीं. बोली— वे नहीं रहे. जवानी के मोल पर कई लोग मदद करने आये. लेकिन धरम का पल्ला मैंने छोड़ा नहीं. उस बखत भी नहीं, जब पापी पेट की अगिन में तड़प रही थी. बच्चे मेरे ही सामने भूख से प्राण छोड़ने को थे. उस बखत. . . उसका स्वर भारी हो आया था. क्षण भर मौन रहने के बाद उसने कहा— उस बखत जरा-सा भी मन कच्चा करती तो सैबज्यू, एक नहीं सौ मिल जाते पाप के खसम. लेकिन धरम का पति बनने को कोई तैयार नहीं था. . .फिर वह जैसे अतीत की दुखद स्मृति में खो गयी.

—आज तो यहीं रह लो न. उसने मुझे जूता-मोजा टटोलते हुए देख लिया था.

—आता रहूंगा. फिर रह लूंगा किसी दिन.

—बिस्तर का बंदोबस्त हो जायेगा, पधानज्यू के घर में. तकलीफ नहीं होगी.

—सो कोई बात नहीं, राधा की मां, फिर कभी आऊंगा रहने को जरूर! मैंने दरवाजे से बाहर निकलते हुए कहा. उसने फिर जोर नहीं दिया.

—पैलाग करो रे कंछ-मंछो! उसने अपने बच्चों को आज्ञा दी. सैबज्यू. . . वह आगे कहते-कहते रुक गया. मुझे लगा कि वह 'आज से तुम मेरे धरम के पति हो गये' कहने जा रही है. लेकिन थूक निगलते हुए उसने कहा— खबर लेते रहना. मैं आश्वस्त-सा हुआ. पास खड़े उसके बच्चों को दो-दो रुपये पकड़ा कर आंगन में निकल आया. बाहर काफी अंधेरा हो आया था. □□□

विकास विभाग, भिक्यासैण, पो. जैनल, अलमोड़ा (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्दिश के दिन

• राबिन शॉ पुष्प

जून १९७२ से 'सारिका' में इस महत्वपूर्ण लेखमाला की शुरुआत हुई थी और अब तक आप इसमें हरिशंकर परसाई, शानी, से रा. यात्री, राही मासूम रजा, मोहन राकेश, भीष्म साहनी, चंद्रकांत बक्षी, शैलेश मटियानी, मधुकर गंगाधर, ईश्वर चंदर, शांतनु आचार्य, कृष्णा सोबती, मधुकर सिंह, इब्राहीम शरीफ, रवींद्रनाथ त्यागी, फिक्र तौंसवी, दामोदर सदन, हृदयेश, रामसरूप अणखी, एम. टी. वासुदेवन नायर, कृष्ण प्रसाद मिश्र तथा श्रीलाल शुक्ल की आत्मरचनाएं पढ़ चुके हैं. तमाम संघर्षों, व्यक्तिगत तनावों और दुख-सुख के क्षणों के बीच से गुजरते हुए कोई प्रतिभा किस तरह रचनात्मकता ग्रहण करती जाती है और साथ ही सामान्य व्यक्ति के रूप में किस तरह संघर्षरत रहती है—इसी संघर्षशील यथार्थ का निरूपण करने वाली प्रख्यात लेखकों की आत्मरचनाएं इस स्तंभ के अंतर्गत दी जा रही हैं. इस अंक में पढ़िए हिंदी के युवा कथा-लेखक राबिन शॉ पुष्प की यह आत्मरचना

मुंगेर.

जन्म के पूर्व कपड़े सिलना बदशकुनी समझी जाती है और किसी बच्चे के लिए पहले ही कपड़े सिल लिये जाते हैं... पैदा हो कर उसे अपने को उसमें डालना होता है, चाहे कपड़े ढीले हों, या तंग. मुझे मालूम नहीं, मेरे लिए कपड़े सिले थे या नहीं, पर यह बात अब साफ हो गयी है कि मेरे लिए एक सलीब बना कर पहले से रखी हुई थी, जिस पर मुझे पैदा होते ही चढ़ जाना था.

१९३४ का भूकंप. मुंगेर टुकड़े-टुकड़े हो गया था शीशे की तरह. और मेरी मां सड़कों पर आ गयी थीं. पोलो मैदान में झोपड़ियां डाली गयीं. . .इन्हीं झोपड़ियों में से एक झोपड़ी में मैं पैदा हुआ. नीचे फर्श की जगह घास-पत्थर थे. सर्दी के ठिठुरते दिन. . .दूध की जगह प्रतीक्षा. . .मुझे पता नहीं सलीब मेरे नाप की थी या नहीं, पर मुझे इस पर चढ़ाया जाना था और मैं जिंदगी के हाथों चढ़ा दिया गया.

बेगूसराय

पापा पेशकार हो कर बेगूसराय आ गये. एकदिन उन्हें दिल का दौरा पड़ा. इससे बचे, तो लकवा. . . और वह हमेशा के लिए बिस्तर पर आ गये. पापा मेरे अच्छे दोस्त थे. मां बड़े भाई के बेटे को (उसकी मां मर चुकी थी) अधिक प्यार करती थीं. पर पापा मेरे अच्छे दोस्त थे. . .जब वह अच्छे थे, हम दोनों मिल कर मां को खूब तंग करते थे. मां पंखे की डंडी से मारने के लिए दौड़ती थीं, मैं भाग जाता था और पैर की वजह से पापा पकड़े जाते थे. चिल्लाते थे—रवींद्र, बचाओ. . . रवींद्र. . .! यह नाम मां ने ही दिया था—रवींद्रनाथ. वह बंगला, हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी की कहानियां बहुत पढ़ती थीं. मन में कहीं था कि बेटा साहित्यकार बनेगा. कहानियां लिखेगा. खूब नाम कमायेगा. पर ऐसे नाम से फायदा?

• •

जिस दिन पा' को लकवा हुआ था, मैं भीतर-ही-भीतर बहुत रोया था. मुझसे मेरा दोस्त छिन गया था, जो मुझसे कभी कहता——आमोट (आमसे बनता है) खायेगा ? . . .मैं स्वीकृति में सिर हिला देता. पा' इधर-उधर पैसे खोजते. नहीं मिलने पर कान में आहिस्ता-से कुछ कहते. फिर दोनों बाप-बेटे तैयार हो कर टमटमवाले के पास आते. घर के ठीक सामने कई टमटमवाले रहते थे. कोई घोड़ा जोत लेता और हमें कचहरी तक छोड़ आता. वहीं एक दुकान थी—पेड़ के नीचे. दोनों खूब आमोट खाते और मां के लिए भी ले आते. घर पहुंचते, तो मां बिगड़तीं—फूंक आये न पैसे! अपने साथ-साथ बेटे को भी बिगाड़ो. . .! पा सब कुछ चुपचाप सुनते रहते और जब मां का भाषण खत्म हो जाता, तो बड़े प्यार से कहते—बेटे, मां को आमोट दे. . .! इस बार मां हंस कर आमोट खाने लगतीं. फिर शाम को बाप-बेटे गायब हो जाते. जब लौटते, तो मां का तापक्रम बहुत चढ़ा हुआ होता था, क्योंकि हमारी गैरहाजिरी में आमोट वाला मां से पैसे ले कर चला गया होता था. फिर वही पंखे की डंडी और बाप-बेटे का भागना. मगर पा' अब हमेशा के लिए बिस्तर पर गिर गये थे. मां रात-दिन सेवा करतीं. रोतीं. अकेले में मैं भी रोता था, अपने पा' के लिए नहीं, बहुत अच्छे दोस्त के लिए. यही दोस्त मुझे २२ जनवरी १९४५ को छोड़ कर चला गया, जब मेरी उम्र शायद दस-ग्यारह साल की थी.

दानव का प्रवेश

हमारे पास बहुत सारी जमीन थी. बीच में बड़ा-सा मकान. आम, केले, अमरूद, सपाटू, जामुन, ताड़,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगी आदि के पेड़. बगल में आटे की छोटी-सी चक्की डल्लम भैया. सिरिल भैया और आइजक भैया इसे चलाते थे. डल्लम भैया गद्दी पर बैठता था और सिरल तथा आईजक भैया मशीन का काम देखते थे. मगर दोनों बात-बात पर बुरी तरह से लड़ते थे. बड़ी-बड़ी सरियां उठा कर मैदान में उतर जाते थे. मां दूर से गालियां देती थीं. पड़ोसी तमाशा देखते थे.

परंतु घर को तमाशा बना कर रख दिया था एक दानव ने. यह मेरी बहन का पति था. पहले घर से दो बेटियों और एक बेटे के साथ-साथ शराब और अंग्रेजी भाषा ले कर आया था. बहन यानी सिस्टर, अंग्रेजी बोलती थीं, शराब पीती थीं, सिगरेट पीती थीं. फ्राक पहनती थीं, और सबसे बड़ी बात थी कि लेडी डाक्टर थीं. यह सब दानव ने सिखलाया था और खुद भी इनके पैसे से पीता था, कार में घूमता था, अंग्रेजी में गालियां बकता था और मेरे विरोध करने पर गाल में दांत से काट लिया करता था. . .जब मैं मां को दिखाता, तो वह एकदम बुत बन जातीं. बहुत जिद करने पर बस इतना कहती थीं—बेटे, तेरे जीजा हैं, मजाक करते हैं!

इस दानव को मजाक की बहुत आदत थी. यह पुलिस विभाग में था. एक बार हार्न बजाने पर यदि कोई टमटम वाला नहीं हटता था, तो यह दानव अपनी खटारा कार से धक्के मार देता था. कभी-कभी टमटम उलट जाती थी. लोग बस तमाशा देखते थे चुपचाप. किसीकी हिम्मत नहीं होती थी कि दानव के आगे आये. मेरे घर में नहीं भी, क्योंकि इसकी पत्नी यानी मेरी बहन घर में कुछ रुपये देती थी, छोटी बहन को कॉन्वेंट (पटना) में पढ़ा रही थीं. .

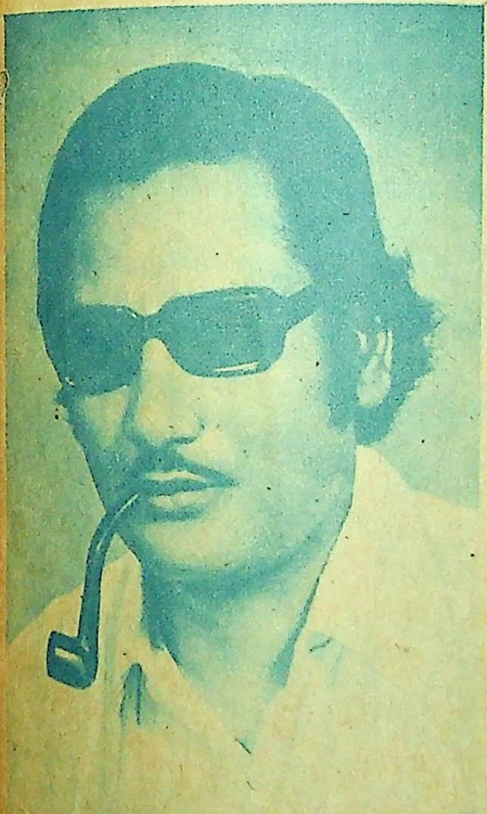

यह दानव कैथोलिक था. सिस्टर भी. इनके अस्पताल वाले क्वार्टर में फादर आते थे. जिस कमरे में शराब और ताश. . .वहीं प्रार्थना होती थी. मुझे फादर का कपड़ा पीछे से पकड़ने को कहा जाता था. यह सब मुझे फार्स लगता था. मन होता था, भाग जाऊं. लेकिन मैं दानव से डरता था. सभी डरते थे.

फादर के जाने के बाद फिर वही शराब, वही अंग्रेजी में गालियां, ताश और इस बीच अगर किसी सीरियस पेशेंट का कोई आदमी आता, तो दानव गुस्से से बाहर निकलता. . .रास्कल, स्वाइन. . .मेम साहब का तबीयत ठीक नहीं है, गेट आउट. . .! वह इंग्लिश में गंदी-गंदी गालियां बकने लगता था. क्योंकि वह ऐंग्लो-इंडियन था और वह वक्त अंग्रेजों का था. . .और यहीं से मैं अंग्रेजी से नफरत करने लगा था.

एक बार प्रोटेस्टैंट चर्च की पुलपिट पर चढ़ कर दानव ने चर्च लेने की जिद पकड़ ली. पादरी कोई श्री चरण थे. उन्होंने कहा कि आप पुलपिट के पास मेज लगा कर चर्च ले लें, मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी. परंतु पुलपिट पर न चढ़ें, जो पादरी हैं, वही इस पर चढ़ कर चर्च ले सकते हैं.

दानव गुस्से में लौट आया. वह पुलिस विभाग का आदमी था. शाम को कई पुलिस वाले आये थे और पता नहीं किस अपराध में पादरी को हथकड़ी पहना कर बीच बाजार से ले गये. जब उस गरीब पादरी की पत्नी, बच्चों के साथ दानव के पैरों पर गिरी, तभी छूट पाया वह पादरी. इस जीत की खुशी में दानव सारी रात पीता रहा था. . .

मेरे भीतर आग लग गयी थी. यही आग जब-तब आईजक भैया को भी लग जाती थी. एक वही था घर में जो इस दानव को कभी-कभार कड़ी बातें कह दिया करता था. नतीजा यह होता था कि दानव और सिस्टर हमारे घर आना बंद कर देते थे. फिर मां आईजक भैया को बहुत मनाती थीं. हाथ जोड़ती थीं. तब अपने साथ मुझे ले कर वह क्वार्टर जाता था. दानव से माफी मांगता था. दानव अंग्रेजी में सड़ी-सड़ी गालियां देता था. आई-जक भैया वह सब मां की खातिर चुपचाप बरदाश्त कर लेता था और लौटते वक्त फुटबाल मैदान में बैठ कर बहुत देर तक रोता रहता था. वह बहुत ही सख्त-दिल आदमी था. इसी मैदान में किसीके भी कुछ कहने पर उसे पीट देता था. एक बार किसी टीचर ने कम नंबर दिये थे, तो हाकी ले कर सारी रात उसे खोजता रहा था. वह हाकी, फुटबाल का बेहतरीन खिलाड़ी था. वैसे सभी भाई अच्छा खेलते थे. विशेषकर डल्लम भैया और सिरिल भैया. मगर आईजक भैया सब बात में आगे था, मार-पीट में भी . . .वही आईजक भैया फुटबाल फील्ड में रोता था. बाद में वह मर गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हैं कि बोन टी. बी. के कारण उसकी मृत्यु हुई थी... नहीं, दानव ने उसे घुटाघुटा के मारा था, हाथ जोड़ कर खड़ी मां की ममता ने उसे मारा था.

अब दानव का कोई विरोधी नहीं था.

हमारे घर जम कर ताश, शराब, ताड़ी सारी चीजें शुरू हो गयी. चखना, कबाब, नशा, गालियां. एक दिन दानव की बड़ी बेटी किसी अंग्रेज को ले आयी. उसके साथ अंग्रेजी रिकार्ड लगा कर नाचती थी और शराब पीती थी. यह सब क्वार्टर में नहीं, हमारे घर में हो रहा था. क्योंकि सिस्टर घर का कुछ खर्च उठाती थीं. अपने से छोटी बहन को पढ़ा रही थीं. ऐसे ही किसी मनहूस दिन दानव ने बोतल और झोली पकड़ा कर मुझे ठर्रा लाने को कहा. मैंने मां की तरफ देखा. वह चुपचाप रसोईघर की तरफ चली गयीं. मैं समझ गया, मुझे भी आईजक भैया बनना है.

दानव पी रहा था, जब काफी पी चुका, तो उसने मुझे आवाज दी—कम, रॉबिन डियर,!. . .मैं उसके पास गया. गिलास में ठर्रा डाल कर उसने मुझे पीने को कहा—ड्रिंक, माई लवी!

मैंने अस्वीकृति में सिर हिला कर कहा——नहीं, शराब बुरी चीज होती है.

वह बुरी तरह तिलमिला उठा. इस घर में उसके खिलाफ फिर आवाज उठी थी. वह जोर से चिल्लाया—— क्या बोला साला. . .ब्लडी. . .से इन इंग्लिश. . .! उसकी आवाज सुन कर मां दौड़ कर आयीं. पर वह दूर खड़ी रहीं. वह चिल्ला रहा था——से इन इंग्लिश. . .टॉक इन इंग्लिश. . .! और मैं इनकार कर रहा था——नहीं, मैं कभी अंग्रेजी नहीं बोलूंगा. . .कभी शराब नहीं पीऊंगा... तभी दानव की बेटी आयी. उसने आ कर कहा कि जहां वह नाच रही थी, मेरे कुत्ते के पिल्ले ने वहां गंदा कर दिया है.

इतना सुनना था कि दानव ने अपने पंजों में मुझे दबोच लिया और उस जगह, जहां मेरे पिल्ले ने गंदा किया था, मेरा माथा एक जानवर की तरह रगड़ कर मुझे पीटने लगा. आज भी याद है, अपनी चीख के बीच मैंने एक सिसकी सुनी थी. और उसी दम अपने को सख्त बना लिया था. नहीं रोया, क्योंकि फिर सिसकी सुनाई पड़ती. उस दिन के बाद से मैं आज तक दो चीजों से नफरत करता हूं. . .शराब और अंग्रेजी बोलना. मुझे अच्छी तरह याद है, जब मैं जे. के. हाई स्कूल में गया था, तो मुम बाबू मास्टर ने पूछा था कि विडो का आपोजिट जेंडर ?. . . .वह पूछ रहे थे. मेरे सामने दानव घूम रहा था. चाह कर भी मैं नहीं बोल सका और उन्होंने क्लास से निकल जाने को कहा था. फिर मैं मैट्रिक तक उनकी क्लास में नहीं गया. जब अंग्रेजी की घंटी बजती, मैं किताबें समेट कर बाहर आ जाता. किसी पेड़ के नीचे बैठ कर बस पढ़ता. पढ़ना अच्छा लगता था. बोलना नहीं, क्योंकि दानव अंग्रेजी बोलता था.

यह तो बहुत बाद ही बात है, इसके पहले कुछ लड़के गांधी टोपी लगा कर जुलूस निकालते थे. 'इनकलाब जिंदाबाद' कहते थे. हमारे घर के सामने रुक जाते थे—अंग्रेजो, भारत छोड़ो . .! जब वे ऐसा कहते थे, तो दानव कमरे में बंद हो कर अपने बाल नोचा करता था. अंग्रेजी में गालियां बकता था. और मैं चुपके-से उस भीड़ में घुस कर अपने ही घर के सामने लगते नारों में अपनी आवाज मिला देता था—अंग्रेजो, भारत छोड़ो. . .!

आजादी की लड़ाई शुरू हो गयी थी! बुद्धन मिस्त्री, जो हमारे यहां डीजल इंजन चलाता था, कभी-कभी लड़कों के साथ इंजन भी (ट्रेन) तोड़ता था. वह तांबे की पाइप ले आता था. गोल-गोल शक्ल में काटता था. नींबू घिस कर उन्हें हरा करता था. वह पैसा कह कर उन्हें बाजार में चलाया करता था. इस प्रकार अंग्रेजों के सिक्कों के साथ-साथ हमारे भी सिक्के चलते थे और हम दोनों बहुत खुश थे. बड़े लड़के तार काटते थे, इंजन तोड़ते थे, नारे लगाते थे. लेकिन जिस दिन टामीगन ले कर टामी आये और सड़कों पर लेटे हुए लड़कों की छाती पर बूट पहन कर बेरहमी से चले, दानव बहुत खुश हुआ था. . .ये टामी बी. पी. एच. ई. स्कूल के सामने वाले कुएं में एकदम नंगे हो कर नहाते थे और आजू-बाजू से गुजरने वाली औरतों या लड़कियों को अपने - अपने लिंग दिखा कर हंसते थे. कभी-कभी शेर की तरह झपटते भी थे और दानव इन्हीं में से कुछ को ले कर घर आ गया था. . .इनके साथ पीता रहा था. . . अंग्रेजी में बातें करता रहा था. . .

यह तो बहुत पहले की बात है, उसके बाद हुआ यह कि मैं फर्स्ट ईयर में गया —जी. डी. कालेज बेगूसराय. और जब मैंने हिंदी में टाप किया (६४ नंबर मिले थे.), तो हिंदी के लेक्चरर दंग रह गये कि एक क्रिश्चियन लड़का. . .वह सभी को मेरी कापी दिखाते रहे. . .मेरे लेख की बहुत-बहुत प्रशंसा करते रहे. सच पूछा जाये तो जिस दिन मैंने उस कापी पर लेख लिखा था, उसी दिन लेखक बन गया था. फिर बाबा (वही लेक्चरर. वह छोटे कद के थे. खादी का कुरता और धोती पहनते थे. गांधी टोपी भी.) के आग्रह पर मैंने कालेज पत्रिका के लिए एक कहानी लिखी थी—'अखबार'. वही मेरी पहली कहानी थी.

राबिन शॉ पुष्प (जन्म : मुंगेर बिहार में) हिंदी के युवा कथाकार हैं. इनकी अब तक तेरह कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं— छह कहानी संग्रह, दो उपन्यास और पांच बाल उपन्यास. इन्होंने 'हंसोड़' और 'महादेश' का संपादन किया है और इस समय नेशनल क्रिश्चियन काउंसिल की पत्रिका 'मसीही आवाज' का संपादन कर रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेगूसराय से फिर मुंगेर

और एक दिन डीजल इंजन का हेड फट गया. आटा-चक्की बंद हो गयी.

समस्या थी रुपयों की. जमीन का थोड़ा-सा हिस्सा बेच कर भी यह काम हो सकता था. लेकिन मेरे सबसे बड़े भाई ने, जो इंजीनियर थे और शरणार्थी बन कर लाहौर से भाग आये थे (इन पर भी अंग्रेजियत का भूत सवार था), सिस्टर से मिल कर सलाह की. फिर सिस्टर रामदौरी से किसी सज्जन को ले आयीं. उन्होंने लिखा-पढ़ी के बाद शायद छह हजार कर्ज में दिये. इतने रुपये विक्टर भैया की प्लानिंग के लिए लिये गये थे. उन्होंने कहा था कि बैटरी चार्जिंग होगी. घर में बिजली मिलेगी. (बेगूसराय गांव जैसा था. वहां बिजली नहीं थी. सड़कों पर धूल थी. टमटम चलते थे.) हमारे रहने का स्टैंडर्ड बढ़िया होगा. यह भी कोई जिंदगी है. . .लेकिन उनकी प्लानिंग फेल हो गयी. और हमारी जिंदगी पहले से बदतर हो गयी. अब रात में चोरों के हमले शुरू हो गये. कभी पत्थर गिरते, तो कभी लोहे के टुकड़े, कभी आधी खिड़की उखड़ जाती. अंत में एक दिन सब कुछ बेच कर हम फिर मुंगेर आ गये.. . .ढेर सारी जमीन, घर , आटा-चक्की, सभी कुछ. . .शायद केवल सत्तरह हजार में. बेगूसराय के लोग अब कहते हैं कि अगर हम लोगों ने अपनी जायदाद नहीं बेची होती, तो आज लखपति होते. मुंगेर में पेन भैया पहले से था.

मैं आर. डी. ऐंड डी. जे. कालेज में पढ़ने लगा. थर्ड इयर. इसी शहर में मेरी मुलाकात एक लड़की से हुई . वह स्कूल में पढ़ती थी. जब मैं उसे सचमुच प्यार करने लगा, तो मुझे मालूम हुआ कि मेरा एक भतीजा जब - तब उसके जिस्म पर हाथ रख देता है. मेरे पूछने पर वह इनकार कर सकती थी, मगर वह झूठ नहीं बोल सकी थी. क्योंकि वह सचमुच प्यार करती थी मुझे. यहीं मैं हार गया था. मैं उसे पवित्र प्रेम की फिलासफी समझाता रहा, परंतु बाकी लोग उसे सेक्स का दर्शन समझाने लगे. मैं गांव से आया था, बाकी लोग शहर के थे. मैं कुप्पी और लालटेन में पढ़ कर आया था. वे तेज बल्ब में पढ़ कर बड़े हुए थे. सूई घुमा कर रेडियो पर दूर-दूर के स्टेशन पकड़ लिया करते थे. . .वे स्टेशन को नजदीक लाते रहे और मैं दूर होता गया. . .यही वह दूरी थी, जो मुझसे कविताएं लिखवाने लगी. .

अब मैं कविताएं लिखता था, पढ़ता था और फुटबाल खेलता था, फुटबाल तो बहुत पहले से खेलता था, जब स्कूल में पढ़ता था. बॉरो हो कर कालेज की टीम से खेलता था. फिर एम. ए. करने भागलपुर चला गया. जब सिक्स्थ इयर में था, तो एक बार मुंगेर में खेलते वक्त एक खिलाड़ी बूट ले कर मेरी छाती पर चढ़ गया. मैं खतरनाक सेंटर फारवर्ड था और मुझे घायल करना उनके लिए जरूरी था. मेरे मुंह से खून आने लगा और बहुत दिनों तक जब-तब आता रहा . फिर मैं कुछ दिनों लिट्रेसी हाउस, लखनऊ में भी रहा. वहीं यशपालजी, भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, डा. देवराज आदि से मिलने का अवसर मिला. वे लेक्चर देने आते थे. श्रीमती फिशर की इस संस्था का भी माहौल विलायती था. . .सभी अंग्रेजी बोलते थे. . . हमारे साथ जितने लेखक थे वे भी. . .यहीं हमारे साथ थे वी. वी. वोकिल (मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक), दत्तात्रय वर्वे, अनामिल, वर्मा के विनटिन. जब मैं लखनऊ से मुंगेर वापस आया, तो मां बैडमिंटन की चिड़िया की तरह एक भाई के यहां से दूसरे भाई के यहां फेंकी जा रही थीं.

मां यानी बैडमिंटन की चिड़िया

मां को बाथरूम के बगल वाले कमरे में रख दिया गया था. एक खाट लगा दी गयी थी. पास ही कमोड लेकिन जब भी बच्चे बाथरूम जाते, धड़ाम से दरवाजा बंद करते. मां कहतीं—बेटा, छाती पर धक्का-सा लगता है. धक्का तो मेरी छाती पर भी लगता था, लेकिन मैं एक बार फिर आईजक भैया बना दिया गया था.

खाना देते समय, उनकी गोद में एक हरा चारखाना कपड़ा बिछाया करता था. . .तामचीनी के गिलास में पानी रख देता था. . .वह खाना शुरू करती थीं. कभी चावल कड़े, तो कभी सब्जी झोल. कहतीं —बेटे, चावल कड़े हैं.और मैं चावल में पानी मिला कर उसे मसलता था. मुलायम बनाता था. जानता था, दाई को कहूंगा, तो जवाब मिलेगा —हूं, अलग से चार दाने सिझा दें. अरे, मुंह में एक्को दांत भी हो तब. . न. . .! मैं जानता था, यह दाई नहीं, घर की मालकिन बोलती है. . .

ये मेरे बुरे दिन थे, जब मेरी अच्छी कहानियां लिखी गयीं. 'धर्मयुग' में जब मेरी पहली कहानी छपी थी, तो मां बहुत खुश हुई थीं. कई अंक खरीद कर उन्होंने जिस-तिस को दिये थे. मुझे निकट बुलाया था. प्यार से सिर पर हाथ रख कर रो पड़ी थीं—रवींद्र बेटे, ईश्वर करे, तू खूब नाम कमाये. . .लेकिन बेटे, कब तक मां की सेवा करता रहेगा. . .कब तक इस तरह कंघी करता रहेगा. . .तौलिये से जिस्म पोंछता रहेगा. . . कमोड पर बिठाता रहेगा. . .बेटे, मुझे छोड़ कर तू कहीं भी चला जा, लेकिन यहां नहीं रह. . .! परंतु मैं अपनी अपाहिज मां को नहीं छोड़ सका था. कभी आईजक भैया की तरह ही अकेले में रोता था. . .कभी सेंटर के पीछे. . .कभी कष्टहरणी घाट की सीढ़ियों पर. . .

ऐसे गर्दिश के दिनों में श्रीकांत झा, राजेश, कृष्णा और कई दोस्त मिल गये थे. मैं अपने ढेर सारे दुख इनके साथ बांटा करता था. लेकिन घर लौटने पर फिर वही ताने, वही बासी बातें मुझ पर फेंक दी जाती थीं. और मैं अब तक इतना टूट चुका था कि आत्महत्या की बात सोचने लगा था. ऊपर से मां की खातिर बहुत हंसता था, लेकिन एकदम खोखला हो गया था. मैं जब अकेले में रोता था, तो शीला (भतीजी) मेरे पास आती थी. . . मेरे पास रोती थी. जब मैं मरने की बातें करता था, तो मुझे मां के लिए जिंदा रहने को कहती थी. अगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह न होती, तो मैंने बहुत पहले मृत्यु को स्वीकार लिया होता, क्योंकि आईजक मैया बने रहना मेरे लिए संभव नहीं था.

वह लड़की जो कहानियां पढ़ कर पत्नी बनने आ गयी यानी गीता पटरथी

गीता को भी आईजक मैया बनना पड़ा था. गलती न करने पर भी माफी मांगनी होती थी. और एक दिन हम दोनों को घर से निकल जाने को कहा गया था. जब मैं गीता को रिक्शे पर ले कर निकला, तो हलकी-हलकी बारिश हो रही थी और गीता के पेट में हलका-हलका दर्द हो रहा था. . .वह पूरे समय से थी और किसी भी समय मां बन सकती थी.

ऐसे नाजुक समय में मैंने दो कहानियां 'सारिका' को भेजीं. स्थिति बताते हुए श्री चंद्रगुप्त विद्यालंकार से (तब वह संपादक थे) एडवांस की मैंने मांग की थी. उन्होंने तुरंत दो सौ रुपये भिजवा दिये.

और जब मोनू पैदा हुआ, तो बीमारी की हालत में भी शीला हमारे पास थी. . .अस्पताल का नर्सेस क्वार्टर. . . .एक भाभी यहां नर्स थीं. एकदम दुबला, मरियल-सा मोनू. . .शीला ने अपने बच्चे की तरह इसे सीने से लगा लिया था. . .और मैं एक ही बात सोच रहा था कि बिना कुछ भी अच्छा खाये-पीये और हमेशा तनाव के वातावरण में रह कर भी गीता ने कैसे इस बच्चे को जन्म दिया? जन्म दिया, तो जीवित कैसे रह पायी?

पटने की यात्रा

गीता की नौकरी लग गयी थी. पंद्रह दिन के मोनू को ले कर हम पटने आ गये. . .हम यानी गीता, शीला और मैं. हाथ में केवल एक सौ उंतीस रुपये थे, एक ट्रंक, बिस्तर, एक सूटकेस, बस. यह १९६६ की बात है. पूरा मकान खाली था. जमीन पर हम सोते थे. बाद में सोमवारी मेले से हमने पंद्रह रुपये में एक चौकी ली—मोनू को ऊपर सुलाने के लिए. यही हमारी पहली खरीदारी थी.

फिर हम मां को भी ले आये. अब मां पूरी तरह से अपाहिज हो चुकी थीं. मैं उन्हें कमोड पर बिठाता, स्पंज करता, धीरे-धीरे अपने हाथों से खाना खिलाता और वह जब-तब रोतीं. कहतीं—बेटा, मुंगेर कभी मत जाना. मुंगेर ने मुझे बहुत सताया है. पर मैं जानता हूं. वह भीतर-ही-भीतर मुंगेर से प्यार करती थीं. और यह कितना बड़ा अपराध है कि हम भी अंतिम इच्छा पूरी नहीं कर सके. हम अब भी मुंगेर जाते हैं और इतने घाव ले कर लौटते हैं कि कसम खाते हैं कि अब कभी नहीं जायेंगे, लेकिन फिर चले जाते हैं. हम भी मां की तरह मुंगेर से नफरत करते हैं. और हकीकत यह भी है कि उसीसे मां की तरह प्यार भी करते हैं.

और आज जब कोई पूछता है कि आप नारी की पीड़ा को इतनी गहराई में कैसे अभिव्यक्ति देते हैं, तो मैं केवल मुसकराता हूं क्योंकि मैं जानता हूं, कहानी में आयी वह लाचार औरत और कोई नहीं, मेरी मां हैं, जो कभी पत्नी थीं, मां थीं, सास थी, शिक्षिका थीं, गृहिणी थीं, एक टूटी हुई औरत थीं, जिन्हें मैं रोज टुकड़ों में बंटते हुए देखा करता था.

वह आखिरी दिन

यह वही तारीख थी, जिस दिन राजकमल चौधरी मरा था. अशोक (भतीजा) सिरहाने बैठा था. मैं पांव पकड़ कर रो रहा था. गीता और शीला ठगी-सी खड़ी थीं, काफी प्रतीक्षा के बाद उन्होंने किसी तरह पूछा—ईडिथ आयी? (सिस्टर, यानी दानव की पत्नी.)

अशोक ने कहा—नहीं.

—अब वह नहीं आयेगी. . .! यही मां का आखिरी वाक्य था. धीरे-धीरे आंखें पथराने लगीं. मैं उन्हें चुकता हुआ देख रहा था. . .बहुत जोरों की रुलाई आने को हुई. . .लेकिन मैंने जब्त कर लिया. . .कहीं फिर वह सिसकी न सुनाई दे जाये. मेरी मां की आंखें पत्थर हो रही थीं. . .वही मां, जो मेरे पा' के बाद मेरे लिए सब कुछ थीं. . .वही मां, जिन्होंने मेरा नाम रवींद्रनाथ रखा था, जिसे दानव और चंद ऐंग्लो-इंडियनों ने रॉबिन बना दिया था. . .वही मां, जो चाहती थीं कि मैं कहानियां लिखूं. . .मैं उन्हीं को धीरे-धीरे मृत्यु-मुख में जाते हुए देख रहा था. . .उफ !

उस दिन मैं चुप रहा था. लेकिन आज चिल्लाता हूं—सुना तुमने, मां, मैं दानव से नफरत करता हूं, शराब से नफरत करता हूं, अंग्रेजी बोलने से नफरत करता हूं. . . इन्हीं तीनों ने हमारे घर को बरबाद किया है. . .पर एक बात कहूं, मां, आज दानव मर चुका है, अंग्रेज भी जा चुके हैं. . .मगर लोग पहले से भी ज्यादा पीने लगे हैं, अधिक अंग्रेजी बोलने लगे हैं और जो हिंदी मैंने बहुत जिद करके सीखी थी, बहुत पीछे छूट गयी है. . .बहुत पीछे, डर लगता है मां, कहीं यह शराब, यह अंग्रेजियत, जिसने हमारे घर को तबाह किया था, इस देश को न बरबाद कर दे.

फिर वही सलीब

आज मेरे पास अपनी लिखी किताबें हैं, फ्रिज है, टेलीफोन है, टेपरिकार्डर है, यूफोम और रिलैक्सनऑन के गद्दे हैं, कहानी पर फिल्म बन रही है. . .लेकिन हर रात सोने से पहले मैं अपनी मां को याद करता हूं. उन्हें कुछ भी नहीं दे सका था. . .और आज भी जिस सलीब पर मैं ठुका हूं, उसके नीचे दो लड़कियां खड़ी हैं, जो कभी मेरे लिए सचमुच रोयेंगी. . .मैं इन्हें भी कुछ नहीं दे सका हूं, आशिष तक नहीं. . .मेरे हाथ सलीब पर ठुके हैं, एक लेखक के हाथ! मैंने कहा था न, कुछ बच्चों के लिए पहले ही कपड़े सिल लिये जाते हैं. पैदा हो कर उन्हें अपने को उनमें डालना होता है. चाहे कपड़े ढीले हों, या तंग. . .मुझे मालूम नहीं, मेरे लिए कपड़े सिले भी थे, या नहीं, पर यह बात आज साफ हो गयी है, कि मेरे लिए एक सलीब पहले से तैयार रखी थी, जिस पर पैदा होते ही मुझे ठुक जाना था.

सनोवर बिल्डिंग, ९५, सब्जीबाग, पटना—४. □□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्रांसफर

• कुलदीप कुमार

खन्ना साहब बीस वर्ष की सर्विस में सातवीं बार ट्रांसफर होकर मुरादाबाद आये. रेलवे के बड़े दफ्तर में एकाउंट्स के हेड क्लर्क. कुछ दिन किराये के मकान में बिताने के बाद उन्हें शहर के बाहर नयी बनी रेलवे कॉलोनी में एक क्वार्टर एलाट हुआ. मिलिटरी की बैरकों जैसा खूब बड़ा क्वार्टर. बढ़िया. मगर आंगन कच्चा था. और कच्चा भी केवल मिट्टी का होता तो भी कोई बात नहीं थी. ठेकेदार ने शायद यह सोचकर कि इन मकानों में रहने वाले यह न भूल जायें कि वह रेलवे के नौकर हैं, आंगन में जला हुआ कोयला बिछवा दिया था. हालत यह कि नंगे पैर घर में चलना मुश्किल. जहां-तहां कोई नुकीला कोयला चुभ जाता.

आस-पास बहुत से मकान बन रहे थे. सीमेंट की बोरियां तो स्टोर में तालाबंद करके रखी जातीं मगर अनगिनत ईंटों के ढेर और बालू को भला कहां बंद किया जाये! लिहाजा सब लोग रात को अंधेरा होते ही बाहर से ईंटें उठा-उठाकर अपना आंगन पक्का करने लगे. छोटे-छोटे बच्चे दौड़-दौड़कर ईंटें उठा लाते. बड़े उन्हें ठोंक-ठोंक कर एक-सा लगा देते. खन्ना साहब के बच्चों ने कहा कि हम भी अपना आंगन पक्का करेंगे. सिर से पगड़ी उतारकर अपने खिचड़ी बालों में हाथ फेरते हुए खन्ना साहब कहने लगे—क्या करना है. पता नहीं साल रहना है या छह महीने. जाने कब ट्रांसफर हो जाये.

मकानों के पीछे बहुत जमीन पड़ी थी. एक साहब ने टूटी चारपाई के बांस और लकड़ियां गाड़कर बहुत सारी जमीन घेर ली. आसपास के लोग सोचते रहे, अभी रेलवे का कोई बड़ा अफसर आकर इन साहब को मजा चखायेगा.

दो-चार दिन बीते. महीना बीत गया. कुछ नहीं हुआ. एक और साहब ने भी ऐसा ही किया. मगर हद उन्होंने भी उतनी ही रखी जितनी पहले वालों ने रखी थी. फिर और मकानों ने भी यही किया. बिना किसी के कहे यह मान लिया गया कि इतनी जमीन हर कोई ले सकता है लेकिन इससे अधिक भूमि घेरना गैरकानूनी होगा.

धीरे-धीरे लकड़ी के खंभों की जगह लोहे के मजबूत खंभे लग गये. फिर कांटेदार तार भी आ गये. सब कुछ रेलवे का. खन्ना साहब अपने बच्चों को समझाते—यह गलत काम है. चोरी है. और फिर हमें कौन यहां जिंदगी भर रहना है!

उनके घर के पीछे जमीन वैसे ही पड़ी रही. दोनों तरफ के मकानों के बगीचे बन गये. लोग उनमें सब्जियां लगाने लगे. आलू, गोभी, टमाटर, मिर्च, प्याज, मूंगफली, मटर, अरबी और न जाने क्या-क्या. किसी ने आम का पेड़ लगाया तो किसी ने जामुन का.

* *

एक दिन शाम को खन्ना साहब दफतर से घर पहुंचे तो क्या देखते हैं कि उनके बच्चों ने भी दो खंभे गाड़कर थोड़ा-सा तार बांध दिया है. आसपास दोनों तरफ के मकानों का बगीचा था ही. सिर्फ सामने ही तो तार खींचना था. सोचा चलो कोई बात नहीं. जब ले ही आये हैं तो क्या किया जाये.

कुछ दिन बाद उनका लड़का एक जामुन का पेड़ ले आया. बगीचे में गड्ढा खोदकर लगा रहा था. खन्ना साहब ने पूछा—जामुन कब लगेंगे? लड़के ने बताया कि माली कह रहा था पांच साल बाद. खन्ना साहब बहुत बिगड़े. पांच साल. पांच साल में न जाने क्या हो जाये. ट्रांसफर

• दिवाकर शेडगे

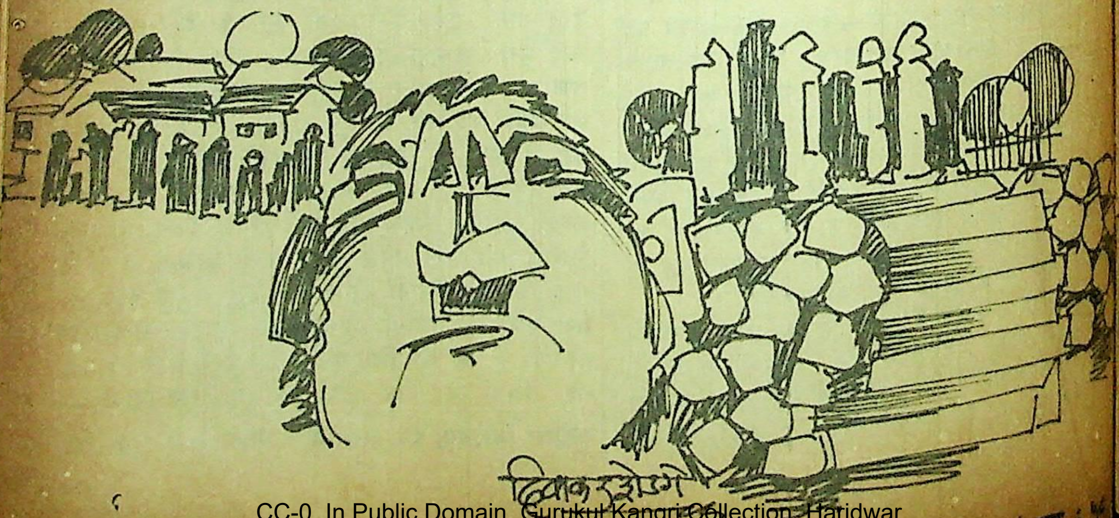

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का क्या भरोसा? और ट्रांसफर क्या तब तक तो वह रिटायर ही हो जायेंगे. फिर ऐसा पेड़ लगाने से क्या फायदा?

मगर अब पेड़ आ ही गया था इसलिए लगा दिया गया.

आसपास के घरों से देखकर खन्ना साहब की पत्नी कहतीं कि बिस्तरों के लिए एक बड़ा बक्सा बनवा लें. गेहूं रखने के लिए एक ड्रम बनवा लें. बांस की चारपाइयां अब किसी के घर नहीं हैं. अपने घर में कोई आता है तो बड़ी शर्म आती है. चार नहीं तो कम से कम दो पलंग ही बनवा लें. राजू और शीला अब बड़े हो गये हैं. दोनों के पढ़ने के लिए अलग-अलग मेज-कुर्सी होनी चाहिए. तुम अपने लिए भी एक साइकिल खरीद लो. दफतर कितनी दूर है! पैदल आने-जाने में थक जाते हो. और फिर सिर्फ दफतर ही तो नहीं जाना होता. बाजार भी यहां से कितनी दूर है.

खन्ना साहब उसे समझाते—देखो भागवान्, सामान ज्यादा बढ़ाने से क्या फायदा! हम ठहरे रेलवे के नौकर. आज मुरादाबाद, कल पता नहीं लक्सर या सहारनपुर. पता नहीं चार दिन रहना है या छह दिन. फिर इतना सामान इकट्ठा करने से क्या फायदा?

न बिस्तरों का बक्सा बना, न गेहूं का ड्रम! न मेज-कुर्सी आयी, न साइकिल! छत से रस्सी बांधकर एक लंबे बांस का झूला बनाया गया और उस पर गद्दे-रजाइयां और कंबल डाल दिये गये. ऊपर एक पुरानी चादर डालकर डोरी से बांध दी गयी जिससे धूल न पड़े. गेहूं रखने के लिए खन्ना साहब की पत्नी ने चिकनी मिट्टी में घोड़े की लीद व भूसा सानकर बड़ी-बड़ी कोठियां बना लीं. ईंटों के पाये बनाकर उन पर एक सूटकेस रखकर राजू के लिए मेज बन गयी.

खन्ना साहब बदस्तूर पैदल आते-जाते रहे. सुबह-सुबह उठकर दो मील दूर गांव में दूध लेने जाते. फिर साढ़े नौ बजे खाना खाकर घर की धुली और खूब नील लगी कमीज और चुन्नटों वाली सलवार पहनकर सिर पर पगड़ी ठीक करते हुए दफतर चले जाते. दफतर यानी दो मील दूर! रास्ते में उनके नीचे काम करने वाले क्लर्क साइकिलों पर चढ़े उनके पास से नमस्ते करते हुए निकल जाते. कोई-कोई उन्हें कैरियर पर बैठने को भी कहता पर वे मुसकराकर मना कर देते. दोपहर में—लंच टाइम में—थैला लेकर बाजार चले जाते. दाल-सब्जी ले आते. शाम को फिर दफतर से लौटकर दो मील दूर गांव से दूध लेने जाते.

तीन-तीन घरों के बीच में एक-एक नल था. पानी भरकर लाना होता. बच्चे नल पर ही नहा लेते. इस सांझे नल पर कई बार बालटियां टकरा जातीं. चूड़ियां खनक उठतीं. बच्चे लड़ पड़ते. इस झंझट से बचने के लिए खन्ना साहब सबेरे तड़के ही उठ जाते. अभी आसपास के लोग सो रहे होते कि वह नहा-धोकर दिन भर के लिए पीने का पानी और शीला और उसकी मां के लिए नहाने का पानी भरकर रख देते. अंत में एक बाल्टी जामुन के पेड़ को भी डाल देते. अब जब लगा ही है तो पानी तो देना ही चाहिए. फल तो पता नहीं कौन भागवान खाएगा इसके!

★ ★

चार साल बीत गये.

उनके साथ के कई लोग ट्रांसफर हो गये पर खन्ना साहब का आर्डर नहीं आया. जामुन का पेड़ अब बड़ा हो गया था. राजू और उसके दोस्त उसकी डालियों पर चढ़ जाते.

तभी एक दिन सुना कि बिजली आने वाली है. अब तक मिट्टी के तेल के लैंप जलते थे. बिजली केवल सड़कों पर व रेलवे क्लब में थी. शाम को खाना खाकर पुरुष व लड़के क्लब चले जाते. औरतें व लड़कियां खाना खा-खिलाकर, चौका-बासन मांज-धोकर बाहर आ बैठतीं, कभी किसी के और कभी किसी के दरवाजे पर.

बिजली की फिटिंग शुरू हो गयी. दीवारों में गिट्टियां गाड़कर लकड़ी की पट्टियां लगाई जाने लगीं. खन्ना साहब के घर में भी फिटिंग पूरी हो गयी. नगर में बिजली तब आयेगी जब सब घरों की फिटिंग पूरी हो जायेगी. उनकी पत्नी कहती, बच्चों के लिए कम से कम एक टेबल फैन तो लेना ही पड़ेगा. कितनी गर्मी पड़ती है! इम्तहान के दिनों में मच्छर भी कितने हो जाते हैं!

तभी एक दिन सबने देखा कि जामुन के पेड़ पर फूल लग आये हैं. राजू अब उसको और भी अधिक पानी देने लगा. छोटे-छोटे हरे-हरे जामुन लग गये. सारे मकानों में चर्चा होने लगी कि खन्ना साहब के पेड़ पर जामुन लगे हैं.

उस दिन खन्ना साहब दफतर गये तो उनको एक बंद लिफाफा मिला. खोलकर देखा. . . . . निम्नलिखित कर्मचारियों को सामने लिखे स्थानों पर स्थानान्तरित किया जाता है.

निर्विकार भाव से खन्ना साहब ने पत्र को ठीक से तहकर जेब में रख लिया. □□□

१२-सी, जवाहर नगर, ग्वालियर –१

लघुकथा

हैरानी

● मनोज सोनकर

उसने फटी हुई हाफ पैंट और मैली गंजी पहन रखी थी. साइकिल के हैंडल में मैला-सा झोला लटक रहा था. दोपहर का वक्त था, बेतहाशा साइकिल दौड़ा रहा था, पसीने से लथपथ था. जैसे ही उसने शिवाजी पार्क के चौराहे पर दाहिनी ओर मुड़ना चाहा था, एक लारी ने उसे गेंद की तरह उछाल दिया था. भीड़ जमा हो गयी थी.

—बहुत बढ़ियां चावल है. साला कहां से मार लाया. लोग हैरान थे.

खून की पतली-सी धारा बिखरे हुए चावलों को छोटे-छोटे खानों में बांटने की कोशिश कर रही थी. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आइस्क्रीम का एक कोन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● ज्योतिष जानी

अब--
उसकी आंख पर से मैं अपनी आंखें उठा नहीं सकता.

मुझे कैसा लगता है, यह भी मैं ठीक तरह से नहीं कह सकता, कुछ अगम्य-सा.

उसे मैं देखता हूं और पेट में ऐंठन आये, ऐसा कोई मनोभाव महसूस करता हूं.

कुंतल.

डॉक्टर ने कह दिया है— कुंतल अब चार-पांच महीने मुश्किल से निकालेगा. रोग को तुम पहचानते नहीं.

मैं डॉक्टर के यहां से ही सीधा कुंतल के पास आया हूं. चारों ओर से मुझे उन शब्दों की प्रतिध्वनियां सुनाई देती हैं—कुंतल अब चार-पांच महीने मुश्किल से. . .

डॉक्टर ने कहा है— इस रोग को तुम पहचानते नहीं. प्राणघातक होता है यह रोग!

★ ★

—तू इतना अधिक प्रसन्न है, कुंतल, क्या बात है?

—व्हाट ए सिली क्वेश्चन, बॉय! अरे, मैं खुश हूं, तो इसके लिए भी ऐसी वक्रोक्ति? ईर्ष्या होती है मेरी खुशी पर?

—नहीं, नहीं, यह बात नहीं. आई मीन. . . शब्दों से अर्थ चले जाते हैं. मेरी वाणी से किसीने चेतन चुरा लिया है. उसकी आंखों की स्फूर्तिभरी प्रसन्नता को मैं कैसे झेलूं?

(डाक्टर ने कहा है —प्राणघातक होता है यह रोग! प्रभु से प्रार्थना करने के सिवा दूसरी कोई गति नहीं. कोई उपाय नहीं.)

—सिली बॉय! तू इस तरह खोया-खोया क्यों लगता है? कुंतल मुझसे कह रहा है—व्हाट्ज द हेल विद यू? किसीका डेथ-वारंट हाथ में ले कर घूमता है क्या? सुन, आज नीनी आने वाली है— माय स्वीटी! जानता है? आज तो मैं नीनी को खूब आइस्क्रीम खिलाने वाला हूं. मेरी बेटी नीनी को आइस्क्रीम बहुत भाती है और. . . कसम खा कर कहता हूं, दोस्त, नीनी जब आइस्क्रीम खा रही होती है, तब मुझे लगता है कि मैं उसकी आंखों में देखता ही रहूं, बस, देखता ही रहूं अपनी नीनी को. आई सिंपली लव दैट नॉटी गर्ल, आइस्क्रीम खाती है, तब कितनी स्वीट लगती है मेरी बेटी!

मैंने बड़ी भूल की है. डेथ, बी नॉट प्राउड'— मौत, अभिमान मत कर — किताब मेरे थैले में रह गयी है. और कुंतल का यह मूड देखते, वह मेरा थैला और संपूर्णता से मुझे नहीं टटोले, तो आश्चर्य की बात.

—मी लार्ड! अरे, तू चुप क्यों है? किंतु. . .औ...र मेरे सामने ऐसे टगर-टगर क्या देख रहा है? मेरे दोनों गालों पर फूट आयी सेब की-सी सुर्खी देखता है? वेल, तो फिर आनंदित हो!

—कुंतल यार, आज तो मजा आ गया!

(एक अभिनय की तैयारी में मैं शब्दोच्चारण कर रहा हूं.)

—कह दे, जिगरी! आज मजे के साथ मजा हो जाये! देख, अब नीनी को आना चाहिए. . . पांच ही मिनट में. आज वह लेट हुई, तो. . . किंतु हां, तू क्या कह रहा था?

मेरी जीभ लड़खड़ा रही है. शब्द, अभिनय, सभी. . .

(डॉक्टर ने कहा है— प्रभु से प्रार्थना करने के

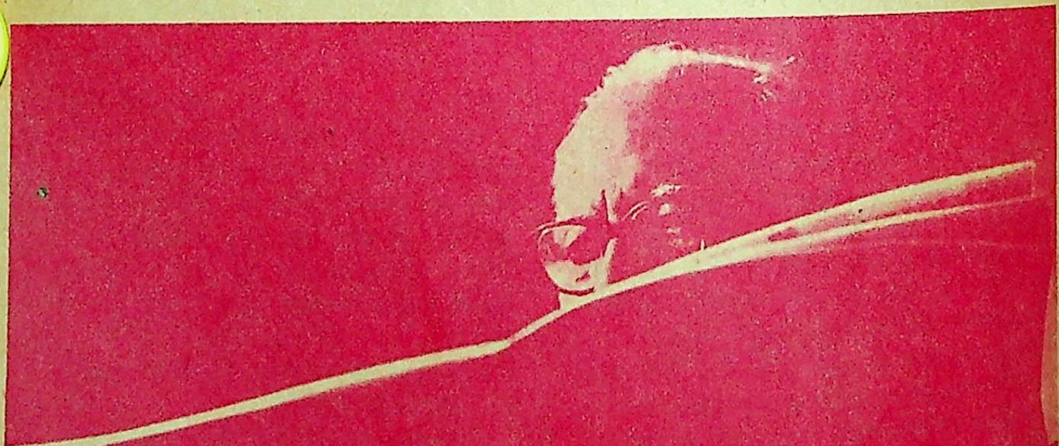

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिवाय दूसरी कोई गति नहीं कोई उपाय नहीं! तुम्हें तो स्वीकारना ही होगा [illegible] वास्तविकता.)

मैं अपने आपको मना रहा हूं. कुंतल को छलने के सिवा अब दूसरा कोई उपाय नहीं. यू हैव टु, सिली! व्हिसल बजा—

मैं आनंदविभोर कुंतल को एक काल्पनिक बात कह रहा हूं. कुंतल हंसता है— मन भर, मुक्त.

(कुंतल, आज बड़ा मजा आया. तू उस विबुध को जानता है न? आज अचानक वह मिल गया. और . . . साले ने हमें मैरेज में नहीं बुलाया था, क्यों? उसकी छोटी-सी बिस्पेक्टेकल्ड वाइफ का परिचय उसने किस तरह दिया, बताऊं?)

मैं लड़खड़ा जाता हूं. मेरे चेहरे पर काली बदली-सी छा जाती है. कुंतल कितनी निर्दोष, जीवंत आंखों से मेरे सामने देख कर हंस रहा है.

—रुक क्यों गया, बॉय? मेरी फीकी हंसी को उसने पकड़ लिया है.

(डॉक्टर कहता है—तुम मैच्योर आदमी हो. तुम्हें जीवन के अंतिम वास्तविक सत्य को पचाना सीखना चाहिए. ध्यान रखना, तुम्हारे मित्र को फिलहाल किसी प्रकार का वहम न हो. अगरचे . . .)

—नीनी, माय स्वीट!

नीनी आ पहुंची है समय पर. मेरे निर्बल क्षण संभल जाते हैं.

कुंतल को इतना खुश मैंने कभी भी नहीं देखा. नीनी आइस्क्रीम खाती हुई बहुत धीरे-से मेरे कान में कह रही है— तुम . . . तुम क्यों सूख कर इस तरह कांटा हो गये हो? कुंतल की बीमारी तुम्हें आ गयी है क्या? ओह, आई ऐम सॉरी . . .

(मैं बोलना चाहता हूं—नीना, कुछ ऐसा हो जाये, तो कितना अच्छा!)

परंतु मैं हंसता हूं—फीका, म्लान. एक विषादयुक्त लाचारी के मार से मैं दबता जाता हूं.

(डेथ, बी नोट प्राउड' मेरे थैले में है? डैम इट . . . उस किताब के एक-एक पृष्ठ के शब्द तो मैं कुंतल के चेहरे पर पढ़ रहा हूं.)

कुंतल मुझसे कह रहा है—बॉय, देख, देख, नीनी कितनी सुंदर लगती है! मुझे जल्दी दूसरा कोई विशेषण बता. सुंदरतर. नीनी, नीनी, दूसरी प्लेट आइस्क्रीम. नीनी, तीसरी प्लेट . . . ओह सुंदरतम.

नीनी, कुंतल और आइस्क्रीम दोनों का एक साथ मजा लूट रही है.

कुंतल कहे जाता है — नीनी, तू युगों-युगों तक निरंतर आइस्क्रीम झपटा कर. आइ लव दैट. बस, तुझे देखा ही करूं. और नीनी, यदि तू कहे, तो मैं स्वयं आइस्क्रीम का मुलायम कॉन . . .

कुंतल मुझसे कह रहा है—यू सिली सीरियस, मुझे कैसी प्रोफाउंड उपमा सूझी है . . . जरा ब्रेवो तो कह दे, जिगरी!

कुंतल तेरा जवाब नहीं! सचमुच तेरी इस प्रसन्नता

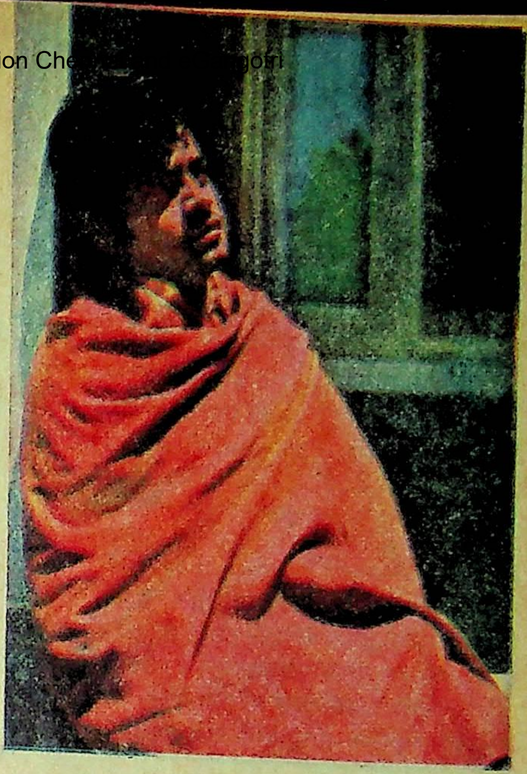

● भगवानदास स्वाती

को मैं . . . क्या कहूं?

(कोई उपाय नहीं, डॉक्टर? कुंतल को ट्रीटमेंट के लिए कहीं फॉरिन भेज दें, तो? प्लीज, मैंने तुम्हें एक से अधिक बार कहा है कि इस रोग को तुम जानते नहीं. असाध्य, आत्मघातक और सबसे अधिक धोखेबाज. किस क्षण यह पलटा खाये . . . प्लीज, प्रभु से प्रार्थना करो. हम प्रार्थना करें, मृत्यु . . . मृत्यु . . . मृत्यु.)

मैं बहाना बना चला आया हूं. कुंतल की प्रसन्नता मैं झेल नहीं सकता.

★ ★

—क्यों मूर्ख, कल भाग गया? मुझे चकमा दे कर?

—कुंतल, रियली मुझे . . . आई मीन . . .

—नीनी कल बहुत सुंदर लग रही थी न? तू जानता है, उसने प्रस्ताव भी उतना ही सुंदर रखा. कितना सुखी हूं मैं आज!

मेरे हृदय की धड़कन बढ़ जाती है.

—नहीं समझा . . .

—झूठ! तू इतना नहीं. परंतु उससे पहले तुझे मुझे एक भेंट देनी है.

बाहुक की तरह मैं कुंतल के सामने देखता रहता हूं.

—सिली बॉय, वचन दे! मैं उसे बचन देता हूं.

(कुंतल ने मुझे हिप्नोटाइज किया है? पता नहीं.)

—मुझे एक सुंदर से भी सुंदरतर विशेषण की भेंट देगा? नीनी सुंदर तो है ही, पर उससे भी कुछ विशेष . . . नीनी ने कल मुझसे कहा— मेरेज करें, कहा—जल्दी.

(—ओह, नो! मैं मूर्ख की तरह . . . सचमुच ही मूर्ख की तरह ऐसा फुसफुसाया होऊंगा कुंतल ने शायद नहीं सुना.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—नीनी ने मुझसे कहा—दो महीने बाद. . .माघ में ही.

कुंतल व्हिसल बजा देता है. फिर कहता है— बॉय, हाउ हैपी आई एम! नीनी को फिर मैं खूब आइस्क्रीम खिलाया करूंगा. एक प्लेट सुंदर दूसरी प्लेट सुंदरतर. . . परंतु मुझे दूसरा कोई सुंदरतर विशेषण. . . वचन का पालन करेगा न? या फिर मुझे ही स्वयं आइस्क्रीम. . .

सांस रोक मैं कुंतल को सुन रहा हूं. . . उसकी पागलपन भरी प्रसन्नता.

कुछ क्षणों के लिए वह मौन हो गया है. गंभीर और उदास? या यह मेरा भ्रम है? मैं उसकी आंखों के सामने देख रहा हूं. मैं पूछ बैठता हूं— हां, फिर? तूने क्या कहा?

—ओ. के. सिली बॉय! नीनी को ऐसी बात पर ओ. के. कहा जा सकता है क्या? कितनी निर्दोष, कितनी सुंदर नीनी!

—यानी?

मैं सांस रोक लेता हूं.

—सिली बॉय, मुझे ठगता है?

अचानक रोष और क्रोध से मैं उसे पूछ बैठता हूं —कुंतल, क्या बकाबास करता है? तेरा एक भी शब्द मेरी समझ में नहीं आता!

—मुझे भी मेरा एक भी शब्द कहां समझ में आता है, दोस्त! मैं जानता हूं इस रोग को! □□□

(अनुवाद : जेठमल)

द्वारा श्री के. बी. कापड़िया, ३१-१६८९, खेर नगर, बांद्रा (पूर्व), बंबई–५१

एक लघुकथा

गुरुकुल

● पुनत्तिल कुंजब्दुल्ला

गुरु महोदय ने बगल में उपस्थिति पंजिका और मन में भय लिये कक्षा में प्रवेश किया. अपनी पतली कमजोर टांगों को ज्यों ही उन्होंने स्टेज पर उठा कर रखा, त्यों ही गैलरी में हुडदंग मच गया.

गधे हंस रहे थे. गुरुजी ने मन में सोचा, गधे तो हंसेंगे ही. और कर ही क्या सकते हैं बेचारे?

गुरुजी ने उपस्थिति पंजिका खोली और गर्दभों से विनती की—एटेंड योर रोल काल प्लीज. वन, टू, थी इन नंबरों से जाने जाने वाले गर्दभों ने रेंक दिया— यस सर, कक्षा में केवल साठ व्यक्ति हाजिर थे, लेकिन 'प्राक्सी' नामक महामंत्र के प्रभाव से बयासी लोगों की उपस्थिति अंकित की गयी.

गुरुजी ने रजिस्टर बंद किया और अध्यापन का उपक्रम करने लगे :

—आज में आप लोगों को प्राचीन भारत के गुरुकुल शिक्षण संप्रदाय की महत्ता के बारे में बताऊंगा.

—ओह! कम-से-कम इस टापिक से तो हमारी जान बचाइए सर. पीछे की बेंच से आवाज उठी.

—सर, अगर आपको हम से किसी तरह की दुश्मनी हो तो हमें पचास जूते मारिए, मगर खुदा की खातिर मेहरबानी करके गुरुकुल-दुरुकुल से हमारी जान मत लीजिएगा. किसीने समर्थन किया.

एक बहुत जोर का ठहाका उठा. पूरी कक्षा को कंपाने वाला अट्टहास.

गुरु महाशय कुछ लिखने के लिए श्यामपट की तरफ मुड़े. शिष्य गण ने सड़े टमाटरों और गले अंडों से गुरुजी की अर्चना की.

गुरुजी जल्दी निराश होने वाले नहीं थे. जब तक इस विषय के बारे में कक्षा में बोल नहीं लेते तब तक मन को शांति नहीं मिलने वाली थी. 'तक्षशिला का गुरुकुल-सम्प्रदाय' वाले प्रबंध पर आक्सफोर्ड के साहबों ने उन्हें पी.-एच. डी. की उपाधि प्रदान की थी.

मगर अफसोस! गुरुजी की उत्कट अभिलाषा कोरी आशा बन कर मन में रह गयी है. 'काश, मरने से पहले एक बार भी यदि इस महत्वपूर्ण विषय के बारे में अपने छात्रों को समझा पाता!' —गुरुजी के हृदय में यही एक फिक्र शेष रह गयी थी. उन्हें खाने में रुचि नहीं रही, नींद ने धोखा दिया.

बीमारी बढ़ गयी. 'यह बोरियतवाला मर भी नहीं जाता' —प्यारे शिष्यों को खीझ हुई.

गुरुजी ने दवा खायी, चारपाई की शरण ली और अंत में अस्पताल पहुंच गये.

पास पहुंची आखिरी घड़ी की प्रतीक्षा में गुरुजी एक-एक पल गिन रहे थे. अस्पताल में चारपाई के पास औंधी लटकी हुई बोतलों से खून की बूंदें टपक रही थीं.

आखिरी सांस लेते वक्त गुरुजी के मस्तिष्क में किसी पौराणिक कहानी की तसवीर मात्र अंकित रही जिसे उन्होंने तीसरी कक्षा में पढ़ा था. . . . गुरुजी शिष्य को सजा दे कर घर लौट आते हैं और बड़ी ग्लानि के साथ पत्नी से उस अवांछित घटना के बारे में कह रहे हैं. उसी वक्त वह शिष्य गुरुजी से बदला लेने के लिए हाथ में पत्थर लिए छत पर छिप कर बैठा हुआ था. तीसरी कक्षा की पाठमाला का वह दृश्य मरते वक्त गुरुजी के मस्तिष्क में अंकित रहा और उस शिष्य का चेहरा उनकी आंखों से ओझल नहीं हुआ.

गुरुदेव के चरम दिवस की शाम को कोई शिष्य अपने कमरे में नहीं गया. विद्यालय के निकट जितने क्लब और सिनेमाघर थे, जितनी चाय की दूकानें थीं, सभी जगह रात को दस बजे तक छात्रों का हो-हल्ला होता रहा क्योंकि आराध्य गुरुदेव की मृत्यु पर शोक मनाने के लिए विद्यायल में अगले दिन की छुट्टी घोषित की गयी थी. □□□

(रूपांतर : एन. सदाशिवन)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प का मूल्य

उस वर्ष कड़ाके की सर्दी पड़ी, पाला पड़ने से बन उपवन, पेड़-पौधे सभी सूख गये, हरियाली का कहीं नाम नहीं रह गया. ऐसे में मंदिरों में पूजा-अर्चना के लिए पुष्प कहां से आते?

किंतु यह क्या, सुदास माली के सरोवर में एक कमल खिल उठा, ऐसा विहंसता कमल कभी वसंत ऋतु में भी नहीं खिला था. सुदास के हर्ष का पारावार न रहा. अब उसे मनमांगा मूल्य पाने का अवसर मिल रहा था.

प्रातः होते ही माली ने कमल को तोड़ लिया और राजमहल को प्रस्थान किया. राजमहल के द्वार पर पहुंचकर उसने राजा को समाचार भिजवाया कि वह एक ऐसा पुष्प लाया है जो बेजोड़ और बहुमूल्य है.

इतने में ही एक आगंतुक उधर आ निकला, कमल पुष्प देखते ही वह उस पर मुग्ध हो गया, समीप आ कर माली से पूछा—क्या यह पुष्प बिक्री के लिए है?

माली बोला — मैं तो इसे महाराज के चरणों में अर्पित करने का इच्छुक हूं.

--किंतु मैं तो इसे महाराजाधिराज के श्रीचरणों में अर्पित करना चाहता हैं, आगंतुक ने कहा.

विनोद दवे

--मैं आपका अर्थ समझा नहीं.

--बात यह है कि भगवान तथागत की आज इस नगर पर कृपा हुई है. अपने पुष्प का मूल्य बताओ!

--मैं तो इसके बदले में एक माशा सुवर्ण पाने की आशा से निकला हूं.

--मुझे यह मूल्य स्वीकार्य है, आगंतुक उत्साह से बोला. सहसा वाद्यवृंद बज उठे, सभी ठिठक कर जहां के तहां खड़े हो गये. इतने में प्रसेनजित नंगे पैरों राजमहल से बाहर निकले, वे बुद्ध के दर्शनार्थ जा रहे थे.

सुदास के हाथ में कमल पुष्प देख कर वे बड़े आनंदित हुए. रुक कर पूछा— माली, इस पुष्प का क्या मूल्य लगाते हो?

--राजन्, पुष्प को तो मैं इन्हें बेंच रहा हूं.

--किस मूल्य पर?

--एक माशा सुवर्ण के बदले!

--मैं दस माशा देता हूं!

--तो मैं बीस माशा दूंगा, आगंतुक महाराज का अभिवादन करने के पश्चात बोला.

महाराज भौंचक्के रह गये. यह देखकर आगंतुक ने कहा--आज हम दोनों ही भगवान बुद्ध के दर्शन-हेतु जा रहे हैं, हम दोनों भक्त हैं, न राजा न प्रजा अतएव आप मेरी यह धृष्टता क्षमा करेंगे.

उदारमना महाराज के चेहरे पर मुसकान बिखर आयी— सच कहते हो भक्तराज, किंतु यदि मैं बीस माशे सुवर्ण दूं तो. . .

--तो. . . मैं चालीस माशे दूंगा,

यह सुनते ही सुदास माली से न रहा गया, बोल पड़ा--महाराज, क्षमा कीजिए, भक्तश्रेष्ठ आप भी क्षमा कीजिए. अब यह पुष्प मैं किसी भी मूल्य पर बिक्री नहीं करूंगा.

नगर से बाहर निकल कर माली ने सोचा, जिन भगवान बुद्ध को उनके भक्त इतना मूल्य चुकाने को तैयार हैं, निश्चय ही वे अत्यंत धनवान होंगे. क्यों न मैं यह उनके हाथों बेंचकर मुंहमांगा मूल्य पाऊं?

भगवान बुद्ध को खोजते-खोजते माली वहां जा पहुंचा. जहां वटवृक्ष के नीचे वे पद्मासन में बैठे थे. अहा क्या रूप है! क्या तेज है इस तपस्वी में! और नयनों से तो करुणा टपक रही है. सुदास मंत्रमुग्ध हो एकटक उस परम तपस्वी को देखता रह गया. फिर जैसे होश आते ही वह आगे बढ़ा और उस कमल पुष्प को उसने उस परम तेजस्वी तपस्वी के चरणों में अर्पित कर दिया.

भगवान बुद्ध मुसकराये, बोल उठे— क्या चाहते हो, वत्स?

माली ने अवरुद्ध कंठ से कहा—भगवन्, मेरी और कोई मनोकामना नहीं. चाहिए तो बस आपके श्रीचरणों की एक कण. ☐☐☐

(रवींद्रनाथ ठाकुर की एक कथा पर आधारित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधेरे की उम्र • रणजीतकुमार साहा

उसने जनार्दन का कॉलर खींच लिया. फिर घसीटते हुए टॉयलेट के दरवाजे तक ले गया. जनार्दन ट्रॉली की तरह सरकता हुआ वहां गया. फिर वापस मुड़ने लगा.

—जनार्दन! ठाकुर ने सख्ती से काम लिया. कितनी बार समझा चुका हूं, पहाड़ों पर हिल डिसेंट्री की आम शिकायत हो जाती है. डॉक्टर से तुम्हें मसालों और हैवी ड्रिंक्स से परहेज रखने को कहा था.

—तुम तो चाय-पान-सिगरेट और शराब, हर चीज से परहेज रखते हो, फिर भी तुम्हारा पेट अकसर खराब रहता है.. क्यों... हूं...? जनार्दन को एक हिचकी आयी और वह फिर आगे बढ़ने लगा.

ठाकुर पैबंद लगाता रहा.—नहीं जनार्दन, हर बात बढ़ने पर खराब हो जाती है. मैं तुम्हारी तरह मौजों में बह नहीं सकता.

—तो फिर यहां आये ही क्यों थे...? जनार्दन ने पीछे गरदन झटक कर अपना प्रश्न लुढ़काया.

मैं शीशे में अपनी रोनी सूरत देख रहा था. दो पेग के बाद आगे बढ़ना मेरे लिए डेंजर था. फिर भी मैं हाथ में तीसरा पेग लिये जिमखाना के डाइनिंग हॉल तक चला गया था. खाने में अब भी देर थी. मि. करापेट बीवी को एक जवान छोकरे के साथ नाचने की छूट दे कर अब तमाशा देख रहे थे. ऑरकेस्ट्रा 'सिलहूट्स' की कोई धुन दुहरा रहा था.

—अरे, जो चुल्लू भर पानी में डूब नहीं सकता, वह भला इस सागर में क्या डूबेगा! जनार्दन फिर बार में घुस गया. सामने छोटा-सा लॉन पार कर हम होटल के जीने से नीचे उतर आये. बिपिन दौड़ कर पहाड़ी के छोर तक चला गया. उसने जेब से एक शीशी निकाली, फिर तलछट पी कर शीशी को नीचे लुढ़का दिया. भीतर उसे सफोकेशन महसूस हो रहा था. पूरा हॉल ठसा-ठस भरा था.

मैं समझ रहा था, शाम घिरने के बाद मेरी बातों का मजा जाता रहा है, तब सब लोग अपने-अपने में सिमट जाते हैं. जो मेरे दायें-बायें चलने को, एक-दूसरे को ठेल साथ हो लेते हैं, वे भी मेरी ओर से बोलना बंद कर देते हैं. शाम छह बजे के बाद मैं जैसे अनाथ हो जाता हूं. सुबह सब कंबल फेंक कर कहेंगे— अच्छा करते हो प्यारे, यह चुड़ैल मुंह लगी, तो सर चढ़ जायेगी और मुंह पर कालिख पोते बिना जायेगी नहीं. आज ठाकुर ने मुझे खुद पेग बढ़ाते हुए कहा था— सोसायटी की बात है....

मंडल ने सिगार सुलगा लिया था. दो कश खींचने के बाद उसने फिर जनार्दन को अपनी बात में घसीटा. —बेटा पता लगाने गया है कि मिस बोस की आंखों में ज्यादा दम-खम है या आबे-जमजम में.

मैंने पूछा— उसके पापा अहमदाबाद की किसी टेक्टाइल मिल के चीफ डिजाइनर हैं न?

—क्या पापा को यहां ला कर पटक रहे हो! देखा कैसी कटपीस है! बिपिन मेरे पीछे आ कर खड़ा हो गया.

—कटपीस नहीं मिस्त्री, मास्टरपीस कहो... पीस ऑव द वैली! साली कह रही थी, पूना फिल्म इंस्टीट्यूट जायेगी. यह मंडल का स्कूप था.

हमें फिर डाइनिंग हॉल तक वापस आना पड़ा. डिशें तैयार थीं. एक ओर कई तरह के सूप और दूसरी तरफ हॉट और सॉफ्ट ड्रिंक्स सर्व हो रहे थे. बिरियानी, चिकन, सैंडविच, पेस्ट्री, सॉस, कोरमा, चपाती, दुनिया भर की सब्जियां, सालन और अंत में चीज-पुडिंग और फ्रूट सलाद. जो निरामिष हो सकते थे, वे भी सामिष हो गये थे. और जो कुछ टेबलों पर सजा कर रखा गया था, उसे मैंने पहचाना नहीं. एक बिजनेस आर्गेनाइजेशन की जोनल मीटिंग और इतनी लंबी तैयारी, हंगामा और दिखावा...

* *

जनार्दन बार से और वजनी हो कर लौटा. बिपिन एक कोने में खिसक सिर्फ मुरगी की टांगें सूंत रहा था. मेरा पेट भी ठुंस-ठुंस कर पत्थर हो गया था. सबकी प्लेटों में हड्डियां बच गयी थीं. एक-एक कर सब खिसक भी गये. नीचे टॉवर तक आते-आते जनार्दन हाथ-पांव छितरा कर बिखरने लगा. उसके पांव एक-दूसरे से बगावत करने को उतारू थे. पता नहीं, किसने सीख दी— साले, फिर हराम की शराब पी गये... वह भी पूरा-का-पूरा पीपा! आदमी हो, या ट्रक!

आज की कॉकटेल पार्टी का पूरा खर्च जनार्दन ने दिया था. वह झुंझला उठा— साले; कंगाल... कमीने... देखी भी है तेरे बाप ने शराब! बेटे, फैंटा पीयो... कोला पीयो... बीबी का दूध पीयो...!

—या गधे का मूत...! मंडल ने मेरी तरफ ही मुड़ कर कहा.

ऐसा माहौल तैयार कर दिया गया, जैसे मैंने ही उस पर ढेला फेंका हो. मैंने तो इस बीच ठाकुर से इतना ही कहा था— दार्जिलिंग खुद एक नशा है, यहां नशे-पानी की क्या जरूरत!

—आई. . .से. . . आई पिस ऑन योर वर्जिन दार्जिलिंग! और साथ ही वह पटापट पैंट के बटन चटखाने लगा.

मैंने माफी मांग ली. मंडल और ठाकुर सिगार और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइटर में उलझे हुए थे. बिपिन बगन बेलिया की डाल के नीचे किसी अधेड़ बुढ़िया से [illegible] रहा था. वह दिल्ली से आये एक्सपोर्ट कॉरपोरेशन के अफसर की बीवी थी. खाली में ही खड़ा था. रंजना रहती, तो इतने बोझिल समय और मनहूस सफर की घड़ियां कम होतीं. यहां हर एक के पास हजार-हजार रुपये का बैंक ड्राफ्ट है, ट्रेवलर्स चेक हैं. एक मेरा बटुआ है, पूरे हाफ पौंड का, लेकिन रुपये. . . सिर्फ एक सौ तेईस ही बचे हैं. रंजना के लिए एक पुलोवर खरीद खरीदते-खरीदते रुक गया. . . यह सीजन तो बीत ही गया है. . . आगे अगले साल कोट ही दिला दूंगा.

★ ★

वापस जाने की किसी को सूझ नहीं रही थी. आज सुबह कॉनफ्रेंस भी ख़त्म हो गयी. कंपनी के लोग भी कल सुबह तक निकल जायेंगे. मेरे मन में सब को छोड़ कर नीचे भाग जाने का विचार आया. होटल 'हिल व्यू' का सस्ता कमरा जैसा भी है, मेरी इज्जत बचाने में समर्थ है.

रात की कमसिनी अंधेरे सन्नाटे में मचल-मचल कर जवान हो रही थी. दूकानों और होटलों के दरवाजे बंद थे. रोशनी मद्धम हो गयी थी. चांद तो दीखता ही नहीं था. शुक्ल पक्ष की रातें थीं. शायद नीचे ही छूट गया हो. बैरे अपने-अपने घरों को जा रहे थे. सब जनार्दन बाबू को सलाम कर रहे थे. वह बैरा, जिसको पांच रुपये की टिप जनार्दन ने दी थी, घूम कर मेरे पास आया और फुसफुसा गया— बाबू बोत मूड में हैं. . . आप देखना.

ठाकुर को भी नीचे एक ऊंची टेकरी पर बनी कोठी तक जाना था, वेस्ट पॉइंट, स्टेशन से करीब डेढ़ किलोमीटर पश्चिम. लेकिन कमोबेश सब नशे की चट्टान से दबे थे. कोई उतावली नहीं थी. मेरा पेट जम गया था. पुडिंग बहुत खा लिया था. मुझे बिछावन पर जाने के पहले हल्का भी होना था. जनार्दन फाटक के किनारे ही मूतने लगा. धार सड़क के दूसरे किनारे तक बहने लगी. उसके जूते भी भीग गये होंगे.

—मूतने दो डोल्ट को! बिपिन आश्वस्त हुआ. कुछ नशा तो झड़ेगा!

जनार्दन अपने भारी और कीमती सूट में पुलिया ढूंढ़ कर बैठ गया. रात के साढ़े दस बज चुके थे. डिनर के पहले वह मिसेज करापेट को लिये पूरा कॉट पीने की तैयारी में था. पता नहीं, वह हर एक को यह क्यों बताने लगता है कि वह बहुत पीता है, या पी सकता है. कोई मुकाबला करना चाहे, तो कर ले. इसी लत के चलते वह हजारों रुपये फूंक चुका है.

केदार बाबू ने इसीलिए मुझे उसके साथ भेजा था. एक तरफ बुला कर कहा था— बेटा, जनार्दन की जिद तो तुम जानते हो. सोचता हूं, फर्म के क्रैडिट का सवाल है. हम कंपनी के पुराने डीलर ठहरे. ऐसी पार्टी में कुछ मैनेजर आते हैं, कुछ शेयर-होल्डर्स. उन्हें खिलाना-पिलाना पड़ता ही है. हजार-बारह सौ खर्च होंगे ही. जनार्दन क्या कुछ करता है, देखते रहना. मैं कहीं जाना नहीं चाहता, ये पीना-पिलाना और नहीं होता.

मैं चुप था. अजीब मुसीबत है, बाप बेटे पर जासूस रख छोड़ता है और बेटा बाप की सेंध मारने पर उतारू. —यार, बाप ठहरा खूसट! एक रुपये का बीस सेर दूध पी चुका है. यहां सौ-डेढ़ सौ की एक बोतल आती है. फिर कंपनी वालों से फायदा भी तो है. इस बुढ़ऊ के चलते बड़ी-बड़ी कंपनियों की एजेंसी छूट गयी. चार पैसे कमाने के लिए दो पैसे फेंकने ही पड़ते हैं!

केदार बाबू ने अलग से मुझे चालीस रुपये भी दिये थे.—कुछ पसंद आये, तो खरीद लेना. वहां जाते ही पत्र देना. आने के पहले भी तार कर देना. जनार्दन को घर-गिरस्ती से क्या लेना-देना!

और जनार्दन जेब में रुपये ठूंसे भटकता रहता था. मुट्ठियों में रुपये निकाल कर काउंटर पर पटक देता था. रुपये जमीन पर गिर पड़ते थे, तो 'डैम केयर' कह कर

● छी. रामचंद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उन्हें उड़ने देता था. पीता तो अरबी ऊंट की तरह ——क्या पता, कल शराब मिले, न मिले! कौन-सी ब्रांड मिले! और देसी शराब. . .एकदम वाहियात! साली गला दबोचना भर जानती है! न नशा, न मजा! और विदेशी गैलन-की-गैलन पीने को तैयार. बक्से में भर लेगा. उसकी तो यही एक हॉबी है—— कीमती-से-कीमती शराब की बोतलें इकट्ठी करना. उनके इतिहास, भूगोल और एहमियत में भटकना. उसका यही कन्विक्शन था कि वह बाप के मरने के बाद एक खूबसूरत साइकेडेलिक 'बार' खोलेगा. पर केदार बाबू नकार गये.——दवा की दूकान खोलना हो, तो खोल लो. बाप-बेटे में बोलचाल ही बंद हो गयी थी.

★ ★

जनार्दन ने कै करना शुरू कर दिया. दूर लैंपपोस्ट की फीकी रोशनी में कुछ दीख नहीं रहा था. पास टार्च भी नहीं थी. पानी लाने भी कहां जाता? ठाकुर, बिपिन, मंडल, सब-के-सब वैसे ही ठने रहे, जैसे वह कोई नयी बात न हो. तीन नेपाली लड़के खट-खट करते हुए हमारे पास आये. फिर चेहरा सूंघ कर चले गये, ठहाके मारते हुए. उनकी खिलखिलाहट दूर, देर तक गूंजती रही. यही कहा होगा—— कुत्ते की तरह रद्द कर रहा है! मुझमें जनार्दन के पास जाने का साहस नहीं था. चारों ओर एक अजीब-सी सड़ांध पैदा हो गयी थी.

सारा दार्जिलिंग नीले और ऊदे धुंधलके में लिपटा हुआ था. देवदार और झाऊ के पेड़ों के ऊपर कहीं-कहीं बत्तियां जल रही थीं. रात गहरी घाटी और ऊंची चोटियों के शिकंजे में कैद थी. बादल उसे छुड़ाने को जैसे मिन्नतें करते हुए भटक रहे थे. मैं दिन भर 'ब्यूटी फ्लैक्स' लिये फिरता रहा. ठाकुर भी कलर्ड पेस्टल्स और फ्लोब्रश लिये भटकता रहा. मैं कोई तस्वीर नहीं ले पाया और न वह कोई लैंडस्केप खींच सका. कैमरे के व्यू फाइंडर में कोई दृश्य समाता ही न था. इतना बड़ा कैनवस और अदना-सा फ्रेम! यहां शायद मूवी कैमरे की जरूरत है. सत्यजीत रे की 'कंचनजंगा' याद आती रही.

जनार्दन अलबत्ता अपने कैनन में चार-चार कलर्ड फिल्में बरबाद कर चुका था—— कुछ तो अपनी कॉन्फ्रेंस में और बाकी विदेशी लड़कियों के पीछे. कोई दिखी नहीं कि हमसे पीछा छुड़ा कर भागता. उसे बहला कर 'माल' तक ले आता. किसी किनारे टिका कर उसका पोज क्लिक कर लेता. अपनी जेब से अपना विजिटिंग कार्ड निकाल उसे देता. दांत निपोर कर उनका पता अपनी पर्सबुक में लेता. कभी-कभी दस या सौ रुपये के नोट पर उनके हाथों पता लिखा लेता. वे थैंक्यू कहती चली जातीं और जनार्दन हमारी तरफ लका कबूतर की तरह गरदन फुला कर फुदकने लगता. फिर उनके बारे में अश्लील लतीफे, गंदे फिकरे या भद्दे मजाक सुनाता. इतने में कोई सामने या पीछे दिख गयी, तो वही पुराना पैबंद—— साली की दूधिया टांग देखी. . . सिंदूरी एड़ियां देखीं. . . साली गुलाबी लक्स की टिकिया है. . . फिसली जा रही है! क्या ठाकुर, क्रॉस ब्रीड है न!

मैं उसकी इन शरारतों को देखता, तो मुझे यह सोच कर तकलीफ होती कि जिसकी बीवी इतनी खूबसूरत है, प्यारे बच्चे हैं, वह इस तरह की सड़क-छाप आशिकी पर क्यों उतर आता है! इन छह दिनों के बीच उसने कभी भी अपने घर के बारे में कुछ नहीं कहा. एक मैं ही था, हमेशा यही सोच कर भर उठता था कि काश, रंजना भी दार्जिलिंग देख लेती! दुबारा आना तो किसी चमत्कार से ही संभव है. तब तक रंजना भी संभवतः दो बच्चों को छोड़ कर यहां नहीं आना चाहेगी.

शाम को जला पहाड़ से शाम उतरी कि जनार्दन का उमर खैयामी मन गा उठता——चलो यारो, हैव सम रिलैक्स'. कहां चलोगे?. . . 'माउंट एवरेस्ट' का बार बहुत सॉफिस्टीकेटेड है, आर्केस्ट्रा भी है. नजदीक तो वैसे सेंट्रल भी है, पर कुछ कंजस्टेड है. और वह मुझे तीखी नजरों से घूरना शुरू कर देता.

★ ★

हम सब जनार्दन को अलग छोड़ देने को प्रायः तैयार थे. बात शुरू कौन करे! एक शहर के हैं. आखिर दोस्त भी ठहरे. रुपयों का भी लेन-देन होता है. हम एक-दूसरे की कमजोरियों से भी वाकिफ हैं. ठाकुर ने मतला अर्ज किया——इरशाद, हां, तो जनार्दन, बोटैनिकल गार्डन चलोगे?. . .

——वही पेड़-पौधों का जंगल. . .!

——पास ही जू भी है. . . तुम वहीं ठहर जइओ. . .

——यही कम है कि तुम जानवरों का मदारी हूं!

——माउंटेनियरिंग स्कूल. . .

——यार, फिर वही स्कूल-कॉलेज. . .!

——घूम मठ. . .

——लगता है, तुम सब यहां लामा बन कर झुनझुना बजाओगे!

——बतसियां मोड़. . . वहां किसी फिल्म की शूटिंग हो रही है.

——अरे भाई, फिल्म देख लेंगे. नटराज स्टूडियो में न जाने कितनी बार शूटिंग देख चुका हूं. बड़ी बोरिंग चीज है. पता लगाते हैं, शूटिंग में माल-वाल कितनी है, यूनिट ठहरा कहां है. वैसे हीरोइन को तो हीरो भाई लोग विडमेयर में सुलाते हैं. और अगर कंट्रीमेड चाहिए तो नीचे उतरना पड़ेगा—— पैदल. वह मंडल को खींच कर ले गया. हम समझ गये, जोखिम के हर काम में उसे मंडल की जरूरत होती है.

ठाकुर ने अंत में मकता अर्ज किया—— हम सब सुबह मुंह-अंधेरे टाइगिर हिल जा रहे हैं. आउटिंग का मजा भी रहेगा. क्या ट्रिमेंडस सनराइज होता है. . .कंचनजंगा. . . सनराइज में. . .

——आई पिस ऑन योर सनराइज. . .! जाओ सालो. . . जाओ मुझे छोड़ कर! सूरज देखो. . .

——हां, हां, तुम घुसे रहो चांद की मांद में. . .बुढ़िया की जांघ पर बोतल रख कर पीयो. . .! ठाकुर लगभग चीख उठा. शराब से गर्मी मिलती है, तो कहीं भी मिल जायेगी. अपना शहर अभी ठंडा नहीं हुआ. दर्जनों दूकानें हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनार्दन कुछ हलका पड़ा. वह पिघला -- नीचे बस्ती का मामला है. डर तो लगता ही है. अकेला ठहरा. तुममें से कोई चलता, तो कुछ रस्टिक एक्सपीरियेंस भी होता.

मंडल निर्विकार खड़ा रहा. जनार्दन जानता है, वह मेरा साथ तो देगा ही, हजार-दो हजार की शराब तो उसे पिला ही चुका हूं. मंडल ने इतना ही कहा-- दार्जिलिंग में किस चीज की कमी है. . .! नीचे बस्ती में क्या पड़ा है! दलाल यूं ही बकते हैं. वैसे नेपाली खुखरी अंतड़ी में उतरवाने का शौक हो, तो चलो, नीचे चलता हूं. . . लाश को ऊपर तक ढो कर लाने वाला एक साथी भी तो चाहिए!

जनार्दन मुसकराया. यह उसका आखिरी हथियार है.—खाक मिलता है यहां! देखो, अभी ओबेराय चलते हैं. . . हूं. . . . वहां से दलाल को लेंगे. . . फिर रिंक के पास वापस आयेंगे. या माल वहीं मंगवा लेते हैं. . . क्यों? . . . तो फिर, वी विल सेलिब्रेट अवर नाइट विद न्यू हिली फेसेज ऐंड फ्यू फैंटास्टिक बॉटल्स. यहां से परसों सुबह जीप लिये निकल जायेंगे. सुखिया ब्रिज पार कर नेपाल. . . वहां विराट नगर में कुछ शॉपिंग करेंगे, फिर वापस गलगलिया, फिर अपनी कार के लिए सिलीगुड़ी.

—विराट नगर का तो कोई प्रोग्राम नहीं था! मैंने जेब में हाथ डालते हुए कहा था.

—तुमको बीच में कहने के लिए किसी ने कहा भी? जनार्दन मुझ पर जैसे टूट पड़ा. लेकिन मेरे पहले बिपिन मिल गया.—यू नो, बिपिन, वह है तो छोटी-सी जगह, पर वहां कांकर्ड भी मिल सकता है. लेकिन मुझे कुछ बिस्किट्स चाहिए. . . आखिर इतना फूंक रहा हूं, कुछ तो राहत मिलेगी. फिर वह मुझसे निबटने लगा--और, तुम्हें क्या खरीदना था?

—यही एक फ्लैश गन और सस्ते में मिल जाये तो एक वाइड लैंस. . .मैंने कहा.

मंडल ने मुझे केहुनी मारी.--मुझे भी अपनी फियांसी के लिए व्योर टेरीन की दो जापानी साड़ियां लेनी हैं. लेकिन बहुत सारा पैसा ब्लू फिल्म स्लाइडों और पोर्नो प्लेजर बुक्स में चला गया.

जनार्दन मजबूत होता जा रहा था. तगड़ी आवाज में बोला-- यार, पैसे कमाना हो, तो निकल चलो. ठाकुर, तुम्हें भी तो रोलेक्स के अंटे चाहिए न. . . ?

बिपिन ने बीच में ही टोका-- आहिस्ता बको. . . . बहुत-से एजेंट. . .

—आई पिस ऑन योर एजेंसी! साले, दार्जिलिंग आये हो घड़ी-घंटा बजाने? कीर्तन करने? कमरे में ही घुसे रहते! हैव सम एडवेंचर्स!

ठाकुर थक चुका था. जनार्दन उसके कंधे पर प्यार से झुक गया.--क्या गुरू, एकदम ठंडे हो गये हो! घर-वाली याद आ गयी क्या? . . . लोडेड है न! चलो, तुम्हें एक गीशा दिखाऊं. साली शीशा है, शीशा, पारा चढ़ी! यूं उफनती है जैसे सोडा के साथ ब्रांडी. . . .! अपने होटल में ही बुला लेते हैं. . .

. . .मैंने रेलिंग पर झुक कर दूसरी तरफ ढेर-सा थूक दिया. बिरियानी के दाने पेट से उछल कर गले में चुभने लगे. आंखों में धुआं घुटने लगा. ठंड की गिरफ्त बढ़ती जा रही थी. सारी वादी गूंगी-बहरी पड़ी थी. सोचा था, पांचों जने मिल कर दार्जिलिंग जा रहे हैं. जनार्दन अपनी कॉन्फ्रेंस अटेंड करेगा. ठाकुर अपने भतीजे के दाखिले के लिए सेंट् पाल में कोशिश करेगा. मंडल अपने पूरे खानदान के लिए टोकरी भर ऊन खरीदेगा. बिपिन ठाकुर की फियेट ड्राइव कर कम-से-कम सिलीगुड़ी तक पहुंचा देगा. मैं जनार्दन की कुछ फाइलें देखूंगा और ढेर सारी बोतलों का हिसाब रखूंगा. कुछ और काम थे. उसका रिजर्वेशन, फर्म की रिपोर्ट, कुछ दूसरी स्कीमें, रजिस्ट्री और तार वगैरा. कॉकटेल पार्टी भी हो गयी. अब आखिरी काम यही था कि यहां से लोग शरीफों की तरह निकल जायें.

जनार्दन, घर में जरा-सी चूं-चां हुई, अपना ब्रीफ केस और चेकबुक उठाता है और एक पखवाड़े बाद ही वापस आता है. कुछ बिजनेस भी कर आता है और थोड़ी शॉपिंग भी. पंद्रह-बीस हजार रुपये इस तरह आसानी से फुंक जाते हैं.

बिपिन बहुमत का आदमी है. उसकी अपनी कोई राय नहीं. कोई भी कार हो, कैसी भी धांसू जीप हो-- किसी कंपनी या मॉडेल की, वह उसमें दो-चार बूंद पेट्रोल डाल फूंक मारेगा और हांक कर ले जायेगा. वह हमारे साथ सिर्फ एक छोटी-सी शर्त के चलते आया था-- गाड़ी में जितने का पेट्रोल जलेगा, उतने की ही फॉरेन लिकर मेरी अंतड़ी में भी ढलेगी. ठाकुर ने भी यही सोचा कि बारह सौ किलोमीटर की रनिंग में कार कहीं बेकार हुई, तो बिपिन उस्ताद ही रास आयेंगे. हम आये भी थे बड़े आराम से. बिपिन रात-रात भर ड्राइव करता रहा था.

* *

हम राजगीर तो पहुंच गये थे, पर आने की कोई गारंटी नहीं थी. जनार्दन बार-बार पांव पटक रहा था-- साली शराब भी खत्म हो गयी! हाथ में ह्विस्की की शीशी लिये वह तमतमाया-- क्या गैराज चलाते हो यार, न तुमसे बीवी चलती है, न कार! बिपिन ने मुसकरा भर दिया. शीशी पैंट की जेब में रखे वह मेरे पास आया-- चलते हो रोप वे तक? मैं डरते हुए साथ हो गया था. वहां दो बार, तीन बार और चौथी बार जब ट्रॉली पर चढ़ते हुए उसे अधिकारियों ने रोका, तो वह तन गया. मैं आगे की कुर्सी पर बैठ आगे निकल चुका था. बाप रे, ऊपर आसमान और नीचे पाताल! मैंने तो जीवन बीमा भी नहीं कराया था. एक जनार्दन था. सामने ही सूचना टंगी थी. 'शराब पी कर रोप वे पर जाना मना है.' लेकिन जनार्दन इसे क्यों मानने लगा! अधिकारी ने रोका, तो वह भुन गया. झटके से हाथ छुड़ा कर वह ट्रॉली पर सवार होने लगा. जेनेरेटर ऑफ कर दिया गया. जबरदस्ती उतारे जाने पर वह झल्ला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठा और चीखने लगा.

मैं किसी तरह उसके पास साहस करके आया और समझाने लगा तो वह और चिल्लाने लगा--साला वह दो रुपल्ली का पंचर अफसर. . . अपने को चंगेज खां समझे बैठा है. . साले का ट्रांसफर न करवा दिया तो थूक के चाट लूंगा! अरे सालो, पीना मना है, तो दूकानें खोलने को परमिट क्यों देते हो! . . .ऐं. . .? और उसने शीशी को पक्के प्लेटफॉर्म पर पटक दिया.

बिपिन तब तक गाड़ी ठीक करता हुआ वहां तक आ पहुंचा था. डॉरमेटरी में ला कर हमने उसको खाट पर पटक दिया. सर पर जबरदस्ती पानी डाला. नींबू मंगवा कर चटाया. यूरिनल तक उसके साथ गये. शाम उतरने के बाद जनार्दन काबू में आया. उसे नींद के हवाले कर हम बर्मी, जापानी और विष्णु मंदिर देखने जा सके.

★ ★

अपने शहर 'शाम रॉक' में भी जनार्दन एक रात इसी तरह पसर गया था. उस रात मैं उसके घर पर ही दो नंबर के रजिस्टर पर खर्च का हिसाब लिख रहा था. केदार बाबू गाइडलाइन बता भर देते थे. जिद करके उन्होंने खाना खाने के लिए रसोईघर भेज दिया. थाली लिये जनार्दन की बीवी ही बैठी थी. मुझसे बहुत कतराती थी, फिर भी उस समय सामने बैठी रही. रो-रो कर बताती रही-- आप तो उनके साथ इतने साल रहे हैं, साथ पढ़े हैं, आप ही उन्हें समझाइए! रोज रात बाहर ही खा-पी आते हैं. मैं आसरे में बैठी रहती हूं. अब बच्चे बड़े हो रहे ह. . . जिस दिन थोड़ा भी होश रहा. . . आते ही साड़ी खींचने लगते हैं. . . मैं तो. . .

केदार बाबू बीच में ही आ टपके थे. अच्छा ही हुआ. क्या होगा दूसरों का दुख सुन कर! मैं किसे अपनी गाथा सुनाऊं? बच्चे के लिए दूध तक नहीं जुटा पाता. केदार बाबू न बड़ा प्यार दिखाया.--अरे, तुम्हारी यही खुराक है. . . ! हम लोग अपनी जवानी में. . . .

रात को 'शाम रॉक' से वहां के मैनेजर का फोन आया-- जनार्दन बाबू 'आउट' हैं. . . दूकान बंद करने का समय हो गया है. . . .कृपया इन्हें ले जाइए.

हम 'शाम रॉक' आये. जनार्दन कुर्सी के सहारे अड़-अकड़ गया था. रात का एक बज चुका था. उसके होंठ रह-रह कर फड़कते थे और हाथ हिलते थे. टाई और तस्मे की गांठ मैंने ढीली की. हमने किसी तरह उसे कैबिन से बाहर निकाला. केदार बाबू बहुत घबड़ा गये थे. उसकी उपस्थिति भांप कर जनार्दन और लिथड़ गया. केदार बाबू ने सर पर हाथ रख कर पुचकारा--जना . . र. . . दन. . .

--आई से गेट आउट. . . लीव मी एलोन. . . लगा दो बाहर से ताला. . . मैं आज पी-पी कर . . . यहीं शहीद हो जाऊंगा. . . साला. . . लगा. . . ताला. . . . राम चलित्तर. . .

खैर, केदार बाबू उसे अपनी कार में किसी तरह लिटा-लिपटा कर घर लिवा लाये थे. फिर पत्नी ने आगे का काम संभाल लिया था. आते समय पोर्च के पास मैंने केदार बाबू से कहा-- देखिए बाबूजी, कैश जब तक जनार्दन के हाथ में रहेगा, तब तक उसे रोक पाना बहुत मुश्किल है. मैं यह दोहरी भूमिका नहीं निवाह सकता. आप मेरे शुभचिंतक हैं, आपकी सेवा में पिताजी ने सौंपा था, पर मैं रह नहीं पाऊंगा. उधर जनार्दन मेरे बचपन का साथी रहा है. . .

केदार बाबू ने मुझे संभाल लिया-- मैं चाहता हूं, तुम शिलांग चले जाओ. . . हमारे चाय बागान के हेड ऑफिस में. वहां कुछ लेबर प्रॉब्लम भी है. जी लगे, तो वहीं रह जाना.

--मैं अपनी पत्नी और बच्चे को कहां रखूंगा? मैंने छूटते ही कहा था. केदार बाबू चुप हो रहे थे.

दूसरे दिन हम फिर खाता लिये बैठे. लगभग सत्तर हजार रुपयों का गोलमाल निकला. 'शाम रॉक' से फोन पर पूछ कर पता लगाया, तो मालूम हुआ, जुलाई के तेईस दिनों में आठ सौ अड़सठ रुपये चौंतीस पैसे का बिल जनार्दन के नाम बकाया है. केदार बाबू ने इतना ही कहा-- घर का दूध नौकरों में बंटता है, बीवी दवाई पर चल रही है और बेटा जहर पी रहा है!

★ ★

हंगामा दूसरे दिन शाम को हुआ. केदार बाबू ने हिसाब मांगा. जनार्दन पहले से ही 'शो कॉज' तैयार किये था.-- कैश पर सब की नजर है. भैया इसीलिए फर्म छोड़ कर भाग गये. पांच-पांच बेटियां पैदा वे करें और मैं कैश-काउंटर, गोदाम, वर्कशाप और बैंक, हर तरफ दौड़ता रहूं! चार-छह सौ की पीता हूं, तो सबको खलती है! कितना कुछ किया है, यह कोई नहीं देखता! यही देखते हैं कि कितने का पिया है. . .! दिन भर बाजार में सड़ता रहता हूं. . . . उसके मुंह से झाग निकलने लगे.

केदार बाबू ने यह कह कर मामला साफ किया-- हम भी यही चाहते हैं कि तुम नहीं सड़ो! जाओ, शराब के ड्रम में डूब जाओ. . .! और उससे चाबी का गुच्छा झपट लिया.

★ ★

ठाकुर ने उंगलियों से आंखों को मसल दिया, रूमाल निकाल कर आंखों की खुमारी को पोंछ फेंका. फिर बड़ी बेहूदगी से मुसकराया.-- चल बेटे, हिम्मत कर. . . तुम्हें उठाने के लिए या तो फिर जूता सुंघाना होगा या दारू से नहलाना होगा!

--साला बिना क्रेन के नहीं उठने वाला! मंडल का मशविरा था.

--उठता है कि यहीं से नीचे लुढ़का दूं. . . सीधे सिलीगुड़ी पहुंच जाओगे! ठाकुर ने तेवर बदला.

--मैं जानता था, यह साला बखेड़ा करने वाला आदमी है. आज ही नया सूट डाले आया था. क्या दुर्गत कर डाली है इसने. . .! न. . .अब तो बरदाश्त के बाहर हो गया! बिपिन ने सर झटक दिया.

मंडल जनार्दन के पीछे, पुलिया पर खड़ा हो गया.-- नाचो प्यारे. . . नंगा नाच नाचो. . .! मैं कुछ लड़कियां. . . न. . . न. . . लकड़ियां इकट्ठी करता हूं. . . आज यहीं कैंप फायर हो जाये. . .!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनार्दन फिर सुगबुगाया. उसने अपना थोथना उठा कर मेरी तरफ बढ़ाना शुरू कर दिया. शराब, कै, पसीने और सेंट की मिली-जुली बदबू मेरे लिए असह्य थी. मैं जैसे टंग गया. वह आगे बढ़ा. फिर रुक गया.

क्लास का बैकबेंचर, जो थोड़े में ही झेंप जाता था, कैसे-कैसे एडवेंचर कर रहा था! प्राइवेट ट्यूटरों की पढ़ाई, सजेशंस, गेसेज और पैरवी की बदौलत वह खींच-तान कर बी. कॉम कर गया. मामा के लड़के के साथ फिर सी. ए. करने कलकत्ता चला गया. शादी हो चुकी थी. बच्चे तो होते रहे, पर कोर्स पूरा न हो सका. कलकत्ते में ही सारी गंदी आदतें और गलीज हरकतें सीखता रहा. हां, अंग्रेजी और बंगला का थोड़ा ज्ञान हो गया. फुटपाथ लिट-रेचर ने हौसला बढ़ा दिया और चौरंगी पर फुदकती एयर होस्टेसों ने विदेशी सेक्स-मैनरिज्म का पाठ सिखा दिया.

केदार बाबू मुझसे बहुत खुश थे, क्योंकि उन्हें मुझसे जनार्दन के एंगेजमेंट्स की सूचना मिलती रहती थी.

इधर जनार्दन थ्री एसेज, ब्लू बर्ड, नाइटिंगेल, अंबर या सागर में लंगर डालता और मैं केदार बाबू को उसका कैबिन नंबर तक बता आता था. मैथन, मयूराक्षी, चंदन, हनुमान या सुंदर डैम के गेस्टहाउसों और इंस्पेक्शन बंगलों में वह सोसाइटी और कॉल-गर्लों की कमर में बांहें गूंथता और मैं केदार बाबू को सारी डिटेल्स बता आता. अनुपमा बनर्जी को तो उसने बहुत कीमती उपहार दिये थे. 'एशिया '७२' में उसे लिये दिल्ली के अशोका और जन-पथ में हफ्तों पड़ा रहा. सारी सामग्री जुटाने में मुझे जना-र्दन का भी विश्वासपात्र बनना पड़ा था, हालांकि वह मुझे हमेशा मुलाजिम या अटेंडेंट की कैटेगरी में ही रखता.

* *

—चलिए, जनार्दन बाबू. . .! मैंने बड़े आग्रह से उसे उठाने की कोशिश की. घर पर किसी को इन सारी बातों का पता . . . चल. . .

—तो क्या होगा. . . ? साले. . .हरामखोर. . . ! मैं जानता हूं, तुम्हें किस बात की जल्दी पड़ी है. . .! मेरे बाप को सारी रिपोर्ट ही देनी है न. . . ? तो जाओ. . . गाड़ी पकड़ो. . . अभी. . . इसी वक्त. . . !

सब अवाक् थे. मेरा तो खाना तक हजम हो गया. दूसरों का नशा झड़ गया.

—और कहना, मैंने यहां ढाई हजार रुपये उड़ाये हैं . . . अभी और उड़ाऊंगा. . . कह देना, मैं कल शेफाली बोस के साथ. . . कलिम्पोंग जा रहा हूं. . . वहां से गंगटोक जाऊंगा. . . ! फिर उसने जल्दी-जल्दी अपनी तीन-चार जेबों को टटोला और अपना भारी पर्स मेरी तरफ फेंका —तुम्हारे होटल के सामने ही स्टेशन है. . . टिकट कटा लेना. . . !

□□□

हिंदी भवन, विश्वभारती,
शांतिनिकेतन (प. बं.)

दो लघुकथाएं

सर्वोत्तम जल

एक बहुत बड़े संत महात्मा थे. उनके कई शिष्य एवं अनुयायी थे. एक बार महात्मा ने शिष्यों से पूछा—सबसे उत्तम जल कौन-सा है?

पहले शिष्य ने जवाब दिया—गंगा जल.

महात्मा उत्तर से संतुष्ट नहीं हुए.

दूसरे ने जवाब दिया—भूमि पर गिरने से पहले का वर्षा जल.

तीसरे ने जवाब दिया—प्रभात में तरुपत्र पर चमकने वाला ओस जल.

चौथे ने कहा–बिछड़े हुए पुत्र से मिलने पर माता की आखों से निकलने वाला अश्रुजल.

पांचवें ने कहा—आजीवन धोखाधड़ी करके संचित धन को देख कर मरणासन्न धनी के नेत्रों से निकलने वाला अनुताप जल.

छठवें ने कहा—सारा दिन परिश्रम करके आश्रित प्रियजनों के लिए आहार संग्रह करने वाले मजदूर का श्रम जल.

महात्मा छठवें शिष्य के दिये उत्तर से संतुष्ट हुए. उन्होंने कहा—किसी भी वस्तु या कार्य का सौंदर्य परहित में उपयोग होने से निखरता है. स्वयं के स्वार्थ वश किये जाने वाले श्रम जल का उतना महत्व नहीं है. परहित के कार्य से उत्पन्न श्रम जल में यही वास्तविक सौंदर्य झलकता है.

श्रम जल ही सर्वोत्तम है. □

(प्रस्तुतीकरण : सुरेश मलमकर)

मूंछ

● मनोज सोनकर

अपने कॉलेज में वह बहुत ही दबंग प्रोफेसर माने जाते हैं. उन्हें देख कर विद्यार्थियों को सांप सूंघ जाता है; यह उनका दस साल का अनुभव है.

इस साल जब वह प्रथम वर्ष कला की क्लास में गये, तब एक मरियल विद्यार्थी उठ कर खड़ा ही नहीं हुआ. पारा चढ़ गया.

—क्यों नहीं खड़े हुए? मूंछ पर ताव देते हुए कड़कती आवाज में उन्होंने पूछा.

—यह सिस्टम गलत है! उसने कमीज का आखिरी बटन खोलते हुए जवाब दिया.

घर आ कर उन्होंने आईना देखा.

—सोचता हूं मूंछ साफ कर दूं, पत्नी से उन्होंने गंभीर हो कर कहा.

—मैंने तो बहुत पहले ही कहा था! पत्नी मुसकरा कर बोली. □□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सिंधी लोक-कथा

राजा का मूल्य

● नारायण 'भारती'

सबेरा होते ही एक राजा ने अपने मंत्री को अपने पास बुलवाया, और पूछा--मंत्रीजी बताइए, मेरा मूल्य कितना है? मंत्री राजा के प्रश्न को सुनकर आश्चर्य में पड़ गया.

दिल की बात दिल में ही छिपाकर, बाहर से उसने कहा --मुझे एक सप्ताह का समय दीजिए.

--आपको आठ दिन की मोहलत दी जाती है. यदि आठवें दिन भी सवाल का ठीक-ठीक जवाब न मिला तो सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा.

मंत्री कितने ही बुजुर्गों से मिला, बुद्धिमानों से मिला परंतु किसी ने भी उसे ऐसा उत्तर नहीं बताया जो उसके दिल को कुछ सहारा देता.

उस नगर में एक लड़का रहता था. वह उबले हुए चने, मूंग और मटर बेच कर अपना तथा अपनी बूढ़ी मां का भरण-पोषण किया करता था. एक आदमी से उसने पूछ ही तो लिया,--भाई, क्या बात है,जो सब उलझे-उलझे हुए लग रहे हो?

उस आदमी ने जरा खफा होकर कहा--अरे कोहरी, तू क्यों इन बातों में टांग अड़ा रहा है? अगर नहीं मानता तो बता, राजा का मूल्य कितना है?

--बस, इतनी-सी बात! लड़का हंसते हुए बोला.

--तब क्या तू इस सवाल का जवाब दे सकेगा कि राजा का मूल्य कितना है?

--क्यों नहीं.

वह आदमी जो लड़के से मिला था, मंत्री के पास आया और उसे बतलाया कि एक लड़का है जो उसके सवाल का जवाब बड़ी आसानी से दे सकेगा. मंत्री बहुत प्रसन्न हुआ और उसने लड़के को तत्काल बुलवाने के लिए आदमी भेजा.

लड़का डोली में बैठकर राजा के पास आया. राजा ने लड़के से पूछा--बता, मेरा मूल्य कितना?

लड़का मुसकराकर बोला--राजन्, धीरज धरिए, मैं आपके प्रश्न का उत्तर अभी दिये देता हूं.

अब लड़के ने एक तराजू मंगवाई, उसने तराजू को ऊपर किया. दोनों पलड़े बराबर थे.

--राजन्, इन दोनों पलड़ों में से कोई नीचे झुका हुआ है क्या?

--नहीं, दोनों पलड़े बराबर हैं.

लड़के ने फिर एक पलड़े में सेर का वजन डाला. वह पलड़ा नीचे झुक गया और दूसरा खाली पलड़ा ऊपर उठ गया. लड़के ने फिर खाली पलड़े में भी सेर का वजन डाला. अब फिर दोनों पलड़े बराबर-बराबर हो गए.

--राजन, दोनों पलड़ों में से किस में ज्यादा वजन है? लड़के ने राजा से पूछा.

--दोनों पलड़े बराबर हैं क्योंकि दोनों में बराबर-बराबर वजन है, राजा ने उत्तर दिया.

लड़के ने फिर एक पलड़े में रत्ती-भर दाना डाला--अब बताइए किस में अधिक वजन है?

रत्ती-भर वजन पड़ने के कारण तराजू का दांया पलड़ा भारी होकर नीचे झुक गया था.

राजा ने उत्तर दिया--दायां पलड़ा भारी है.

--भला क्यों? लड़के ने पूछा.

--एक रत्ती-भर वजन पड़ने के कारण.

--हे राजन्, केवल एक रत्ती-भर वजन पड़ने के कारण तराजू का पलड़ा भारी हो गया है. वैसे दोनों पलड़े बराबर-बराबर हैं. इसी प्रकार सब मनुष्य एक हैं, समान हैं. जिस प्रकार हर पलड़े में सेर का वजन है, उसी प्रकार हर मनुष्य में प्राण हैं. जिस प्रकार एक पलड़ा केवल एक रत्ती-भर वजन के कारण भारी हो गया, उसी प्रकार आप भी भाग्य-रूपी एक रत्ती-भर वजन के कारण हम सब पर भारी हैं. वैसे आपका मूल्य एक रत्ती है, लड़के ने कहा.

लड़के का यह उत्तर सुन कर राजा बहुत प्रसन्न हुआ. लड़के को पांच सौ मोहरें इनाम दे कर उसे अपने पास मंत्री बनाकर रख लिया. □□□

(अनुवाद : आजिज बोरी)

● विनोद ...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गणिका-जीवन कुछ अपरिचित आयाम !

सारिका ने अपने नवंबर, '७३ तथा जनवरी, '७४ के अंकों में 'विश्व के प्राचीनतम व्यवसाय', वेश्यावृत्ति, के करीब चार हजार बरसों के इतिहास को कहानियों के माध्यम से रेखांकित किया था. विश्व का शायद ही कोई ऐसा साहित्यकार होगा, जिसने गणिका को अपनी किसी रचना का विषय न बनाया हो. नित्य नयी रचनाओं के माध्यम से उनके जीवन का कोई न कोई अपरिचित आयाम उजागर होता रहता है.

नवंबर, ७५ अंक में गणिका-जीवन के अपरिचित आयामों को उदघाटित करने वाली कहानियों और लघुकथाओं का विशिष्ट खंड रहेगा !

साथ ही —
कुछ प्रख्यात भारतीय लेखकों की कहानियां और स्थायी स्तंभ भी !

दिसंबर १९७५ अंक में 'गर्दिश के दिन' स्तंभ के अंतर्गत आप पढ़ेंगे — राजेंद्र यादव की आत्मरचना.

सारिका

नवंबर १९७५

कहानियों और कथा-जगत की संपूर्ण पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंतहा

• कृष्ण बलदेव वैद

अगर इतने दर्दों के बावजूद अनवरत कराहों के बावजूद तमाम अनिश्चितताओं के बावजूद इस कोहान के बावजूद इधर उधर उड़ सकता हूं बेकार-कह सकता हूं मांस और मिट्टी की महक में जिस्म के जलाल में मस्त हो सकता हूं उस आम आंसुओं की दुनिया पर तिलमिला सकता हूं उसके लिए तड़प सकता हूं आसपास के अदृश्य के बारे में अंदाजे लगा सकता हूं उन अनुपस्थित ताकतों को अस्तित्व दे सकता हूं अगर मैं इस अजीब अजाब के बावजूद मिटा नहीं इसी अजाब के जरिये मायूसी और मस्ती ऊब और आनंद के अंतर को मिटाने पर तुला हुआ हूं अगर मैं वाकई किसी और के साथ या साये का मोहताज नहीं रहा अगर ये दर्द दरअसल किसी आम अभाव या भय के दिये हुए नहीं अगर इनसे निजात नहीं अगर मेरा अस्तित्व और एहसास इन्हीं पर निर्भर करता है और इनसे मेरा कोई काम या कष्ट कम या आसान नहीं होता अगर मैं इस अंत पर खड़ा हो कर भी कराहने और सोचने के सिवा कुछ नहीं कर सकता अगर मैं अब भी यहां भी इस नामालूम आलम में भी उस आम आंसुओं की दुनिया के दुखियारों की तरह अकुलाने कुर-लाने पर मजबूर हूं या किया जा सकता हूं तो क्यों न मैं वापस वहीं उस दुनिया के आम लेकिन इतने ही अटल दर्दों के दरम्यान लौट उस दुनिया के दूसरे वाशिंदों की तरह अपने भूले बिखरे साथियों की तरह तिलमिलाऊं तड़पूं शिकायत करूं दवाएं खाऊं दुआएं मांगूं तो वहां से विरक्ति क्यों तो क्यों न ये दर्द भी वहीं ले जा सहूं वहीं किसी आबाद बहते चौराहे पर खड़ा हो चीखूं अगर मुझे अंधेरा ही अजीज है तो वहां के अंधेरे में आखिर क्या कमी है तो मैं क्यों इसी वक्त अपने पांव अपनी आंखें उखाड़ नहीं लेता अपनी कमर सीधी नहीं कर लेता हो सकता है कोहान यहीं गिर जाये साफ सवाल है कि इस सूने मकान से मुझे कौन सी कमजोरी या ताकत या जिद् बांधे हुए है कि अगर ये दर्द लादवा हैं कि अगर मुझे दवा का इंतजार नहीं कि अगर मैं पूरी तरह से नाउम्मीद हो चुका हूं और मेरे अजाब में कोई कमी बेशी नहीं हो सकती या किसी कमीबेशी से मुझ पर या मेरी चेतना पर कोई असर नहीं पड़ सकता तो मैं इस अकारथ आहोजारी से आजाद क्यों नहीं हो जाता कर दिया जाता.

अगर जिस्म न होता तो यह जंजाल न होता तो कोई जंजाल न होता मालूम न होता मुझे मालूम न होता महसूस न होता मुझे महसूस न होता अगर जिस्म न होता तो मैं न होता क्योंकि जिस्म ही चेतना की जड़ है अगर चेतना न होती तो यह अजाब न होता महसूस न होता. मैं इस अजाब से तंग आ गया हूं. मैं इस अजाब की नुमाइश से तंग आ गया हूं. मैं इस अजाब के नाम की तलाश से तंग आ गया हूं. मैं तलाश से तंग आ गया हूं. मैं तंग आ गया हूं. अगर मैं इस आजाब से इसकी नुमाइश से इसके नाम की तलाश से तलाश से तंग आ चुका होता अगर मैं तंग आ चुका होता तो मैंने करा-हना बंद कर दिया होता तो मैंने अपनी कराहों की लय की परवाह छोड़ दी होती तो मैंने परवाह छोड़ दी होती. मैं इस अगर से तंग आ गया हूं. अगर मैं इस अजाब से इनकार कर दूं अगर मैं इस अजाब से इनकार करना छोड़ दूं अगर मैं इसके कारणों की तलाश छोड़ दूं तो क्या यह दूर हो जायेगा कम हो जायेगा? मैं इस सवाल से तंग आ गया हूं मैं हर सवाल से तंग आ गया हूं मैं हर जवाब से तंग आ गया हूं मैं तंग आ गया हूं. अगर कोहान न होता तो इसका एहसास न होता अगर एहसास न होता तो यह कोहान न होता न होने के बराबर होता न होने से बेहतर होता न होता अगर अजाब न होता तो इसका एहसास न होता अगर एहसास न होता तो यह अजाब न होता न होने के बरा-बर होता न होने से बेहतर होता न होता. मैं इस अगर से तंग आ गया हूं इस कोहान से तंग आ गया हूं इस कोहान के कारणों से तंग आ गया हूं उन कारणों की तलाश से तंग आ गया हूं तलाश से तंग आ गया हूं कारणों से तंग आ गया हूं मैं तंग आ गया हूं. अगर मेरे तंग आ जाने से मुझे इस अजाब से निजात मिल सकती अगर इस अजाब से निजात मिल सकती अगर निजात मिल सकती तो मिल सकती तो मिल चुकी होती. मैं निजात की ख्वाहिश से तंग आ गया हूं ख्वाहिश से तंग आ गया हूं निजात से तंग आ गया हूं मैं तंग आ गया हूं. अगर मेरे इस अजाब के अलावा मेरे लिए कोई और हकीकत है तो वह नजर क्यों नहीं आती जाहिर क्यों नहीं होती. मैं हकीकत की तलाश से तंग आ गया हूं मैं इस आलम से तंग आ गया हूं से भी तंग आ गया हूं मैं सब कुछ से तंग आ गया हूं सब कुछ नहीं से तंग आ गया हूं मैं अपने अस्तित्व से तंग आ गया हूं उसकी संभावना से तंग आ गया हूं औरों से तंग आ गया हूं औरों की संभावना से तंग आ गया हूं मैं तंग आ गया हूं. अगर मेरे तंग आ जाने से मेरा अजाब और ज्यादा हो गया मैं इस अगर से तंग आ गया हूं मैं तंग आ गया हूं मैं इतना तंग आ गया हूं कि मुझसे और नहीं कहा जा सकता मैं अपनी आवाज से अपनी सोच की सांय सांय से तंग आ गया हूं मैं तंग आ गया हूं.

अधैर्य के दौरे पहले से ज्यादा और जोरदार हुए जा रहे हैं और हर दौरे के बाद जब वापस अपने विरक्ति-स्थल में लौटता हूं तो पहले से ज्यादा लड़खड़ाता हुआ. शायद यह अंत की ही अलामत हो अगर वह आ नहीं चुका तो अगर वह आ कर जा नहीं चुका तो. अगर अंत आ रहा है तो अधैर्य क्यों तो अधरंग क्यों नहीं? अगर अंत आ रहा है तो सब हरकतें बंद हो जानी चाहिए बंद होती महसूस होनी चाहिए. अंत से फौरन पहले का सन्नाटा अभी नहीं सनसनाया. मेरी यह तन:स्थिति अंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए अनुचित है लेकिन अब मुद्राएं बनाने या बदलने की मोहलत नहीं. अब एक आखिरी आलाप शुरू कर देना चाहिए. वह खत्म बेशक न हो सके उसे खत्म कोई और करता फिरेगा अगर करना चाहेगा तो अगर होगा तो. तो मैं अंत के लिए प्रस्तुत हो रहा हूं अंतिम आलाप के लिए उठ रहा हूं. इस अंतिम आलाप के बाद उठ जाऊंगा अगर फिर कहीं गुम न हो गया तो. अंत से पहले का आलाप बहते पानी की तरह पाक उड़ते परिंदे की तरह तरल उगते पौदे की तरह उग्र होना चाहिए आखिरी आलाप अलिफ की तरह सीधा होना चाहिए और नाबालिग हसीन सीने की तरह साफ ताकि अंत से उधर के आलम में अगर ऐसा कोई आलम है तो यह तसल्ली रहे कि मेरी आखिरी आवाज बेरोब थी कि मेरा अंत एक बेरोब आवाज पर हुआ था करीब-करीब बेरोब आवाज पर. तो क्या मैंने मान लिया है कि अब अंत आ रहा है? यह एक और अलामत है कि मैं अब इस आलम से उठ रहा हूं वरना यह हां इतनी बेहिचक न होती क्योंकि अब तक की मेरी कोई हां बेहिचक नहीं थी लेकिन इससे पहले मैंने हां की ही कहां थी होने ही कहां दी थी! अभी तक तो मैं न के नग्मे गाता रहा या शायद की शहनाई बजाता रहा. अभी तक मैं हां के काबिल ही कहां हुआ था! तो क्या मैंने मान लिया है कि अब मैं हां के काबिल हो गया हूं? हां. इस हां की हुंकार ठीक नहीं लेकिन इसे ठीक करने का समय या सब्र नहीं क्योंकि बाकी बचा सारा समय सारी लय आखिरी आलाप की. आखिरी आलाप से पहले कुछ पल खामोश रहूंगा खाली होने की सामने के सब कुछ नहीं को भी मिटाने की कोशिश करूंगा.

मैं एक इंतहा पर आ पहुंचा हूं. मैं अब एक इंतहा पर आ पहुंचा हूं. मैं इंतहा पर आ पहुंचा हूं. मैं आ पहुंचा हूं. मैं आखिर उस इंतहा पर आ पहुंचा हूं जहां से पीछे का सब कुछ और सब कुछ नहीं आगे का सब कुछ और सब कुछ नहीं पराया नजर आता है इतना पराया नजर आता है कि महसूस हो मिथ्या है. मैं आखिरी उस इंतहा पर आ पहुंचा हूं जहां से पीछे और आगे का सब कुछ और सब कुछ नहीं इतना पराया महसूस होता है कि नजर आये मिथ्या है. मैं आखिर उस इंतहा पर आ पहुंचा हूं जहां कुछ महसूस नहीं होता जहां कुछ नजर नहीं आता जहां जो महसूस होता है न होने के बराबर जहां जो नजर आता है न होने के बराबर जहां जो महसूस होता है नजर नहीं आता जहां जो नजर आता है महसूस नहीं होता. मैं एक इंतहा पर आ पहुंचा हूं. मैं आखिर उस इंतहा पर आ पहुंचा हूं जहां से सिर्फ अंत का इंतजार जरूरी नहीं रहता कोई इंतजार जरूरी नहीं रहता इंतजार नहीं रहता कुछ जरूरी नहीं रहता कुछ नहीं रहता जहां पहुंच जाने पर जो पहले जरूरी हुआ करता था जहर नजर आता है जहां पहुंच जाने पर कुछ नजर नहीं आता. मैं अब उस इंतहा पर आ पहुंचा हूं जिसके बाद कोई इंतहा नजर नहीं आती जिस के बाद की इंतहा नजर नहीं आती जिसके बाद कुछ नजर नहीं आता कुछ महसूस नहीं होता कुछ जरूरी नहीं रहता कुछ गैरजरूरी नहीं रहता. मैं अब उस आखिरी इंतहा पर आ पहुंचा हूं जो आखिरी हो या न हो आखिरी नजर आती है जो नजर नहीं आती जो महसूस होती है जो महसूस नहीं होती. मैं आखिर उस इंतहा पर आ पहुंचा हूं जिसके बाद का अंत साफ नजर आता है इतना साफ नजर आता है कि नजर नहीं आता. मैं आखिर इंतहा पर आ पहुंचा हूं जिस के बाद मुझे मौन

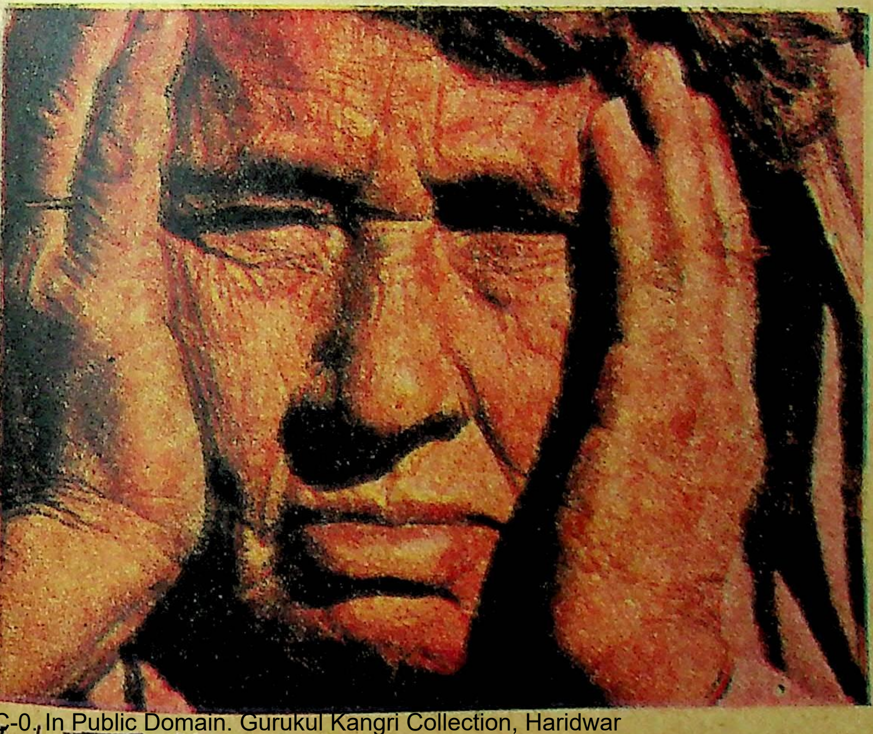

• फो. एस. अरोरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाना चाहिए जिसके बाद मैं मौन हुए बगैर नहीं रह सकता जिसके बाद मैं नहीं रह सकता जिसके बाद का मौन मुझे मंजूर होना चाहिए जिसके बाद मेरी मंजूरी मिथ्या है जिसके बाद मैं और मुझ की बात बेहूदा है जिसके बाद बात बेहूदा है. जिसके बाद का मौन बेहूदा है. जिसके बाद मौन बेहूदा है. मैं उस इंतहा पर आ पहुंचा हूं जिसके बाद देखने सोचने दुखने बोलने कहने गाने कराहने की मोहलत मर जाती है जिसके बाद की अमरता औरों के लिए हो तो हो खुद उसके लिए नहीं होती जो उस इंतहा से उधर जा पहुंचा हो जिसके बाद अमर सिर्फ मुहावरे में या किसी वहम या विश्वास के कंधे पर सवार हो कर ही हुआ जा सकता है. मैं उस इंतहा पर आ पहुंचा हूं जहां दर्द की दर्दलादवा की कमंद नहीं पहुंचती जहां पहुंच जाने पर सदा जंजाल झड़ जाते हैं क्योंकि जिस्म जड़ होता है. अगर मैं उस इंतहा पर आ पहुंचा हूं तो सवाल यह है तो कोई सवाल नहीं होना चाहिए लेकिन कई सवाल हैं और सब एक साथ उठ रहे हैं जैसे जानते हों कि मैं उस इंतहा पर हूं जिसके बाद उनका सामना करने का समय उन्हें बिठाने की कोशिश करने का समय नहीं रहता न होने के बराबर रह जाता है जिसके बाद समय का हिसाब बेमानी है जिसके बाद सब कुछ बेमानी है जिसके बाद पहले का सब कुछ बेमानी नजर आता है जिसके बाद कुछ नजर नहीं आता. मैं इस इंतहा पर पहुंचा हूं मैं किसी इंतहा पर नहीं पहुंचा मैं कहीं नहीं पहुंचा मैं सिर्फ समाप्त हो रहा हूं मैं समाप्त हो रहा हूं मैं इंतहा पर नहीं अंत पर हूं अंत पर नहीं उसके आसपास आसपास उड़ रहा हूं क्योंकि अगर ऐन अंत पर होता तो कोई आवाज न होती तो यह आलाप न होता. मैं समाप्त हो रहा हूं अभी हुआ नहीं वरना हो रहा होता. समाप्ति के बाद की सियाही की तसवीर असंभव है लेकिन जरूरी नहीं कि समाप्ति के बाद सिर्फ सियाही ही हो क्योंकि करोड़ों कीड़े इस उम्मीद पर मरते हैं कि समाप्ति के बाद बेहदोहिसाब उजाला होगा या इस पर कि समाप्ति के बाद वे फिर खाल बदल कर चीखते चिल्लाते किसी न किसी जानवर की सूरत और सीमाएं लिये फिर यहीं कहीं लौट आयेंगे और यही सारे जंजाल फिर भोगने लगेंगे.मुझे ऐसी किसी उम्मीद का सहारा नहीं मुझे किसी उम्मीद का सहारा नहीं मुझे कोई सहारा नहीं मैं सिर्फ समाप्त हो रहा हूं मुझे यह यकीन भी नहीं कि यह समाप्ति अंतिम है या नहीं कि यह समाप्ति सही है या नहीं कि यह समाप्ति है कि इसके साथ ही मेरा सब कुछ मेरा सब कुछ नहीं समाप्त हो जायेगा मुझे कोई यकीन नहीं मुझे यकीन हो न हो मैं समाप्त हो रहा हूं. मुझे कोई उम्मीद हो न हो मैं समाप्त हो रहा हूं. अगर मुझे उम्मीद नहीं यकीन नहीं तो यह दावा क्यों कि मैं समाप्त हो रहा हूं कि मैं उस इंतहा पर आ पहुंचा हूं कि मैं किसी इंतहा पर आ पहुंचा हूं लेकिन यह दावा नहीं यह सिर्फ संभावना है लेकिन अगर यह सिर्फ संभावना है तो अभी तक का सारा आलाप क्या बेसार और बेसुरा नहीं हो जाता? मैं नहीं जानता न ही जानना चाहता हूं मैं अपनी समाप्ति की संभावना को इधर उधर उड़ने नहीं देना चाहता मैं सिर्फ उसका जाप किये जाना चाहता हूं जब तक समाप्त नहीं हो जाता. अगर मुझे कोई यकीन नहीं तो यह जाप क्यों तो यह आलाप क्यों? मैं इस आलाप को इस जाप को कोई जंजीर नहीं पहनाना चाहता लेकिन कई पुरानी पहचानी जंजीरें इसकी तरफ उड़ी आ रही हैं जिनकी झंकार में वे सब शोर शामिल हैं जिनसे मैं बराबर भागता आया हूं जिन्हें मैंने साफ कर संगीत में बदलना चाहा है जिनसे जान छुड़ा कर या जिन्हें अपनी जान दे कर मैंने इस आलम में आ पनाह ली थी. का उन जंजीरों में वह पुरानी मजबूती नहीं होगी अब उस झंकार में वह गंदी गूंज नहीं होगी क्योंकि मैं समाप्त हो रहा हूं अगर मैं समाप्त हो रहा हूं तो. अगर मैं समाप्त हो रहा हूं तो समाप्त होने से पहले से फौरन पहले कम-अज-कम मुझे इन सारे जालों को इन तमाम मिट्टियों का इस सारे कीचड़ को पश्चातापों के इन पहाड़ों को इस सारी राख को सोच की काली सुरंगों को लज्जाओं और हसरतों की सारी दलदल को यहीं झटक देना चाहिए अगर मैं समाप्त हो रहा हूं तो मेरे चाहने न चाहने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा तो यह सब कुछ अपने आप छूट जायेगा. मैं चाहता हूं कि साफ साफ सोच सकूं कि इस संभावित समाप्ति का इस क्षण मुझ पर क्या असर हो रहा है हालांकि यह ख्वाहिश गैरजरूरी है इस बात का सबूत है कि मैं अभी उस इंतहा से इधर हूं जिस तक किसी भी ख्वाहिश की खाक नहीं पहुंचती जहां सदा सोचें गुम हो जाती हैं लेकिन इस बात को सबूत की जरूरत नहीं अगर मैं समाप्त हो रहा हूं तो मेरी नजर आगे होनी चाहिए तो मेरी नजर कहीं नहीं होनी चाहिए तो मेरी नजर नहीं होनी चाहिए. अगर मैं शुरू से ही समाप्त हो रहा हूं और मुझे मालूम है कि मैं शुरू से ही समाप्त हो रहा हूं इस अगर की यहां कोई गुंजाइश नहीं क्योंकि मैं शुरू से या करीब करीब शुरू से ही जानता आया हूं कि मैं शुरू से ही समाप्त हो रहा हूं. अगर मुझे मालूम था कि समाप्ति ही मेरी नियति थी तो मैं बेहिसाब हो कर क्यों न बीत सका तो मैं इस सूनी सड़क के सहारे कुबड़ा खड़ा क्यों तड़पता रहा क्यों तड़प रहा हूं तो मैंने आत्महत्या क्यों न कर ली तो मैं आत्महत्या क्यों नहीं कर लेता? अब इन आखिरी क्षणों में मैं कुछ नहीं कर सकता मुझे कुछ नहीं करना चाहिए हालांकि कोई सबूत नहीं कि ये क्षण आखिरी हैं कि ये क्षण हैं. और मैं समझ बैठा था कि मैं उस इंतहा पर आ पहुंचा हूं जहां सब पश्चात्तापों का अंत हो जाता है. मुझे यह गम नहीं कि मैं समाप्त हो रहा हूं मुझे कोई गम नहीं काश कि मुझे कोई गम न होता मुझे यही गम है कि मेरा यह आखिरी आलाप भी आलाइशों से पाक नहीं मुझे कोई यकीन नहीं कि यह आलाप आखिरी है कि यह कभी भी आलाइशों से पाक हो सकेगा मुझे कोई यकीन नहीं कि यह आलाप है कि वह यह भी महज एक प्रलाप नहीं मुझे कोई यकीन नहीं. अगर मैं समाप्त हो रहा हूं तो मुझे यकीन हो या न हो मैं समाप्त हो जाऊंगा अगर मैं समाप्त हो रहा हूं तो मैं समाप्त हो जाऊंगा तो इतनी तिलमिलाहट क्यों? शायद मैं समाप्त नहीं होना चाहता शायद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे शक है कि मैं समाप्त हो नहीं रहा दिया जा रहा हूं कि मैं इस आलम से अलग नहीं होना चाहता कि समाप्ति के बाद भी एक आलम है कि वह भी इसी का सा होगा कि वहां भी मुझे यही तमाम दर्द होंगे कि वहां भी मैं किसी सूनी सड़क के सहारे कुबड़ा खड़ा यही सोचता रहूंगा मैं हूं या नहीं और हूं या नहीं मैं समाप्त हो रहा हूं या नहीं मैं समाप्त होना चाहता हूं या नहीं अगर मैं समाप्त हो रहा हूं तो यह तिलमिलाहट क्यों अगर मैं समाप्त नहीं हो रहा तो यह तिलमिलाहट क्यों. शायद मुझे कोई शक नहीं लेकिन मैं शक का दोशाला ओढ़े बगैर हकीकत पर किसी भी हकीकत पर इंतहा पर किसी भी इंतहा पर हुकूमत नहीं कर सकता. शायद मुझे यह शक भी है कि अभी तक का सारा सहा कराहा काफी नहीं. अगर मैं किसी इंतहा पर आ पहुंचा होता अगर यह आलाप आखिरी होता तो मुझे इतने शक न होते लेकिन यह भी अकाट्य नहीं क्योंकि शायद शक से बाकी बचे समय को सहने में आसानी हो. अगर आसान और मुश्किल का फर्क नहीं मिटा तो मैं वहीं हूं जहां था तो मैं इंतहा के आसपास नहीं तो मैं एक इंच आगे नहीं बढ़ा तो मेरी तपस्या अकारथ रही अगर इस तड़प को तपस्या का दर्जा दिया जा सकता है तो. इस इलहाम को पहले उतरना चाहिए था यह इलहाम नहीं यह पहले उतर चुका है अगर यह पहले उतरा होता तो भी बीतने की विपता से रिहाई न मिली होती. बीतना विपता नहीं बीतना ही बुनियादी विपता है बुनियादी बिपताओं से रिहाई नहीं कोई रिहाई नहीं. यह सोच फटी पुरानी है सब सोचें फटी पुरानी हैं. सोच से परे सोच के परों पर नहीं उड़ा जा सकता. शायद मुझे यही दर्द हो. यह नहीं यह भी.

इन आखिरी क्षणों की खीज को आलाप की लय देने की कोशिश बेकार है. इन आखिरी क्षणों को भी उन्ही सवालों उन्ही शुबहों उन्ही जवाबों उन्हीं शिकायतों उन्ही अंदाजों की नजर करूंगा जिनमें मैंने अबा तक की जिंदगी गुजारी है अगर वह जिंदगी थी तो अगर उसे मैंने गुजारा था तो. कोई सबूत नहीं कि ये क्षण आखिरी हैं कि ये गुजर रहे हैं कि मैं इन्हें गुजार रहा हूं कि ये गुजर जायेंगे. इस मुकाम या इंतहा पर सबूत की मांग नहीं उठनी चाहिए इंतहा पर सबूत की मांग नहीं उठनी चाहिए. कोई सबूत नहीं कि यह कोई नया मुकाम या नयीं. इंतहा है. मैं फिर बिखर रहा हूं. अगर सबूत की तलाश छूट गयी होती अगर तलाश की तमन्ना टूट गयी होती अगर तमन्ना टूट गयी होती तो यहां क्यों कुबड़ा खड़ा होता? अगर सबूत मुझे मिल गये होते या उनकी जरूरत के एहसास का अंत हो गया होता तो यहां कुबड़ा क्यों खड़ा होता? कोई सबूत नहीं कि सबूत मुझे नहीं मिले कि सबूत की तलाश कि तलाश की तमन्ना कि तमन्ना नहीं छूटी. कोई सबूत नहीं. सबूत कोई नहीं. कोई सबूत नहीं कि कोई सबूत नहीं. अगर मैंने सिर्फ अपनी आंखों पर एतबार किया होता लेकिन कोई सबूत नहीं कि मैंने अपनी आंखों पर एतबार नहीं किया अगर मैंने अपने अस्तित्व पर अविश्वास न किया होता औरों के अस्तित्व को अपने लिए अप्रासंगिक

हिंदी के कथा साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बनानेवालों में से एक हैं. हिंदी तथा अंग्रेजी में समान रूप से लिखते हैं. प्रस्तुत रचना उनके प्रकाश्य उपन्यास 'दर्द लादवा' का एक अंश है.

मान लिया होता लेकिन कोई सबूत नहीं कि मैंने अपने अस्तित्व पर अविश्वास किया कि मैंने औरों के अस्तित्व को अपने लिए अप्रासंगिक नहीं माना अगर मैंने उस आम आंसुओं की दुनिया को न त्यागा होता अगर मैंने इस सूनी सड़क का सहारा न लिया होता लेकिन कोई सबूत नहीं कि मैंने उस आम आसुंओं की दुनिया को त्यागा था कि मैंने इस सूनी सड़क का सहारा लिया था. कोई सबूत नहीं. अगर कोई सबूत नहीं तो मैं क्यों किसी कुत्ते का मुंह बना बार बार अपनी इस खारिशजदा खाल को ही खा खुजला रहा हूं लेकिन कोई सबूत नहीं कि मेरी खाल है कि वह खारिशजदा है कि मैं उसे ही खा खुजला रहा हूं कि वह मुझे नहीं खा खुजला रही. अगर मान लूं कि किसी भी मान्यता का कोई सबूत नहीं कि किसी भी सबूत में कोई सबूत नहीं कि किसी भी सबूत में कोई स्थायित्व नहीं अगर मान लूं कि सब दर्द मिथ्या हैं कि इस आलम में आ जाने के बाद मैंने जो जो जिरह की है पैंतरे बदले हैं संभावनाएं सहलायी हैं वे सब बेहूदा हैं अगर मान लं कि शुरू से ही मैं एक भुरभुरी दीवार उभार रहा हूं कि किसी भी जर्रे की किसी भी हरकत पर मेरा कोई इख्तियार नहीं लेकिन यह गरदान पहले कर चुका हूं कई बार कर चुका हूं इस गरदान को दोहराने से कुछ हासिल नहीं होगा. अगर अशांति में इजाफा ही कर सकता है उसी तरह जिस तरह शायद क्या काश या लेकिन या हालांकि. सब शब्द अशांति में इजाफा करते हैं लेकिन उनकी बढ़ायी हुई अशांति गलत किस्म की दी हुई अशांति से कहीं बेहतर. फिर मुंह फाड़ कर बोल रहा हूं. शायद कोहान या उसके अहसास ने ही मुझे यह मुरशिदाना अंदाज दे दिया हो या शायद मेरे इन अगनिनत दर्दों ने लेकिन कोई सबूत नहीं कि यह अंदाज मुरशिदाना है कि ये दर्द अनगिनत हैं कि मैंने इनसे कुछ भी हासिल किया है. लय की लड़खड़ाहट संभाली नहीं जा रही. इसे अंत की अलामत समझ बैठना शायद ही ठीक हो. मैं नहीं चाहता कि मेरा अंत किसी अधूरी शांति पर हो. मेरे चीखने या चाहने का इस इंतहा पर कोई मतलब नहीं रह जाना चाहिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं रहा किसी इंतहा पर कोई मतलब नहीं था मेरे चीखने या चाहने का कोई मतलब नहीं कोई मतलब नहीं था. मैं उन्हीं ईमानलेवा उक्तियों को फिर उगल रहा हूं जिनसे सोचा था रिहाई मिल चुकी है जिनमें कोई रस नहीं जो गूंगी राल की तरह बेजायका हैं. अगर मैं इन आखिरी क्षणों में अगर ये क्षण आखिरी हैं तो अगर ये क्षण आखिरी नहीं भी तो उस मरे हुए ईश्वर को ही याद का ही जाप कर सकूं तो शायद मेरा शून्य मुझ पर राजी हो जाये क्योंकि मरा हुआ ईश्वर मरते हुए न मर सकते हुए इनसान से तो ऊपर ही होगा. मुझे नहीं मालूम था कि इस आलम से इजाजत लेने में इतनी देर लग जायेगी कि मुझमें अभी इतना दम है कि बार-बार वही बासी विचार फिर उठते उबलते रहेंगे जिनमें मैं समझ बैठा था कोई जात नहीं. मुझे कुछ भी मालूम नहीं था अगर होता तो भी शायद यकीनन कोई फर्क न पड़ता. मुझे लगता है कि मैं अभी और इसी तरह तड़पूंगा कि तड़प की कोई इंतहा नहीं कि कोई इंतहा नहीं कि इंतहा नहीं लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि इस तड़प में और अदा तक की तड़प में अगर कोई अंतर है तो यही कि अदा दूसरों के अस्तित्व के बारे में अदाज लगाने की मजबूरी नहीं रही कि तड़पने के लिए अदा अपना अस्तित्व या उसका अभाव ही काफी महसूस होने लगा है लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मैं कुबड़ा नहीं कि मैं किसी सूनी सड़क के सहारे एक आम अधूरे पेड़-सा खड़ा कराह नहीं रहा कि मुझे कोई दर्द नहीं कि मैं किसी आम आंसुओं की दुनिया से ऊपर उठ कर या नीचे उतर कर इस आलम में नहीं आया कि यह आलम नहीं लेकिन मुझे लगता है कि यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मैंने सिर्फ समय बिताने और आत्महत्या से परहेज किये जाने के लिए ही शब्दों का यह शून्यकक्ष बनाया है जिसके अंदर कुछ नहीं कोई अर्थ नहीं कोई ऐसी आवाज नहीं कोई ऐसी खामोशी नहीं जिस पर यह गुमान हो कि वह सही है कि वही सही है लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मैं वहीं हूं जहां था कि मैं कहीं भी नहीं यानी मैं वहीं हूं जहां मुझ जैसे दूसरे करोड़ों कीड़े रेंग रहे हैं अपनी अपनी रेंग पर रो या रीझ रहे हैं और रोते-रीझते इस सदा से इस सदा कुछ नहीं से ऊपर उठ-जाने के मोह से मुक्त नहीं हो पा रहे लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मैं किसी भी बोझ से फारिग नहीं कि मैं किसी भी बोध से बोझिल नहीं हुआ कि अगर मैंने आत्महत्या नहीं की तो उसका कारण महज शारीरिक कष्ट से कतराहट ही थी लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि कहीं न कहीं हो न हो मैं मानूं न मानूं कोई और माने न माने अपने इन दर्दों को परदान मानता हूं इस जीवन को एक इमानत या इनाम मानता हूं कि मुझे मौत के बाद की सियाही मंजूर नहीं कि मुझे इस ऊब और तिलमिलाहट में कोई अर्थ नजर आता है लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि आत्महत्या का अधिकार कि उसके बारे में कुछ भी कहने का अधिकार सिर्फ निखरे हुए नंगे नाचते हुए खून और मांस की सुर्खी और महक से जगमगाते हुए नौजवानों को होना चाहिए जो खुली आंखों से इस जिंदगी की जर्कबर्क देखते हुए इससे इतने दिलदार दास्ता हो जायें कि उन्हें आत्महत्या के सिवा कोई और समाधान पसंद न हो यानी जो किसी विकसित विफलता से निराश हो कर या किसी निजी नर्क से निकल जाने के लिए या किसी गलती या गुस्से या जिद की लपेट में आ कर या किसी दूसरे को कोई दुःख पहचाने के इरादे से आत्महत्या का सहारा न लें बल्कि या तो बिलावजह या किसी बेइंतहा बेहोशी और बेपरवाही के आलम में और या किसी आलमगीर दलील या दुःख से लाचार हो कर ही आत्महत्या कर लें या उसके बारे में कोई एलान जारी करें लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि ये दार्शनिक आत्महत्यारे भी मेरी नजर में ज्यादा ऊंचे नहीं जो इस सवाल को महज दिमागी उधेड़-बुन में बदल देते हैं लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि इस उम्र में इस आलम में इतना अरसा कराह लेने के बाद अगर मैं अपने आप को हलाक कर भी लेता हूं तो मेरी यह हरकत न सिर्फ बेमानी होगी बल्कि बेलज्जत भी कि किसी नौजवान और नाचते हुए जिस्म के अंजाम में जो खूबसूरती और दहशत है वह एक बूढ़े बेआब जिस्म के अंजाम में नहीं कि अपना गला दबोच डालने के खयाल से कोई कंपकंपी नहीं कौंधती किसी शिकस्त या विजय की आवाज नहीं आती बल्कि सिर्फ एक लिजलिजी गिरफ्त का एहसास होता है और मैं नहीं चाहता कि इस आलमे-उमंगोखू से रुखसत होते वक्त मेरा आखिरी स्पर्श मेरी ही झूलती हुई झुर्रियों से हो लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मैं आत्महत्या के खिलाफ हूं कि जवानी में अगर अपनी जान ले ली होती तो बात और होती कि अब मेरी नियति यही है कि आखिर तक किसी भी भय को भगवान माने बगैर बेसहारा हो कर तड़पूं मुजस्सम दर्द हो कर दर्दलादवा हो कर कराहूं जैसे कोई दुखता हुआ दांत या गुर्दा हो या कोई प्रसवपीड़ा से मरती हुई कोई अधेड़ औरत लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मेरी यह नियति हो न हो मैं अब तक के कराहे किये से मुनकिर नहीं हो सकता कि मैं अब तक के इस्तेमाल किये शब्दों की मखमली या मैली चादर की कील एक तरफ रख नंगा हो नाच नहीं सकता कि मैं अब नाच नहीं सकता लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मैं अपने भूत में बंद हूं कि मैं अब किसी नये रास्ते को रौंद नहीं सकता किसी पुरानी आदत से ऊपर उठ नहीं सकता कोई नया चेहरा चुन नहीं सकता कोई नया स्वर साध नहीं सकता कोई नयी भाषा बुन नहीं सकता किसी नये आकाश में उड़ या किसी नयी धरती पर रेंग नहीं सकता लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मैं अब मर रहा हूं कि मैं अभी मरना नहीं चाहता कि मैं कभी मरना नहीं चाहता कि मेरी हद को पहुंचे हुए किसी बुजुर्ग को मौत से कोई भय नहीं होना चाहिए कोई भय नहीं होना चाहिए कि मैं किसी हद को नहीं पहुंचा कि अगर अब भी मैं बेलाग हो कर एक आखिरी आलाप उठा सकूं तो शायद मेरे बाद वही बाकी रह जाये कि अपने पीछे कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ जाने की छटपटाहट गलत है लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मेरे ये दर्द अपनी अपूर्णता को अस्वीकार करते रहने की जिद और उस जिद से इनकार करते रहने की जिद और उस जिद को अस्वीकार करते रहने की हिमाकत और उस हिमाकत से हलाक होते रहने की मजबूरी और उस मजबूरी से आंख चुराते रहने की कमजोरी और उस कमजोरी को दबाते रहने के दंभ और उस दंभ को दुलारते रहने की बुजदिली और उस बुजदिली से बचाव की ख्वाहिश और उस ख्वाहिश पर काबू पाने की कोशिश और उस कोशिश की व्यर्थता और उस व्यर्थता के विरोध के ही नतीजे हैं लेकिन मुझे लगता है यह भी गलत है. मुझे लगता है मैं कमल नहीं कामिल नहीं कीड़ा नहीं कुबड़ा नहीं कोढ़ी नहीं मैं कुछ नहीं कुछ भी नहीं मैं नहीं तो यह यँ-यँ क्यों तो यह यँ-यँ क्यों नहीं यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मेरे इस आलाप-प्रलाप से कोई प्रलय टलेगी नहीं आयेगी नहीं तो मैंने मोहमल से किनारा क्यों किया कहां किया मैंने सिर्फ मोहमल बदल लिया लेकिन मैंने मोहमल से किनारा क्यों करना चाहा क्योंकि शुरू से न जाने क्या से किस कोण से सुनता चला आया हूं कि किनाराकशी की कोशिश ही कीड़े को इनसान और इनसान को भगवान नहीं यह भी गलत है. मुझे लगता है मैंने किनाराकशी नहीं की सिर्फ सहारा बदल लिया मुझे लगता है मैंने जिस सड़क का सहारा लिया वह वहीं समाप्त हो गयी नहीं यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मैं भंवर से बाहर रह कर भी भंवर में ही रहा भंवर में ही रहने की कोशिश में रहा नहीं यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मैंने अपनी सीमाओं से बाहर अपने लिए एक नया कारागार नहीं एक नयी कोख नहीं एक नया कोहान नहीं एक नया ईमान नहीं एक नया संगीत नहीं यह भी गलत है. मुझे लगता है मेरे पास न ईंट न आंच न सच न सांचा न रस्सी न सांप न मिट्टी न महक न गर्त न गहराई मेरे पास न पहुंच न प्रार्थना न नूर न नार न त्याग न राग मेरे पास सिर्फ संशय की सियाही. नहीं सवालों का काला खून नहीं मेरे पास वही दलदल जिसने मुझे मेरी व्यथाव्याकरण दिया नहीं यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मैं इस शब्द कंटक शय्या पर पड़ा तड़पता उस आग-राग की आशा-प्रतीक्षा में जिसमें जल तप कर सब दर्द दूध और घान में बदल सकते हैं नहीं यह भी गलत है. मुझे लगता है कि यह सारा इच्छा छल दर्द से दर्द लादवा से भाग बाहर की दाह और धूप की कशिश को मिटाने की कोशिश कम अहम नहीं यह भी गलत है. मुझे लगता है कि मैं अब इस या उस नर्क को किसी नूर में बदल देने के काबिल नहीं कि मैं जिस अंधियारे में आ रुका हूं उसके बाद कोई उजाला नहीं कि मुझे अब सब कोशिशें काट कर समाप्ति के लिए नहीं यह भी गलत है. मुझे लगता है कि शब्द मेरे दुश्मन नहीं कि शब्द मेरा दुश्मन नहीं कि शब्द ही मेरा असली दुश्मन नहीं कि मैं जो कहूंगा जो भी कहूंगा कि मैं जो कह सकता हूं कि मैं जो भी कह सकता हूं कि मैं कुछ नहीं कुछ भी नहीं कह सकता नहीं यह भी गलत है निल्कुल गलत है नहीं यह भी गलत है नहीं. . . □ □ □

—लघुकथा—

ईसा का चित्र

• ओ. हेनरी

जीवन के सुख-दुख का प्रतिबिंब मनुष्य के मुखड़े पर सदैव तैरता रहता है. लेकिन उसे ढूंढ़ निकालने की दृष्टि केवल कलाकार के पास ही होती है. वह भी एक कलाकार था. भावना और वास्तविकता का एक अद्भुत सामंजस्य होता था उसके बनाये चित्रों में.

एक बार उसके मन में आया कि ईसा मसीह का चित्र बनाया जाय. सोचते-सोचते एक नया प्रसंग उभरा उसके मस्तिष्क में—छोटे-से ईसा को एक शैतान हंटर से मार रहा था. लेकिन न जाने क्यों ईसा का चित्र बन ही नहीं रहा था. कलाकार की आंखों में ईसा की जो मूर्ति बनी थी, उसका मानव रूप में दर्शन नहीं होता था. बहुत-खोजा, मगर वैसा तेजस्वी मुखड़ा उसे कहीं नहीं मिला.

एक दिन उद्यान में टहलते समय उसकी दृष्टि अनाथालय के एक आठ वर्ष के बालक पर पड़ी. बहुत भोला था—ठीक ईसा की तरह सुंदर और निष्पाप. उसने बालक को गोद में उठा लिया और शिक्षक से आदेश लेकर अपने स्टूडियो में ले आया. अपूर्व उत्साह से उसने कुछ ही मिनटों में चित्र बना डाला. चित्र पूरा कर वह बालक को अनाथालय पहुंचा आया.

अब ईसा के साथ शैतान का चित्र बनाने की समस्या उठ खड़ी हुई. वह एक क्रूर चेहरे की खोज में निकल पड़ा. दिन को कौन कहे, महीनों बीत गये. शराबखानों, वेश्याओं के मुहल्ले, गुंडों के अड्डों की खाक छानी, मगर फिर भी शैतान कहीं न मिला. चौदह वर्ष पूर्व बनाया गया चित्र अभी तक अधूरा पड़ा हुआ था. अचानक एक दिन जेल से निकलते एक कैदी से उसकी भेंट हुई. सांवला रंग, बढ़े हुए केश-दाढ़ी और विकट हंसी. कलाकार खुशी से उछल पड़ा. कहते-सुनते दो बोतल शराब के बदले कैदी को चित्र बनवाने पर राजी कर लिया.

बड़ी लगन से उसने अपना अधूरा चित्र पूरा किया. ईसा को हंटर से मारनेवाले शैतान का देखते-देखते उसने हु-बहू चित्र उतार लिया.

—महाशय! जरा मैं भी चित्र देखूं, कैदी बोला. चित्र देखते ही उसके माथे पर पसीने की बूंदें उभर आयीं. वह हकलाते हुए बोला, 'क्षमा कीजिएगा. आपने मुझे अभी तक पहचाना नहीं. मैं ही आपका ईसा मसीह हूं. चौदह वर्ष पूर्व आप मुझे अनाथालय से अपने स्टूडियो में लाये थे. मुझे देख कर ही आपने ईसा का चित्र बनाया था.

कलाकार हतप्रभ रह गया. □ □ □

(अनु. गुलाबचंद्र विश्वकर्मा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री, जिन्होंने हिंदी में वैज्ञानिक उपन्यासों की रचना की!

● राममोहन पाठक

उन दिनों 'भूतनाथ' और 'चंद्रकांता संतति' को लोग 'गीता' और 'रामायण' की तरह पढ़ते थे. कोई ज्यादा दिन भी नहीं हुए. होगी तीस-पैंतीस साल पहले की बात. और जैसा कि लोग कहते हैं, उन दिनों आज जैसे तथ्यों और वैज्ञानिक आधारों पर लिखे गये उपन्यास कहां थे? पहले-पहल हिंदी में बाबू देवकीनंदन खत्री ने 'चंद्रकांता संतति' उपन्यास पूरा किया, लोगों ने काफी दिलचस्पी ली तो 'भूतनाथ' नाम से दूसरा शुरू किया. पर 'भूतनाथ' के छह ही खंड लिखे गये थे कि देवकीनंदन जी का निधन हो गया.

यह अधूरा काम उनके सुपुत्र ने पूरा करना शुरू किया—यानी दुर्गाप्रसाद खत्री ने. बाद में चल कर बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री ने 'भूतनाथ' के साथ ही लगभग एक दर्जन उपन्यास लिख डाले. हिंदी में एक नयी औपन्यासिक शैली एवं विधा का जन्म हुआ. हिंदी में वैज्ञानिक उपन्यास लिखे जाने लगे.

वैसे 'भूतनाथ' के शेष १६ भागों का लेखन तो उन्होंने अठारह वर्ष की अवस्था में ही शुरू किया था, पर पिता के इस अधूरे कार्य को पूरा करने के बाद भी वह खाली नहीं बैठे रहे. 'रोहतास मठ' नाम से छह खंडों में नया उपन्यास लिखा. दो भागों में प्रकाशित कहानी-संग्रह 'माया' में 'गीता' के १२ अध्यायों के मूल भावों के आधार पर उन्होंने १२ कहानियां लिखी. 'प्रतिशोध', 'सुफेद शैतान', और 'लाल पंजा' उनके वैज्ञानिक उपन्यासों की कड़ियां हैं. 'सुवर्ण रेखा', 'स्वर्गपुरी', 'सागर सम्राट' और 'साकेत', सभी में वैज्ञानिक उपन्यासों के उद्विकास का एक क्रम दिखलायी पड़ता है.

उन्होंने छोटी कहानियां भी लिखी थीं. 'लहरी' और 'भारत जीवन' के संपादक के रूप में पत्रकारिता के क्षेत्र में तो उन्होंने एक विशिष्ट कीर्तिमान स्थापित किया है. 'प्रतिशोध' उनका छोटा-सा उपन्यास है. बराबर कहा करते थे कि मैं तो छोटी-सी कहानी लिखना चाहता था, पर न जाने कैसे बन गया उपन्यास.

* *

खत्रीजी जो कुछ भी लिखते थे, प्रामाणिक जानकारी के आधार पर लिखते थे. वैज्ञानिक उपन्यास लिखते समय तात्कालिक वैज्ञानिक प्रगति की बराबर जानकारी रखते थे. एच. जी. वेल्स और कितने ही अंग्रेज, बंगला और हिंदी लेखकों की रचनाएं बराबर पढ़ते रहते थे.

स्वतंत्रता-संग्राम के उन दिनों में दुर्गाप्रसाद जी के उपन्यासों से देश भर में कितने ही क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता के दीवानों ने प्रेरणा ली थी.

वैसे खुद भी पीछे नहीं रहे. स्वतंत्रता की लड़ाई के सिलसिले में पांच बार जेल गये थे. गांधीजी से प्रेरणा पा कर स्वतंत्रता-संग्राम में शामिल हुए थे. आचार्य नरेंद्र देव, बाबू मोतीलाल नेहरू, राष्ट्ररत्न श्री रविप्रसाद ... और महामना मदनमोहन माल... जैसे कितने ही राष्ट्रनेताओं ... वह मित्र और सहयोगी रहे.

वस्तुत: दुर्गाप्रसाद जी ... महत्व स्वतंत्रता-संग्राम के सेना... के रूप में एक उपन्यासकार ... साहित्यकार से कहीं भी कम ... है. आजादी की लड़ाई के ... में लिख नहीं पाते थे, पर आंदो... में भाग जरूर लेते थे.

सामाजिक मान और प्रति... उनके लिए कोई महत्व नहीं रख...

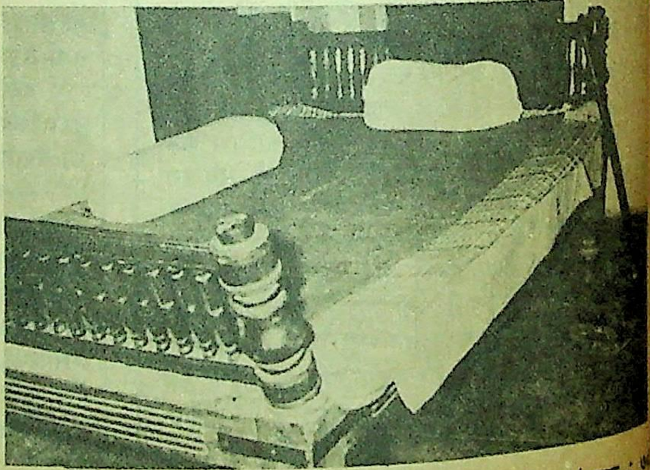

स्व. बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री : ए... दुर्लभ स्व-हस्ताक्षरित चित्र (ऊप... तथा वह पलंग और मसनद, जि... पर उनका आसन जमता था; सा... ही उनकी छड़ी और जूता (नीचे...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी. यहां तक कि स्वतंत्रता-संग्राम के सैनिकों को मिलने वाली पेनशन के लिए आवेदन करना भी उन्हें स्वीकार नहीं था.

लड़ाई के दिनों में खत्रीजी के निर्देशन में वाराणसी में एक ट्रांसमीटर की भी स्थापना की गयी थी. वाराणसी उन दिनों बंबई के बाद देश भर में स्वतंत्रता-संग्राम का दूसरा प्रमुख केंद्र था और इस केंद्र के संचालक थे स्वयं खत्रीजी.

जब कभी उनसे पूछा जाता था कि कुछ वैज्ञानिक सत्यों की उन्होंने भविष्यवाणी कैसे कर दी तो सहज भाव से कहते थे कि मैंने अपनी जानकारी को रचनाओं में रखने की कोशिश की थी. आज वे बातें सच ही हो चुकी हैं, तो इसे संयोग ही मानना चाहिए.

गीता की 'कर्मयोग' की परिभाषा से सहमत थे. कुछ-न-कुछ करते ही रहते थे—मृत्यु के कुछ दिनों पूर्व तक. स्वभाव और कर्म से वह सतत अहिंसावादी थे.

खिलाने-पिलाने के इतने शौकीन थे कि पूछिए मत! किसी को बिना खिलाये घर से जाने ही नहीं देते थे. थे पूरे बनारसी. हर शाम गंगा में नाव पर ही बीतती थी. नाव से ही चुनार तक चले जाते थे. गंगाजी के दर्शन बगैर एक दिन भी नहीं बीत सकता था. रहते थे पूरी रईसी से. दुपलिया, टोपी, लकदक कुर्ता, जूता और हाथ में छड़ी. फिर घर में शाही पलंग और मसनद आवश्यक थी. फोटोग्राफी के भी शौकीन थे. बनारसी हो कर भी वह बिना पान खाये रहते थे.

'रणभेरी' का प्रकाशन बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना रही. आज शायद ही 'रणभेरी' दिखायी पड़े, पर यह पत्रिका आजादी की लड़ाई के दिनों में घर-घर दिखलायी पड़ती थी.

संपादकाचार्य बाबूराव विष्णु पराड़कर और श्री रामचंद्र वर्मा स्टेंसिल काटते थे. बाबू शिवप्रसाद गुप्त धन की व्यवस्था करते थे. फिर छापने से बंटवाने तक का सारा काम खत्रीजी करते थे. इस सिलसिले में पुलिस का भी डर था, पर उन्होंने कभी हिम्मत नहीं छोड़ी. 'रणभेरी' का प्रकाशन, पुलिस के लाख प्रयासों के बावजूद, स्वतंत्रता-प्राप्ति तक जारी रहा.

'रणभेरी' के अतिरिक्त उनके 'रक्तमंडल' उपन्यास पर भी सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया था. कापियां जब्त कर ली गयीं. इस उपन्यास में खत्रीजी ने क्रांति और आजादी की लड़ाई की ओर स्पष्ट रूप से इंगित किया था. इस पुस्तक ने लोगों के दिल में आजादी पाने के लिए आग जगा दी थी.

वह थे बड़े ही धीरज और कठोर दिल के आदमी. उनका आध्यात्मिक व्यक्तित्व भी काफी प्रभावशाली रहा. किसी भी मुसीबत में, यहां तक कि मृत्यु के पूर्व तक, घबराये नहीं. बस, योग साधना और भगवद्भक्ति किया करते थे. कभी भी किसी का दिल नहीं दुखाना चाहते थे, पर खुद साहित्य-जगत की वर्तमान स्थिति से कभी-कभी चिंतित हो उठते थे.

. . .और आज भी लाहौरी टोला से गुजरता हूं तो वाराणसी की तंग गलियों के बीच इस मोहल्ले के अंतराल में उस चबूतरे के प्रति सहज श्रद्धा और नमन का भाव उमड़ पड़ता है, जहां बैठ कर बाबू देवकीनंदन खत्री और दुर्गाप्रसाद जी ने लंबे अरसे तक साहित्य साधना की, बहुत कुछ दिया हिंदी साहित्य को, पर वह स्थल आज भी उसी तरह उपेक्षित पड़ा है, जिस प्रकार स्वयं बाबू देवकीनंदन खत्री और दुर्गाप्रसाद जी के नाम को खुद हिंदी साहित्य के लोग भूलते जा रहे हैं.

उपन्यास-लेखन और स्वतंत्रता-संग्राम में योगदान के साथ ही एक चीज और है, जो दुर्गाप्रसाद जी के नाम से जुड़ी हुई है और आज भी याद की जाती है. वह है उनकी सहृदयता और उनका कोमल स्वभाव. उनके मित्रों से मिलिए : कहेंगे—हीरा थे हीरा!

□□□

'समांतर सहयोग' : एक सहयोगी प्रकाशन की शुरुआत!

इस देश में पुस्तकों के प्रकाशन की स्थिति को संतोषजनक नहीं कहा जा सकता. नये लेखकों को अपनी रचनाओं के प्रकाशन के लिए प्रायः बरसों तक बड़े प्रकाशकों के चक्कर लगाने पड़ते हैं. दूसरी ओर बड़े प्रकाशक केवल उन्हीं लेखकों की पुस्तकों को प्रकाशित करने में रुचि दिखाते हैं, जो स्थापित हो चुके हों और जिनकी पुस्तकें जल्द से जल्द बिक जाने की संभावना रखती हों. इस प्रकार बड़े प्रकाशक नये लेखकों का मार्ग ही अवरुद्ध नहीं करते, नये विचारों के प्रसार में भी बाधक बनते हैं. इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए काफी अरसा पहले केरल के लेखकों ने अपनी निजी सहयोगी प्रकाशन संस्था की स्थापना की थी. अब मद्रास में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के समांतर लेखकों के पहले सहयोगी प्रकाशन 'समांतर सहयोग' (५४, बाजार रोड, मइलापुर, मद्रास-४) की स्थापना हुई है. इस प्रकाशन-संस्था का मुख्य उद्देश्य है भारतीय जनवादी लेखकों की पुस्तकों को प्रकाशित करना और उन्हें विस्तृत पैमाने पर कम मूल्य में विशाल पाठक वर्ग को उपलब्ध कराना.

'सारिका' इस सहयोगी प्रकाशन का स्वागत करती है. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक लोक-कथा

● गीता पुष्प शॉ

इसी युग की बात है. गंगा तट पर बसे हुए किसी नगर में नयी पीढ़ी का एक युवा लेखक अपनी पत्नी के साथ रहता है. वह बहुत धनी है. उसके स्टोर रूम से ले कर ड्राइंग रूम तक, यहां तक कि पलंगों के नीचे और रसोई घर के ऊपर, सारा घर किताबों और पत्र-पत्रिकाओं से भरा रहता है. इस धन से उसने अपना लेखन व्यापार बहुत बढ़ा लिया है.

यह लेखक बहुत दयालु है. प्रतिदिन कोई-न-कोई मेहमान उसके घर अवश्य टपक पड़ता है. भोजन कराये बिना लेखक उसे जाने ही नहीं देता. सिगरेट चाय तो मामूली बातें हैं. लेखक की पत्नी उसकी इन आदतों से बेहद रुष्ट रहती है. बेचारी बड़ी मुश्किल से राशन, डालडा और किरासन तेल के लिए लाइन में लग कर भोजन सामग्री जुटा पाती है, उस पर से लेखक महोदय अवढर दानी बने फिरते हैं.

एक दिन हमेशा की तरह फिर एक अतिथि पहुंचा. जैसा कि होता आया था, लेखक ने पत्नी को चाय और फिर भोजन बनाने का आदेश दे दिया. तत्पश्चात् अतिथि से बोले—तुम बैठो, मैं सिगरेट और पान ले कर आता हूं. लेखक-पत्नी गुस्से में भरी बैठी थीं. रोज-रोज के पकाने-खिलाने से तंग आ चुकी थीं. उन्होंने सोच लिया था, चाहे कुछ हो जाये, आज मुए मेहमान के लिए चूल्हा नहीं जलेगा.

लेखक महोदय के बाहर जाते ही उन्होंने अपने पति के उपन्यासों, कहानियों, कविताओं की पांडुलिपियां मेज पर सजानी शुरू कर दीं. अतिथि सब देख रहा था. उससे रहा नहीं गया तो उसने चकित हो कर पूछा—ये क्या कर रही हैं भाभी जी?

लेखक-पत्नी ने कहा—भैया, कागज की कमी के इस युग में इनकी रचनाएं कोई प्रकाशित नहीं करना चाहता था. तब से इन्होंने नियम बना लिया है कि प्रतिदिन एक अतिथि को भोजन कराने के बाद अपनी कविताएं, कहानियां, उपन्यास पढ़ कर सुनाते हैं. इस दिनचर्या में विघ्न पड़ने से उन्हें रात-भर नींद ही नहीं आती.

इतना सुनना था कि अतिथि महोदय उठ कर खड़े हो गये. बोले—भाभी जी, एक जरूरी काम याद आ गया. और लंबे-लंबे कदम बढ़ा नौ-दो-ग्यारह हो गये.

कुछ ही देर में लेखक महोदय ने घर में प्रवेश किया. अतिथि को न देख कर पत्नी से पूछा—अरे, वो कहां गया?

पत्नी ने कहा—वह आपका एक उपन्यास प्रकाशित करना चाह रहा था. मैंने कहा, बिना आपकी अनुमति के मैं पांडुलिपि कैसे दे दूं, तो वह रुष्ट हो कर चला गया. लेखक महोदय ने तुरंत उपन्यास की पांडुलिपि उठायी और बाहर भागे. भागते-भागते कुछ दूर पहुंचने पर देखा उनके अतिथि भागे जा रहे हैं. लेखक महोदय चिल्लाये—'बंधु, ये पांडुलिपि तो देखिए. घर में भोजन भी तैयार है. अतिथि दूर से ही चिल्लाया—मुझे भोजन नहीं करना है ऽऽऽ' और दौड़ वेग से दौड़ने लगा. पर लेखक महोदय हिम्मत हारने वाले प्राणी नहीं थे. उन्होंने अतिथि का पीछा करना नहीं छोड़ा. अंत में सामने गंगा नदी आ गयी. अतिथि ने दौड़ कर गंगा में छलांग लगा दी.

● विनोद 'कुछ'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• विनोद दुबे

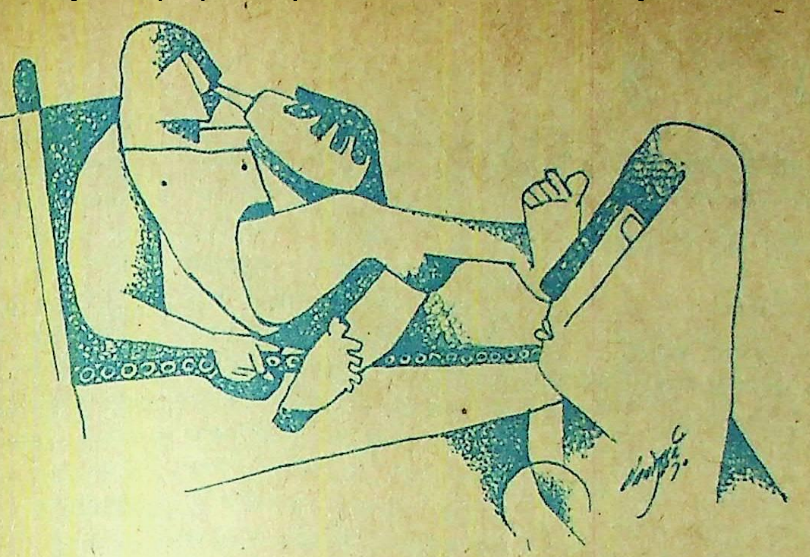

पवित्र शहर

• खलील जिब्रान

मैं अपनी जवानी के जमाने में सुना करता था कि एक ऐसा शहर है जहां के नागरिक आसमानी किताबों के मुताबिक जीवन व्यतीत करते हैं.

मैंने सोचा कि मैं इस शहर को जरूर तलाश करूंगा और उससे बरकत हासिल करूंगा. यह शहर बहुत दूर था. मैंने अपने सफर के लिए खूब सामान इकट्ठा किया. चालीस दिन के पश्चात मैंने इस शहर को देखा और इकतालीसवें दिन उसके अंदर प्रवेश किया.

मुझे यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि इस शहर के तमाम नागरिकों के केवल एक हाथ और एक आंख है. मैंने हैरान हो कर अपने दिल में कहा कि इतने पवित्र शहर के नागरिकों का केवल एक हाथ और एक आंख!

मैंने देखा कि वह स्वयं भी इसी बात पर हैरान हैं. मेरे दो हाथों और दो आंखों ने उन्हें आश्चर्य में डाल दिया था. इसलिए जब वह मेरे बारे में आपस में बातचीत कर रहे थे तो मैंने उनसे पूछा—क्या यह वही पवित्र शहर है जिसका हर नागरिक आसमानी किताबों के मुताबिक जीवन व्यतीत करता है? उन्होंने उत्तर दिया—हां, यह वही शहर है.

मैंने कहा—तुम्हारी यह दशा कैसे हुई? तुम्हारी दाहिनी आंखें और दाहिने हाथ क्या हुए? वह सब मेरी बात से बहुत प्रभावित हुए और मुझसे कहा—आ और देख.

वह मुझे शहर की एक मस्जिद में ले गये, जो शहर के मध्य में स्थित थी. मैंने उस मस्जिद के सेहन में हाथों और आंखों का एक ढेर लग हुआ देखा. वह सब गल सड़ रहे थे. फिर मैंने कहा—अफसोस! किस संगदिल ने तुम्हारे साथ यह सलूक किया है?

इस पर उन्होंने जेरे लब गुफ्तगू शुरू की और एक बूढ़ आदमी ने आगे बढ़ कर मुझसे कहा—यह हमारा अपना काम है. खुदा ने हमें अपनी बुराइयों पर फतह दी है. यह कह कर उसने मुझे एक ऊंचे गुंबद के ऊपर एक तहरीर दिखाई,. जिसके शब्द थे—

"अगर तुम्हारी दाहिनी आंख तुम्हें ठोकर खिलाये तो उसे बाहर निकाल फेंको, क्योंकि सारे शरीर के दोजख में पड़ने से एक अंग का नष्ट होना बेहतर है और अगर तुम्हारा दाहिना हाथ तुम्हें बुराई पर मजबूर करे तो उसे काट कर फेंक दो ताकि तुम्हारा केवल एक अंग नष्ट हो जाये और सारा शरीर दोजख में न पड़े.

यह इबारत पढ़ कर मुझे सारी सच्चाई मालूम हो गयी. मैंने मुंह मोड़ कर तमाम लोगों को संबोधित किया और कहा—क्या तुममें कोई आदमी या औरत ऐसा नहीं जिसके दो हाथ और दो आंखें हों?

उन सबने उत्तर दिदा—नहीं, कोई नहीं यहां उन बच्चों के अतिरिक्त जो कमसिन होने के कारण इस कुतवा को पढ़ और उसके आदेशों पर अमल नहीं कर सकते हैं, कोई व्यक्ति सही व सालम नहीं.

जब हम मस्जिद से बाहर आये तो मैं तुरंत उस पवित्र शहर से भाग निकला, क्योंकि मैं कमसिन न था और उस कुतबा को अच्छी तरह पढ़ सकता था. □

(अनुवाद : मुनव्वर हुसैन 'गुबार')

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृतियां

एक कहानी-संग्रह

'पंजाबी की श्रेष्ठ कहानियां'

संपादिका : अमृता प्रीतम;
प्रकाशक : पराग प्रकाशन, दिल्ली;
१९२ पृष्ठ; २० रुपये.

प्रख्यात कवयित्री और कथा-लेखिका अमृता प्रीतम ने संपादिका की भूमिका में उतर कर यह संकलन प्रस्तुत किया है.

'श्रेष्ठ' अथवा 'प्रतिनिधि' किस्म के संकलनों की परंपरा भारत में कभी भी स्वस्थ नहीं रही. बहुधा एक संकलन की श्रेष्ठ कहानियां दूसरे प्रतिनिधि कहानियों के संकलन में सिरे से गायब मिलती हैं. ऐसी उलटबांसी इस संकलन के संदर्भ में भी मौजूद है, मगर जहां तक काल-प्रतिनिधित्व का संबंध है, संपादिका ने सतर्क दृष्टि से काम लिया है. गुरबख्शसिंह से ले कर करनैलसिंह तक, विभिन्न काल-खंडों के इक्कीस कथाकार संकलन में शामिल किये गये हैं. मगर इन विभिन्न काल-खंडों में पाठकों को विभिन्न मानसिकताओं अथवा काल-धाराओं का स्पष्ट प्रत्यक्ष नहीं हो पाता. इस बावत अमृता प्रीतम ने भूमिका जैसे एक नोट में अपना दायित्व और दृष्टिकोण यों पेश किया है : '. . . कहानी विषय की दृष्टि से इतनी पुरानी या नयी नहीं होती, जितनी अपने बयान के अंदाज की दृष्टि से.'

इस चयन-दृष्टि का ही परिणाम है कि इन इक्कीस 'श्रेष्ठ' कहानियों में इक्कीस लेखक प्रायः इक्कीस व्यक्तियों की तरह हाजिर नजर आते हैं. रसिक पाठक शायद संकलित कहानियों को श्रेष्ठ मान लेने की बजाय इंतजार करने का फैसला खुद-ब-खुद कर लेता है.

'मामा नहीं मरा' (कर्त्तारसिंह दुग्गल) और **'भाभी मैना'** (गुरबख्शसिंह) जैसी कहानियों की श्रेष्ठता के संबंध में पाठकों और समीक्षकों ने एक अरसे से फैसले मुल्तवी किये हुए हैं. यहां एक बार फिर उन्हें यही प्रक्रिया दोहरानी पड़ेगी. वेश्यावृत्ति की यांत्रिक मानसिकता विवेचित करने वाली कहानी **'कहवाघर की सुंदरी'** (बलवंत गार्गी), और अपेक्षाकृत मोतबिर और समर्थ 'अफसरों' की गरीब की औरतों को सहज ही लूट लेने की इच्छा कर बैठने वाली आधी जिसी और आधी सामंती फितरत का चित्रण करने वाली **'अफसर'** (प्रेम गोरखी) जैसी कहानियां भी स्वयं को श्रष्ठ कहलवाने को फिलहाल उतावली प्रतीत नहीं होतीं.

श्रेष्ठता वस्तुतः कहानियों के हिस्से तब तक नहीं पड़ती, जब तक लेखक नये प्लॉट-व्लॉट गढ़ कर उन्हें येन-केन-प्रकारेण तार्किकता का जामा पहना कर जल्द-से-जल्द पेश कर देने के चक्कर में रहता है. दुर्भाग्य है कि इस संग्रह की ज्यादातर कहानियां जल्दबाजी का शिकार हैं. **'मुर्गीखाना'** (केवल सूद; थीम लेस्बियनिज्म), **'मैली पुस्तक'** (रविंदर रवि; स्त्री-पुरुष) और **'ताश'** (प्रेमप्रकाश; आधुनिक परिवेश बनाम स्त्री-पुरुष के 'बीच'), करनैलसिंह का स्वतंत्रता का पोस्टमार्टम (**'पंद्रहवां लाल क्रॉस'**) इसी जल्दबाजी की मिसाल हैं.

नया कुछ कर दिखाने की झोंक में प्रायः उन्मत्त न हो कर जहां लेखक थोड़ा धैर्य से काम लेता

अमृता प्रीतम

है, दृष्टि में स्थिरता पैदा करता और घटनाओं और विचारों को निथरने देता है, वहां प्रख्यात पुरानी थीमें भी निखार और रचनात्मक पक्वता के स्पर्श से नयी-सी हो उठती हैं. **'मजंगो का फरिश्ता'** (मो... यार) और **'तू तो हार गया'** (गुरदयालसिंह) इस तरह की रचनात्मक पक्वता की ... मिसालें हैं, और इन्हीं के ... आती हैं **'गौना'** (गुलजार... संधु), **'एक लाश और'** (गुर... सिंह रुपाणा), **'हीरामंडी के चौ...'** (जसबीर मुल्लर), **'लोरी'** (... बीर) और **'दूध की तलैया'** (... वंतसिंह विर्क).

'तोताराम' (जसवंत... विरदी) और **'विदइन विदआउट'** (दलीपकौर टिवाना) इस ... की सचमुच श्रेष्ठ कहानियां ... **'तोताराम'** एक व्यंग्य भी ... और एक तल्ख टिप्पणी ... प्रबल आक्रोश भी. **'विदइन वि...आउट'** में दलीपकौर ने आधु... स्त्री-पुरुष की नियति को बुद्ध... यशोधरा के प्रतीकात्मक संद... पेश किया है; पुरुष आस्थाहीन ... उद्दंड है और स्त्री हमेशा की ... शोषिता और निराशाओं से ... हुई. अजीतकौर (**'नारियल कुज्जी'**) और अमृता प्रीतम (**'...यल'**) अपने-अपने अनुभवों ... हलके की दो आधुनिक युवतियों ... दर्द भरी दास्तान कहती हैं, ... जमकर मीडियॉकर हैं, सुखवंत ... मान की **'निर्मोही'** भी मीडि... है, मगर वह पीढ़ियों के ... का फासला बयान करती है. ... की **'हाइड्रोफोबिया'** का ... दिलचस्प है, पर बाकी सब ...

कुल मिला कर श्रेष्ठ कहानि... के इस संकलन की अधिकांश क... नियां सुपाठ्य और वैविध्यपूर्ण ... मगर अपने प्रति किये गये श्रे... के दावे के प्रति आश्चर्यजनक ... से निस्संग हैं. पाठक कुछ परि... और प्रख्यात कथाकारों के ... की शिकायत भी शायद क... करने दो!

□ रा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक उपन्यास

'भूत का भविष्य'

लेखक: इलाचंद्र जोशी; प्रकाशक: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-६ १६५ पृष्ठ; साढ़े आठ रुपये.

शीर्षक पढ़ते ही उम्मीद हो जाती है कि लेखक ने भूतकाल और उस के भविष्य का कोई तनाव उभार कर दोनों के विरोध से उत्पन्न होने वाला कोई चमत्कार मूलक सौंदर्य व्यंजित किया होगा, यानी कालगत यथार्थ की दो विरोधी स्थितियों के तनाव और संघर्ष से कोई गहरा प्रभाव पैदा किया होगा. किंतु उपन्यास पढ़ने पर लगा कि नहीं, यह तो एक ऐसे व्यक्ति का भविष्य है, जिसका नाम भूतनाथ है और जो एक मकान हथियाये रखने के क्रम में भूत बना रहता है. और भविष्य भी कहां है इस उपन्यास में! उसकी तो अंत में केवल जिज्ञासा की गयी है!

इस उपन्यास में दो कथाएं हैं— एक कथा हरिजन भूतनाथ की है, दूसरी कथा कवि राकेश और उसके साथ भागी हुई उसकी प्रेमिका नंदा की. वास्तव में ये दोनों ही कथाएं आज के जीवन की समस्याएं हैं. आजादी के इतने वर्षों के बाद भी हरिजनों का जीवन सामाजिक उपेक्षा के अभिशाप से बुरी तरह ग्रस्त है. हरिजन अपनी सारी प्रतिभा और आंतरिक बड़प्पन के बावजूद नीच और अछूत समझे जाते हैं. समाज में पग-पग पर उनका अपमान होता है. सबसे बड़ी यातना उस हरिजन को सहनी पड़ती है, जो किसी कदर पढ़-लिख कर प्रबुद्ध हो जाता है. उसकी प्रबुद्ध चेतना, उसकी संवेदनशीलता और समताकांक्षी मानव-मन कदम-कदम पर अपने ही नहीं, अपने जातीय अपमान से तिलमिला उठता है, क्रुद्ध होता, विद्रोह करता है और टूट जाता है. इस उपन्यास में चित्रित भूतनाथ इसी प्रकार का हरिजन है.

इलाचंद्र जोशी

राकेश और नंदा की कथा आज के युवक-युवतियों की प्रेम-मूलक समस्या को सामने रखती है. क्षणिक भावावेश में आ कर युवक-युवती एक-दूसरे के रूप पर या किसी गुण पर रीझ जाते हैं और त्वरा में एक-दूसरे को जीवन-साथी बना लेने का गलत निर्णय ले कर घर से भाग चलते हैं. कई बार यह प्रेम शादी में परिणत हो जाता है, कई बार शादी की अवस्था तक आने से पहले ही टूट जाता है. शादी हो जाने के बाद भी प्रायः दोनों में आत्मीयता की आंच ठंडी पड़ने लगती है. इस असफलता के मूल में प्रायः आर्थिक संकट तो होता ही है, व्यक्तित्व की वह कुरूप परत भी होती है, जो पहले छिपी होती है और बाद में धीरे-धीरे खुलती है. राकेश एक कवि है—मंचीय कवि. अपनी ओर आकृष्ट नंदा को वह जाल में फांसता है. वह पहले भी एक लड़की को फांस कर बर्बाद कर चुका है. नंदा को भगा कर लाया तो, लेकिन लगता है, वह उसके गले पड़ गयी है. उसके पास कोई नौकरी तो है नहीं, उलटा घर में नंदा के साथ बंद हो जाने के कारण कवि-सम्मेलनों की आमदनी भी छूट गयी है. उस भुतहे मकान में राकेश, नंदा और भूतनाथ की सहयात्रा चलती है. इस सहयात्रा में राकेश की आर्थिक परेशानी भी है, नंदा के प्रति प्यार और संदेह भी है, भूतनाथ के प्रति उपेक्षा, भय और प्रेम है, नंदा का राकेश के प्रति प्रेम और घृणा है, भूतनाथ के प्रति आदर, प्रेम और भय है, भूतनाथ का नंदा और राकेश के प्रति स्नेह तथा उनके आभिजात्य के प्रति आक्रोश और घृणा भी है.

अलग-अलग प्रकृति की समस्याओं वाली इन दो कथाओं को आपस में जोड़ कर एक तीसरी दिलचस्प कहानी गढ़ने के मोह ने इस उपन्यास के प्रभाव को आहत कर दिया है. न तो इसमें हरिजन-समस्या अपने पूरे परिप्रेक्ष्य में उभरने पायी है और न ही राकेश और नंदा की समस्या. लेखक ने इन दोनों समस्याओं को एक भुतहे मकान में एक में मिला कर जासूसी रंग देने का प्रयत्न किया है. भूतनाथ जी पहले तो रहस्य मालूम पड़ते ही हैं, बाद में भी रहस्य बने रहते हैं. उसका संबंध डाकुओं से भी है. और यही संबंध पांच हजार रुपयों से राकेश-नंदा की सहायता कर उनकी आर्थिक समस्या हल करता है और मूल समस्या की गहनता तथा तीव्रता बहुत दूर तक धुंधला देता है.

पूरा उपन्यास विभिन्न प्रकार की चाशनियों से भरा हुआ एक विचित्र स्वाद देता है. उसमें रहस्य भी है, और रोमांस भी, यथार्थ भी है और आदर्श भी, मार्क्सवाद भी है और मनोविश्लेषण भी, राकेश की नीचता भी है और 'जो जैसा करता है वैसा भरता है' के न्याय से अंत में उसको मिलने वाली सजा भी. अर्थ-संकट की झलक है तो खाने का उबाऊ चित्रण भी. अंत में भूतनाथ कहीं गायब हो जाता है, अपनी नीचता के फलस्वरूप राकेश पुलिस द्वारा कैद कर लिया जाता है और नंदा अपने बाप के घर लौट जाती है. और फिर भूत का ही भविष्य क्यों, पाठक पूछ सकता है, तीनों का भविष्य क्या होगा? किंतु उपन्यास में जिनके वर्तमान का चित्र ही इतना धुंधला और उलझा हुआ हो, उनके भविष्य की क्या चिंता की जाये?

□ रामदरश मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यशोदा का शोक

• कृष्णप्रसाद मिश्र

लिसा विलांड ने हलकी सब्जी की गाड़ी को जोमिनिएन दूकान के अंदर कुछ दूर धकेला, फिर खड़ी हो गयीं. क्या बोला था उस लड़के ने. . .मांस खाता है, भेड़ या मुरगे का मांस चलेगा. भेड़ के मांस से तो बदबू आती है. बेहतर होगा, मुरगे का मांस खाये.

कांच के बने शो केस के अंदर कतारों में मुरगे रखे हुए थे. एक पौंड पचास सेंट. उन मुरगों को देख कर मिसेस विलांड ने अनुमान लगाया कि दो मुरगे काफी होंगे. एक अपने लिए और दूसरा उसके लिए. इतालियन दुकानदार से, उसके खून के छींटे और निहायत छोटे-छोटे मांस के टुकड़े गिरे सफेद एप्रन की ओर देख कर उन्होंने दो मुरगों का वजन करवाया. मगर उनकी नजर वजन बताने वाली मशीन पर नहीं थी. कुछ समय पहले उनके सामने से एक और सब्जी की गाड़ी धकेलते हुए विश्वविद्यालय के एक छात्र और एक छात्रा चले गये थे. क्या ही सुंदर थी वह लड़की! उम्र के कारण छाती कुछ उभर आयी थी और जांघें भी मांसल हो गयी होंगी, वरना क्या अभी भी मिसेस विलांड से बढ़ कर हो सकती हैं ये बालों पर इस्त्री फेर कर सपाट बाल रखने वाली आजकल की छोकरियां? बहुतों की छातियों में खड़ की छातियां! और आजकल के छोकरे भी स्लिम के नाम पर हाड़-उभरी लड़कियों को पसंद करते हैं. उन्हींकी कमर पकड़ कर लताओं की तरह उलझे हुए सड़क पर चलते नजर आयेंगे. उनका जमाना वैसा नहीं था, कभी भी नहीं था. मिस्टर विलांड उन्हें स्लिम होने के लिए नहीं, उनकी मांसलता के लिए चाहने लगे थे. जब खुश हो जाते, तो कहते—लिसा, मैं पेंटर नहीं हूं, पर तुम्हें अगर कोई पेंट करे, तो लोग उसे जरूर रेनेसां युग की किसी नारी की पेंटिंग कहेंगे.

* *

मिसेस विलांड की छाती में जैसे किसीने अचानक खूब खुशी और दर्द की एक छुरी भोंक दी. हवाई जाहज से जमीन से ऊपर उठते समय और उतरते समय इस तरह की पीड़ा उनकी छाती में होती है. यह पीड़ा उनके लिए नयी नहीं है, पुरानी है, बहुत पुरानी. जब वह छोटी थीं. कालेज में फर्स्ट इयर में पढ़ती थीं और बास्केट बाल खेल देखने के लिए मैफल लिफ गार्डन को जीती थीं, उस समय उछल कर बाल को दाबने की आर्थर की भंगिमा ने उनकी छाती में ऐसी पीड़ा की सृष्टि की थी. उसके बाद वह खुद बॉल हो गयीं. आर्थर के ताकतवर शरीर ने जीवन में उन्हें कई बार ऊपर उठाया, कई बार नीचे दबाया, पर उस उठने में और उस दबने में कैसा आनंद था! पुरुष के हाथों में, पुरुष के लिए गेंद बन जाने में कितना आनंद आता है.

मिसेस विलांड की आंखें भीग गयीं. नजदीक काउंटर से एक बोरा चाशनी में पागा हुआ मेवा लावा खरीदते हुए उस युवक को उन्होंने देखा. शायद दूध के लिए कहीं गयी होगी. युवक के कंधे बदन को देख कर कोई यही कहेगा कि वह जरूर बास्केट बॉल खेलता होगा, वरना आइस हाकी या सक्कर और कुछ. ठीक आर्थर जैसा. पर कैसी पसंद है इसकी, कितनी बदशकल है इसकी गर्ल फ्रेंड!

इतालवी दुकानदार तब तक सेलोफीन कागज में दोनों मुरगों को लपेट चुका था. उनका उसने छह पौंड वजन बताया. उन मुरगों को मार कर उसने साफ किया था, इसलिए साठ सेंट और मांग रहा था. मिसेस विलांड ने हिसाब किया और पैसे दे दिये. पर आंखें उनकी इधर-उधर घूम रही थीं. और चीजें खरीदनी थीं. लिकर स्ट्रीट में भी रुकना है. एक बोतल शैंपेन खरीद लेना ठीक रहेगा. घर से क्यों फोन किया जाये. शुक्रवार है, इसलिए दुकानदार को हजार कॉल मिलते होंगे. हर के घर में शाम को पार्टी, पीने-पिलाने का पर्व.

गाड़ी को धीरे-से घुमा कर मिसेस विलांड दुकान में उस ओर मुड़ीं जिधर सब्जियां बिकती थीं. गाड़ी धकेलते हुए वह दुकान की दोनों ओर आंखें घुमाती जा रही थीं. अन्य लोग आगे बढ़े जा रहे थे. एक व्यक्ति ने उनकी धीमी गति को देख कर बोला—नानी गयी उनका पैरांबुलेटर!

मिसेस विलांड चाय के साथ खाने के लिए केक के दो पेकेट ला कर, उन्हें गाड़ी में रखती हुई मन-ही-मन बुदबुदायीं—हे भगवान, आदमी इतना बेरहम कैसे हो जाता है! इन लोगों के जल्दी जाने की शायद कोई वजह होगी. हो सकता है, नहीं भी हो. क्योंकि इस उम्र में लड़के-लड़कियों और अन्य लोगों के हर काम के पीछे कोई सही कारण हो, यह बात नहीं. पर मिसेस विलांड अपने पचास साल के शरीर को इतनी जल्दी भी [illegible] कर चलायें? क्या कोई काम भी है कि घर जायें? घर! घर!

मिसेस विलांड के होठों पर हंसी निखर आयी. उस पंद्रह मंजिला मकान में, जिसमें हजार से अधिक लोग रहते होंगे, चौदहवीं मंजिल पर चौदह सौ [illegible] नंबर का सूट उनका है. पर एक दिन उनका अपना मकान था, पति थे, दो बेटे भी थे. घर का नंबर भी उन्हें याद है—२१, मेनार्ड एवेन्यू.

* *

—माफ कीजिएगा. . .

मिसेस विलांड का ध्यान हटा. उनके पास एक तरुणी खड़ी थी और पूछ रही थी—क्या आपने मुझसे कुछ पूछा?

—नहीं तो! मैं कुछ बोली हूं क्या?

उसके बाद तरुणी ने मुंह फेर लिया और सब्जी चुनने लगी. जमैका से बैंगन आये हैं. कद्दू भी. उन बैंगनों से वह छांट रही थी. क्या करेगी वह इन बैंगनों [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले कर? इन्हें कैसे पकाते हैं? मिसेस विलांड ने जीवन में कभी उन्हें नहीं पकाया. किसलिए वह ले रही हैं! मिसेस विलांड ने मुखमुद्रा से अपनी नापसंदगी जताते हुए लकड़ी की अलमारी से एक बोरा आलू ले कर गाड़ी पर रखा. आज आलू का भरता भी बनायेंगी. वह लड़का भारत से आया है. उसे पता लगे कि हम क्या खाते हैं. हां, स्पिनाच साग भी खरीदेंगी वह. भारत में यह सब है भी कि नहीं, क्या मालूम! आर्थर को स्पिनाच साग खूब अच्छा लगता था. टी. वी. पर पपेया कार्टून फिल्म देख कर वह बच्चों से, जो उस समय छोटे-छोटे थे, कहता—अरे, स्पिनाच साग खाओ, तब जा कर ताकत आयेगी और तुम भी 'पपेया' नाविक की तरह बन जाओगे!

पर क्या फायदा हुआ उस ताकत से! पल जब जर्मनों के साथ लड़ रहा था तो क्या उसके शरीर में ताकत नहीं थी? कितना स्पिनाच साग उसे खिलाया मिसेस विलांड ने! क्या लाभ हुआ? एक ही गोली से मर कर ढेर हो गया. . .'आई ऐम पपेया द सेलर मैन' पपेया का वह गीत गाने के लिए, और गा-गा कर टी. वी. के सामने नाचने के लिए और. . .फिर वह नहीं रहा. धत! मिसेस विलांड ने स्पिनाच के पुलिंदे को गाड़ी से निकाल कर आलमारी के अंदर डाल दिया. स्पिनाच वह नहीं लेंगी.

वह खड़ी है पार्किंग लॉट में उनकी वाक्स वैगन गाड़ी. दुकान के झरोखे से साफ दिखाई दे रही है. आर्थर ने उस गाड़ी को खरीदा था. अब वह नहीं रहा पर उसकी गाड़ी है. आखिर क्या कहेंगी वह उन जर्मनों को, क्यों सोचेंगी वह उनके बारे में? उन्होंने उनके बेटे को मार डाला है. पर उनकी गाड़ी सही-सलामत रही. लड़ाई के बाद उनकी गाड़ी का सेल्स मैन आर्थर बन गया. उस गाड़ी को मिसेस विलांड बेच भी नहीं सकतीं. एक बार अगर बेच दें तो फिर खरीदने की ताकत है क्या उनमें? बहुत ही मजबूत गाड़ी. पर क्या होगी वह गाड़ी? घर लौटने की क्या जल्दी है! कौन घर पर उनके इंतजार में बैठा है! आर्थर कब से कफन के अंदर है. एक दिन फावड़े से बाहर बर्फ साफ करते-करते उसके प्राण-पखेरू उड़ गये. जो भी हो, फ्यूनरल होम से आर्थर के लिए एक अच्छे-से कफन का इंतजाम हो गया. जो गया, वह गया. आर्थर के मरने के बाद चर्च के आदमी उनसे चर्च के कामों में सहायता करने को कहते! कहते कि वह चर्च के काम ज्यादा कर सकेंगी, इसलिए ईश्वर ने उनके पति को बुला लिया. रोमन कैथलिक वालों ने तो आ कर सलाह दी थी कि समय रहते उनका धर्म में दीक्षित हो जाना ही ठीक रहेगा. उनके अनुसार आर्थर नरक को गया है और मिसेस विलांड को अब अपना भविष्य सुधार लेना चाहिए. मिसेस विलांड उन्हें बाहर कर देतीं. सब ठग हैं, प्रचारक, पेशेवर प्रचारक. आर्थर भी उन्हें यही मानता था. इस दुर्घटना के कुछ ही दिन पहले एक बार वह बोला था—ईश्वर-वीश्वर सब झूठ है! इस ईश्वर-विश्वास से हम क्रिश्चियनों ने लाखों यहूदियों को मार डाला है. पर इतना ही है, और कुछ नहीं, सबका अंत इस माटी में, पानी में, हवा में. . .सोचने से कैसा-कैसा लगता है. एक बात और भी तो है, समाज में रहने पर दूसरों के विश्वास को भी तो मानना पड़ेगा. एकदम असामाजिक बन कर चलना भी तो संभव नहीं है.

कुछ पल के लिए कुछ सोचता हुआ आर्थर चुप रहा और बोला—अच्छा, लूसी, मेरी मौत के बाद मुझे दफनाना. . .क्रिश्चियनों की विधि के अनुसार, ठीक!

मिसेस विलांड. . .जो आदमी अभी कल ही उन्हें गोद में लिये हुए या कलेजे से सटाये हुए बरामदे में चक्कर काटता रहता था यही तो है वह, जिसने कल रात ही उन्हें गेंद की तरह अपनी बलिष्ट बांहों में भर कर गुथली बना लिया था. उसी प्रौढ़ और ताकतवर आदमी से उसीकी कब्र की चिंता सुन कर आश्चर्य हुआ था. पर उसके कुछ दिनों बाद ही बर्फ और वर्षा की शब्दहीनता के बीच आर्थर के प्राणपखेरू उड़ गये थे. बर्फ पर गिरने के पहले आर्थर मिसेस विलांड को दौड़ कर सहायता के लिए बुला तक नहीं सका!

★ ★

आर्थर तो घर पर है नहीं. उनकी प्रतीक्षा में वहां कौन होगा कि वह जल्दी लौट जायें. दो लड़कों में से एक तो ईश्वर का प्यारा हो गया है और एक नौकरी के लिए सुदूर सानडियेगो में है. शादी भी वहीं की है उसने. छह महीना में एक-आध चिट्ठी आती है. किसके लिए जल्दी घर लौटें मिसेस विलांड? वाल टु वाल गलीचे के लिए, या गलीचे के लाल रंग से मेच करते चेस्टर फिल्ड सेट के लिए, या फिलिप्स के पोर्टेबल टी. वी. सेट के लिए, या आर्थर की और अपने दोनों लड़कों की तसवीरों

• मधुर मित्तल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए, जिनको सजा कर उन्होंने टी. वी. के पास रखा है? कांटिनेंटल गद्दी नहीं, गलीचा नहीं, ड्रेपर नहीं, टी. वी. नहीं, कोई भी उनके एकांत को तोड़ नहीं सकता, निर्जनता को भगा नहीं सकता.

जिस दिन वह आर्थर की मौत के बाद पुराने घर के अवशेष मोनिंग-वैन में लाद कर सूटर स्ट्रीट के इस एपार्टमेंट में पहुंची थीं, उस दिन उन्होंने सोचा था कि आर्थर की स्मृति में भीगे उस कार्पेट, उस ड्रेपरी, उस गद्दी वगैरह के सहारे जीवन का बाकी समय बिता लेंगी. पर क्या हुआ? जब कभी आर्थर की याद आती है, एक पल को भी आती है, तो उस समय उस ड्रेपरी और गलीचे के रंग खून की नदी में बदल जाते हैं. . .पर सच्चाई शायद यह भी है कि उन्हें आर्थर की ज्यादा याद नहीं आती, कोशिश करने पर भी मन उसकी ओर नहीं जाता, यद्यपि उस समय उन्हें चारों ओर घिरी हुई महानिर्जनता ही मिलती, मन, हृदय और शरीर सब छटपटाने लगते. सुबह, शाम, दोपहर और रात को हजारमुख वाला वह एकांत जैसे मिसेस विलांड की नाक, आंख, हर रोयें से अंदर घुस जाता. मिसेस विलांड को लगता है, सारी दुनिया में वह अकेली हैं. उनका कोई साथी नहीं. उनके जीने-मरने के लिए किसीका भी आग्रह नहीं. जैसे आदिकाल से वह शापग्रस्त हैं. उनकी आत्मा को ऐसे एकांत में रखते हुए ईश्वर शायद अंत में हवा बना कर उड़ा देंगे—मुट्ठी भर धूल की तरह!

व्याकुल हो कर, ड्रेपरी को खोल कर सुबह के शहर को देखने की कोशिश करतीं मिसेस विलांड, जैसे सारी दुनिया को समेटने की इच्छा करतीं. आवाज करते ड्रेपरी के रिंग दोनों ओर सरक जाते. दरिया के बीच डूबते आदमी के किनारे की ओर देखने की तरह वह कांच के झरोखे से बिल्डिंग के लान, लान के उस पार सूटर स्ट्रीट को देखतीं पर दरिया के बीच से पुकारने वाले की आवाज किनारे पर ट्रांजिस्टर सुनने वाले के पास पहुंचती नहीं है. डूबने वाले की भयपूर्ण मुख भंगिमा पेरांबुलेटर में संतान को ले जानेवाले पति-पत्नी देख नहीं पाते. मिसेस विलांड फिर ड्रेपरी खींच कर बंद कर देतीं. तैरने में कोई फायदा नहीं है, अब डूब जाना अच्छा है.

पर जीवन है. जीवन के धागे जब तक टूट नहीं जाते, आदमी की असीम इच्छा रहेगी. वह साथी ढूंढ़ेगा. सोते समय किसीको साथ ले कर सोने की इच्छा होगी. उसे प्यार करने की, समय-समय पर उससे झगड़ा करने की इच्छा होगी. इस तरह का कोई आदमी कहां है मिसेस विलांड के पास? टी. वी. देखने से, उपन्यास पढ़ने से, सिनेमा देखने से लोगों से मिलने की इच्छा बढ़ जाती है, कम नहीं होती. पर उनके लिए वैसे लोग हैं कहां?

* *

दोपहर में मिसेस विलांड फिर आकुलता से ड्रेपरी खोल लेतीं. खोलते ही धूप के उजाले से डर कर घर का अंधकार बिछौने के नीचे या वार्डरोब में छिप जाता. वह अंधेरा हट जाये, वही तो मनुष्य के लिए ज्यादा आकुलता, ज्यादा निःसंगता लाता है. पर उजाले में तरुण-तरुणियों की युगल छवियां निखर आती हैं. एपार्टमेंट बिल्डिंग के लान की घास पर युवक-युवतियों के जोड़े लुढ़कते नजर आयेंगे. कोई-कोई चार आंखों में एक उपन्यास पढ़ते होंगे, कोई-कोई एक-दूसरे पर ... जाने की कोशिश करते होंगे, तो कोई-कोई एक-दूसरे को चूमने में व्यस्त नजर आते होंगे, जैसे हर बार के ... चूमने में नयापन हो. इसके बाद मिसेस विलांड और भी व्याकुल हो उठतीं और जा कर अपने पुराने कांटिनेंटल बिछौने पर गिर जातीं.

ऐसी ही एक निःसंग दोपहर में उन्होंने 'ग्लोब एंड मेल' पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखा था, जिसका हर शब्द जैसे, उनके खून से और जिसका अर्थ उनकी आत्मा से निकला था. उस चिट्ठी में कामा और स्टाप उनके आंसू के थे. लिखा था : 'संपादक महोदय, उमर सबकी ढल रही है. कोई भी चिरंतन युवक या युवती बन कर नहीं रह सकते. पर आदमी आदमी हो कर आदमी के एकांत को अनदेखा कर दे, इससे बढ़ कर अपराध और क्या हो सकता है! इस दुनिया के बाद एक और दुनिया है, इस जीवन के बाद एक और जिंदगी है, इसका सही पता किसीको नहीं. दूसरे को दुख न दे कर किसीको सुख पहुंचा पाना एक अच्छी बात है, इसको कोई अस्वीकार नहीं करेगा. उत्तर अमरीका की प्रौढ़ा विधवाओं के दुःखों के बारे में हमारे समाज में कोई सोचने वाला है क्या? या उत्तर अमरीका सिर्फ तरुण-तरुणियों का, युवक-युवतियों का देश है, जहां ढलती उमर वालों के लिए स्थान नहीं है? अगर यहां प्रौढ़ों के लिए स्थान है, तो उनके सुख-दुःख की चिंता करना भी क्या उचित नहीं है? कोई विधवा, प्रौढ़ा या बूढ़ी होने के बाद जो एकांत जीवन बिताती है, उसके बारे में किसीने चिंता की है क्या? कभी सोचा है आपने? अमरीका में बूढ़ियों की संख्या बूढ़ों से अधिक है. विधुर बूढ़ों का जीवन भी ठीक हमारी तरह है, हम जैसा ही अकेलापन है उनका भी. क्या इस समस्या का समाधान हो सकता है? मेरी राय में युवा लोग शादी करते समय अगर एक से अधिक पत्नियां ग्रहण करते, मानवीय दृष्टि से एक युवती पत्नी के साथ अगर एक प्रौढ़ा को भी देख लेते, तो अपने आप इस समस्या का समाधान हो जाता. प्रौढ़ा पत्नी और कुछ नहीं, सिर्फ पुरुष का साथ चाहती है. पुरुष से सहायता और आश्रय का साथ चाहती है. विधवाओं और ज्यादा उम्र वाली महिलाओं के प्रति क्या समाज का कुछ भी दायित्व नहीं है?. '. .

मिसेस विलांड ने अपना नाम और पता न छापने का अनुरोध कर उस पत्र को प्रकाशित कर देने का अनुरोध किया था. और वह चिट्ठी उसी तरह प्रकाशित हुई थी. पर न मालूम कैसे इस बात का पता चर्च के फादर को लग गया. एक दिन बिना बुलाये उन्होंने आ कर मिसेस विलांड को खूब डांटा-फटकारा. मिसेस विलांड डायन है, उनके खून में कहीं पागान का खून बह रहा है, और इसलिए इस बुढ़ापे में, पति के मरने के बाद भी ईश्वर की चिंता न करके, चर्च के लिए काम न करके दूसरी शादी की बात सोच रही हैं! समाज में ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस असभ्य परंपरा के प्रचलन के लिए, पुरुष अनेक स्त्रियों को ब्याहता है, प्रचार कर रहा है. धिक्कार है उन्हें!

★ ★

मिसेस विलांड ने एक अच्छी बात सीख आर्थर से मिसेस विलांड ने एक अच्छी बात सीख ली थी. इन पादरियों की बातों पर कभी भी विश्वास न करने की बात. इनके अस्वाभाविक जीवन के लिए वे चिंता भी नहीं करते और अगर करते भी हैं, तो बड़े बेढंगे तरीके से. पादरी के आंखें दिखा कर गालियां बकते समय वह मुजरिम की तरह चुपचाप सुनती रहीं और पादरी के सब कुछ कह चुकने के बाद गंभीर हो कर बोलीं—अब आप जा सकते हैं. मैं अब आपके चर्च की सदस्या नहीं हूं, आप मेरा नाम काट दें.

कब समझ सकेंगे ये धार्मिक लोग दूसरों की समस्याओं को?

उस दिन ब्लोरस्ट्रीट तक बाजार के लिए चली आयी थीं मिसेस विलांड. हर रोज एक ही जगह से खरीदने को मन नहीं करता. फिर अपनी कार भी तो है. उसे भी तो कभी-कभी चलाना है. ब्लोर से यंग स्ट्रीट तक आ कर वह सूटर सड़क पर पहुंच गयी हैं. घर भी नजदीक आ गया है—उस सूट, अंटेरियो के पंद्रहवें मंजिल की कुछ जगह. एक दिन जरूर उनकी लाश इसमें से निकल कर कफन के अंदर जायेगी. हां, उसी कफन के अंदर रहने के लिए, कफन के भयानक अंधकार में अकेली सोयी रहने के लिए शायद अब वह अपने को तैयार कर रही हैं. निःसंगता की परत उनके चारों ओर धीरे-धीरे गाढ़ी होती जा रही है और कफन के रूप में बदलती जा रही है. मिसेस विलांड की इच्छा हुई कि कार के अंदर से कूद पड़ें.

मिसेस विलांड के सर में झटका-सा लगा. हृदय की गति जैसे बंद-सी हो गयी. उन्होंने अपने को संभाल लिया. नहीं, वह मरना नहीं चाहतीं. मरना नहीं चाहतीं. आज रात के डिनर के लिए उन्होंने उस भारतीय छात्र को बुलाया है और आज उसे खिला कर संतुष्ट करेंगी. आज डिनर के लिए कितना सारा काम है! क्या कर रही हैं वह?

★ ★

उस विदेशी छात्र से मिलने के लिए यूनिवर्सिटी की उस खास बिल्डिंग की याद आयी उन्हें. किसी ने बताया था कि अपने एकांत को दूर करने का एक अच्छा तरीका यह है कि बाहर से आने वाले छात्रों को डिनर पर बुला लो. देश-विदेश की बातें होंगी. उनके बारे में, उनके रीति-रिवाजों के बारे में पता चलेगा और उन्हें अपनी शिक्षा, रीति-रिवाज और सभ्यता के बारे में बता सकोगी. यह बात उन्हें जंच गयी और वह यूनिवर्सिटी में विदेशी छात्रों से मिलने के लिए उस बिल्डिंग की ओर चल पड़ीं. शाम को वहां गाना, बजाना, नाच आदि होते हैं. कोई चेस खेलता होगा, तो कोई कार्ड्स, तो कोई कैरम. कोई अपने बंधु या बांधवी के साथ गपशप में मशगूल मिलेगा. घर के अंदर घुसने लगेगा, जैसे सिर्फ वहीं प्राण है, जीवन और स्फूर्ति है. बिल्डिंग में पहुंच कर उनकी आंखें किसीको ढूंढने कहीं [illegible] मेहमान बनायेंगी? मेहमान तो दोनों तरफ तेज धार वाली छुरी है. तुम्हारी शाम को वह शानदार भी बना सकता है. शानदार भी बना सकता है और जहरभरी भी. किस युवक को बुलाने पर उन्हें शांति मिलेगी? मन बहल जायेगा? गोरे-गोरे दिखने वाले युवा-युवतियों पर उनकी आंखें नहीं टिकीं—आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, इंग्लैंड और यूरोप के अन्य देशों से जो लोग आये थे वे उन्हें एक से लगे. ये सब उसी जाति के लोग हैं, जिनकी सभ्यता उन्हें धर्म और सभ्यता के नाम पर एकांत के बीच घोंट-घोंट कर मार डालने पर उतारू है. नहीं, इन्हें नहीं. यूरोप या आस्ट्रेलिया वालों की मनोवृत्ति भी एक-सी ही होगी. देश दूसरा होने से क्या हुआ? घूरती हुई उनकी आंखों ने देखा, दो नीग्रो युवा और उनके बीच बैठी एक कानाडीयन युवती हंसते हुए बातों में मशगूल थे. उनकी हंसी में थकावट नहीं थी. उनके हृदय में से जैसे आवाज आयी—नहीं, इन नग्रो में से कोई ठीक नहीं होगा, उनकी आत्मा के साथ कोई परिचय तो है नहीं और क्या पता, वे पूरी तरह विपरीत भी हो सकते हैं. मिसेस विलांड सबको देखती हुई, सर हिलाती हुई ड्राइंग रूम में से आफिस रूम में घुस गयीं. मिसेस रिडेल वहां काम करती हैं. वह उन्हें पहले से जानती हैं. उनके सामने कुर्सी पर चिंतित-सा एक लड़का बैठा था. उन्हें लगा, हो सकता है, यह युवक इटालियन हो और शायद दरिया किनारे सूर्यस्नान के कारण शरीर का रंग टेंज हो गया हो.

★ ★

—हाइ, मिसेस विलांड, गुड इवनिंग!

—हाऽऽइ, गुड इवनिंग मिसेस रिडेल!

मिसेस रिडेल ने युवक से उनका परिचय कराया यह है मनोज. भारत से आया है.

—ओऽ, भारत से!

मिसेस विलांड खुशी से भर उठीं और मनोज के साथ हाथ मिलाया.

—मिसेस विलांड, आपको पता है, मनोज की क्या समस्या है? इसकी भारत लौट जाने की इच्छा है. इसे यह जगह अच्छी नहीं लगती. यहां तक कि हमारे यहां की लड़कियां तक इसे पसंद नहीं.

—ओऽ, सच!

मिसेस विलांड ने मनोज को देखा. उनकी बातचीत से मनोज का चेहरा लाज से गुलाबी हो उठा.

मनोज ने हंसते हुए कहा—नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं. मुझे आपका देश खूब अच्छा लगता है. . .सिवा इसके कि यहां सर्दी कुछ ज्यादा है. . .

मिसेस रिडेल ने व्यंग्य किया—लोगों के बरताव में मिल रही ठंडक के बारे में कह रहे हो शायद!

—नहीं, नहीं मैं बर्फ के बारे में—सर्दी के बारे में कह रहा हूं.

मिसेस विलांड खुश हो गयीं मनोज के इस बच्चों जैसे जवाब से. उनके हृदय ने जैसे उनसे कहा कि यह युवक ही तेरा मेहमान होने के लायक है. यह शर्मीला युवक तेरा ही है! भारत छोड़ कर आया हुआ यह युवक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां अकेला है. और अकेलेपन के दुःख का अनुभव करने वाला ही किसी के अकेलेपन को दूर कर सकता है. उसी समय मिसेस विलांड ने मनोज को डिनर के लिए आमंत्रित किया. और मनोज ने भी उस आमंत्रण को सहर्ष स्वीकार कर लिया.

इतने थोड़े-से परिचय पर भी डिनर के लिए निमंत्रण पा कर मनोज की आंखों ने उसकी दृष्टि ने जैसे मिसेस विलांड का आलिंगन कर लिया. वह बोला था--मिसेस विलांड, बहुत-बहुत धन्यवाद! आपको देखकर मुझे अपनी मां की याद आ रही है. बेचारी मुझे खूब याद करती होगी. आपका चेहरा उससे काफी मिलता है. मैं इस शुक्रवार शाम को आपके घर जरूर आऊंगा.

उसकी बातें सुन कर मिसेस विलांड की छातियों में जैसे कुछ अजीब-सी हलचल हो उठी. वह विह्वल हो उठी. उनकी इच्छा हुई कि मनोज को छाती से लगा ले. सिर्फ उसी को तो वह अब तक ढूंढ़ रही थीं! पर अपने आपको संभाल लिया उन्होंने. मिसेस रिडेल कुछ लिख रही थीं. उनका घर कहां है, किस तरह जाना पड़ेगा, वगैरह अच्छी तरह मनोज को बता कर वह मिसेस रिडेल और मनोज से विदा ले कर चली आयीं.

★ ★

उसे खिलाने के लिए, उसका मन संतुष्ट करने के लिए उन्हें अब तैयारी में लगना पड़ेगा. घर छोड़ कर आने के बाद, हो सकता है, लड़के ने अच्छी तरह ... तक नहीं.

मिसेस विलांड ने अपने रूम का दरवा[जा] खोला. कार को पार्किंग स्थान में पार्क करके आयी थीं. लिफ्ट से सामान लाने में कोई तकलीफ नहीं हुई. किन्तु खोलते ही टेलीफोन की घंटी बजने की आवाज आयी. शायद देर से बज रही हो. किसका फोन होगा? उन्होंने दौड़ कर रिसीवर उठाया. शायद मनोज का फोन हो सकता है, घर का नंबर भूल गया हो और रा[स्ता] पूछने के लिए फोन किया हो. इस शहर में कित[नी] गलियां हैं! कितना फूहड़ प्लान है इस शहर का!

पर फोन के दूसरी ओर मिसेस रिडेल थीं. मनोज नहीं. कह रही थीं, मनोज ने बहुत दुःख प्रकट किया है कि आपके यहां आज खाना खाने के लिए नहीं पहुंच सकेगा. उसकी गर्ल फ्रेंड ने उसे किसी जरूरी काम से मांट्रियल बुलाया है. वह आज सुबह से मांट्रियल चला गया है. आपको फोन करके बताने को कह गया था. कल रात उसने भी कोशिश की थी. . .

मिसेस विलांड ने रिसीवर रख दिया. इसके बाद वह अपने पुराने मकान के चेस्टर फिल्ड सोफा या कॉन्टि-नेंटल बेड पर नहीं, गलीचे पर बैठ गयीं. दरवाजा खुला था. और दरवाजे से सटा हुआ पड़ा था खरीदा हुआ सामान. . . ◻◻

(अनुवाद : श्रीनिवास उद्...)

ARMS-CBT/20-008 HN

केवल बिनाका टॉप टूथपेस्ट ही
मुँह की पूरी रक्षा करता है

देखिये!
बिनाका टॉप का
विशेष फैलने वाला
तत्व किस प्रकार
काम करता है।

काँच की प्लेट में थोड़ा-सा पानी डालिए। थोड़ा-सा कोयले का चूरा या रंगीन पाउडर पानी पर छिड़किए।

पानी में बिनाका टॉप घोलिए। मिश्रण की एक बूंद काँच की प्लेट के बीचों-बीच डालिए।

अब देखिए कि बिनाका टॉप कितनी तेज़ी से चारों तरफ़ फैलता है... पानी की सतह पर फैले हुए मैल को काटता है और पानी कितना साफ़-सुथरा हो जाता है।

बिनाका टॉप बिल्कुल इसी तरह काम करता है। इसमें एक विशेष फैलने वाला तत्व होता है जो तुरंत आपके मुँह में फैल जाता है और दांतों में सड़न पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करता है और सांस की दुर्गंध को दूर करता है। यह आपके मुँह की पूरी रक्षा करता है।

बिनाका टॉप टूथपेस्ट
व बिनाका टूथब्रश मुँह की पूरी रक्षा के लिए

सीबा-गायगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा समांतर लेखक सम्मेलन : एक रिपोर्ट (३)

गत २७ २८, २९ और ३० जनवरी को मद्रास तथा कालीकट में समांतर लेखकों का चौथा सम्मेलन हुआ, जिसमें हिंदी के अलावा डोगरी, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगु तथा मलयालम के लेखकों ने भी भाग लिया. मद्रास तथा कालीकट में हुई दो गोष्ठियों की रिपोर्ट आप पिछले दो अंकों में पढ़ चुके हैं.

सांस्कृतिक कार्यक्रम लंबा नहीं था. दक्षिण भारतीय लोकनृत्यों के तीन आइटम थे, जो काफी आकर्षक थे.

ग्यारह बजते-बजते लोग गेस्ट-हाउस लौट आये. खाना खाने के बाद उम्मीद यह की जाती थी कि पिछली रात के सफर और आज की लंबी गोष्ठी के बाद लोग आराम करेंगे. लेकिन हुआ इसके विपरीत. खाना खा कर लोग खुली हवा और उजली चांदनी में घूमने बाहर निकल आये. और एक खुले मैदान में बिछी बालू पर वृत्ताकार बैठ गये.

यहीं पर बातों के दौरान, २८ जनवरी की रात, कोई बारह बजे, चौथे समांतर की पहली अनौपचारिक गोष्ठी शुरू हुई.

बातचीत के लिए विषय पूर्व-निर्धारित नहीं था. न कोई अध्यक्ष था, न ही कोई मुख्य वक्ता. एक तरह से सभी वक्ता और सभी श्रोता थे. बातचीत के बीच इब्राहीम शरीफ ने सुझाव रखा कि क्यों न हम इस गोष्ठी में आज के परिवेशगत यथार्थ की व्याख्या कर लें? सभी ने इस बात का स्वागत किया.

बातें छिटपुट तरीके से ही शुरू हुईं और धीरे-धीरे इस मुद्दे पर पहुंचने लगीं कि इस देश में प्रतिक्रियावादी ताकतें दिनों-दिन मजबूती पकड़ती जा रही हैं. विडंबना यह है कि अपने आपको समाजवादी, वामपंथी और प्रगतिशील कहने वाले राजनीतिक दल भी सत्ता को हथियाने और महज अराजकता फैलाने के उद्देश्य से सामंतवादी, दक्षिणपंथी और सांप्रदायिकतावादी तत्वों से जा मिले हैं. इस स्थिति ने आम आदमी की सोच को दिशाहीन कर दिया है. वह कन्फ्यूज हो गया है. . .लेकिन यह स्थिति ज्यादा देर तक नहीं बनी रह सकती. जन सामान्य का जागरूक तबका सही और गलत को समझने की सामर्थ्य रखता है. . . बल्कि इस दिशा में उसका चिंतन शुरू भी हो गया है.

दामोदर सदन ने कहा कि जन सामान्य में दक्षिणपंथी तत्वों को ले कर जो क्षणिक मोह जागा था, अब वह भंग हो रहा है और वह इन तत्वों की असली शक्ल को पहचानने लगा है.

फिर सवाल यह उठा कि क्या ऐसी स्थिति में लेखक तटस्थ हो कर बैठा रहे या अपनी समझ के आधार पर बदलते संदर्भों में एक सक्रिय भूमिका अदा करे?

पूंजीवादी प्रचारतंत्र की बात करते हुए से. रा. यात्री ने कहा कि अकसर हमें स्थितियों की सही जानकारी प्राप्त नहीं होती. पूंजीवादी प्रचारतंत्र हर चीज को अपने नजरिये से तोड़-मरोड़ कर या अपना रंग दे कर हमारे सामने पेश करता है. ऐसी हालत में अकसर कोफ्त होने लगती है.

लेखकीय मजबूरियों की बात करते हुए आबिद सुरती ने एक अन्य प्रश्न उठाया. उन्होंने कहा कि वह मूलतः लेखक बने रहना चाहते हैं. लेकिन जीविकोपार्जन के लिए उन्हें बहुत कुछ करना पड़ता है—जैसे हास्य और रोमांच-कथाओं वाले व्यंग्य-चित्र बनाने पड़ते हैं. क्या यह अवांछनीय स्थिति है?

कामतानाथ ने आबिद की इस बात के उत्तर में कहा कि यह कतई अवांछनीय नहीं होना चाहिए. लेखक भी आम आदमी होता है और आम आदमी की ही तरह, जिंदा रहने के लिए, उसे कोई न कोई काम तो करना ही पड़ेगा. शर्त सिर्फ यह है कि अपने इस काम को वह अपने विचारों के रास्ते में बाधा न बनने दे—अपनी संबद्धता और संलग्नता को न भूल जाये.

बातों का सिलसिला काफी देर तक चलता रहा. बातचीत के दौरान अनेक अन्य विषय भी सामने आये—जैसे दक्षिण-पूर्व और मध्य एशिया में घटी हाल की घटनाएं, चिली, दायगो गार्सिया और समाज में महिलाओं की स्थिति आदि.

रात काफी हो चुकी थी. आकाश-रेखा पर नारियल के पेड़ों के साये गहराने लगे थे. तभी गोष्ठी समाप्त हुई—इस निर्णय के साथ कि प्रातः गेस्ट-हाउस के कमरा नंबर एक में सब लोग दुबारा एकत्र होंगे और आज की गोष्ठी में उठे विषयों पर विस्तार से बातें की जायेंगी.

* *

दूसरे दिन प्रातः नाश्ते के बाद विश्वविद्यालय के गेस्ट-हाउस के कमरा नंबर एक में ही गोष्ठी जुटी.

कमलेश्वर ने बात उठायी. उन्होंने कहा कि मूल प्रश्न यह है कि एक लेखक और उससे भी आगे एक नागरिक के रूप में हमारी चिंताएं क्या हैं? जो भी हो, हम अपने आपको राजनीति से काट कर अलग नहीं रख सकते. तब प्रश्न यह उठता है कि हम उससे किस स्तर पर और किस समझदारी से जुड़े हैं अथवा जुड़ना चाहते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमांशु जोशी ने बात को आगे बढ़ाया. उन्होंने कहा कि पिछले सत्ताइस वर्षों से हम निरंतर संक्रमण की स्थिति में हैं. आम आदमी के पक्ष में निर्णय लिये जाने के बावजूद उन्हें टाला जाता रहा है. राजनीति की आड़ में गलत लोगों द्वारा जातिवाद, प्रांतीयता, सांप्रदायिकता को लगातार प्रोत्साहन दिया जाता रहा है. प्रतिक्रियावादी शक्तियों को बढ़ावा मिलता रहा है. हमें राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय, दोनों ही परिप्रेक्ष्यों में इसे समझना होगा. यदि एक जबरदस्त वैचारिक क्रांति जल्दी ही नहीं होती, तो स्थगन की यह राजनीति बढ़ती ही चली जायेगी. पिछले दौर के साहित्यकारों ने इस ओर उचित ध्यान नहीं दिया. परंतु हम, यानी आज के साहित्यकार, इस स्थिति से किनाराकशी नहीं कर सकते. महज आम आदमी की कहानियां लिखने से शायद काम नहीं बनेगा. हमें वैचारिक तथा रचनात्मक, दोनों स्तरों पर और अधिक सक्रिय होने की जरूरत है.

इब्राहीम शरीफ ने बातों को अधिक स्पष्ट करना चाहा. उन्होंने कहा कि स्थितियों के सामान्यीकरण से हमारी बात साफ नहीं होगी. एक बात निश्चित है कि इस देश या किसी भी देश में बदलाव या परिवर्तन राजनीतिक पार्टी या पार्टियों द्वारा ही संभव है. अतः हमें चाहिए कि हम इस देश में जो भी राजनीतिक पार्टियां हैं, उनकी नीतियों तथा उनके कार्यक्रमों की तुलनात्मक व्याख्या और विश्लेषण करें.

शरीफ की इस बात को आगे बढ़ाने के लिए यह जरूरी समझा गया कि कामतानाथ अपना लेख 'सामाजिक क्रांति और साहित्यकार की भूमिका' पढ़ें ताकि उससे उठने वाले सवालों को ले कर बहस को आगे बढ़ाया जा सके.

★ ★

कामतानाथ ने अपने संक्षिप्त लेख में कहा कि क्रांति के संदर्भ में साहित्यकार की अहम होने के बावजूद, सीमित भूमिका ही हो सकती है. क्रांति की अग्रिम पंक्ति का सिपाही वह नहीं हो सकता. यह काम तो राजनीतिक पार्टियों के निर्देशन में देश का सर्वहारा या मजदूर-किसान वर्ग ही करेगा. उन्होंने आगे कहा कि क्रांति आकस्मिक झटके से आने वाली चीज नहीं होती. वह एक प्रक्रिया और तैयारी का परिणाम होती है. इस प्रक्रिया में लेखक एक कैटेलिटिक एजेंट का काम कर सकता है, क्योंकि वह अपनी प्रतिबद्ध रचनाओं द्वारा लोगों में क्रांति के प्रति उचित मानसिकता बनाने में सहायक हो सकता है. उन्होंने अपने लेख में हिंदी के कुछ क्रांतिकारी लेखकों के उस रूमानी भटकाव का भी जिक्र किया जिसके तहत वे हर समय लेखनी को बंदूक की गोली में तब्दील कर देने की बातें करते रहते हैं. सही समझदारी की कमी और बदलाव के प्रति बेचैनी कभी किसी लेखक को एक दूसरे स्तर पर गैर-जनवादी आंदोलन से भी जोड़ देती है और वह प्रतिक्रियावादी शक्तियों के झूठे प्रचार का शिकार हो जाता है.

★ ★

कामतानाथ के लेख में उठाये गये मुद्दों से अपनी सहमति व्यक्त करते हुए सुभाष पंत ने कहा कि यह सही है कि क्रांति-क्रांति चिल्ला कर साहित्यकार क्रांति नहीं ला सकता. उसका सही कार्य क्रांति के लिए उपयुक्त मानसिकता का निर्माण करना ही है. इस संबंध में राजनीतिक पार्टियों की भूमिका को स्वीकार करते हुए उन्होंने आगे कहा कि कठिनाई तब होती है जब ज्यादातर राजनीतिक पार्टियां एक ही शब्दावली में बात करती हैं.

आशीष सिन्हा ने बात को मूल से उठाते हुए कहा कि सबसे पहले हमें वर्तमान स्थिति में यह विश्लेषण करना होगा कि देश में क्रांति की संभावनाएं किस सीमा तक हैं और उससे भी एक कदम आगे जा कर यह विचार करना होगा कि उस क्रांति का स्वरूप क्या होगा.

स्वयं द्वारा उठाये गये अपने प्रश्न का उत्तर देते हुए आशीष ने आगे कहा कि वर्तमान स्थितियों को ध्यान में रखते हुए खूनी क्रांति की कल्पना करना...

समांतर लेखकों की पहली अनौपचारिक गोष्ठी में भाग लेने वाले कुछ लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारी भूल होगी. अतः क्रांति को—सामाजिक एवं आर्थिक—हम एक क्रमिक परिवर्तन के रूप में ही लें. मामूली आदमी की स्थिति में बेहतरी की दिशा में थोड़ा-सा बदलाव भी क्रांति की दिशा में एक बढ़ता हुआ कदम है.

इब्राहीम शरीफ ने कहा कि पूंजीवादी-दक्षिणपंथी तत्व देश के सामान्य जन को भटकाने में लगा हुआ है.

शरीफ के वक्तव्य के संदर्भ में हिमांशु जोशी ने कहा कि हम स्थितियों का सही जायजा ले कर ही सही निर्णयों तक पहुंच सकते हैं.

राम अरोड़ा ने रचनाओं की संगति अथवा विसंगति का प्रश्न उठाते हुए कहा कि पाठक की मानसिकता की बातें तो हम बहुत करते हैं, जरूरत इस बात की भी है कि हम लेखकों की मानसिकता की बात भी करें.

★ ★

तभी कमलेश्वर ने बात को नये सिरे से शुरू किया. उन्होंने कहा कि इस देश में दक्षिणपंथी राजनीति ने चीजों को स्थगित करने या कराने का कार्य अधिक किया है. स्वाभाविक है इससे जन-असंतोष बढ़ा है. परंतु इस असंतोष को सही ढंग से चैनेलाइज करने का प्रयत्न नहीं किया गया. असंतोष होना अथवा उसका पैदा किया जाना एक बात है और उसका इस्तेमाल बिलकुल दूसरी. फासिस्ट ताकतें भी जन-असंतोष की उर्वरा भूमि में ही पनपती हैं. अतः असंतोष की बात करते समय उसके इस्तेमाल की राजनीति से भी हमें सतर्क रहना चाहिए.

हिमांशु जोशी ने कहा कि इस सारी स्थिति को हमें व्यापक स्तर पर समझना होगा. उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि यदि प्रगतिशील शक्तियां सक्रिय और सावधान नहीं रहतीं, तो जन-असंतोष का फायदा प्रतिक्रियावादी शक्तियां ही अधिक उठा लेंगी.

(क्रमशः)

फिल्में

दो निर्माणाधीन फिल्में : 'कादंबरी' और 'आंखिन देखी'

'कादंबरी' 'मधु क्रिएशन पिक्चर्स प्राइवेट लिमिटेड' की निर्माणाधीन फिल्म है, जिसकी कहानी पंजाबी की प्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका अमृता प्रीतम के उपन्यास **'धरती, सागर और सीपियां'** पर आधारित है. यह सशक्त प्रेम-कहानी है.

अमित अपनी मां के साथ रहता है. मां को उसके पिता ने नकार दिया है. मां ने तमाम तकलीफें सह कर उसे अच्छी तरह पाला-पोसा है. अमित से पड़ोस की एक लड़की चेतना प्यार करने लगती है.लेकिन अमित का जीवन मां को समर्पित है. फिर भी क्लीअर अंडरस्टेंडिंग के आधार पर चेतना अमित को आत्मसमर्पण करती है और उसके बच्चे की मां बन जाती है. अमित अपनी मां के साथ पूना चला जाता है और एक अच्छा डाक्टर बन जाता है. मां को किसी तरह चेतना के प्रति अमित के लगाव का पता चलता है तो वह विवश करके चेतना से उसकी शादी करा देती है.

कथ्य की दृष्टि से इस फिल्म में काफी बोल्डनेस है. इसके निर्देशक हैं—एच. के. वर्मा. नायक और नायिका की भूमिका में विजय अरोड़ा और शबाना आजमी हैं. संगीत उस्ताद विलायत खां दे रहे हैं.

★ ★

'दस्तक' जैसी श्रेष्ठ फिल्म देने के बाद प्रख्यात लेखक राजेंद्र सिंह बेदी अब नयी फिल्म **'आंखिन देखी'** बना रहे हैं. कहानी

ऊपर–'आंखिन देखी' के एक दृश्य में सुमन सिन्हा और सुरेश भगत

नीचे–'कादंबरी' में शबाना आजमी और विजय अरोड़ा.

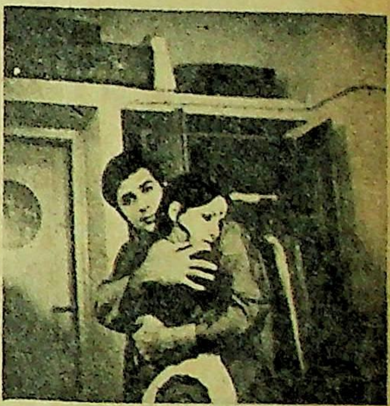

में २३ फरवरी, १९३० से ५ मई १९३० के दौरान का घटनाक्रम है. यह सही अर्थों में गांधीवादी सिद्धांतों पर अछूतोद्धार की कथा है जो आजादी की लड़ाई के साथ जुड़ी हुई है. इसका नायक एक ब्राह्मण युवक है और नायिका हरिजन युवती. बेदी साहब के अनुसार यह प्रचार नहीं, बल्कि 'इट इज ए मैटर ऑफ फेथ एंड मॉरल'. इसके नायक और नायिका एकदम नये कलाकार हैं. संगीत जे. पी. कौशिक का है और गीत प्रख्यात डोगरी कवयित्री पद्मा सचदेव के. □□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में कई खुशियों के पल होते हैं
सरदर्द को आपकी खुशियां बिगाड़ने न दीजिये

२ ऐस्प्रो लीजिये
माइक्रोफ़ाइन्ड ऐस्प्रो दर्द को जल्दी खींच निकालता है
ASPRO
Nicholas
A.G.62 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी साहित्य

संपूर्ण गांधी वाङ्मय

बापू ने जो कुछ कहा या लिखा, उसका संपूर्ण संग्रह लगभग पचासी खंडों में. गांधी वाङ्मय तथा भारतीय इतिहास के अध्येता के लिए इन खण्डों में बहुमूल्य सामग्री है. ६० खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं और शेष तैयार किए जा रहे हैं.

प्रथम खंड (साधारण)	रु.	७.५०
द्वितीय खंड (सजिल्द)	रु.	५.५०
तृतीय व उससे आगे के खंड (प्रत्येक)	रु.	७.५०
प्रथम ६० खंड एक साथ खरीदने पर रियायती मूल्य	रु.	३५०.००

महात्मा गांधी (चित्रावली)

गांधी जी का अलौकिक जीवन-आकर्षक चित्रों में.		
३२.५×२३.५ से. मी. साइज में सुंदर आर्ट पेपर पर.	रु.	१२.५०
बापू के आशीर्वाद (राजे के लिए गांधी जी का एक विचार) संकलन : आनंद टी. हिंगोरानी)	रु.	६.००
गांधी शतदल (संकलन : सोहनलाल द्विवेदी)	रु.	५.००
मोहनदास कर्मचंद गांधी (ले. नरेंद्र शर्मा)	रु.	४.२५
महात्मा गांधी का संदेश (ले. यू. एस. मोहन राव)	रु.	२.६०
गांधी कथा (चित्रों में) (ले. एस. डी. सावंत, एस. डी. बादलकर) गांधी जी की आद्योपांत जीवन कथा मनोहारी सतरंग चित्रों में. बच्चों के लिए विशेष आकर्षक	रु.	२.५०
गांधी जी के संस्मरण	रु.	१.७०
सब ईश्वर के प्यारे बेटे छूआछूत से संबंधित गांधी जी के भाषणों का संग्रह	रु.	१.३०
बापू की वाणी (ले. निरंकारदेव सेवक) कविता में गांधी जी के उपदेशों का सारांश	रु.	०.५०

(तथा अन्य कई भाषाओं में रोचक व उपयोगी पुस्तकें डाक खर्च मुफ्त) तीन रुपये से अधिक मूल्य की पुस्तकें वी. पी. पी. से भी भेजी जा सकती हैं.

वृहद सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं

प्रकाशन विभाग

पटियाला हाऊस, नई दिल्ली

डी ए वी पी-७५/२६३

बेनेट कोलमन एंड कंपनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए श्रीकृष्ण गोविंद जोशी द्वारा टाइम्स आफ इंडिया प्रेस, बंबई में मुद्रित व प्रकाशित. पो बाक्स २१३, बंबई-१. [illegible] नयी दिल्ली-१. कलकत्ता आफिस : १३/१ और १३/२ गवर्नमेंट प्लेस ईस्ट. लंदन आफिस : ३०-ए, डिस्ट्रिक्ट रोड, सडबरी, वेम्बले, मिडिलसेक्स, यू. के.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजीयत सं. एम एच. दक्षिण बंबई-३९९

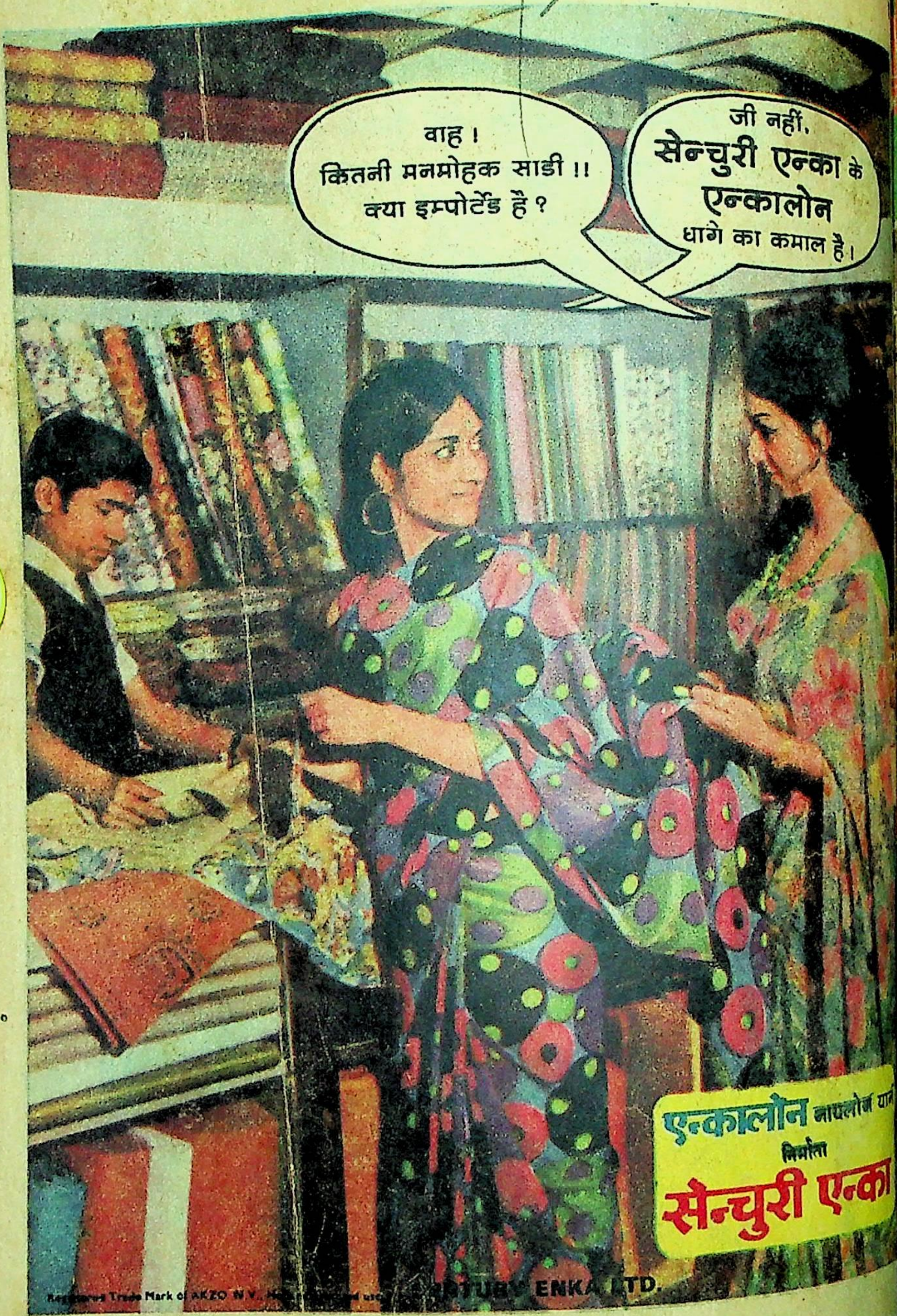

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar